प्रकाशक : डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक
SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)
दूरभाष : 9910777969
E-mail : *harisharanverma1@gmail.com*
WWW.IJSCJOURNAL.COM

सहयोग राशि (भारत में)
(व्यक्तिगत) (आजीवन 6100 रुपये)
(संस्थागत) (आजीवन 9100 रुपये)

कृपया सहयोग राशि बैंक ड्राफ्ट से ही भेजें।
बैंक ड्राफ्ट, संपादक "इण्डियन जर्नल ऑफ सोशन कन्सर्न्स" के पक्ष में देय होगा। आजीवन सदस्यता केवल दस वर्षों के लिए मान्य होगी। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द हो जाता है तो आजीवन सदस्यता स्वतः ही समाप्त हो जायेगी।

संपादकीय कार्यालय :

1. **डॉ० हरिशरण वर्मा, प्रधान सम्पादक**
   F-120, सेक्टर–10, DLF, फरीदाबाद (हरियाणा)121006
   harisharanverma1@gmail.com 09355676460
   WWW.IJSCJOURNAL.COM
2. **डॉ० राजनारायण शुक्ला, सम्पादक**
   SH, A-5, कविनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)

क्षेत्रीय सम्पादक

1. डॉ० वाई.आर. शर्मा, A-24, रेजिडेंसल कैम्पस, न्यू कैम्पस, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू–180001, फोन : 09419145967
2. डॉ0 सलमा असलम, ओल्ड टाउन बारामुला, कश्मीर पिन – 193101, मौ0 9682162934
3. डॉ0 आरती लोकेश P. o. Box 99846, Dubai, UAE 97150-4270752
4. श्री मोहनलाल, 11 अशोक विहार, संजय नगर, पो. इज्जत नगर बरेली (उ०प्र०) फोन : 09456045552
5. श्री जितेन्द्र गिरधर, कार्यालय सहायक 105/26 जवाहर नगर,कॉपरेटिव बैंक के पीछे, रोहतक 09896126686
6. **Dr. Vimla Devi,** Asst. Professor (History) M.B.G.P.G College Haldwani Nainital (Uttrakhand) G-mail address. drvimla2015@gmail
7. डॉ0 प्रिया कपूर, सहायक प्रोफेसर, डी0 ए0 वी शताब्दी कालेज, फरीदाबाद मौ0 9711196954
8. डॉ0 ऊषारानी, हिन्दी –विभाग हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,शिमला –5
9. विमला टोप्पो, एस0 आर0 इंटरप्राइसेस म्युनिसिपल काम्पलेक्स सोप न0 4, डेरी फार्म, पोर्ट बलेयर, पी0 ओ0 जंगली घाट –744103 साउथ अंडमान
10. डॉ0 राजपाल, सहायक प्रो0 राजकिय स्नातको्त्रर महाविद्यालय,हिसार
11. डॉ0 प्रवेष कुमारी, सहायक प्रो0 (हिन्दी –विभाग), बाबा मस्तराथ, विश्वविद्यालय, रोहतक, (हरियाणा)
12. **डॉ०निर्भय शर्मा**, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी) ,संघटक राजकीय महाविद्यालय भदपुरा, नवाबगंज, एम०जे०पी० रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली (उ०प्र०) पिन कोड – 262406. Mobile No: 9634160016 Email: dr.nirbhaysharma@gmail.com

संरक्षक मण्डल :

1. **प्रो0 डॉ0 चकधार त्रिपाठी कुलपति,** उड़ीसा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट, 763004, चलभाषाः 9437568809
2. **डॉ0 दिनेश मणी त्रिपाठी**, प्रधानाचार्य एन0 पी0 के0 आई कालेज, सरदार नगर बसडीला (गोरखपुर) उ0प्र0
3. **डॉ० नरेश मिश्रा** (पूर्व आचार्य, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
4. **डॉ० वाई.आर.शर्मा,** (राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू)
5. **डॉ0 सुंधांशु कुमार शुक्ल** चेयर हिन्दी, आई. सी. सी. वार्सा विश्वविद्यालय, वार्सा (पोलैन्ड) मौ0 48579125129
6. **डॉ0 तपन कुमार शण्डिल्य, कुलपति,** डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय राँची, (झारखण्ड) 9431049871
7. **डॉ0 जंगबहादुर पाण्डेय** (पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग) रांची विश्वविद्यालय, रांची – 834008 फोन : 09431595318
8. **सुदेश रावत** प्रांचार्या एस. एन. आर. जयराम महिला कॉलेज, लोहार माजरा, कुरूक्षेत्र हरियाणा 36119 (सेठ नारंग राय लोहिया जय राम महिला कॉलेज)
9. Sh. Butta Singh gill, PPS, Dy Superintendent of Police. No 409 ,Street no 7 Ghuman Nagar , Sarhind Road, Patiala Punjab -147001.

परामर्शदात्री समिति :

1. **डॉ0 विजयदत्त शर्मा, पूर्व निदेशक, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी पंचकूला(हरियाणा)**
2. **डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल** (पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, वर्धमान कॉलेज, बिजनौर)
3. **डॉ० राजकुमारी सिंह,** प्रोफेसर एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय लोधीपुर राजपूत मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश 9760187147
4. **डॉ० माया मलिक,**पूर्वप्रोफेसर हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
5. **डॉ० ममता सिहल,** (प्रोफेसर एवं अध्यक्षा अंग्रेजी विभाग) जे०वी० जैन कॉलेज सहारनपुर
6. **डॉ० विनीत बाला,** सहायक प्रो. भूगोल विभाग, वैश्य पी.जी. कॉलेज, रोहतक

संपादकीय विशेषज्ञ समिति :
हिन्दी विभाग:

1. **डॉ० राजेश पाण्डे** (डी.वी. कॉलेज, उरई, जिला जालौन, उ०प्र०)
2. **डॉ0 अनिता, सहायक प्रोफेसर**, (हिन्दी), श्री अरबिन्दो कालिज दिल्ली (सांध्य) मौ0 :8595718895
3. **डॉ० सुशील कुमार शर्मा** (अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय शिलांग, मेघालय)
4. **डॉ० शशि मंगला,** पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
5. **डॉ0 के0डी0 शर्मा,** पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेशदत्त, सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पलवल
7. **मुकेश चन्द्र गुप्ता** (हिन्दी विभाग, एम.एच.पी.जी. कॉलेज, मुरादाबाद)
8. **डॉ० गीता पाण्डेय** (रीडर एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, एस.डी.

9. **डॉ0 प्रवीण कुमार वर्मा** (सह प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग) गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय, पलवल

10. **डॉ0 सुनीता रानी,** आई. बी. पी.जी. महाविद्यालय जी.टी. रोड, पानीपत – 132103

11. **डॉ० रूबी,** (सीनेयर सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग कश्मीर

12. **डॉ0 सुमन राठी,** सहायक प्रो0 हिन्दी विभाग, मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक

13. **डॉ0 सुधा कुमारी** (हिन्दी विभाग) एन0जी0एफ0 डिग्री कालिज, उडदू, अध्ययन केन्द्र मथूरा रोड, पलवल 982719456

14. **डॉ० एम. के. कलशेट्टी,** हिन्दी विभाग, श्री माधवराव पाटिल महाविद्यालय, मुरूम तह० अमरगा, जिला उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)–413605

15. **डॉ० मनोज पंड्या,** व्याख्याता हिन्दी विभाग, श्री गोविन्द गुरु, राजस्थान महाविद्यालय, बांसवाड़ा–327001, मो० 09414308404

16. **डॉ. कृष्णा जून,** प्रो० हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

17. **डॉ. विपिन गुप्ता,** सहायक प्रोफेसर, वैश्य कॉलेज भिवानी

18. **प्रो0 (डॉ0) वन्दना शर्मा, म. न. 2, प्रोफेसर लोंज, किचम सी. डी. एम.,मोदीनगर (उ.प्र.) 201204, मो0 2760411251**

19. **डॉ० जाहिदा जबीन,** (प्रो0 एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर–६)

20. **डॉ० टी०डी० दिनकर,** पूर्व प्रो0 एवं अध्यक्षा, हिन्दी विभाग अग्रवाल कॉलेज, बल्लभगढ़)

21. **डॉ० सुभाष सैनी,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग दयालसिंह कॉलेज, करनाल, हरियाणा

22. **डॉ० उर्विजा शर्मा,** (सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग शम्भु दयाल स्नातकोत्तर, महाविद्यालय, गाजियाबाद

23. **डॉ0 ममता कुमारी,** सहायक प्रो0, डी0 ए0वी0 शताब्दी महाविद्यालय, फरीदाबाद हरियाणा

24. **डॉ० मधुकान्त,** (वरिष्ठ साहित्यकार) 211- L मॉडल टाऊन, रोहतक

25. **डॉ0 कंचन पुरी, विभागध्यक्ष,** रघुनाथ गर्ल्स पी0 जी0 कालेज मेरठ

26. **डॉ0 प्रवेश कुमारी ,** सहायक प्रो0 हिन्दी बाबा मस्तराथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर रोहतक

27. **डॉ0 राजपाल ,** सहायक प्रो0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार

28. **डॉ0 प्रवेश कुमारी ,** सहायक प्रो0 टिकाराम कन्या कॉलेज, सोनीपत, हरियाणा

29. **प्रो. प्रणव शास्त्री,** प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष–हिन्दी विभाग, उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत – 262 001 उ. प्र. मो.98379 60530 drpranav&pbt23@rediffmail-com

30. **प्रो. राखी उपाध्याय,** प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष – हिन्दी विभाग, डी. ए . वी. कॉलेज, देहरादून – 248 001 (उत्तराखंड) मो. 94111 90099 drrakhi.418@gmail-com

31. **डॉ0 सुनीता जसवाल,** असिस्टेंट प्रोफेसर – हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला (हिमाचल प्रदेश) मो. 7018621542

32. **डॉ0 सुमन रानी,** सहायक प्रोफेसर, अस्थाई, हिन्दी विभाग, गोस्वामी गणेषदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय पलवल हरियाणा मौ0 9050289680 sumanbhati808@gmail.com

33. **डॉ0 संगम वर्मा,** सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय, सैक्टर 11,चण्डीगढ़ 9463603737,kavysavvy@yahoo.com

34. **डॉ0 प्रीति गुप्ता,** हिन्दी व्याख्याता GGSSS राम नगर न01 पहाड़गंज नई दिल्ली (शिक्षा निदेशालय दिल्ली सरकार) मौ0 8058138017 sweetpriti80@gmail.com

35. **संजय कुमार,** व्याख्याता, GBSSS करावल नगर,दिल्ली (शिक्षा निदेशालय दिल्ली सरकार)संपर्क– 8769406872 ई मेल sanjaydholpuria51@gmail.com

अंग्रेजी विभाग:

1. **डॉ. ममता सिहल, अध्यक्षा,** अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन कॉलिज, सहारनपुर, उ.प्र.
2. **डॉ. रणदीप राणा, प्रोफेसर,** अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
3. **डॉ. जयबीर सिंह हुड्डा, प्रोफेसर,** अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
4. **डॉ० रविन्द्र कुमार,** एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग, चौ० चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
5. **डॉ. अनिल वर्मा** (पूर्व रीडर, अंग्रेजी विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर)
6. **डॉ० जे. के. शर्मा,** प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक
8. **डॉ. पी.के. शर्मा,** (प्रो., अंग्रेजी–विभाग, राजकीय के.आर.जी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर)
9. **डॉ. गीता रानी शर्मा,** (सहायक प्रोफेसर) गो.ग.दत्त सनातन धर्म कॉलेज, पलवल
10. **डॉ. किरण शर्मा,** (एसोसिएट प्रोफेसर) राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय रोहतक
11. **डॉ0 राजाराम,** सहायक प्रोफेसर (अंगेजी) ओम स्ट्रलिंग ग्लोबल, विष्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा)

वाणिज्य विभाग:

1. **डॉ० नवीन कुमार गर्ग** (वाणिज्य विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० ए.के. जैन,** रीडर (वाणिज्य विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर)
3. **डॉ० दिनेश जून,** एसोसिएट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फरीदाबाद
4. **डॉ० एम.एल. गुप्ता,** (पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वाणिज्य एवं व्यवसायिक प्रशासन संकाय, एस.एस.वी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हापुड़ एवं संयोजक–शोध उपाधि समिति एवं संयोजक बोर्ड ऑफ स्टीडिज चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)
5. **डॉ० वजीर सिंह नेहरा,** प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
6. **डॉ० संजीव कुमार,** प्रोफेसर वाणिज्य विभाग, म.द.वि. रोहतक
7. **डॉ. गीता गुप्ता,** (सहायक प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, वैश्य महिला महाविद्यालय, रोहतक)
7. **डॉ. नरेन्द्रपाल सिंह,** (एसोसिएट प्रोफेसर) वाणिज्य विभाग, साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद, उ.प्र.)

राजनीति शास्त्र विभाग:

1. **साकेत सिसोदिया,** (राजनीति शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
2. **डॉ० रोचना मित्तल** (रीडर एवं अध्यक्षा, राजनीति शास्त्र–विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
3. **डॉ० राजेन्द्र शर्मा** (एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद, उ०प्र०)
4. **डॉ० कौशल गुप्ता,** एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, देशबन्धु महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली **Mob.: 09810938437**
5. **डॉ०पी.के. वार्ष्णेय,** एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, जे.वी.जैन कॉलेज, सहारनुपुर
6. **डॉ० सुदीप कुमार,** सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, पेहवा (कुरुक्षेत्र) **Mob.: 9416293686**
7. **डॉ० वाई०आर० शर्मा,** एसो० प्रो०, राजनीति शास्त्र विभाग, जम्मू
8. **डॉ. रेनू राणा,** (सहायक प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, प. नेकीराम शर्मा राजकीय महाविद्यालय रोहतक 124001
9. **डॉ. ममता देवी,** (सहायक प्रोफेसर, राजनीतिक शास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

इतिहास विभागः

1. **डॉ० भूकन सिंह** (प्रवक्ता, इतिहास विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० मनीष सिन्हा,** पी.जी. विभाग, इतिहास, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार–824231
3. **डॉ० राजीव जून,** सहायक प्रो० इतिहास, सी.आर इन्स्टीट्यूट ऑफ ला, रोहतक
4. **डॉ० मीनाक्षी** (सहायक प्रोफेसर इतिहास विभाग) सी.आर. किसान कॉलेज, जीन्द
5. **डॉ0 रश्मि,** (अध्यक्षा) इतिहास विभाग, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, जीन्द (हरियाणा) पिन – 126102

भूगोल विभागः

1. **डॉ० पी.के शर्मा,** पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, भूगोल विभाग, जे.वी. जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सहारनपुर
2. **रश्मि गोयल** (भूगोल विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद)
3. **डॉ० भूपेन्द्र सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राजकीय पी.जी. कॉलेज, हिसार
4. **डॉ० विनीत बाला,** सहायक प्रो. भूगोल विभाग, वैश्य पी.जी. कॉलेज, रोहतक
5. **डॉ0 प्रदीप कुमार शर्मा**, एसोसिएट प्रोफेसर, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

शिक्षा विभागः

1. **डॉ० उमेन्द्र मलिक,** एसिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, म.द.वि. , रोहतक
2. **डॉ० संदीप कुमार,** सहायक प्रो० शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्लीएसोसिएट
3. **डॉ० तपन कुमार बसन्तिया,** एसोसिएट प्रोफेस, सैंटर फॉर एजुकेशन, सैट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ विहार, गया कैम्या, विनोभा नगर, वार्ड नं. **29**, **Behind ANMCH** मगध कालोनी, गया–**823001**बिहार**Mob.: 09435724964**
4. **डॉ० (प्रो०) अनामिका शर्मा,** प्राचार्या, एम.आर. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, फरीदाबाद
5. **डॉ० मनोज रानी,** सहायक प्रोफेसर (अंग्रेजी) एम.एल.आर.एस. कॉलिज ऑफ एजुकेशन, चरखी दादरी (भिवानी)
6. **डॉ० राजकुमारी सिंह,** प्रोफेसर एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय लोधीपुर राजपूत मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश 9760187147
7. **डॉ० ममता देवी,** (सहा. प्रो. बी.आई.एम.टी. कॉलेज कमालपुर गढ़ रोड़, मेरठ)

गृह विज्ञान

1. **डॉ0 श्रीमती पंकज शर्मा,** (सहायक प्राफेसर), गृह विज्ञान (प्रसार शिक्षा) राजकिय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रोहतक

शारीरिक शिक्षा विभागः

1. **डॉ० सरिता चौधरी,** सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा विभाग, आर्य गर्ल्ज कॉलेज, अम्बाला कैंट, हरियाणा
2. **डॉ० वरुण मलिक,** सहायक प्रोफेसर, म.द.वि., रोहतक
3. **डॉ० सुनील डबास,** (पद्मश्री व द्रोणाचार्य अवार्ड) HOD in physical education"DGC Gurugram

समाज शास्त्र विभागः

1. **प्रवीण कुमार** (समाजशास्त्र विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)
2. **डॉ० कमलेश भारद्वाज,** समाज शास्त्र विभाग, एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद

मनोविज्ञान विभागः

1. **डॉ० चन्द्रशेखर,** सहायक प्रोफेसर साईक्लोजी विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू
2. **डॉ. रश्मि रावत,** (मनोविज्ञान विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज, देहरादून)
3. **अनिल कुमार लाल** (प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग, शम्भुदयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद)

अर्थशास्त्र विभागः

1. **डॉ० जसवीर सिंह** (पूर्व रीडर अर्थशास्त्र विभाग, किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मवाना)
2. **डॉ० सुशील कुमार** (एस.डी. कॉलेज, गाजियाबाद, उ०प्र०)
3. **डॉ० अखिलेश मिश्रा** (प्राध्यापक, अर्थशास्त्र–विभाग, एस.डी.पी. जी. कॉलेज, गाजियाबाद)
4. **डॉ० सत्यवीर सिंह सैनी,** एसो०प्रो० (अर्थ०वि०, गो०ग० सनातन धर्म पी०जी० कॉलेज, पलवल)

विधि विभागः

1. **डॉ० नरेश कुमार,** (प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
2. **डॉ० विमल जोशी,** (प्रोफेसर, विधि–विभाग भगत फूलसिंह महिला विश्वविद्यालय खानपुर, सोनीपत)
3. **डॉ० जसवन्त सैनी,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
4. **डॉ० वेदपाल देशवाल,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
5. **डॉ. अशोक कुमार शर्मा,** एसो. प्रोफेसर, विधि विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर
6. **डॉ. राजेश हुड्डा,** सहायक प्रो०, विधि विभाग, बी.पी.एस. महिला विश्वविद्यालय, खानपुर कलां, सोनीपत
7. **डॉ० सत्यपाल सिंह,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
8. **डॉ० सोनू,** (सहायक प्रोफेसर, विधि–विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक)
9. **डॉ० अर्चना वशिष्ठ,** (सहायक प्रोफेसर, के०आर० मंगलम विश्वविद्यालय, सोहना रोड, गुरुग्राम)
10. **डॉ० आनन्द सिंह देशवाल,** (सहायक प्रोफेसर, सी०आर० कॉलेज ऑफ लॉ रोहतक)
11. **अनसुईया यादव,** (सहायक प्रोफेसर, विधि विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा)

गणित विभागः

1 **डॉ० विनोद कुमार,** रीडर एवं अध्यक्ष गणित विभाग, जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर

2. **डॉ० विरेश शर्मा,** लेक्चर्रार गणित विभाग, एन.ए.एस. कॉलेज, मेरठ

3. **डॉ0 सलौनी श्रीवास्तव** सहायक प्रो0, गणित विभाग आर0 बी0 एस0 कालेज आगरा

4. **Dr. Dhrub Kumar Singh.**HOD, Department of Mathematics, YBN University, Rajaulatu, Namkum, Ranchi, Jharkhand, India. Pin-834010

5. **डॉ रश्मि मिश्रा** प्रोफेसर (एप्लाइड साइंस एंड हमनीटीएस), मैथमेटिक्स गनेशी लाल बजाज इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट ग्रेटर नॉएडा

कम्प्यूटर विभागः

1. **प्रो० एस.एस. भाटिया** (अध्यक्ष, स्कूल ऑफ मैथमेटिक्स एण्ड कम्प्यूटर एप्लीकेशन, थापर विवि, पटियाला)

2. **सर्वजीत सिंह भाटिया** (प्रवक्ता, कम्प्यूटर साईंस, खालसा कॉलेज, पटियाला)

3. **डॉ० बालकिशन सिंहल,** सहायक प्रोफेसर, कम्पयूटर विभाग, म०द०विश्वविद्यालय, रोहतक

संस्कृत विभागः

1. **डॉ० रामकरण भारद्वाज** पूर्व रीडर एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद (गाजियाबाद)

2. **डॉ० सुनीता सैनी,** एसो0 प्रोफेसर संस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

3. **डॉ० सुमन,** (सहायक प्रोफेसर, संस्कृत–विभाग, आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी।)

4. **डॉ0 दिनेश मणि त्रिपाठी {प्रधानाचार्य}** एल०पी०के०इंटर कॉलेज सरदार नगर बसडिला {गोरखपुर}

5. **डॉ0 दानपति तिवारी,** प्रोफेसर, एवं अध्यक्ष, महात्मा गांधी काशी विद्यापिठ, वाराणसी, उत्तर–प्रदेश

6. **डॉ0 दिनेशचन्द्र शुक्ल,** सहायक प्रोफेसर, महात्मा गांधी काशी विद्यापिठ, वाराणसी, उत्तर–प्रदेश

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभागः

1. **डॉ० आर०एस० सिवाच,** प्रो० एवं अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, म०द०वि०, रोहतक

)254

दृश्यकला विभागः

1. **डॉ० सुषमा सिंह,** एसोसिएट प्रोफेसर, दृश्यकला विभाग, म०द० विश्वविद्यालय, रोहतक

पंजाबी विभागः

1. **डॉ० सिमरजीत कौर,** सहायक प्रो० (पंजाबी), ईश्वरजोत डिग्री कालेज, पेहवा (कुरूक्षेत्र)

संगीत विभागः

1. **डॉ० संध्या रानी,** अध्यक्षा, संगीत विभाग, यूआरएलए, राजकीय पीजी कॉलेज, बरेली

2. **डॉ० हुकमचन्द,** एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष तथा डीन, संगीत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा

3. **डॉ. अनीता शर्मा,** (संगीत–गायन प्राध्यापिका, जयराम महिला महाविद्यालय लोहारमाजरा (कुरुक्षेत्र)

4. **डॉ. वन्दना जोशी,** (सहायक प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग, एस.एस.जे. परिसर, अल्मोड़ा)

पत्रकारिता एवं जन संचार विभागः

1. **डॉ० सरोजनी नंदल,** प्रोफेसर (पत्रकारिता एवं जन संचार विभाग) महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

उर्दू विभागः

1. **डॉ० मो. नूरूल हक,** (एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, उर्दू, बरेली कॉलेज, बरेली)

कृषि विभाग

1. **डॉ0 गोविन्द प्रकाश आचार्य** सह–आचार्य (कृषि–प्रसार) श्री गोविन्द गुरू राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा राजस्थान मो. 9460545836

दर्शनशास्त्र

1. Prof, Dr, Asha Devi department of Philosophy Govt P G college kotdwar pauri Garhwal Uttarakhand 246149

LIFE MEMBERS OF INDIAN JOURNAL OF SOCIAL CONCERNS

1. **Dr. Praveen Kumar Verma**
Associate Professor, Hindi Department, GGD Sanatan Dharam Post Graduate College, Palwal.

2. **Smt. Veena Pandey (Shukla)**
Hindi Teacher, Jawahar Navodya Vidyalya, Dhoom Dadri, Distt. Gautambudhnagar - 203207 (U.P.)

3. **Dr. Suman**
H.No. 1001, Radha Swami Colony, Rohtak Road, Bhiwani (Haryana)

4. **Dr. Subhash Chand Saini** (Hindi Department, Dyal Singh College, Karnal, Haryana

5. **Dr. Vimla Devi, Asst. Professor (History)** M.B.G.P.G College Haldwani Nainital (Uttrakhand)
G-mail address. drvimla2015@gmail

6. **Princepal,** Associat Professor (Hindi), Aggarwal College, Ballabhgarh (Haryana)

7. **Dr. Dinesh Mani Tirpathi (Principal)** L-P=-K Inter College sardar Nagar, Basdila Gorkhpur

8. **Dr. Govind Prakash Acharya** F--63, Chandra Vardai Nagar, UIT, Colony, Shaheed Bhagat Singh Marg, Opposite Ramganj Thana, Taragarh Road, Ajmer (Rajasthan) Pincode--305003.

9. **Amardeep Singh** Mcf C -21, Near Deep Vatika, Bhagat Singh Colony, Ballabgarh121004, Mob. 9873814066

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

आचार्य मनिष र. जोशी
सचिव
Prof. Manish R. Joshi
Secretary

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
University Grants Commission
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
(Ministry of Education, Govt. of India)

F.No. 1-1/2018(CARE/JOURNAL)-Part file 22 माघ 1946/11 February, 2025

सार्वजनिक सूचना

In supersession of the Public Notice dated 28th November 2018 for establishing UGC Consortium for Academic and Research Ethics (UGC- CARE), the Commission, in its 584th meeting held on 3rd October 2024, based on the recommendations of the expert committee, has decided to discontinue UGC-CARE listing of Journals and develop suggestive parameters for choosing peer-reviewed journals by faculty members and students. The suggestive parameters, developed by a group of experts and academicians, are now placed in the public domain for their feedback till **25th February, 2025 at email id: journal@ugc.gov.in**.

The stakeholders, including HEIs, faculty members, researchers, and students, may take note of it.

(मनिष जोशी)

बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002 | Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi-110002
दूरभाष (Ph.): 011-23236288/23239337 | सम्पर्क सूत्र (ई-मेल) (E-mail) : secy.ugc@nic.in

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय / लेखक	पृष्ठ स.
1.	भारतीय भाषाओं में शब्द समन्वय डॉ0 उमेश कुमार सिंह	9–13
2.	अनुसूचित जाति/जनजाति में शैक्षिक अवसरों की समानता डॉ0 भुपेन्द्र कौर	14–18
3.	ताकतवर सत्ता, कमजोर विपक्ष और निड़र साहित्यकार नागार्जुन। देवेन्द्र कुमार	19–21
4.	बाबा बिसु राउत की गौ सेवा मधु कुमारी, डॉ. पुष्पा कुमारी	22–25
5.	गढ़वाल हिमालय के लोकगीतों में अनुभूत ज्ञान व जीवन दर्शन डॉ0 डी0एस0 भण्डारी	26–28
6.	पत्रकारिता के क्षेत्र में अज्ञेय जी का योगदान डॉ0 उर्मिला कुमारी	29–31
7.	भारतीय ज्ञान परंपरा में श्रीरामचरितमानस की महत्ता दीपिका व्यास	32–36
8.	कोरोना काल की कविताएँ डॉ० बाबू जोसफ	37–39
9.	भारतीय संस्कृति और समाजः रामचरितमानस के विशेष संदर्भ में निक्की कुमारी	40–43
10.	सामाजिक चेतना की सकारात्मक भूमि पर पुष्पित शुभ्र काव्य वल्लरीः 'उजाले की ओर' प्रो० डॉ० एस० एल० गोयल	44–46
11.	रस, उसका स्वरूप और रसात्मक बोध रोहित केरकेट्टा	47–48
12.	राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारी समस्याएँ ऋतु रत्नम	49–56
13.	भारत में माइक्रोफाइनेंस Dr. Saneh Yadav (Principal)	57–60
14.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय भाषाएं डॉ0 मुकेश कुमारी	61–62
15.	समकालीन हिंदी उपन्यासों में सांप्रदायिक समस्याएं डॉ0 पुष्पा रानी	63–66
16.	संस्मरणकार महादेवी सुभद्रा के साथ डॉ0 दीनदयाल	67–69
17.	भारतीय कृषि : विकास प्रवृत्तियां, धीमी वृद्धि के कारण और भविष्य की चुनौतियाँ डॉ० भूपेंद्र	70–75
18.	डिजिटलिकरण से ग्रामीण विकास (राजस्थान के टोंक जिले के सन्दर्भ में शोध अध्ययन का विश्लेषण) डॉ0 निमिशा गौड़	76–81
19.	सामाजिक उत्थान : हिन्दी साहित्य की भूमिका डॉ0 सुनीता रानी	82–83
20.	प्रकृति की सुरक्षा हमारा कर्तव्य डॉ0 अनु	84–87
21.	विवाह एक धार्मिक संस्कार बनाम लिव इन रिलेशनशिप अधार्मिक आचरण डॉ0 ममता	88–91
22.	उर्मिला शिरीष की कहानी रंगमंच में व्यक्त सामाजिक चेतना पल्लवी पंडा	92–94
23.	गणित शिक्षा में नवाचार और शिक्षक की भूमिको मधुबाला	95–99

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय / लेखक	पृष्ठ स.
24.	जयशंकर प्रसाद की कहानियों के नारी चरित्र प्रसाद के कथा साहित्य का परिपार्श्व डॉ0 लता कुमारी	100–102
25.	भारतीय लोकनाट्य : कलात्मक एवं सांस्कृतिक वैविध्य डॉ0 अंकिता उपाध्याय	103–107
26.	संख्या पद्धति का इतिहास एवं गणितज्ञों का योगदानः– मधुबाला	108–112
27.	विकसित भारत 2047ः एक संकल्प और चुनौतियां डॉ0 गिरिराज सिंह	113–117
28.	ज्यामिति का परिचय एवं प्रमुख शाखाएं :– मधुबाला	118–120
29.	नागार्जुन के काव्य में व्यंग्य डॉ0 सुनीता रानी	121–122
30.	आलोचक रोहिणी अग्रवाल के साहित्य चिंतन में भारतीय एवं पाश्चात्य संदर्भ : स्त्री आंदोलन डॉ0 अनिल कुमार, रश्मि	123–127
31.	डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक के कहानी संग्रह 'मेरे संकल्प में मानवीय मूल्य' सुनीता	128–131
32.	सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया : एक महान योद्धा और कुशल नेतृत्वशील व्यक्तित्व डॉ0 अजय कुमार	132–133
33.	Contribution of Education in Human and Civil Rights Dr. Luxmi Mishra	134–137
34.	An Impact of Higher Education Institutions in boosting Entrepreneurship Ecosystem Hansa Verma, Dr. Sarina Asif	138–143
35.	An Overview Of Welfare Schemes Promoting Women's Empowerment In India Dr. Neha Sharma, Dr. Pooja Gupta	144–148
36.	The Survival of Creative Disciplines in the age of Artificial Intelligence(AI) Dr. Ruchi Arora, Dr. Sonam Arora	149–152
37.	"The impact of Digital Innovation on the Accessibility of Mutual Funds in a Globalized Economy" Dr.Anju Gupta, Ms. Sonia Gupta	153–156
38.	Significance Of The Knowledge Of Individual Differences Prof. Raj Kumari Singh	157–159
39.	Digital Storytelling in Tourism: Engaging Travelers with AI and Social Media Dr. Sarika Saini, Dr. Lalita Dhingra	160–162
40.	Social Exclusion and Schooling in India Dr. ShwetaTripathi	163–169
41.	Factors Determining CO^2 Emission in BRICS Economies: Panel GLS Regression Analysis Mukesh Bala[1] and Shalini Malik[2]	170–176

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय लेखक	पृष्ठ स.

42. The Role of Social Media in Shaping Millennials' Online FMCG Buying Decisions: A Qualitative Study — 177—179
Pooja

43. Emoji as a New Mode of Communication: Evolution or Degradation of Language? — 180—182
Dr. Sunita Yadav

44. Voices Of Resistance In Anita Nair's Mistress — 183—187
Jyoti Jaiswal, Dr. Sunita Rai

45. Navigating Youth Identity and Socio-Political Challenges in Chetan Bhagat's The Three Mistakes of My Life — 188—192
Dr. Poonam Rani

46. Assessing Profile, Problems And Knowledge Of Nutrition Among Rural And Urban Anganwadi Workers — 193—195
Ajit Vishwakarma

47. Globalization of Retail Industry through AI: A Case Study of Amazon Go Stores — 196—200
Dr. Bindu Roy, Ms. Shikha Raghav

48. Love Waves In A N-layered Self-reinforced Transversely Isotropic Medium — 201—205
Dr. Anita Sehrawat

49. Mental Health Implications of Internship Programs Under NEP 2020 Among Physical Education Trainees — 206—207
Dr Rambir Singh

50. शब्दशक्ति — 208—211
डॉ0 सुमन कुमारी, डॉ0 रामजी मेहता आदर्श

51. विकसित भारत में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) की भूमिका — 212—215
डॉ0 हिमांशु कुमार

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय लेखक	पृष्ठ स.

1 भारतीय भाषाओं में शब्द समन्वय

डॉ0 उमेश कुमार सिंह,

सारांशः

विश्व में भारत की पहचान बहु–भाषीय और बहु–संस्कृति वाले देश के रूप में की जाती है। आज भारत में जितनी मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं, भारत की उतनी ही संस्कृतियां भी हैं। संविधान में प्रथमतः मूल रूप में इस सूची में 14 भाषाओं को स्थान दिया गया था किन्तु उसके बाद भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त 22 भाषाएँ हैं जिनमें हिंदी, संस्कृत, उर्दू, बंगाली, असमिया, मैथिली, बोड़ो, संथाली, डोगरी, कोंकणी, मराठी, गुजराती, उडिया, मलयालम, तेलगू, कन्नड, तमिल, कश्मीरी, मणिपुरी, नेपाली, पंजाबी, एवं सिंधी आदि भाषाएँ हैं। इन सभी भाषाओं की शब्दावली का आपसी तालमेल जैसा भारत में परिलक्षित नहीं होता है वैसा विश्व के किसी भी देश की भाषाओं में परिलक्षित नहीं होता है। इस शोध पत्र में भारत की दक्षिण की भाषाओं में तमिल , मलयालम, तेलगू, एवं कोंकणी, के अतिरिक्त हिंदी, संस्कृत, मराठी, पालि, भाषाओं की शब्दावली का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।

प्रमुख शब्द / key words:– सम्प्रेषण–Communication बानी / वाणी, स्ंदहनंहम, परिष्कृत–Refined, पाली भाषा– Pali स्ंदहनंहम, मराठी भाषा– Marathi Language, तमिल भाषा–Tamil Language, मलयालम भाषा–Malayalam Language, कौंकणी भाषा– konkani स्ंदहनंहम, एवं तेलगू भाषा–Telagu स्ंदहनंहम, संस्कृति भाषा–Sanskrit Language.

शोध प्रविधि / Research Methodology:– इस शोध पत्र लिखने और अंतिम लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए आलोचनात्मक, समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

भाषा मनुष्यों के बीच सामाजिक संपर्क स्थापित करने का महत्वपूर्ण साधन ही नहीं है बल्कि भाषा को मनुष्यों के बीच सम्प्रेषण करने का महत्वपूर्ण साधन भी माना जाता है। भारत देश की सभी भारतीय भाषाएँ समान हैं एवं सभी भाषाएँ आपस में बहनों की तरह हैं क्योंकि सभी भारतीय भाषाओं के शब्द एक दूसरी भाषा में सदियों से प्रयोग किए जाते रहे हैं। भारत में 'कोस कोस पर बदले पानी, बारह कोस पर बानी'। बदल जाने की कहावत बहुत प्रसिद्ध है। चीन में तो चीनी भाषा के अनेक डायलेक्ट / उचारण हैं। चीनी भाषा चित्र लिपि पर आधारित होने के कारण 2200 शब्दों से ही भाषा विस्तार पाती है। उच्चारण की भिन्नता के कारण एक प्रांत की जनता को दूसरे प्रांत के जनता की बात को समझने में बहुत सी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है फिर भी मंडारिन भाषा (चीनी भाषा) को एक माना जाता है। वैज्ञानिकों के एक समूह द्वारा एक अध्ययन बंदरों पर किया गया। जिसमें शेर / चीता / तेंदुआ आ गया और शेर / चीता / तेंदुआ चला गया। बंदरों की इस आवाज को बहुत प्रयासों के बाद टेप किया गया। उसके बाद टेप की गई आवाज का परीक्षण पुनः जंगल में जाकर किया गया। शेर आ गया की आवाज को सुनकर सभी बंदर पेड़ पर चढ़ गए। उसके बाद सभी एक दूसरे को देखने लगे। उसके कुछ देर बाद– शेर चला गया की, आवाज को बंदरों के बीच पुनः परीक्षण किया गया। सभी बंदर पुनः पेड़ से नीचे आ गए किन्तु फिर से बंदर एक दूसरे की ओर देखने लगे। इस परीक्षण के बाद में पशु पक्षियों की आवाज को भाषा मानना उचित प्रतीत होता है।

'केचिदिवा तथा रात्रौ प्राणिस्तुल्यदृष्ट्यः। ज्ञानिनो मनुजा सत्यं किं तु ते न हि केवल।।४६।।

यतोहि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः। ज्ञानं च तस्य मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम'।।५०।। 1 दुर्गासप्तशती श्लोक क्रमांक 49–50, पृष्ठ सं 226 (यह ठीक है कि मनुष्य समझदार होते हैं तथा ज्ञानी होते हैं किन्तु केवल वही ऐसे नहीं होते हैं। पशु, पक्षी, मृग आदि सभी प्राणी समझदार होते हैं मनुष्य की समझ भी वैसी ही होती है जैसे उस मृग और पक्षियों की होती है)

भाषाविज्ञानी और संस्कृत आचार्यों में मतैक्य है। वे सभी पशुओं की आवाज को भी उनकी भाषा मानते हैं। ज्ञानिनो भाषा विज्ञानियों द्वारा पशुओं की भाषा को भी भाषा स्वीकारना मुझे अतिशयोक्ति नहीं लगता है किन्तु मुझे आज एक शाश्वत सत्य सा प्रतीत होता है। भाषा का विकास समाज में होता है। वह समाज से संपृक्त होती ही नहीं है बल्कि वह समाज को प्रभावित भी करती है। समाज उससे जुड़ा होता है और भाषा समाज के भीतर होती है। इसलिए विश्व के सभी समाजों में मनुष्यों की भाषा परिष्कृत एवं श्रेष्ठ मानी जाती है।

भाषा को इस प्रकार भी समझा जा सकता है। भाषा एक ही समय में, अथवा एक समाज में, अनेक भाषाएँ बोली अथवा समझी जा सकती हैं। भाषाओं में कई बोलियों, उप बोलियों तथा उप–भाषाएँ शामिल हो सकती हैं और सब बोलियाँ मिलकर एक भाषा का निर्माण करती हैं जैसे हिंदी से ब्रज, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, मैथिली, कौरवी, भोजपुरी, बिहारी, खड़ी बोली आदि भाषाएँ आपस में जुड़ी हुई हैं। सभी

भाषाएँ मिलकर हिंदी भाषा का निर्माण करती हैं। इनका शब्द भंडार लगभग एक ही समझा जा सकता है। यहाँ मात्र उच्चारण में भेद परिलक्षित होता है। पाली, मराठी, कौंकणी, गुजराती आदि भाषाओं की अधिकांश शब्दावली भी मिलती जुलती सी प्रतीत होती है किन्तु तमिल, मलयालम, एवं तेलगू भाषाओं की शब्दावली में संस्कृति भाषा की शब्दावली के कारण अतिनिकटता परिलक्षित होती है।

हिंदी भारत के मध्य क्षेत्र में बोली जाती है। यह भाषा बहुत विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई है। भारतीय संविधान में हिंदी भाषा को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। विद्वान हिंदी भाषा के शब्दों को संस्कृत के सिंधु शब्द से संबन्धित मानते हैं तथा सिंधु शब्द ईरान में जाकर हिन्द हो गया और धीरे–धीरे इस शब्द का प्रयोग व्यापक रूप से पूरे भारत वर्ष में होने लगा। यह माना जाता है। मराठीरू दक्षिणी क्षेत्र की प्रमुख भाषा है और महाराष्ट्र में बोली जाती है। इसकी कई बोलिया प्रचलित हैं। विद्वानों के अनुसार 65 से 70 प्रतिशत बोलियाँ तक इसमें मिलती हैं। कौंकणी भी यहाँ एक प्रमुख भाषा है।

हिंदी भाषा की श्रेष्ठता एवं शक्ति और अंग्रेजी भाषा की शब्द अल्पता का आपके सामने एक उदाहरण प्रस्तुत कराते हुये बहुत हर्ष हो रहा है कि – अंग्रेजी भाषा में / म्दहसपी– में एक थ्पछम = शब्द है। इसी शब्द पर बात करते हैं। थ्पदम–1. ींज ं पिदम बसवजी / क्या शूक्ष्म कपड़ा है। 2. ींज ं पिदम उंद / क्या भला आदमी है। 3. ींज ं पिदम ीवज / क्या जोरदार शॉट / छक्का / मारा है। थ्पदम / फ़ाइन का हिंदी में अर्थ = जोरदार, शानदार, धुआंधार, जुर्माना, दंड, अच्छा, सुंदर बढ़िया, सूक्ष्म, ठीक, परिष्कृत, सही, आदि अनेक (12) शब्द मिलते हैं। इसे हिंदी भाषा और भारतीय भाषाओं की शब्द शक्ति कह सकते हैं। भारतीय भाषाएँ एक दूसरे से इतनी मजबूती से जकड़ी हुई अथवा नजदीकी से आपस में जुड़ी हुई हैं कि उन्हें प्रथक / अलग नहीं किया जा सकता है। यों कहें कि भारतीय भाषाओं को किसी भी हालत में अलग नहीं किया जा सकता हैं। इसका महत्वपूर्ण कारण निम्न बिन्दुओं पर आधारित हो सकता है।

1. भाषा को प्रवास करने के लिए पारपत्र / च्cवतज की आवश्यकता नहीं होती है।

2. भाषा का विकास प्रयोगशाला में नहीं बल्कि प्रयोग के द्वारा खुले आसमान और मनुष्यों के प्रयोग पर निर्भर होता है।

3. हिंदी भाषा एवं भारतीय भाषाएँ केवल भाषा और साहित्य तक सीमित नहीं हैं बल्कि भारत में प्रत्येक भाषा की एक अलग संस्कृति होती है। हिंदी भाषा की भी एक अलग संस्कृति है। भारत में संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त जितनी भाषाएँ हैं उन सभी भाषाओं की अलग–अलग संस्कृतियां हैं। हिंदी भाषा, मराठी भाषा, कोंकणी भाषा, पाली भाषा, तमिल भाषा एवं मलयालम भाषा आदि की अलग–अलग संस्कृतियां हैं। अँग्रेजी भाषा बोलने वालों की भी अलग संस्कृति होती है।

मराठी भाषा एवं हिंदी भाषा की शब्दावली में शब्दों की समानता एवं निम्न प्रकार देखी जा सकती है।

क्रम संख्या मराठी भाषा के शब्द ग्रामीण हिंदी भाषा के शब्द हिंदी भाषा के शब्द

1	थांबा	थमजा	रुकजा
2	माणुष	माणस	मनुष्य
3	पशु	पशु	जानवर
4	पहिया	चाक	चक्र
5	पाय	पाव	पैर
6	कुटुम्ब	कुटुम्ब	कुटुम्ब
7	बाहेर	परे	बाहेर
8	पाहुणा	पाहुणा	मेहमान
9	नवा	नवा	नया
10	पाणी	पाणी	पाणी
11	पन्नास	पचास	पचास

इस शोध तालिका में मराठी भाषा के 11 साधारण शब्दों को लिया है जिनका प्रयोग हिंदी में नित्यप्रति अथवा दैनिक आवश्यकता अनुसार किया जाता है जिन्हें मराठी और हिंदी भाषा में आम जनता प्रयोग करती है।

कोंकणी भाषा रू हिंदी भाषा रू– कोंकणी भाषा और हिंदी भाषा के शब्दों में अतिनिकटता प्रदर्शित करने वाले शब्द इस प्रकार परिलक्षित होते हैं।

क्रम संख्या	कोंकणी भाषा के शब्द	हिंदी भाषा के शब्द	क्रम संख्या	कोंकणी भाषा के शब्द	हिंदी भाषा के शब्द
1	माय (ईसाई समाज में अधिकतर बोला जाता है)	माता	8	भायर	बाहर
2	मेज	मेज	9	मितकुट	अचार
3	फीता	फीता	10	रोटी	रोटी
4	पांव	पांव	11	चादर	चादर
5	पाव	पाव	12	कमर	कमर
6	कमीज	कमीज	13	गाजर	गाजर
7	काजू	काजू	14	आई (ब्राह्मण लोग बोलते हैं किन्तु यह शब्द मराठी से लिया गया है)	माता

इस शोध तालिका में कोंकणी भाषा के 13 साधारण शब्दों को लिया है जिनका प्रयोग हिंदी में नित्यप्रति किया जाता है। जिन्हें कोंकणी और हिंदी भाषा में आम जनता नित्यप्रति एवं दैनिक आवश्यकता के अनुसार प्रयोग करती है।

कोंकणी भाषा और हिंदी भाषा के कुछ सुंदर वाक्यों में समानता एव

निकटता देखी जा सकती है।

कोंकणी साधारण वाक्य रचना हिंदी की साधारण वाक्य रचना हिंदी एवं कोंकणी भाषा का संबंध

मक माफ कोर मुझे माफ करो निकट / सामीप / नजदीक

आंव उपकार मानतों मांतो मैं आपका उपकार मानता हूँ। निकट / सामीप / नजदीक

बरे शिक्षण केले अच्छी शिक्षा प्राप्त की है। निकट / सामीप / नजदीक

तुम्ही देव बरे करो भगवान आपका भला करे। निकट / सामीप / नजदीक

खबर ना पता नहीं है। मालूम नहीं है। निकट / सामीप / नजदीक

दिसत ना दिखाई नहीं देता है। निकट / सामीप / नजदीक

आभार मांतों मैं आपका आभारी हूँ। मैं आपका आभार मानता हूँ। निकट / सामीप / नजदीक

पालि भाषा रू हिंदी भाषा रू– पालि और हिंदी भाषा के शब्दों में अतिनिकटता प्रदर्शित करने वाले शब्द इस प्रकार परिलक्षित होते हैं ।

क्रम संख्या	पालि भाषा के शब्द	हिंदी भाषा के शब्द	क्रम संख्या	पालि भाषा के शब्द	हिंदी भाषा के शब्द
1	सींह	सिंह	7	सर	तालब
2	वधू	बहू	8	पाद	पैर
3	वाम	स्त्री	9	गतो	बीता हुआ
4	जरा	जीर्ण (बूढ़ा)	10	कपि	बंदर
5	दधि	दही	11	बनिता	स्त्री
6	तम	अंधेरा	12	सुरा	शराब

इस शोध तालिका में पालि भाषा के 12 साधारण शब्दों को लिया है जिनका प्रयोग हिंदी में नित्यप्रति अथवा आवश्यकता के अनुरूप किया जाता है जिन्हें पालि में और आज हिंदी भाषा में आम जनता नित्यप्रति प्रयोग करती है।

पालि भाषा रू संस्कृत भाषा रू– पालि और संस्कृत भाषा के शब्दों में अतिनिकटता प्रदर्शित करने वाले शब्द इस प्रकार परिलक्षित होते हैं।

क्रम संख्या	पालि भाषा के शब्द	संस्कृत भाषा के शब्द	क्रम संख्या	पालि भाषा के शब्द	संस्कृत भाषा के शब्द
1	गहन	ग्रहण	14	छेद	छिद्रः
2	गाहक	ग्राहकः	15	बाघ	व्याघ्रः
3	गाम	ग्रामः	16	सोत	श्रोतः
4	कोध	क्रोधः	17	नहान	स्नानम
5	सामी	स्वामी	18	मोर	मयूरः
6	आम्ब	आमः	19	चंदा	चंद्रमा
7	छमा	क्षमाः	20	अहिंकार	अहंकारः
8	ससुर	श्वसुरः	21	ब्रहमण	ब्राह्मणः
9	जेठ	ज्येष्ठः	22	रात	रात्रिः
10	होट	ओष्ठः	23	सिंगार	शृंगारः
11	थन	स्तनः	24	गांठ	गांठिः
12	थान	स्थानः	25	जोत	ज्योतिः
13	पोखर	पुष्करः	26	भीख	भिक्षाः

इस शोध तालिका में पालि भाषा के 26 साधारण शब्दों को लिया है इन शब्दों का प्रयोग पालि में अधिकांशतः किया जाता है किन्तु आज पालि और संस्कृत के साथ–साथ आज हिंदी भाषा में साधारण जनता नित्यप्रति प्रयोग करती है।

मलयालम भाषा रू हिंदी भाषारू मलयालम भाषा और हिंदी भाषा के शब्दों में अतिनिकटता प्रदर्शित करने वाले शब्द इस प्रकार देखे जा सकते हैं।

क्रम संख्या	मलयालम भाषा के शब्द	हिंदी भाषा में शब्द	क्रम संख्या	मलयालम भाषा के शब्द	हिंदी में भाषा शब्द
1	भाषा	भाषा	8	रहस्य	रहस्य
2	दिवसम	दिवस	9	दुखम	दुख
3	अहंकारम	अहंकार	10	संतोषम	संतोष
4	मूल्य	मूल्य	11	शब्द	शब्द
5	अम्मा	अम्मा	12	शरीरम	शरीर
6	विशालतम	विशाल	13	सहाय	सहायता
7	जीवन	जीवन			

इस शोध तालिका में मलयालम भाषा के 13 साधारण जीवन यापन संबंधी शब्दों को चुना गया है। इनका प्रयोग मलयालम भाषा भाषी जनता अधिकांशतः प्रयोग करती है। इन शब्दों का मलयालम भाषा भाषी और हिंदी भाषी साधारण जनता नित्यप्रति प्रयोग किया करती है।

तमिल भाषा रू हिंदी भाषारू तमिल भाषा और हिंदी भाषा के शब्दों को प्रयोग करने वाली जनता के बीच में इन शब्दों का अधिकतम प्रयोग करती है। इन दोनों भाषा भाषी लोगों में अतिनिकटता प्रदर्शित करने वाले शब्द इस प्रकार देखे जा सकते हैं।

क्रम संख्या	तमिल भाषा के शब्द	हिंदी भाषा में	क्रम संख्या
	तमिल भाषा के शब्द	हिंदी भाषा में	
1	आरती (आरती)	आरती (सभी भारतीय भाषाओं में)	9

उपकरम उपकार

2	अम्मा	मां	10	अपकारम	अपकार
3	ग्रामम (तमिल उः)	ग्राम	11	संदेहम	संदेह
4	लाभम	लाभ	12	अधिकारम	अधिकार
5	नष्टम	नष्ट	13	अधिकारी	अधिकारी
6	कष्टम	कस्ट	14	वर्षाम	वर्षा
7	अवसरम	अवसर	15	कालम	काल
8	मुत्त (तमिल)	मोती	16	मीन (तमिल)	मीन

उपर्युक्त शोध तालिका में तमिल भाषा के 16 साधारण जीवन यापन संबंधी शब्दों को चुना गया है। इन शब्दों का प्रयोग तमिल भाषा में अधिकांशतः मिलता है। इन शब्दों को तमिल भाषी और हिंदी भाषी साधारण जनता नित्यप्रति प्रयोग करती है। तमिल और सभी भारतीय भाषाओं में अम्मा और आरती शब्द अधिकांश भारतीय भाषाओं में प्रयोग किए जाते है। तमिल भारत की एक ऐसी भाषा है। इसमें संस्कृत भाषा के शब्द को अधिकांशतः प्रयोग किया जाता है किन्तु इसके अतिरिक्त तमिल भाषा में तमिल भाषा के लगभग प्रत्येक शब्द के लिए अपने अलग शब्दों का भंडार भी मिलता हैं।

तेलगू भाषा रू हिंदी भाषारू तेलगू भाषा और हिंदी भाषा के शब्दों में घनिष्ठता / निकटता प्रदर्शित करने वाले शब्द इस प्रकार देखे जा सकते हैं।

क्रम संख्या	तेलगू भाषा के शब्द	हिंदी भाषा में			
क्रम संख्या	तेलगू भाषा के शब्द	हिंदी भाषा में			
1	आरती	आरती	11	नरक	नरक
2	मीन	मछली	12	ज्ञानी	ज्ञानी / बुद्धिमान
3	नीरु	पानी	13	अज्ञानी	अज्ञानी
4	मुत्तु	मोती	14	दास(पत्नी का गुलाम)	दास
5	नदी	नदी	15	अव्वा,ताई,अम्मा	
6	सुंदर	सुंदर / सुंदरी	16	वधू	वधू, दुल्हन
7	समुंदर / दरिया	समुद्र	17	ग्राम / उः	ग्राम
8	स्वर्ग	स्वर्ग	18	काल	समय
9	संगीत	संगीत	19	महिले / स्त्री	औरत / स्त्री
10	आजी	मांता	20	आजा	पिता

उपर्युक्त शोध तालिका में तेलगू भाषा के 20 साधारण जनता द्वारा जीवन यापन करने संबंधी शब्दों को चुना गया है इन शब्दों का प्रयोग तेलगू भाषा भाषी जनता में अधिकांशतः प्रयोग किया जाता है। इन शब्दों को तेलगू भाषी और हिंदी भाषी जनता हिंदी भाषा में नित्यप्रति प्रयोग करती है। तेलगू और सभी भारतीय भाषाओं में अम्मा और आरती शब्द अधिकांशतः भारतीय भाषाओं में प्रयोग किया जाता है। तेलगू एक ऐसी भाषा है जिसमें संस्कृत के शब्दों को भी तेलगू भाषा में धड़ल्ले से प्रयोग किया जाता है किन्तु इसके अतिरिक्त भी बहुत सीमित मात्र में तेलगू भाषा का अन्य भाषाओं में प्रयोग भी किया जाता है।

निष्कर्षः— इस शोध पत्र में हिंदी भाषा, मराठी, हिंदी भाषा, पालि और कोंकणी भाषा और हिंदी भाषा, पाली और संस्कृत भाषा, मलयालम और हिंदी भाषा, तमिल भाषा और हिंदी भाषा एवं तेलगू भाषा और हिंदी भाषा के आम बोलचाल के शब्दों को लेकर कार्य करने का प्रयास किया है। इन भाषाओं की शब्दावली के आधार पर हिंदी और भारतीय भाषाओं के बीच प्रेम, सोहाद्र, घनिष्ठता को स्थापित करने का प्रयास मात्र किया है। अंत में अपने शोध पत्र को अमीर खुशरो के उदाहरण के साथ समाप्त करना चाहता हूँ। अमीर खुशरो एक बार एक कुएँ पर प्यास से व्याकुल होकर पानी पीने के लिए पहुंचे। कुएँ की जगत / पार पर चार स्त्री पानी भर रही थीं। वे बाबा खुशरो से पूर्व परिचित थी। वे सभी बाबा से कुछ सुनने के लिए निवेदन / आग्रह करने लगीं। अमीर खुशरो ने उन चारों स्त्रियॉं से उनकी इच्छा पूंछी। एक खीर बनाकर आई थी, उसने खीर पर सुनाने को कहा। दूसरी स्त्री की सास (डवजीमत पद सं) चरखा कात रही थी, उसने चरखा पर सुनाने के लिए कहा। तीसरी स्त्री के साथ कुत्ता आया था, उसने कुत्ता पर सुनने के लिए कहा। चौथी ढोलक बजाकर आई थी, उसने ढोलक पर सुनाने को कहा।

बाबा अमीर खुसरो ने सभी की इच्छा की पूर्ति करते हुए उनका उत्तर इस प्रकार था :—

खीर बनाई जतन से, चरखा दयो चलाय,
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढ़ोल बजाय।
चल आ तू पानी पिलाय।।

निष्कर्षः

भारतीय भाषाओं की उपर्युक्त शब्दावली एवं उनके परस्पर तुलनात्मक, समीक्षात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन द्वारा स्पष्ट होता है। भारतीय भाषाओं में परस्परिक संबंध एवं अभूतपूर्व प्रेम परिलक्षित होता है। इस अनूठे प्रेम, दिलचस्प प्रेम, स्नेह, दुलार, लचक, सौहद्र, निकटता और समरसता को इसका कारण माना जा सकता है। हम इसे भारतीय भाषाओं में गंगा जमुन तहजीब, और दोआब की संस्कृति का असर मान सकते हैं। तभी तो भारत की स्वतन्त्रता पूर्व से आज तक हिंदी भाषा के शब्द कम और अधिक, थोड़े बहुत अंतर के साथ मराठी भाषा और हिंदी भाषा, पालि भाषा और हिंदी भाषा, पालि भाषा और संस्कृत भाषा, कोंकणी भाषा और हिंदी भाषा, मलयालम भाषा और हिंदी भाषा, तमिल भाषा और हिंदी भाषा एवं तेलगू भाषा और हिंदी आदि में बेधड़क शब्दों का निरंतर प्रयोग किया जा रहा है और आने वाली अंतहीन सदियों तक इन शब्दों का प्रयोग किया जाता रहेगा।

संदर्भः

1. दुर्गासप्तशती श्लोक क्रमांक 49—50, पृष्ठ सं 226
2. आचार्या राम चंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास,
3. नगेन्द्र डॉ सं. हिंदी साहित्य का इतिहास,
4. व्यक्तिगत अनुसंधान, केरल, गोवा एवं महाराष्ट्र में कार्य करते हुए।
5. मार्कन्डेय पुराण, दुर्गाशप्तशती, प्रथम अध्यायः 49—50 पृष्ठ सं 66
6. शोध पत्र तैयार करने के लिए गोवा, केरल, तमिलनाडु और महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में कार्य करते हुये छात्र—छात्राओं, बाजार एवं ग्रामीण क्षेत्रों आदि का अध्ययन और भ्रमण करने के साथ—साथ 1 संस्कृत, 2 मराठी, 3 कोंकणी, 4 पालि, 5 मलयालम, 6 तमिल एवं तेलगू आदि भाषा बोलने वाले लोगों से संवाद करने के साथ एवं भाषा विशेषज्ञ विद्वानों की भी चर्चा की गई है।

डॉ० उमेश कुमार सिंह
एसोशिएट प्रोफेसर,
हिंदी साहित्य विभाग, साहित्य विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
गांधी हिल्स, वर्धा—442001, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाषः +91—9423307797,
ई—मेलः umesh&jnu@rediffmail.com

2

अनुसूचित जाति/जनजाति में शैक्षिक अवसरों की समानता

डॉ0 भुपेन्द्र कौर

सारांश–

शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य है। शिक्षा मनष्य को जीवन जीने योग्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास होना है। शिक्षा राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक विकास की धुरी है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में विचार करने तर्क–वितर्क करने के साथ–साथ निर्णय लेने की क्षमता का विकास तथा जीवन यापन करने की कला का विकास होता है। जिस प्रकार माता बच्चे की प्रथम गुरू होती है उसी प्रकार परिवार बच्चे की प्रथम पाठशाला होती है। जन्म के समय बच्चे का मस्तिष्क कोरी स्लेट के समान होता है। वातावरण के सम्पर्क में उसका मस्तिष्क ज्ञान से अंकित होता है, तथा पारिवारिक वातावरण का प्रभाव भी उसमें दिखाई पडने लगता है।

अनुसूचित जाति तथा जनजाति में पलने वाले बालक अपनी संस्कृति और धार्मिक क्रियाकलापों को अपनाता है लेकिन अन्य परिवार के बालक जिस प्रकार के वातावरण में रहता है। एक व्यावसायिक वातावरण में पलने वाला बालक व्यवसाय में रूचि लेता है उसी प्रकार एक नौकरशाह परिवार में पलने वाला बालक नौकरशाही को अपनाता है। जिस बालक का पारिवारिक वातावरण दूषित होता है, अधिकतर ऐसे परिवारों के बालक अपराध की तरफ मुड जाते है। अनुसूचित जाति तथा जनजाति के कुछ अशिक्षित परिवार बच्चो के विकास को समझने में असमर्थ है एवं सही मार्गदर्शन न मिल पाने से ये बच्चे परिवार तथा समाज में समायोजन नही कर पाते। देखने में आया है कि ऐसे बच्चों को दूषित वातावरण मिलने से उनकी रूचि, उपलब्धि और उनके आकाक्षाँ स्तर पर भी प्रभाव पडता है।

प्रस्तावना–यह शोध पत्र वर्तमान समय में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के बच्चों की स्थिति को दर्शता है। ये दोनों समुदाय ऐसे है जिन्हें ऐतिहासिक और औपचारिक शिक्षा व्यवस्था से अलग रखा गया है। भारत में अनेक जातियों को शूद्र, अछूत, निम्न या दलित जातियों के नाम सम्बोधित किया जाता है, उन जातियों को भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजातियों का दर्ज दिया गया है। 1935 में भारत सरकार अधिनियम द्वारा पहली बार अनुसूचित जाति शब्द का प्रयोग किया गया। अनुच्छेद 341 में अनुसूचित जाति का उल्लेख किया गया। आकडों में पाया कि अनुसूचित जाति की जनसंख्या भारत की कुल जनसंख्या का 16.6 प्रतिशत है। जिसमें अनुसूचित जाति जनसंख्या का सबसे बडा भाग उत्तर प्रदेश में तथा मिजोरम में सबसे कम निवास करता है। 2011 की संख्या निम्न प्रकार से है–

अनुसूचित जातियाँ (Scheduled Castes)

- 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश, बिहार, तमिलनाडु और आन्ध्र प्रदेश में भारत की 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या निवास करती है।
- पश्चिमी बंगाल और उत्तर प्रदेश की जनसंख्या का 25 से 30 प्रतिशत प्रतिशत भाग अनुसूचित जातियों का है।

राज्य	अनुसूचित जातियों की जनसंख्या
उत्तर प्रदेश	35,148,377 (प्रथम स्थान)
पश्चिमी बंगाल	18,452,555 (द्वितीय स्थान)
बिहार	13,048,608 (तृतीय स्थान)

अनुसूचित जनजातियाँ (Scheduled Tribes)

- 2011की जनगणना के अनुसार भारत में अनुसूचित जनजातियों की संख्या 10,42,81,034 है, जो कि भारत की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत है लेकिन 2001 में यह भारत की कुल जनसंख्या का 8.2 प्रतिशत थी।
- इनमें से अनुसूचित जनजातियों के 9,38,19,162 लोग ग्रामीण परिवेश निवास करते है, 1,04,61,872 लोग शहरी परिवेश में निवास करते है। अनुसूचित जनजातियो की कुल जनसंख्या का 11.3 प्रतिशत ग्रामीण परिवेश एवं 2.8 प्रतिशत शहरी परिवेश में निवास करती है।
- अनुसूचित जनजातियों की गणना 2011 के आधार पर अनुसूचित जनजातियों का अधिकतम अनुपात वाले राज्य और केन्द्र शासित प्रदेश घटते क्रम में निम्न तालिका द्वारा दर्शाया गया है।

राज्य	अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या (प्रतिशत) में
लक्षद्वीप	94.8
मिजोरम	94.4
नागालैंड	86.5
मेघालय	86.1
अरूणाचल प्रदेश	68.8

- अनुसूचित जनजातियों की गणना 2011 के आधार पर अनुसूचित

जनजातियों का न्यूनतम अनुपात वाले राज्य और केन्द्र शासित प्रदेश बढते क्रम में निम्न तालिका द्वारा दर्शाया गया है।

राज्य	अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या (प्रतिशत) में
उत्तर प्रदेश	0.6
तमिलनाडु	1.1
बिहार	1.3
केरल	1.5
उत्तराखंड	2.9

- अनुसूचित जनजातियों की गणना 2011 के आधार पर देश की आबादी का कुछ भाग राज्योंवार निम्न तालिका द्वारा दर्शाया गया है।

राज्य	अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या (लाख में)	आबादी का कुल (प्रतिशत में)
मध्य प्रदेश	152.3	14.7
महाराष्ट्र	105.3	10.10
ओडिसा	95.9	9.20
राजस्थान	92.8	8.89
गुजरात	89.6	8.60
झारखंड	86.5	8.30
छत्तीसगढ	78.2	7.50

- 2011 की जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजातियों की साक्षरता दर 59 प्रतिशत जबकि सम्पूर्ण भारत की साक्षरता दर 72.99 प्रतिशत है।

राज्य तथा केन्द शासित प्रदेश	अनुसूचित जनजातियों की साक्षरता दर (प्रतिशत)	औसत
मिजोरम	91.7	सबसे अधिक
आन्ध्र प्रदेश	49.2	सबसे कम
लक्षद्वीप	91.7	केन्द शासित प्रदेशो में सबसे अधिक

अनुसूचित जातियो तथा अनुसूचित जनजातियों में साक्षरता दर काफी कम है, इन जातियों में पुरूशों के मुकाबले महिलाओं की साक्षरता दर काफी कम है।

नयी शिक्षा नीति, 1986 में यह स्वीकार किया गया कि इनके शैक्षिक विकास को योजनाबद्ध तरीके से प्रयत्न की आवश्यकता है।

अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति की शिक्षा की वर्तमान स्थिति

1981 की जनगणना के अनुसार अखिल भारतीय साक्षरता दर निम्न प्रकार से थी।

जतियाँ	कुल साक्षरता दर (प्रतिशत)	स्त्रियों की साक्षरता दर (प्रतिशत)
अनुसूचित जाति	21.38	10.93
अनुसूचित जनजाति	16.35	8.04
गैर–अनुसूचित जाति/जनजाति	41:20	29.43

अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के बच्चों के दाखिले तथा शिक्षा का अनुपात उनकी जनसंख्या के अनुपात की अपेक्षा काफी कम था तथा सभी स्तरों पर शिक्षा बीच में छोडने वालो की यह दर लगातार अधिक बनी हुई थी। इन जातियों की लडकियों के बारे में समस्या और भी गम्भीर है। इन परिस्थितियों में अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के शैक्षिक विकास के लिए योजनाबद्ध प्रयत्नों की आवश्यकता है।

नीति के उददेश्य तथा कार्य योजना की कठिनाइयाँ

अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के शैक्षिक विकास का मुख्य उददेश्य है उनका शिक्षा के सभी स्तरों पर गैर–अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के साथ बराबरी।

इस उददेश्य हेतु 1990 तक अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के आयु 6–11 कक्षा 1–5 तक के सभी बच्चों को विद्यालय में दाखिला, विद्यालय में उपस्थित रहने को सुनिश्चित करना ताकि वे प्रथम स्तर तथा अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से इसके समकक्ष शिक्षा को सन्तोषजनक ढंग से प्राप्त कर सके। इसका उददेश्य 1990 तक 6–11 वर्श की आयु के लगभग 1.55 लाख बच्चों तथा अनुसूचित जाति व जनजाति के 75 लाख बच्चों को स्कूली शिक्षा से जोडना अर्थात इनका स्कूल में दाखिला कराना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निर्धारित उददश्यो की प्राप्ति के लिए कम से कम 11–14 आयु वर्ग के कक्षा 5 से 8 तक में 75 प्रतिशत बच्चों को विद्यालय में दाखिला कराना होगा तथा उन्हें विद्यालय में बनाये रखना होगा ताकि वे कक्षा 8 तक की पढाई सन्तोषजनक तरीके से पूरी कर सकें।

उपरोक्त उददेश्यों की प्राप्ति के लिए कार्य योजना और कार्यान्वयन के लक्ष्य निम्नलिखित होगें–

(क) निर्धन परिवारों को बढावा देना ताकि वे अपने ताकि वे अपने 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेज सके।

अनुसूचित जाति व जनजाति के निर्धन परिवारों को बढावा या सहायता देने के लिए प्रोत्साहन स्कीम के ब्यौरे राज्य सरकारों के परामर्श से तैयार किये जायेगें।

- राज्य सरकार द्वारा पूर्ण रूप से दी जाने वाली या चलाई जाने वाली छात्रवृत्तियों का भुगतान समय के साथ निश्चित किया जाना।
- छात्रवृत्तियों की राशि उस महीने की पहली तारीख को जारी की जानी चाहिए जिस महीने से वह सम्बन्धित है। देरी से बचने के लिए छात्र के माता–पिता द्वारा दिये गये शपथ–पत्र के आधार पर नई छात्रवृत्तियाँ मंजूर की जायेंगी।
- छात्रवृत्तियाँ देने के लिए एक नोडल एजेन्सी निश्चित की जायेगी। राज्य सरकारों को यह कहा जायेगा कि वे एक महीने के अन्दर सम्पूर्ण ब्यौरा तैयार करें तथा तत्काल उनकी अदायगी करें।
- बैकों, डाकघरों अथवा डी. आर. डी. ए. अनुसूचित जाति व जनजाति निगमों जैसी एजेन्सियों के माध्यम से अदायगी पर भी विचार किया जायेगा।
- अनुसूचित जाति व जनजाति बच्चों के व्यापक दाखिले सुनिश्चित करने के विचार से छात्रवृत्ति की दर और मात्रा को बढाया जाए ताकि उन्हें सहायता मिल सके।
- अनुसूचित जाति व जनजाति के पात्र शत–प्रतिशत बच्चों को शामिल किया जाना चाहिए।
- भारत सरकार (कल्याण मन्त्रालय) द्वारा प्रदान की जा रही मैट्रिक छात्रवृत्तियों के शीघ्र भुगतान को सुनिश्चित करने के लिए पूर्व–मैट्रिक छात्रवृत्तियों के लिए उपरोक्त रूपरेखा के अनुसार उपाय किये जायेंगे।
- छात्रवृत्तियों की दरों में संशोधन के लिए कल्याण मन्त्रालय द्वारा सथापित उच्च स्तरीय समिति द्वारा अन्तिम निर्णय किये जाने के पश्चात् मैट्रिकोत्तर छात्रवृत्तियों के समाधान में वित्तीय प्राक्कलन तैयार किये जायेंगे।
- वर्दियों, पुस्तकों, लेखेन सामग्री आदि के रूप में प्रोत्साहनों की योजना के बारे में विस्तृत वित्तीय प्राक्कलन राज्य सरकारों द्वारा तैयार किये जाने चाहिए और उनका कारगर ढंग से कार्यान्वयन किया जाना चाहिए।

(ख) सफाई, चर्म शोधन आदि जैसे व्यवसाय में लगे परिवारों के बच्चों के लिए मैट्रिक पूर्व छात्रवृत्तियाँ।

- इस स्कीम में 1986–87 से प्रारम्भ होने वाले शैक्षिक वर्श से कक्षा 1 और उससे आगे के सभी बच्चों को शामिल करने के लिए कल्याण मन्त्रालय आवश्यक कदम उठायेगा। यह योजना अब तक कक्षा 6 से 10 तक के छात्रों तक सीमित है। आय–सीमा को समाप्त कर दिया जायेगा।
- इस स्कीम का लाभ दिन मे पढने वाले छात्रों को भी दिया जायेगा।

(ग) यह सुनिश्चित करने के लिए कि अनुसूचित जाति व जनजाति के छात्रों का स्कूल में दाखिला, उन्हें स्कूल में बनाये रखने तथा उनके द्वारा पाठ्यक्रमों को पूरा करने में किसी भी स्तर पर गिरावट न आए लगातार तथा जाँच की जायेगी।

- सूक्ष्म आयोजना में एक निश्चित समयावधि के दौरान ग्रामीण तथा खण्ड स्तर की विस्तृत योजनाओं को तैयार करना, शैक्षिक ढाँचा तैयार करना और कमियों को दूर करना। शिक्षकों, माता–पिता, स्थानीय नेताओं, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से माता–पिता को बच्चों को स्कुल भेजने के लिए सहमत करने के वास्ते ग्रामीण स्तर पर विस्तार कार्य योजना और सभी स्तरों पर अतिरिक्त शिक्षण का प्रावधान और अनुसूचित जातियों व जनजातियों के छात्रों को व्यावसायिक पाठ्यक्रम के लिए तैयार करने के वास्ते कक्षा 10 व 12 में विशेश शिक्षण।

(घ) अनुसूचित जाति व जनजाति के शिक्षको की भर्ति–

- वर्तमान अन्तर को समाप्त करने के लिए अनुसूचित जाति व जनजाति के अध्यापकों की नियुक्ति करने करने के लिए एक त्वरित कार्यक्रम शुरू किया जायेगा ताकि एक शिक्षक वाले स्कूलों में शिक्षकों की कमी पूरी की जा सके। विशेशकर महिला शिक्षकों के लिए शैक्षिक अर्हताओं में रियायत दी जानी चाहिए। उनके व्यावसायिक स्तर को ऊँचा उठाने तथा भर्ती किये गये शिक्षकों को सतत् शिक्षा के लिए समुचित व्यवस्था की जायेगी। वह त्वरित कार्यक्रम शैक्षिक वर्ण 1986–87 से प्रारम्भ करने का प्रस्ताव था।

(ड) जिला मुख्यालयों में अनुसूचित जाति तथा जनजाति के छात्रों के लिए छात्रावास सुविधाओं का प्रावधान–

- यह सुनिश्चित करने के लिए कि जिन जिला मुख्यालयों में अनुसूचित जाति व जनजाति के छात्रों के लिए छात्रावास सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए एक कार्यक्रम शुरू किया जायेगा।
- एक केन्द्र प्रायोजित कार्यक्रम के अन्तर्गत कल्याण मन्त्रालय द्वारा यह योजना शुरू की जायेगी।

(च) अनुसूचित जाति व जनजाति की बस्तियों, मुहल्लों तथा ग्रामीणों में स्कूल भवनों, बालवाडियों व प्रौढ शिक्षा केन्द्रों की स्थापना–

- अनुसूचित जाति तथा जनजातियों की बस्तियों तथा मुहल्लों और गाँवो में इन संस्थाओं की स्थापना को प्राथमिकता दी जायेगी।

(छ) अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों को शैक्षिक सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए एन. आर. ई. पी., आर, एल. ई. जी. पी. के संसाधनों का उपयोग–

- जनस्थापना में कमियों का पता लगाने के उपरान्त अनुसूचित जाति की बस्तियों तथा जनजाति के गाँवों में शैक्षिक संस्थाओं के विकास के लिए एक त्वरित कार्यक्रम तैयार किया जायेगा। जिसके लिए धन एन. आर. ई. पी. तथा आर. एल. ई. जी. पी. द्वारा उपलब्ध कराया जायेगा।

(ज) अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के बारे में पाठ्यचर्या में विशयवस्तु और शून्य अनुकूलन–

- जिन जनजातियों में भाषाओं में बोलने वालों की संख्या 1 लाख से अधिक है, उनकी कक्षा 1 और 2 के लिए प्राथमिक पुस्तक तैयार करने का काम सातवीं योजना के अन्त तक पूरा किया जाना चाहिए।
- केन्द्र तथा राज्य सरकारें विद्यमान पाठ्यचर्या की विशयवस्तु की समीक्षा करने के लिए उपयुक्त स्तरों पर समितियाँ गठित करेंगी ताकि यह सुनिशिचित किया जा सके कि जातिगत तथा अन्य पुर्वाग्रह क्षमतावादी समाज की सथापना में एकता के रास्ते में न आये।

(झ) भौक्षिक रूप से पिछडे क्षेत्र

- 1986–87 के दौरान दूरदराज तथा दुर्गम क्षेत्रों, दीपों, पहाडियों तथा रेगिस्तानी क्षेत्रों में शैक्षिक ढाँचे में वर्तमान कमियों का पता लगाया जायेगा तथा सातवीं योजना के शेश वर्शो में इन कमियों को दूर करने के लिए कार्यान्वयन हेतु योजनाएँ तैयार की जायेंगी।

(ञ) अन्य भौक्षिक पिछडे वर्ग

- **छात्रवृत्तियों, वर्दीयों, पुस्तकों तथा लेखन सामग्री के रूप में दिये जाने वाले प्रोत्साहन उपयुक्त वर्गो तक पहुँचाने के लिए उपायों को सुदृढ किया जायेगा।**
- **खानाबदोश, अर्द्ध–खानाबदोश तथा गैर–अनधिसूचित जातियों की विषेशता आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी जायेगी।**

कार्यक्रमों का आयोजन एवं प्रबन्ध

कार्यक्रमों के गुणत्मक कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए उन्हें मॉनीटर करने के बास्ते केन्द्रीय तथा राज्य स्तरों पर मार्गदर्शी सिद्धान्त तैयार किये जायेंगे। कार्यान्वयन में अधिक दक्षता प्राप्त करने के लिए स्तरों का निर्धारण किया जायेगा। कार्यान्वयन एजेन्सियों की स्वतन्त्रता को कायम रखते हुए सभी स्तरों पर उनकी जिम्मेदारी के लिए मानदण्ड निर्धारित कियो जायेंगे।

अनुसूचित जाति व जनजाति तथा अन्य वर्गो के विकास से समबन्धित सभी कार्यक्रमों के समन्वय के लिए केन्द्रीय व राज्य स्तरों पर एक नोडल एजेन्सी स्थापित की जाए। यह सुझाव है कि अनुसूचित जाति व जनजातियों शैक्षिक रूप से पिछडे वर्गो से सम्बन्धित सभी शक्षिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की जाँच तथा संचालन हेतु केन्द्रीय स्तर पर मानव संसाधन विकास मन्त्री की अध्यक्षता में केन्द्रीय षिक्षा सलाहकार बोर्ड की एक स्थायी समिति बनायी जाए।

कार्यक्रमों के सतत् मूल्यांकन के लिए अन्तर्निहित प्रणाली के अतिरिक्त, छात्रवृत्तियों, छात्रावासों तथा प्रस्तावित प्रोत्साहन स्कीमों का मूल्यांकन बाहरी एजेन्सियों द्वारा शुरू किया जाए।

वर्तमान स्थिति

ये सभी लक्ष्य पूरे करने के लिए सरकार द्वारा भरकस प्रयास किया गया है। अतः हम पाते है कि पिछले बीस वर्शो में अनुसूचित जातियों व जनजातियों में साक्षरता, पाठशालीय शिक्षा और उच्च शिक्षा में बहुत विकास हुआ है। उन्हें सभी स्तरों पर प्रवेश में रिजर्वेशन प्राप्त है, जिससे उनकी शैक्षिक समानता और प्रगति में बहुत सहायता मिली है।

उपरोक्त के अतिरिक्त इन वर्गो को निम्नलिखित सुविधाएँ प्रदान की गयी हैं–

- 2003–04 में अनुसूचित जनजातियों के कल्याण के लिए 1087 करोड रूपये भारत सरकार ने खर्च किये थे।
- सरकार के 84 एकलव्य नोडल रेजिन्डेशियल विद्यालय, 74 जिलों में 185 एजूकेशनल कॉम्पलैक्स, 153 लडकियों के लिए छात्रावास, 268 लडकों क लिए छात्रावास, 326 आश्रम विद्यालय और 900 प्रोजेक्ट गैर–सरकारी संगठनों के द्वारा चलाये जिनमें से 106 रेजीडेन्शियल विद्यालय और 56 नॉन–रेजीडेन्शियल विद्यालय थे।
- ICDS (Integrated Child Development Scheme) के सैकडों प्रोजेक्ट इन समुदायों के छोटे बालक–बालिकाओं के लिए चलाये जा रहे हैं।
- भारत सरकार द्वारा डॉ. अम्बेडकर नेशनल स्कॉलरशिप अवार्ड अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के छात्रों को देती है। 250 मैरिट स्कॉलरशिपें (167 अनुसूचित जातियों और 83 अनुसूचित जनजातियों) को भी प्रदान की जाती है।
- सर्व शिक्षा अभियान के अर्न्तगत इन दोनों समुदायों के बच्चे भी अन्य सभी समुदायों की भाँति ही प्राथमिक स्तर की शिक्षा से लाभान्वित हो रहे है।

इन सभी प्रयासों से उनमें शैक्षिक समानता काफी सीमा तक आयी है, लेकिन दूरदराज के गाँवों बस्तियों और छोटे कस्बों में अभी तक उनको ये सभी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हो पायी है।

निष्कर्ष–

अनुसूचित जातियों व जनजातियों के बच्चों की शिक्षा की वास्तविकता के आधार पर यह निश्कर्श निकलता है कि राज्य की नीतिओं और सरकार ने मिलकर संख्यात्मक और गुणात्मक रूप से मिलकर शिक्षा प्रदान करने का कठिन प्रयास किया है। इसके साथ ही सरकारी विद्यालयो के प्रयास ने जनसमावेशन के प्रयास को बढावा दिया है। इन जातियों में से अधिकर बच्चे प्राथमिक स्तर पर ही बाहर हो जाते है जिनमें अधिकाश की पारिवारिक या आर्थिक समस्या होती है या इनकी उपस्थिति निम्न होती है जिसका प्रभाव इनकी उपलब्धि पर पडता है। इसके साथ ही ये बालिकाएँ जिस परिवेश से आती है उसका प्रत्यक्ष प्रभाव भी उनकी शिक्षा पर देखने को मिलता है। विद्यालयी वातावरण में उपलब्ध सुविधाएँ, शक्षिक–छात्र सम्बन्ध, सरकारी योजनाएँ आदि पक्ष भी इसमें शामिल है। जो समय पर उपलब्ध नही होने के कारण शिक्षा को प्रभावित करती है।

ग्रन्थ सूची

1.जनगणना, आंकडा, वर्श (2011) : भारत सरकार, नई दिल्ली।

2.रूहेला, प्रो. एस. पी., विकासोत्न्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स (2012), पेज–338–339. राइट टू एजूकेशन फेरम (2013) : स्टेट्स रिपोर्ट।

3.सक्सेना, एन0आर0 स्वरूप (2013) : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।

4.गुप्ता, यू0सी0 (2014) : शिक्षा के सामाजिक आधार, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।

डॉ. भुपेन्द्र कौर,
शिक्षाशास्त्र विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय,
मुरादाबाद (यू0पी0) . 244001
Email:srsingh2472@gmail.com
Mob No. - 9456632300

3

ताकतवर सत्ता, कमजोर विपक्ष और निड़र साहित्यकार नागार्जुन।

देवेन्द्र कुमार

सारांश

नागार्जुन जन–सामान्य वर्ग के प्रतिनिधि साहित्यकार है। साहित्य लिखने के पिछे इनका मुख्य उद्देश्य था जन–सामान्य की आवाज सत्ता के समक्ष पेश करना और यह कार्य उन्होंने बखुबी से किया इस के लिए इन्होंने क्रुर सत्ता का भी विरोध सहना पड़ा फिर भी ये रूके नही और इन्होंने जन क्रान्ति का पक्ष हमेशा पहले रखा। जैसे–जैसे सत्ता ने जन–सामान्य को अन्देखा किया इनका व्यंग्य और प्रखर हुआ। इनके व्यग्य ने राजनीतिक सत्ता को हिलाकर रख दिया राजनेताओं को इनका व्यंग्य बहुत चुभ जाता और वह तिलमिला जाते थे। यह प्रत्येक मंच से राजनेताओं की सभाओं में निडर होकर काव्य पाठ करते और अत्याचार के विरुद्ध अपनी वाणी को बुलन्द करते हुए राजनेताओं की आंखो में आखें मिला उनको उनकी स्थिति का आभास कराते थे। लोगों ने बहुत सारे स्वपन्न सजाएँ थे कि आजादी के बाद सब पूर्ण होगे पर इन स्वपन्नों के बारे में न सोचकर शासक वर्ग जन–सामान्य का शोशण करने लगा। राजनेता टिकट पाते कमजोर विपक्ष होने के कारण सरलता से चुनाव जीत जाते और विदेशों की यात्रा करते और माल बनाते लेकिन जन–सामान्य वर्ग के लोग अपना पेट भी नही भर पा रहे थे। इन सब स्थितियों और समस्याओं को काव्य के माध्य से नागार्जन ने उठाया और शोशको के विरुद्ध आवाज उठाई।

स्वतंत्रता के बाद से होड़ लग गई थी देश का प्रंधानमंत्री बनने की। सभी अपना–अपना दावा पेश कर रहे थे गांधी की बात मानकर लोगों ने दावा करना छोड़ दिया पर गद्दी के लालची लोगों ने हठ पकड़ लिया। उनका कहना था चाहे कुछ भी हो जाए गद्दी हमें चाहिए।

"..

दो बेटे भारत माता के, छोड़ पुरानी टेक

चिपक गया है एक गद्दी से, बाकी बच गया एक।"[01]

जैसे ही देश की स्वतंत्रता की सुगबुगाहट चली तो लोगों ने देश की गद्दी पाने के लिए सभी प्रकार साम, दाम, दंड़, भेद अपना कर प्रयास करने आरम्भ कर दिये थे। देश की स्वतंत्रता से अधिक इन लोगों को पद का लालच था और इस की राह में किसी ने रोड़ा बनने का प्रयास किया तो उसे समाप्त कर दिया गया प्रधानमंत्री पद प्राप्त कर गद्दीधारी सबकुछ भूलकर अपनी सत्ता के नशे में चूर रहने लगे और इस नशे में ये उन्हें भी भुल बैठे जिन्होंने देश के लिए अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया था।

"कृत–कृत नहीं जो हो पाए ;

प्रत्युत फाँसी पर गए झुल

कुछ ही दिन बिते हैं, फिर भी

यह दुनिया जिनको गई भुल।"[02]

जिन अमर शहीदों ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण तक त्याग दिए थे। शासक वर्ग उन्हें सिर से नकार कर शासन को महत्व देने लगा था। उन्हें नही पता था ये सत्ता, शासन और गद्दी उनके रक्त के द्वारा प्राप्त हुई थी। अगर वो वतन के लिए अपने प्राण न देते तो इस गद्दी पर कोई और होता। सत्ता प्राप्त करते हुए सत्ता अधिकारियों ने कहा था अब देश में चारो तरफ खुशिहाली, समृद्धि एवं विकास ही विकास होगा लेकिन ये वादे सब खोखले हो गए थे। क्योंकि शासक वर्ग शासन के मद में अमर शहीदों के साथ–साथ अपने कर्तव्य और शपथ को भुल चुके थे।

"सपने दिखाकर के

गगन–विहार के

सीखेंगे नखरे, समुंदर–पार के

लौटे टिकट मार के

आए दिन बहार के।"[03]

स्वतंत्रता के बाद जो सरकार बनी थी उसमें सबका एक ही स्वपन्न था कि हमे टिकट मिले। टिकट मिलते ही वो चुनाव जीत जाएंगे और उन्हें सरकार के द्वारा घुमने के लिए कार मिलेगी। विदेश में जाने का अवसर मिलेगा और हवाई यात्रा करेंगे। बहार तो आई थी पर नेताओं की जन–सामान्य लोगों की नही। चुनाव जीतने के बाद चुने हुए प्रतिनिधियों को सभी सुविधा प्राप्त हो जाती थी। इनके चेहरे पर चमक थी और ये शारीरिक रूप से मजबूत हो चुके थे।

"दिल चटकीला, उजले बाल

नाप चुके हैं गगन विशाल

फूल गए हैं कैसे गाल

मत पूछो तुम इनका हाल।"[04]

स्वतंत्रता के बाद जनता के प्रतिनिधि सुविधाओं में अपना जीवन यापन करने लगे थे। जो सुविधा उन्हें कभी अंग्रेजो के शासन में प्राप्त नही हुई थी। पर अब तो देश के कर्ता यही थे और सब कुछ इनके हाथों में था तो यह स्वयं के लिए तो सुविधा की व्यवस्था करते ही और सुविधाएं प्राप्त व्यक्ति के व्यक्तित्व में चमक आना स्वभाविक था।

देश में भ्रष्टाचार चर्म पर था, सरकार के द्वारा गरीबों को जो सहायता मिलती थी उसे सरकार और प्रशासन से जुड़े लोग काला बाजारी करके गरीबों तक नही पहुंचने देते थे, उनका लाभ स्वयं उठाते थे और प्रजा भूख से मर रही थी।

"बेलों वाले पोस्टर साटे, चमक उठी दीवाल
अंदर टंगे पड़े हैं गाँधी–तिलक–जवाहर लाल
चिकना तन, चिकना पहनावा, चिकने–चिकने गाल
चिकनी किस्मत, चिकना पेशा, मार रहा है माल।"[05]

स्वतंत्रता के बाद भ्रश्टाचार हर तरफ व्याप्त था। सरकारी राशन की दुकानें एवं अन्य सुविधाएं उन्हीं के हाथों में थी जो चुनाव जीतने में सरकार की सहायता करते थे और इन्हें किसी भी बात का भय नही था तो ये क्योंकि शासन इनके साथ था ये खुल कर भ्रश्टाचार करते थे और गरीबों का अधिकार दूसरे देश मेंभेज रहे थे। रोजगार कम थे खेती भी न के बराबर होती थी। जन–सामान्य वर्ग सरकार की सहायता पर निर्भर था लेकिन भ्रश्टाचार फैला था और लोगों के चूल्हे ठंड़े पड़े थे। लोग भूख से मर रहे थे और अकाल एवं बाढ़ आदि ने भी लोगों को तंग कर रखा था।

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास।"[06]

सत्ताधिकारियों में सत्ता का नशा अभी तक जारी था। उनकी सहायता करने वाले खूब माल बना रहे थे लोग भूखे थे। चक्की थी पर अनाज नही था, चूल्हा था पर पकाते क्या लोगों के पास भूख सहन करने के अलावा अन्य मार्ग नही था पर सरकार भी सोई थी। सरकारी कर्मचारियों को भी समय पर मेहनताना नही मिल रहा था इसी कारण वो भी भूख से व्याकुल थे और वो परिश्रम करके भी खाली पेट थे। नेता गाड़ियों में घूम रहे थे, हवाई जाहजों से विदोशों की यात्रा पर थे उन पर लाखों का खर्चा हो रहा था पर कर्मचारियों के लिए पैसे नही था।

"उमर है लगभग पचपन साल की
पेशे से प्राईमरी स्कुल का मास्टर था
तनखा थी तीस, सो भी नही मिली
मुश्किल से काटे हैं
एक नहीं, दो नहीं, नौ–नौ महीने!"[07]

विपक्ष कमजोर था उसकी आवाज को दबा दिया जाता था जन–सामान्य एवं निम्न वर्ग की आवाज उठाने वाला कोई नही था। नेताओं के पास एक–से–एक बेहतर सुविधा थी पर परिश्रम करने वाले व्यक्ति को मेहनताना भी मयशर नही था वो भूख से मृत्यु को प्राप्त हो रहे थे। चुनाव जितकर नेतागण विदेशों की यात्रा कर रहे थे और पांच वर्शो तक जनता से दूरी बनाए रखते पर जैसे ही चुनाव आते वो फिर से जनता के पास पहुंचते और वोट मांगते कोई व्यक्ति उनको स्कूल या अन्य समस्याओं से अवगत कराते तो नेताओं का पारा गर्म हो जाता था।

"मंत्री जी, इनती जल्दी क्या आजादी का पिटा दिवाला
अजी आपको उस दिन मैंने नाहक ही पहनाई माला"
और लिखा "उस रोज आपसे भीख माँगने नही गया था
आप नये थे, नया ठाठ था, लेकिन मैं तो नहीं नया था।"[08]

नेतागण सत्ता में नये–नये थे और पूर्ण रूप से भोग–विलास में खोए रहते थे। वो जनता के बीच केवल मत प्राप्त करने जाते थे। इन्हें जनता के मुद्दे, गरीबी एवं अन्य समस्याएं नही दिख रही थी कहने को तो ये शिक्षा का प्रसार पूरे देश में करना चाहते थे पर स्कुल जर्जर हालात में थे उनकी तरफ इनका ध्यान भी नही था देश को अंग्रेजों से स्वतंत्रता मिल गई थी पर देश प्रधानमंत्री जी से अभी तक अंग्रेजों का मोह नही टुटा था वो समय समय पर इंग्लैंड की यात्रा करते थे और अंग्रेज शासक को भी देश में आमंत्रित करते रहते थे और उनकी सेवा में तत्पर थे।

"आओ रानी, हम ढोएँगे पालकी
यही हुई है राय जवाहरलालकी
रफू करेंगे फटे पुराने जाल की
यही हुई है राय जवाहरलाल की
आओ रानी हम ढोएँगे पालकी"[09]

देश का किसी को भी भान नही था दूसरी तरफ स्वतंत्रता तो मिल गई थी पर बहुत से लोगों से पराधीनता छोड़ी नही जा रही थी वो स्वतंत्रता को छोड़ गुलामी में ही रहना चाहते थे। इनका पहला कर्तव्य था देश में कोई भूख से न मरे और सब शिक्षित हो पर ये तो इंग्लैंड की रानी को पालकी में बैठा कर भारत भ्रमण करवा रहे थे। देश में धीरे–धीरे विपक्ष मजबूत होकर जनता के मुद्दे उठा रहा था और गलत नीतियों पर सरकार का विरोध करता था और उनके कार्यो पर प्रश्न चिन्ह् लगाता तो उसे उठाकर जेल में डाल दिया जाता और ताकत एवं बंदूक की गोली से उसे चुप करवा दिया जाता था।

"उस हिटलरी गुमान पर सभी रहते थे थूक
जिसमें कानी हो गई शासन की बंदूक।"[10]

सत्ता का नशा जब किसी को बहुत अधिक मदमस्त कर देता है तोवह हमेशा मदमस्त रहता और वह कभी शासन नही छोड़ना चाहता और सत्ता का अधिकारी हमेशा बना रहना चाहता है। उसके लिए चाहे उसे किसी के प्राण लेने पड़ जाए या फिर आवाज दबानी पड़ जाए वो यह सब करने के लिए तैयार है पर सत्ता छोड़ने के लिए तैयार नही है। इसके लिए सत्ता प्राप्त लोग तानाशाही पर उतर आते है और बंदूक का साथ लेने के लिए भी तैयार रहते है। जब बात सत्ता पर आती तो शासक बहुत क्रूर हो जाता है और वो हर एक प्रयास करता है जिससे उसकी सत्ता बची रहे। इसके लिए वो पत्रकारिता का गला घोट सकता है। सच बोलने वाले और जनता की आवाज उठाने वाले को चुप कर सकता है

अगर वो चुप नही हो तो उसके प्राण भी ले सकता है।

".........'क' आकृतिवाला पहला बोला :

"जाने कब से तू

हमारी ऐसी–तैसी करता आया!

तेरी करतूत अब बरदाश्त नही होती" "[11]

सत्ता प्राप्त व्यक्ति कभी नही चाहेगा कि किसी के विरोध करने पर उसकी सत्ता चली जाए। वो ऐसा कभी नही होने देगा और विरोध करने वाले को अवसर मिलते ही मिटा देना चाहता है। इस के लिए वो तरह–तरह के शड़यंत्र रचता है और उस में फँसा करवह विरोधी को हमेशा–हमेशा के लिए चुप कर देते है।

निष्कर्ष– देश की स्वतंत्रता में बहुत से लोगों ने अपने प्राण गवा दिये थे। बहुत से शहीदों के रक्त पर मिली ये अमूल्य निधि बहुत से लोगों के लिए अवसर बनी। इस अवसर का लाभ उठा कर लोगों ने सत्ता को प्राप्त किया और सत्ता प्राप्त करके वो भोग–विलास में लग गये। सरकार बनने के बाद बहुत से लोग मंत्री बने और सुविधा पा कर उनके दुर्बल शरीर मजबूत हो गये, चेहरे चिकने हो गए और वो विदेशों में घूम रहे थे। उन्हें सरकारी गाड़ियां प्राप्त हो गई थी लेकिन देश के लोग भूख से व्याकुल हो कर मर रहे थे। सरकार बनाने में सहायता करने वाले लोग सरकार के आश्रय में बड़ी सरलता से भ्रश्टाचार करके जनता की भूख को बेच रहे थे। विदेश की रानी की सेवा पूर्ण तत्पर्ता से हो रही थी और देश एवं जनता की तरफ इनका ध्यान नही था। नागार्जुन ने नेताओं की सत्ता लोलुप्ता पर व्यंग्य करते हुए निड़र हो कर सरकार की गलत नितियों का विरोध किया और जनता के पक्ष मे खड़े रहे।

संदर्भ सूची

1. नागार्जन, प्रतिनिधि कविताएँ, पृ० 97
2. वही, पृ० 61
3. वही, पृ० 104
4. वही, पृ० 110
5. वही, पृ० 97
6. वही, पृ० 98
7. वही, पृ० 95
8. वही, पृ० 100
9. वही, पृ० 101
10. वही, पृ० 105
11. वही, पृ० 26

देवेन्द्र कुमार

नजदीक पुराना बस स्टैण्ड़,

कुम्हारों का मोहल्ला,

सिविल लाइन के पीछे भिवानी 127021(हरियाणा)

4

बाबा बिसु राउत की गौ सेवा

मधु कुमारी, डॉ. पुष्पा कुमारी

शोध सार :

भारत एक ऐसा देश है जहाँ मनुष्य ही नहीं पशु–पक्षी, नदी–तालाब, पत्थर, पहाड़ तथा अन्य जलचर, नभचर एवं थलचर, पेड़–पौधे आदि। सभी से प्रेम करने की संस्कृति रही हैं। यह संस्कृति पूरे विश्व में अकेले भारत में ही है।

सभी जीव–जन्तु में हरि का वास समझा जाता है। तभी तो सनातन संस्कृति में पेड़–पौधे से लेकर कई जीव–जंतुओं के संरक्षण हेतु पूजने का विधान बनाया गया है, ताकि मनुष्य अपने लोभ से ग्रस्त होकर इन जीवों को नुकसान न पहुँचाऐं। जीवन जीने के लिए मनुष्य कई जीवों एवं प्रकति प्रद्त्त कई अमूल्य उपहारों पर निर्भर होता है।

'गाय' वही अमूल्य उपहार हैं। इसलिए सनातन संस्कृति में 'गाय' को माता एवं लक्ष्मी का स्थान प्राप्त है। जब भगवान विष्णु श्री कृष्ण का अवतार लेकर इस भूलोक में आऐं तो उन्होंने अपना बाल्यकाल गोकुल में बिताया। उन्हें गायों से बहुत स्नेह था। नंद गोप के घर लालन–पालन होने के कारण उन्हें गायों की सेवा करना अच्छा लगता था। जैसे गायों को चराना, नहलाना, दूध निकालना आदि। अर्थात श्रीकृष्ण से हमें गो सेवा करने की शिक्षा प्राप्त होती है।

हमारे धर्म शास्त्रों में उल्लेख है पुरूषोत्तम श्रीराम के पूर्वज राजा दिलीप ने अपने गुरु महर्षि वशिष्ठ की आज्ञानुसार कामधेनु गाय की पुत्री नंदिनी की सेवा अपनी धर्म पत्नी सुदक्षिणा के साथ किया। राजा दिलीप और सुदक्षिणा का सेवा भाव एवं प्रेम देखकर नंदनी ने निसंतान राजा दिलीप को संतान प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। इस संतान का नाम राजा दिलीप ने 'रघु' रखा। इन्हीं के नाम पर रघुवंश नाम पड़ा। इसी रघुवंश में श्रीराम का जन्म हुआ। गो सेवा का यह फल हुआ की राजा दिलीप ने भूलोक पर अपने यश को प्राप्त किय तथा मृत्यु के बाद श्रीहरि के चरणों में स्थान।

हमारी गौ सेवा की परम्परा के अंतर्गत कलिकाल में बिहार के अंग महाजनपद में 'बाबा बिसु राउत का जन्म सन् लगभग 1719 ई. में हुआ। इनके पिता बालजीत गोप भी गोपालक ही थे। बालजीत गोप का बथान (गाय के रहने का स्थान) मधेपुरा जिलान्तर्गत चौसा अंचल के लौआ–लगान के आस–पास ऊँची पचरासी नामक स्थान में था। वही बिसु के पिता अपनी गायों की देखरेख करते थे।

बाबा बिसु राउत का जन्म भागलपुर जिलान्तर्गत सबौर प्रखंड के भिट्टी चनेली गाँव में हुआ था। जब वे मात्र तेरह वर्ष के थे तभी उनके पिता की मृत्यु हो गई थी। पिता के मृत्यु के पश्चात् घर का बड़ा पुत्र होने के कारण घर–परिवार तथा बथान की पूरी जिम्मेदारी बाबा बिसु राउत के सिर आ गई। उनके घर में माँ चम्पावती, बहन भागोवन्ती और छोटा भाई अवधा मन्हौन थे। बड़े पुत्र की जिम्मेदारी एवं पिता के बाद परिवार के मुखिया होने का दायित्व निभाने के लिए उन्होंने अपनी कमर कस ली। छोटे भाई अवधा मन्हौन के साथ अपने पिता के द्वारा विस्तारित 'बथान' लौआ–लगान पहुँच गये। यहाँ बिसु राउत अपने बालपन की सारी हरकतों को छोड़ कब घर के मुखिया के साथ बथान के मुखिया बन गये उनकों पता नहीं चला। वे अपने भाई अवधा मन्हौन सहकर्मी (चरवाहा) नान्हुवां एवं अन्य महिला एवं पुरूष सहयोगियों को साथ मिलकर वह अपना बथान बहुत ही अच्छे से न सिर्फ संभालने लगे, बल्कि उसी बथान एवं गायों की सेवा करके बिसु देवत्व को प्राप्त हुए। वे बिहार के (अंग प्रदेश) लोकदेवता बन गये।

बीज शब्द :

संस्कृति, अंग प्रदेश, सनातन, गौ सेवा, गोपालक, गाय माता, अंग महाजनपद, बथान, धोरय।

विषय प्रवेश :

हमारे देश में लोग मनुष्य ही नहीं प्रकृति में सृजित विभिन्न जीवों एवं प्रकृति के विभिन्न रूप में हरि का रूप पाते हैं। प्रकृति के द्वारा पृथ्वी पर जितने भी जीवन है हमारी सनातन संस्कृति में उनसे प्रेम दया एवं सम्मान का भाव रखने को बताया गया है। तभी तो मनुष्य, मनुष्य के साथ ही नहीं पशुओं के साथ भी अपने जीवन को जीते हैं चाहे प्रेम बस हो या स्वार्थ या फिर शौक।

विश्लेषण :

आदिकाल से ही हम मानव पशुओं के सहयोग से अपना जीवन जीते आये हैं। चाहे घोड़ा हो, बकरी, गाय, ऊँट, भैस, भेड़, भालू गधा आदि। परंतु कहते है न मनुष्य तो सभी से अच्छे होते हैं, परंतु हम मनुष्यों में भी कोई अगर विशिष्ट गुण को अपना ले तो वह मनुष्य श्रेष्ठ मनुष्यों की श्रेणी में आ जाता है।

ऐसा ही पशुओं के साथ भी है। पालतू पशु तो सभी अच्छे होते हैं, परन्तु प्रकृति ने गाय को विशिष्ट गुणों से सुशोभित किया है।

इसलिए वे अन्य पशुओं से ज्यादा उपयोगी एवं पूजनीय है। तभी तो गाय को हमारे धर्म एवं संस्कृति में माता कहा गया है। गाय को माता कहने का तर्क में यह कहा जाता है नवजात बच्चे को माँ का दूध पिलाना चाहिए। अगर बच्चे को माँ का दूध किसी कारण न मिल पाये तो बच्चे के लिए सर्वश्रेष्ठ गाय का दूध माना जाता है, और यह बात वैज्ञानिक रूप से भी सिद्ध हो चुकी है।

हमारी संस्कृति में माना गया है कि गाय का पंचगव्य (दूध दही, घी, गोमूत्र, गोबर) मनुष्यों के लिए वरदान है। आयुर्वेद की कई प्रमाणिक पुस्तकों में औषधि के रूप में पंचगव्यों का उपयोग कई रोगों में किया जाता है। पंचगव्य का उपयोग गंभीर रोगों में किया जाता है। पंचगव्य का धार्मिक महत्व भी है। पंचगव्य के बिना हिन्दू धर्म के किसी भी धार्मिक अनुष्ठान को शुभ नहीं माना जाता है। पंचगव्य अगर देशी गाय का हो तो वह और भी ज्यादा फायदेमंद एवं शुद्ध माना जाता है।

हमारे पूर्वज इन बातों को भली–भांति समझते थे। इसलिए गायों की सेवा करना हमारे यहाँ पुण्य माना जाता है। श्रीकृष्ण ने भी हम मनुष्यों को पशु–पक्षियों एवं गायों से प्रेम करने की उनकी सेवा करने का ज्ञान दिया है। इसी गो सेवा की संस्कृति एवं परम्परा के अंतर्गत बाबा बिसु राउत आते हैं।

बाबा बिसु राउत की गौ सेवा :

बाबा बिसु राउत का जीवन भागलपुर के सबौर प्रखंड के भिट्टी चनेली गाँव से शुरू हुआ और मधेपुरा जिलान्तर्गत लौआ–लगान के ऊँची पचरासी बथान पर समाप्त हुआ।

पिता की मृत्यु के पश्चात जब छोटे भाई को साथ लेकर वह पचरासी बथान पहुँचे तो देखा बथान तो बहुत बड़ा है, परन्तु पिता के देहान्त के बाद गायों का सही देखरेख नहीं हो पा रही है। बथान का चरवाहा घसगढ़नी (घास काटने वाली) बथान के अन्य सहायक लोग गायों पर कुछ खास ध्यान नहीं दे रहे हैं। यह सब देखकर बसु का मन खिन्न हो जाता है। वह कहीं न कहीं मन में ठान लेते हैं कि पिता के परिश्रम त्याग एवं गो सेवा के समर्पण के भाव को वह अपने जीवन में कम नहीं होने देंगे। उनके पिता की भी मृत्यु पचरासी बथान (लौआ लगान) में ही हुई थी। यह सब याद कर बिसु भावुक हो जाते है, और मन–ही–मन ठान लेते हैं कि उनके पिता जिस प्रकार पूरा जीवन इस बथान को समर्पित कर दिये। मैं उनके परिश्रम को व्यर्थ नहीं जाने दूँगा। उन्होंने अपनी कमर कस ली और लग गये एक पुत्र एवं गोपालक का धर्म निभाने में। गौ सेवा करते हुए गायों से वह आध्यात्मिक रूप से इस तरह जुड़ गये कि इनके मृत्यु के बाद, इनके जीवन पर जो गाथा गाया जाने लगा वह आध्यात्मिक गाथा हो गयी।

बिसु राउत अपने भाई अवधा मन्हौन एवं नौकर नान्हुवां के साथ लग गये गो सेवा में। बथान को उन्होंने सबसे पहले तीन भागों में बाँटा। एक भाग में निरोगी एवं दुधारू गौ माता रहती थी। ये गायें काफी दुधारू थीं। ये मनमानी दूध देती थी। दूसरी आरे वृद्ध एवं रोगग्रस्त गायें रहती थी। बिसु बाबा इन गायों का बहुत ज्यादा ध्यान रखते थे। इनकी सेवा एवं औषधि का, खान–पान का विशेष ध्यान रखते थे।

तीसरे भाग में बैलो एवं बछड़ों को रखते थे। इनके भी खान–पान, देख–रेख में बिसु कोई कमी नहहीं करते थे। उनकी दिनचर्या की शुरूआत गौ सेवा से होती थी और अंत भी गौ सेवा से ही होती थी। माता गहेली ने जब बिसु की गौ भक्ति देखी तो उनके मन में यह विचार आया क्यों न इसकी गौ भक्ति को परीक्षा ली जायें। माता गहेली ने एक बूढ़ी अपाहिज गाय का रूप धारण किया और बिसु के बथान पर पहुँच जाती है। वह गाय बहुत ही बीमार थी। शरीर पर जगह–जगह घाव के निशान बने थे। जिनसे टप–टप खून टपक रहा था। उन घावों पर सैकड़ों मक्खियाँ लगी हुई थीं। गहेली माता लंगड़ाते–लंगड़ाते धीरे–धीरे बिसु के बथान पर पहुँचती हैं। उस गाय को देख कर ऐसी लग रहा था जैसे कि उनका एक पैर टूटा हो। वह जैसे ही लंगड़ाते हुए बथान के अंदर प्रवेश करती है तो नान्हुवां देखता है एक अपाहिज गाय जिसके शरीर से खून टपक रहा है और उसके ऊपर सैकड़ों मक्खी भनभना रही है, नान्हुवां ने आव देखा न ताव कोने में पड़ी हुई लाठी लेकर गाय की तरफ मारने को दौड़ पड़ा। उसे लगा इस गाय का रोग अन्य गायों को भी लग जायेगी।

बिसु को नान्हुवां का लाठी लेकर गाय की तरफ मारने के दौड़ना अच्छा नहीं लगता। बिसु नान्हुवां को डांटते हुए बैठ जाने को कहते है और गाय को अंदर आने देते हैं। नान्हुवां मना करता है कि इस गाय का रोग अन्य गायों को भी लग जायेगी परन्तु बिसु का प्रत्येक गायों के प्रति समान प्रेम भाव उस गाय को भगाने नहीं देतीं। बिसु गाय को अंदर लाते हैं और फिर प्रेम से गाय के शरीर पर लग रही मक्खी को हटाते है तथा उनके घाव को साफ करते हैं। बिसु को बेचारी बूढ़ी गाय पर दया आ जाती है। वह अच्छे से चल–फिर भी नहीं सकती हैं गाय का पेट एक दम सटका हुआ तथा गठिया रोग से ग्रस्त थी। नान्हुवां के यह कहने पर ''ऐसी गायों को लोगजानबूझकर बहिया देते हैं।खिलाने का दम है ही नहीं तो करेगा क्या? सस्ता देखता है बिसु मालिक का बथान। हरा भरा घास देखती है तो खाने का जी चटर–पटर करने लगता है। मानो उसके मालिक ने यहाँ घास गड़कर रख दिया है। घास जुटाने में कितना मेहनत लगता है। मालिक?''[1]

यह सुनकर बिसु उन्हें डांटते है और पुनः गौ सेवा में लग

जाते हैं। वे नान्हुवां को आदेश देते हैं कि पानी को सुसुम (हल्का गर्म) करके लाओ और एक सूती कपड़ा भी लेते आना अगर कोई कपड़ा न मिले तो मेरा गमछी ही ले आना। इसके घाव को धोना है। बिसु बहुत प्रेम से गौ माता की सेवा करते है। उनके चारा–पानी आदि का प्रबंध करते हैं। बिसु जब अपने गमछे से गाय के घाव को साफ कर रहे थे। तब गाय उनके छाती पर जोर से लताड़ मारती है। यह देखकर नान्हुवां गाय को मारने लपकता है परन्तु तुरंत ही बिसु उन्हें डाँट कर हटा देते है और पुनः गौ माता के जख्मों को साफ करने लगते हैं। गौ माता ऐसी भक्ति–भावना देखकर प्रसन्न हो जाती है। एक दिन अचानक ही वह गाय बिसु के बथान को छोड़कर कहीं चली जाती है। गाय के अचानक चले जाने से बिसु राउत को चिंता होने लगती है कि बिमार एवं कमजोर गाय है। बाघ अगर खदेड़ेगा तो वह भाग भी नहीं सकेगी। गाय की चिंता करते–करते बिसु को गहरी नींद आ जाती हैं। उन्हें नींद में जाते ही माता गहेली का स्वप्न आया ''बेटा बिसु ! जिसको तुम मरहमपट्टी कर रहे थे वह कोई नहीं, मैं ही थीं बेटा। मैं तो बूढ़ी गाय का वेश धारण कर तुम्हारी परीक्षा ले रही थी। मैं देखना चाह रही थी कि वास्तव में तुम्हारे दिल मे ंबूढ़ी गायों के प्रति दर्द है या नहीं? जिस प्रकार से दुधारू गायों के प्रति तुम्हारे दिल में दर्द है उसी प्रकार बूढ़ी गायों के प्रति भी है। भविष्य में मेरी ही तरह तुम्हारी भी लोग पूजा करेंगे यह वचन देती हूँ। तुम्हारी सुख और समृद्धि की कामना करते हुए अब जाती हूँ बेटा .....सुखी रहो।''[2]

गहेली माता का यह वरदान फलीभूत होता है और तब से अब तक बिसु के देहावसान वाले दिन को बिसुवा पर्व (लोक पर्व) के रूप में मनाते हैं।बिसु एक आम गौ पालक से लोक देवता बन जाते हैं। ऐसे लोक देवता जो दुधारू पशुओं के तारणहार कहलाए। लोकमान्यता है जब भी किसी बथान पर गाय, भैंस बछड़ा, बकरी के स्वास्थ्य में गिरावट आती है तो गोपालक बथान पर बाबा बिसु राउत के नाम से धुप, दीप आदि जलाकर तथा उनके पसंदीदा पेय एवं भोजन पदार्थ रखकर उनका अवाह्न करते हैं तथा अपने पशुओं के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हैं। ऐसा करने से माना जाता है पशु जल्दी ठीक होने लगते हैं।

बिसु के जीवन में कई उतार–चढ़ाव आऐ। इतने बड़े बथान की जिम्मेदारी तथा छोटे भाई का ख्याल रखना। घर पर रह रही माँ–बहन, पत्नी की चिंता एवं उनके सुख–दुःख एवं सुविधाओं का ख्याल रखना, कोई जिम्मेदार पुरूष ही कर सकता है। गौने पर जब माँ का बुलावा आता है तो बिसु अपने गाँव जाते हैं। गौना (द्विरागमन) करा कर जब वह अपनी पत्नी को घर लाते है तो पत्नी को हर प्रकार का सुख–सुविधा देने का पूरा प्रयास करते हैं।

पत्नी प्रेम के कारण जब वह घर पर अधिक दिन रूक जाते है, तो माता गहेली का स्वप्न आता है कि पुत्र तुम पत्नी के आगे अपनी गायों को अपने बथान को तुम भूल गये। उठो पुत्र! अपने कर्त्तव्यों, अपने धर्म का पालन करों। भला भगवती के आदेश को बिसु कैसे टाल सकते हैं। वे आधी रात को ही उठकर अपनी माँ, पत्नी और बहन के रोकने के बावजूद चली पड़ते हैं। मानो पचरासी बथान उनके बगैर विरान हो रहा है।

भगवती, गहेली माता, घघरी माता, गौ माता की लीला कहें या प्रकृति का चक्र बिसु के जीवन में कुछ ऐसा घटा की लौआ लगान का वह क्षेत्र (पचरासी बथान) एवं बिसु के सबौर का भिट्टी चनेली गाँव के साथ–साथ पूरा अंग प्रदेश बिसु के मानव शरीर को खोकर आध्यात्मिक तौर पर अपने लोकदेवता को पाते हैं।

बिसु जब अपना शरीर त्यागते है तो वह एक पिण्डी का रूप धारण कर लेते हैं, और तब से लेकर अब तक उसी पिण्डी का पूजा लौआ लगान के ऊँची पचरासी बथान में हो रही है।

बालक बिसु से गौभक्त बिसु राउत :

बालक बिसु के जब पिता जी जीवित थे तो वह अपनी माँ, बहन एवं छोटे भाई के साथ भिट्टी चनेली गाँव में रहते थे। आम बालकों की तरह वही बाल सुलभ हरकते। गाँव के बच्चों के साथ दिन–दिन भर खेलना–कूदना, लड़ाई–झगड़े, गंगा नदी में तैरना पूरे दिन घर से बाहर रहना। उनकी माँ बिसु को लेकर बहुत परेशान रहती थी। गाँव की महिलायें, पुरूष आए दिन उनकी शिकायत लेकर माता चंपावती के पास आते रहते थे।

पर कहते है कि जिम्मेदारी जब सर पा आती है तो बालपन की मासूमियत एव शरारतें कहाँ लुप्त हो जाती है, पता ही नहीं चलता। पिता की मृत्यु के पश्चात बालक बिसु कब मालिक बिसु राउत बन जाते हैं उन्हें पात ही नहीं चलता। एक चंचल नटखट बालक धीर–गंभीर निर्णय लेने में माहिर हो जाता है। धर्म परायण एवं अपनी माता के साथ–साथ गौ माता के भी भक्त बन जाते हैं। जितना शुख और संतुष्ट माता चंपावती बिसु राउत से रहती है, उससे कहीं ज्यादा खुश बथान की सभी गायें, साड़, बाछा–बाछी एवं बूढ़ी गायें होती है। इन्हीं गायों की सेवा के फलस्वरूप बिसु को माता गहेली का दर्शन हुआ। उन्हें लोक देवता बनने का आशीर्वाद मिला। गौ सेवा के कारण ही माता घघरी (नदी) का दर्शन होता है। घघरी माता उन्हें बूढ़ी स्त्री का रूप धारण कर मिलती है तथा कोसी नदी पार करवाती हैं। इसी प्रकार समय–समय पर उन्हें माता घघरी, गहेली विभिन्न परिस्थितियों से उन्हें निकालती

है।

परिणाम :

बिसु राउत का जीवन प्रत्येक मनुष्य के लिए अनुकरणीय है। मनुष्य का जीवन बड़े भाग्य से मिलता है। इसलिए बिसु राउत जिस प्रकार प्रकृति से, गायों से प्रेम करते थे उसी भांति प्रत्येक मनुष्य को गायों से प्रेम करना चाहिए। गाय की वर्तमान स्थिति काफी दयनीय होती जा रही है। शहरों में गायों के चारो का कोई उपलब्ध हरा–भरा जगह नहीं होता। गायें कूड़ों, कचरों में चरने जाती है। इससे गायें कई प्रकार को रोगों से ग्रस्त हो जाती है। यहाँ तक जिस प्रकार वर्तमान समय में प्लास्टिक का इस्तेमाल हो रहा है इससे जल, वायु, मृदा प्रदुषण तो फैल ही रहा है साथ में गाय कुड़े–दानों में फेंके खानों को खाने के साथ प्लास्टिक भी खा लेती है। जिस कारण उनकी मृत्यु हो जाती है। इसलिए बिसु के जीवन से शिक्षा लेते हुए एवं पालतू एवं दुधाः पशुओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

निष्कर्ष :

बाबा बिसु राउत का समस्त जीवन गायों के प्रति समर्पित रहा है। गायें उनकी आत्मा में बसती थी। सच्चे अर्थों में धोरय (गौ सेवक) का क्या अर्थ होता है, बिसु से बढ़ा उदाहरण शायद ही इस कलिकाल में मिल सकता है। दिन–रात सोते–जागते उठते–बैढते अपनी गायों के स्वास्थ्य के बारे में सोचना एक बच्चे की भांति गायों की सेवा करना। खाने के लिए मुलायम हरी घास देना। कोसी का ठंडा जल पिलाना। अपने जान से बढ़कर गायों की रक्षा करना सचमुच कोई युग पुरूष कोई सच्चा गौ सेवक ही कर सकता है।

संदर्भ सूची :

1. शर्मा, अंजनी कुमार; बाबा बिसु राउत, समीक्षा प्रब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2008 पृ. 21
2. वही, पृ. 23

1. मधु कुमारी
शोधप्रज्ञा
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
ति0 माँ0 भा0 वि0 वि0, भागलपुर।
मो0 न0 –7544944080
ईमेल–madhumithilesh1987@gmail.com

2. डॉ. पुष्पा कुमारी
वरीय सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग
सुन्दरवती महिला महाविद्यालय, भागलपुर
ति0 माँ0 भा0 वि0 वि0, भागलपुर।
मो0 न0 –7004531201
ईमेल–pushpa201073@gmail.com

5

गढ़वाल हिमालय के लोकगीतों में अनुभूत ज्ञान व जीवन दर्शन

डॉ0 डी0एस0 भण्डारी

सारांश

गढ़वाल हिमालय के लोकगीत काल की आवश्यकताओं अथवा युग की यथार्थ घटनाओं के बीच से उद्भूत हुए हैं। लोकगीतों में नवयुग की समस्त लोकधर्मी सामाजिक चेतना का समावेश हुआ है। लोकगीत मुख्यतः अनुभूति प्रधान होते हैं। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के अनुभव इसीलिए सदैव उनके मूल में निहित होते हैं। लोकगीत हृदय की भावमयी अनुभूतियों को वाणी देते हैं। अनुभूतियों के अनुभव और अनुभूत ज्ञान के घटक भी लोकगीतों को ही माना जाता है। लोकमानस सूक्ष्म निरीक्षण सामान्य बुद्धि और प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर सत्य और ज्ञान का जो साक्षात्कार करता है वह लोकगीतों में स्वतः ही व्यक्त हो जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में लोकगीतों में अनुभूत ज्ञान और जीवन दर्शन की विवेचना की गई है।

गढ़वाल हिमालय के इस क्षेत्र में एक विचित्र सांस्कृतिक समन्वय और ऐतिहासिक परम्परा दिखाई देती है। यहां प्राणी मात्र भावुक दिखाई देता है। कण–कण कई रागों में गाता हुआ दिखाई देता है। यहां लोकगीत जनजीवन के बीच से उपजते हैं, इनका रचनाकार अज्ञात होता है और वर्शों तक यह लोक कण्ठ में सुरक्षित रहते हैं।

गढ़वाल हिमालय के लोकगीत मानव मन की अनुभूतियों की सरस रागात्मक अभिव्यंजना का लयात्मक उपहार है। लोक संस्कृति की सच्ची मधुर मनमोहन तथा स्वरमूला अभिव्यक्ति को लोकगीत की संज्ञा दी जाती है। यह लोक आस्था तथा लोकानुभूत सप्य का अकृत्रिम सहज नैसर्गिक गीतात्मक उद्गार है। लोक साहित्य की सबसे अनमोल धरोहर में लोकगीत का नाम लिया जाता है। यहां धरती विविध स्वरों में गाती हुई दिखाई देती है। समाज के विविध भाव लोकगीतों में समाये हुए दिखाई देते हैं। सामाजिक मान्यताओं तथा वर्जनाओं का वृहद कोश लोकगीतों की विशाल सृष्टि में कदम–कदम पर सृजित होता हुआ दिखाई देता है। लोकगीत प्राचीन होते हुए भी ऊर्वाचीन रहते हैं। लोकगीत पुराने नहीं होते हैं। चिर नवीन व चिर यौवन बने रहने का सौन्दर्य ही लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता है। गढ़वाल हिमालय के लोकगीतों में शास्त्रीय नियमों के बन्धनों की सीमा नहीं होती है। यहां के लोकगीत सार्वजनिक, सार्वदेशिक व सार्वलौकिक हैं। लोकगीतों का अखण्ड साम्राज्य दिखाई देता है। लोक साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विधा को समझने और लोकगीतों के वर्गीकरण को समझने का प्रयास इस शोध पत्र में किया गया है।

लोकगीत बौद्धिकता के शुष्क व बेजान कंटीले झाड़ झंखाड़ नहीं हैं वरन हृदय महासागर में अनंत भावनाओं के मंचन के उपरान्त प्राप्त नवनीत हैं। लोकगीत चमत्कृत करने वाले या सहसा चौंकाने वाले रस के छींटे नहीं उड़ाते बल्कि आपाद मस्तक रस सृष्टि में निमज्जित करने वाले भावपूर्ण उद्गार हैं।

गढ़वाल हिमालय के लोकगीतों में अनुभवों की विपुल सम्पत्ति समाहित है। लोकगीत अनुभवों के स्रोत हैं। यह वृद्ध लोगों के मुख से सुने जाते हैं। इन लोकगीतों में प्रेम जीवन मृत्यु लोकाचार नीति आदि अनेक विशयों पर लोक के उपयोगी अनुभव व्यक्त हुए हैं। जीवन परिवर्तनशील है जैसा आज है वैसा कल ना रहेगा।[1] जीवन में आगे क्या होने वाला है मृत्यु सबका अन्तिम ध्येय है। एक दिन सबको मर जाना है यहां से पीठ पर उठाकर कौन ले जायेगा।[2]

जीवन सबके साथ हंस खेल कर बिताना चाहिए। सब में बांटकर खाने में ही जीवन की सार्थकता है। इन गीतों में जीवन की निस्सारता को प्रतिपादित कर साधु संतों का सा विराग ही नहीं प्रकट हुआ है वरन जीवन के प्रति वह भौतिक दृश्टिकोण भी बावत हुआ है जो सुखों के उपभोग तक ही जीवन की इतिश्री समझता है, जहां जीवन की निस्तारता व्यक्त की गई है। तरूण स्त्री और बालक की मृत्यु को यम का सबसे बड़ा अभिशाप कहा गया है।

एक न मरया बाला की बोई
एक न मया तरूणा की जोई[3]

क्योंकि बालक का अपनी माता के प्रति और तरूण का अपनी स्त्री के प्रति जो सम्बन्ध सूत्र होता है वह प्राणों से भी अधिक कोमल होता है जिसकी क्षतिपूर्ति कभी संभव नहीं होती है। इसी प्रकार निर्धन पर ऋण का भार और सुन्दर स्त्री की मृत्यु जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना है। इस हेतु लोकगीतों में ईश्वर को ही दोश दिया जाता है। यहां के कोमल हृदय में सह क्षणिक आक्रोश प्रकट होता हुआ दिखाई देता है। इसके बाद भी धरती के अमरत्व की कामना की गई है।

घोड़ी को कमर
मनखी मरी जांदा, धरती अमर

अनेक लोकगीतों में परजन्म का लोक विश्वास और आत्मा का का अमरत्व जीवन के निरंतर प्रवाह के प्रति आस्था पैदा करता है। यहीं के

लोकगीतों में मृत्यु के प्रति जो सहिष्णुता व्यक्त हुई है वही कष्टों देवी आपत्तियों तथा जीवन की विषमताओं के प्रति भी बरती गई है। ऐसे लोकगीतों में ईश्वर को दोश देने की अपेक्षा कर्मों को दोशी ठहराने की प्रवृत्ति लोक में अधिक व्याप्त है। विपत्ति के लिए धैर्य से विजय प्राप्त करने के लिए कहा गया। इसके लिए सभी लोकगीतों में सांत्वना दिखाई देती है। देवता भी विपत्ति से मुक्त नहीं रहे। पांडवों को भी विराट राजा के यहां दास्ता स्वीकार करनी पड़ी। कीचक ने उनकी पत्नी का शील हरण करने का प्रयत्न किया अतः सभी लोकगीतों में विपत्तियों को धैर्यपूर्वक सहने की सलाह दी गई।

गौड़ी को मखन, दई होंदु बांटी खांदा भागी को क्या कन।[4]

अकाल मृत्यु होने पर भी यही भाव लोकगीतों में व्यक्त हुआ है।[5]

सागर का पाणी सागर समांदा

सांसारिक सुख और वासनाओं के प्रति भी इसी प्रकार का दृश्टिकोण लोकगीतों में व्यक्त हुआ दिखाई देता है। सभी सांसारिक सुख प्राप्त नहीं किये जा सकते हैं। सांसारिक वासनाओं की प्यास दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है।

ग्यौं जौं का कीस, ज्यूं ज्यूं ठंडो पाणी त्यूं त्यूं ज्यादा तीस[6]

वासनाओं के प्रति संयम का भाव सभी लोकगीतों में व्यक्त हुआ दिखाई देता है। लोक व्यवहार के मूल में परिवार दिखाई देता है। पारिवारिक सम्बन्धों में पुत्र से अधिक महत्व भाई को दिया गया है। भाई के प्रति आत्मीयता दिखाई देती है। पुत्र तो मिल जाता है परन्तु सहोदर भाई नहीं मिल पाता है। इसी प्रकार भाई की तरह बहिन का भी महत्व लोकगीतों में व्यक्त हुआ है।

चुल्ला प्यारी आग होंदी
तारू सी प्यारी होंदी गैण
दिशा दियारी तैंकी होंदी
जैकी पीठी की बैण

झुमैलो, खुदेड़ गीतों में मातृ हृदय की विशालता देखी जा सकती है। देवर भाभी के रिश्ते, चाचा ताऊ के रिश्ते, देवर ननद के रिश्ते इन सभी को लोकगीतों में रेखांकित किया गया है। छोटों के प्रति स्नेह और बड़ों के प्रति आदर भाव सभी लोकगीतों में दिखाई देता है। आनुवंशिकता की महिमा भी लोकगीतों में दिखाई देती है। यश की अमरता लोकगीतें में बताई जाती है। वीरता के साथ–साथ शडयंत्र के किस्से भी यहां के इतिहास में मिलते हैं, इनसे सम्बन्धित लोकगीत भी लोक में ख्यात हैं। इन लोकगीतों में वैरी और ऋण को एक ही कोटी में रखा गया है। वैरी और ऋण एकसमान रूप से उत्पीड़न के कारण होते हैं।

बैरी को नी छोड़ना एक
ऋणना को जशो शेख

ससुराल जाती बेटी के लिए कई प्रकार के उपदेश लोकगीतों में दिये गये है। छोपती लामण गीतों में प्रणय विषयक बहुत से अनुभव सूक्तियों में व्यक्त हुए हैं।

सौदा चवनी को सौं साठ गैणुवा होना
उजालो ज्वनी को नथूली को छेक, बैखम दुन्या भरी मन को एकू[7]

कई गीतों में वासना को व्यास और तुष्टि को शीतल जल कहा गया है। वासनात्मक प्रेम का तिरस्कार किया गया है। यौवन की वासनात्मक तरंगों में प्रवाहित होने वाला प्रेम सावन की नदी की भांति सूख जाता है। जहां तक स्थायी प्रेम का सम्बन्ध है वह देश और काल की सीमा तक जीवित रहता है। प्रेम के बाह्य सम्बन्ध टूट सकते हैं किन्तु प्रेमी से संबंध प्रणय भावना अपने आलम्बन के साथ सदैव बनी रहती है।

रोलू की सिखाणी सौण का गदरा सूखी जान्दा रे जांद सेल्वानी

वस्तुओं, व्यक्तियों और विषयों के प्रति लोक की जो धारणाएं बनती हैं उनका आधार भी लोकानुभव ही होता है। यह अनुभव जीवन के ऊंचे और गहन विशयों से भी संबाधित हो सकता है।

लोक के अनुभवों और अनुसंधानों का क्षेत्र बहुत व्यापक है। नीति उपदेश और निशेध तक ही उसकी सीमाएं नहीं हैं। कृशि औशधि कला निर्माण वस्तुओं के उपयोग ज्योतिश तथा मानव प्रकृति के सम्बन्ध में लोक के अनुभव विपुल हैं। लोकगीतों में इन सबका समावेश किया गया है। लोक के सम्पूर्ण अनुभवों से परिचित होने के लिए लोकगीत ही पर्याप्त नहीं हैं, इसी दृष्टि से गढ़वाल के लोकगीतों की भी अपनी सीमाएं होती हैं। यहां के जन साधारण का यह अनुभव और उसका जीवन दर्शन सकारात्मक होने की अपेक्षा आशात्मक होने को अधिक बाह्य है। अतः लोकगीतों में मनोवैचारिक पृष्ठिभूमि अधिक स्पष्ट है।

निष्कर्ष

लोकगीत हमारे जीवन विकास की गाथा है। लोकगीतों का

सीधा सम्बन्ध मानव जीवन से है। यह मानव हृदय की नैसर्गिक अभिव्यक्ति है, जिसमें भाव भाशा और छन्द की नियमितता से मुक्त रहकर स्वच्छन्द रूप से निसृत होने लगते हैं। यह कहा जा सकता है कि लोकगीत लोक मानस की अभिव्यक्ति सुख दुखात्मक, हर्श विशाद मूलक आस्था, आकांक्षा, आशंका उत्साद निराशा अवसाद मनोवेग उल्लास आस्था की सहज स्वतः स्फूर्त अवृत्रिक राजों के बंधन से मुक्त सामूहिक चेतना से मण्डित संस्कारों व अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है। इनका रचनाकार रचनाकाल व रचना स्थल अज्ञात होता है। चिरकाल से यह कण्ठ में सुरक्षित है। ?

संदर्भ सूची

1. डॉ0 गोविन्द चातक, गढ़वाली लोकगीत पृ0 226
2. डॉ0 गोविन्द चातक, गढ़वाली लोकगीत पृ0 222
3. डॉ0 गोविन्द चातक, गढ़वाली लोकगीत पृ0 219
4. डॉ0 डी0एस0 भण्डारी, गढ़वाली साहित्य का लोक तात्विक अध्ययन पृ0 24
5. डॉ0 गोविन्द चातक, गढ़वाली लोकगीत, पृ0 24
6. डॉ0 गोविन्द चातक, सांस्कृतिक अध्ययन, पृ0 25
7. डॉ0 डी0एस0 भण्डारी, गढ़वाली साहित्य का लोक तात्विक अध्ययन पृ0 50

डॉ0 डी0एस0 भण्डारी

विभागाध्यक्ष हिन्दी

बालगंगा महाविद्यालय

सेन्दुल (केमर) टिहरी गढ़वाल

6

पत्रकारिता के क्षेत्र में अज्ञेय जी का योगदान

डॉ0 उर्मिला कुमारी

सारांश

हिन्दी पत्रकारिता के आरंभ में भारतेन्दु हरिशचंद्र, बालमुकुंद गुप्त, प्रेमचंद, निराला आदि कई कवियों तथा कथाकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी परंपरा में अज्ञेय ने भी अपना एक अलग स्थान बनाया, साथ ही उन्होंने हिन्दी पत्रकारिता की उन्नति के साथ–साथ साहित्यिक पत्रकारिता को भी बढ़ावा दिया।

अज्ञेय ने अपने क्रांतिकारी जीवन की अंतिम सजा 1933–34 में लाहौर में काटी थी। ऐसा माना जाता है कि इसके बाद से ही अज्ञेय ने पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण किया था। 1936 में अज्ञेय सैनिक (साप्ताहिक) पत्र के संपादक बन कर आगरा आए। इस पत्र में वे मात्र एक ही वर्श कार्यरत रहे। इस पत्र के संबंध में उनके सहयोगी प्रभाकर माचवे जी का कथन उल्लेखनीय है–''सबसे पहले मेरा साक्षात्कार अज्ञेय जी से 1936–37 में आगरा में हुआ। बनारसी दास चतुर्वेदी तब उनके बहुत बडे प्रशंसक थे। वे ही कृष्णदत्त पालीवाल जी से कहकर सैनिक में उन्हें सम्पादक के रूप में लाए। सैनिक में ही मेरठ में किसान सम्मेलन और हिन्दी साहित्य परिशद के समारोहों के व्यंग्यात्मक विवरण मैंने और उन्होंने मिलकर लिखे थे। सैनिक में वात्स्यायन जी कई नामों से लिखते थे। राजनैतिक पत्रकारिता भी करते और कहानियाँ भी लिखते।''[1] 1937 के अंत में संपादक बनारसी दास चतुर्वेदी के आग्रह से अज्ञेय 'विशाल– भारत' में उनके सहयोगी बनकर आए। लगभग दो–ढ़ाई साल तक अज्ञेय अकेले ही विशाल भारत देखते रहे। विशाल भारत में अज्ञेय विविध विषयों पर लिखते थे साथ–ही साथ संपादकीय में राजनीतिक नोट भी लिखते थे। विदेशी राजनीति की उन्हें विषद् जानकारी थी।

अज्ञेय जी की संपादकत्व की प्रशंसा करते हुए प्रभाकर माचवे कहते हैं कि ''विशाल भारत में जनवरी 1939 में 'देहाती मेले में' और 'अर्थशास्त्र' मेरी दो इम्प्रेशनिस्ट कविताएँ अज्ञेय जी ने छापी, तब से मैं उनके संपादन का कायल हो गया।''[2]

संपादक की भूमिका में अज्ञेय ने कई हिन्दी– अंग्रेजी पत्र–पत्रिकाओं तथा पुस्तकों का संपादन किया, जिनमें तारसप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक, चौथा सप्तक, पुश्करिणी, रुपाम्बरा, सैनिक, विशाल भारत, आरती, प्रतीक, थॉट, वॉक, एवरीमेन्स, नवभारत टाइम्स, दिनमान आदि प्रमुख हैं।

हिन्दी साहित्य जगत में सप्तकों की श्रृंखला वह कड़ी है, जिसने हिन्दी कविता के महत्व को बताया। 1943 में अज्ञेय द्वारा संपादित 'तारसप्तक' की योजना के विशय में संपादक ने भूमिका में स्वयं बतलाया है कि– ''दो वर्ष हुए जब दिल्ली में अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन की आयोजन की गई थी। उस समय कुछ उत्साही बन्धुओं ने विचार किया कि छोटे–छोटे फुटकर संग्रह छापने की बजाए एक संयुक्त संग्रह छापा जाए।''[3]

तारसप्तक के कुछ आलोचकों ने एक बड़े काव्यान्दोलन प्रयोगवाद का नाम दिया। तारसप्तक से प्रयोगवाद के उदय पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए रेखा अवस्थी का कहना है कि ''तारसप्तक तो क्या 'प्रतीक' के प्रकाशन तक भी नए–नए प्रयोग करने वाले कृतिकार के रुप में किसी की भी अलग से गणना नहीं होती थी। अज्ञेय सामान्यतः एक युवा उत्साही साहित्यकार और अनेक पत्रों के संपादक के रुप में देखे जाते थे। दूसरा सप्तक का संपादन 1951 में हुआ जिसमें अज्ञेय ने ऐसी भूमिका लिखी जिसने परंपरा से चली आने वाली हिन्दी कविता की भूमिका ही बदल डाली। संपादक अज्ञेय दूसरा सप्तक संपादित करते हुए यह आशा करते हैं कि यह नए हिन्दी काव्य को निश्चित रुप से एक कदम आगे ले जाएगा और कृतित्व की दृश्टि से लगभग सूने आज के हिन्दी क्षेत्र में आशा की नयी लौ जगाएगी।''[4]

अज्ञेय ने दूसरा सप्तक की भूमिका में यह भी कहा कि तारसप्तक का प्रकाशन जब हुआ तब मन में यह विचार उठा था कि इसी प्रकार की पुस्तकों का एक अनुक्रम प्रकाशित किया जा सकता है, जिसमें क्रमशः नए आने वाले प्रतिभाशाली कवियों की कविताएँ संगृहित की जाती रहें।

इसी अनुक्रम में संपादक अज्ञेय ने तीसरा सप्तक (1959) और चौथा सप्तक (1979) भी निकाला। इन सप्तकों के प्रकाशन ने आलोचकों में यह धारणा और सुनिश्चित कर दी कि संपादक महोदय सचमुच प्रयोगवाद नामक किसी नए काव्यान्दोलन के प्रवर्तक हैं। संपादक अज्ञेय पर लगातार यह आरोप लगता रहा है कि उन्होंने सप्तकों में शामिल कवियों पर अपने प्रयोगवादी विचार थोपने की कोशिश की है। इस तरह आरोपों के प्रतिक्रिया स्वरुप संपादक अज्ञेय ने अपनी भूमिकाओं एवं वक्तव्यों में यह कहा है कि– ''प्रयोग अपने आप में इश्ट नहीं है, वह साधन है और दोहरा साधन है। एक तो वह उस सत्य को जानने का साधन है, जिसे कवि प्रेशित करता है, दूसरे वह उस प्रेशण क्रिया और उसके साधनों को जानने का भी साधन है।''[5]

सप्तकों की इस श्रृंखला के बीच 1945 में अज्ञेय ने इलाहाबाद से प्रतीक का संपादन किया। पत्रकार अज्ञेय के सांस्कृतिक औदात्य और सुरुचिपूर्ण संपादन का उन्नयन प्रतीक के माध्यम से हुआ, 1947 में द्वैमासिक प्रतीक का संपादन प्रारंभ हुआ। जिसका विकास 1950 के अंत में मासिक के रुप में हुआ। अपनी पत्रिका के लिए सामग्री संचयन और संशोधन में जैसा परिश्रम महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया था, बहुत

कुछ वैसा ही कठिन परिश्रम और अद्भूत संयोजन अज्ञेय ने भी किया।

प्रत्येक अंक में वैविध्यपूर्ण सामग्री की स्तरीयता का निर्वाह अज्ञेय की इस पत्रिका का केन्द्रीय युग था। न केवल साहित्य बल्कि कला और संस्कृति के विभिन्न पक्षों पर भी अज्ञेय ने प्रतीक में अंतर्राश्ट्रीय स्तर की सामग्री उपस्थित की। प्रतीक ने हिन्दी की शताधिक नए प्रतिभावान रचनाकार दिए। रघुवीर सहाय को इसी मासिक में अज्ञेय सह–संपादक के रुप में ले आए और उनकी पत्रकार प्रतिभा को जाग्रत किया। 1952 में प्रतीक का अवसान हो गया लेकिन 1974 में अज्ञेय ने नया–प्रतीक नाम से इस मासिक पत्रिका का तीसरा अध्याय शुरू किया।

'प्रतीक' और 'नया प्रतीक' के बीच अज्ञेय ने पत्रकारिता के विशय में अनेक छोटे–बड़े प्रयास किए। जैसे 1950 में उन्होंने वाक् त्रैमासिक के कुछ अंक निकाले। इसी वर्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन की शोध पत्रिका सम्मेलन पत्रिका के 'भारतेन्दु विशेषांक' का संपादन भी अज्ञेय ने किया। इसी तरह आकाशवाणी में काम करते समय अज्ञेय ने प्रसारित सामग्री से चुनकर 'प्रसारिका पत्रिका' के कुछ अंश निकाले। संसदीय हिन्दी परिशद् के त्रैमासिक 'देवनागर' का संपादन भी अज्ञेय ने कुछ अर्से तक किया।

अज्ञेय ने खडी बोली काव्य का प्रतिनिधि संकलन 'पुश्करिणी' (1959) नाम से निकाला। इसके अंतर्गत मैथिली शरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा की चयनित रचनाएं संकलित हैं।

1960 में रूपांबरा का संपादन हुआ। इसे सुमित्रानंदन पंत की शश्ठिपूर्ति के उपलक्ष्य पर प्रस्तुत किया गया। यह आधुनिक हिन्दी के प्रकृति काव्य का संकलन है।

21 फरवरी 1965 को अज्ञेय जी ने साप्ताहिक पत्र दिनमान निकाला। इसके मुख्य पृश्ठ पर एक वाक्य अंकित था – 'राष्ट्र की भाषा में राश्ट्र का आह्वान'। ''इस पत्र के संपादन का कार्यभार संभालने के लिए बेनेट कोलमैन कंपनी की ओर से रमेश जैन ने यह प्रस्ताव रखा। जिसके लिए संपादक अज्ञेय ने प्रबंधक के सामने दो प्रमुख बातें रखी, पहली संपादकीय विभाग के लिए सहकर्मियों का चयन वे स्वयं करेंगे तथा दूसरी प्रबंधन की ओर से संपादन कार्य में कभी कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा। साथ ही वे प्रबंधक को यह भरोसा भी दिलाते हैं कि जब तक दिनमान स्थापित नहीं हो जाएगा मैं कहीं नहीं जाऊँगा।''[6]

अज्ञेय हिन्दी में टाईम और न्यूजवीक जैसी सुसज्जित पत्रिका निकाल रहे हैं। जिससे हिन्दी का बौद्धिक जगत इस पत्र को लेकर काफी उत्साहित और उत्तेजित था। इसके प्रकाशन के लिए कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने शुभकामनाएं भेजी।

तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा– ''वात्स्यायन जी हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित रचनाकार हैं। मुझे आशा है कि उनके निर्देशन में यह पत्रिका भारतीय पत्रकारिता के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करेगी।''[7]

इसी तरह उस समय के शिक्षा मंत्री मोहम्मद करीम छागला की कामना थी– ''अज्ञेय का नाम साहित्य में सुरूचि, शालीनता, नवीनता और प्रौढ़ता का वाचक समझा जाता है। मुझे पूरा विश्वास है कि उनके संपादन में निकलने वाला दिनमान दिनमान के ही समान प्रतापी और जाज्वल्यमान होगा।''[8] आगे आने वाले अंकों में 'चिट्ठी–पत्री' में उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी का संदेश है कि –''श्री वात्स्यायन हिन्दी साहित्य में नई चेतना के अग्रदूत रहे हैं। दिनमान हिन्दी पत्रकारिता में एक स्थायी मानदंड बने और जनतांत्रिक समाज तथा राष्ट्रीय एकता के पथ को आलोकित रखे यही मेरा आशीर्वाद है।''[9]

अज्ञेय की समूची पत्रकारिता को लेकर उनके सहयोगी श्री त्रिलोक दीप ने अज्ञेय से साक्षात्कार में उनकी पत्रकारिता की भाशा पर प्रश्न किया, उत्तर में पत्रकार अज्ञेय ने कहा था ''दिनमान में मैंने भाशा की ओर अधिक ध्यान दिया था। मैंने अपने सहयोगियों के मन में यह बात बैठा दी थी कि दिनमान में हम जो कुछ भी लिखेंगे भले ही उसकी सामग्री कहीं से अनुवाद करके ही पाई हो, उसके इसी रूप में प्रस्तुत करेंगे जैसे किवह मूल हिन्दी में ही लिखा गया है। अनुवाद की भाशा हम नहीं चाहते थे, हम मौलिक पत्रकारिता की भाशा चाहते थे।''[10]

अज्ञेय जानते थे कि हिन्दी की प्रतिश्ठा की बुनियाद हिन्दी की प्रेशनीयता और उसकी आंतरिक शक्ति में है। इसी विश्वास पर उन्होंने अपनी समूची संगठन शक्ति दिनमान के विकास पर लगाई। कुछ महिनों के भीतर ही दिनमान हिन्दी का नहीं, भारत का अन्यतम साप्ताहिक पत्र बन गया था। इसकी प्रशंसा करते हुए कुछ विदेशी पत्रकारों ने कहा कि जिस भाषा में दिनमान जैसा साप्ताहिक पत्र निकले उसे क्षमाप्रार्थी होने की आवश्यकता नहीं। दिनमान ने न केवल फैलते हुए विश्व की जानकारी सुलभ करायी, सुरूचि का भी परिमार्जन किया। इस पत्र के स्तम्भों में राजनैतिक दल स्तम्भ बहुत लोकप्रिय हुआ था, क्योंकि वह प्रतिश्ठित राजनेताओं से सीधे बातचीत करवाने का जरिया बनाया गया। साहित्य के साथ– साथ साहित्यालोचना को भी महत्व दिया गया। दिनमान का वह अंक काफी चर्चित रहा था जिसमें 1966 में बिहार में पड़े सूखे की रपट छपी थी। 'सूखे की रपट' शीर्शक से छपी इस रिपोर्ट को मार्मिक ढ़ंग से लिखवाने में संपादक ने कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु का सहयोग लिया।

यह सहयोग ''पत्रकारिता के इतिहास में न केवल अभूतपूर्व अपितु अभूत पश्चात् ही कहा जाएगा। सचित्र विवरण ने व्यापक प्रभाव उत्पन्न किया था, अनेक अखबारों ने उससे प्रेरित होकर उसी का अनुकरण करते हुए उस विभीशिका को उजागर किया था।''[11]

दिनमान के बाद अज्ञेय ने अगस्त 1977 में दैनिक 'नवभारत टाइम्स' का संपादन किया। अज्ञेय ने इस पत्र में आकाश भारती,

सामाजिक चुनौती (11 मार्च 1978), स्वायत आकाशवाणी (12 मार्च 1978), भारतीय संस्कृति केवल अतीत की वस्तु नहीं (16 जून 1978), पालिकाएं साहित्यकार और नागरिकों के बीच की कड़ी बने (1 सितम्बर 1978) आदि महत्वपूर्ण लेख लिखे।

इसी तरह 1978 में जब अज्ञेय को 'कितनी नावों में कितनी बार' के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला, नवभारत टाइम्स ने 22 जनवरी 1979 को इस पुरस्कार की रिपोर्ट लिखते हुए कहा– '' भारतीय भाषाओं में 1962 से 1971 के मध्य प्रकाशित कृतियों में अज्ञेय जी की कृति सर्वश्रेश्ठ चुनी गई।''[12] पत्र पत्रिकाओं के संपादन में अज्ञेय ने कई चुनौतियों का सामना किया लेकिन यह उनकी संपादन नीति ही थी जिसमें उन्होंने कभी समझौता नहीं किया। उनके अपने निश्चित मानदंड थे जिनपर वे कार्य करते थे। उन्होंने संपादकों और पत्रकारों को भी मानदंडों पर चलने के लिए प्रेरित किया और नीतिविहीन कार्यों को ही उन्होंने पत्रकारों और संपादकों की घटती प्रतिष्ठा का कारण बताया।

निष्कर्ष :–

साहित्य रचना के साथ–साथ अज्ञेय संपादक तथा पत्रकार की भूमिका निभाते रहे। पत्रकारिता से अज्ञेय का साक्षात्कार साप्ताहिक सैनिक के माध्यम से हुआ, तदंतर विशाल भारत फिर उन्होंने तारसप्तक का संपादन किया। हिन्दी काव्य जगत में तारसप्तक का आना एक नई लहर, नया विवाद तथा एक उथल– पुथल का संकेत था। सहयोगी बंधुओं ने तारसप्तक के संपादन के लिए व्यवस्था कुशल अज्ञेय को चुना तथा इसमें उन सात कवियों को शामिल किया, जिनके काव्य में नये प्रयोग एवं सत्य की तलाश की जा रही थी।

अज्ञेय जी ने अपने पत्र –पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी पत्रकारिता के स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास किया– वे अपने पत्रों सैनिक, विशाल भारत, प्रतीक, नया प्रतीक, दिनमान आदि में एक कुशल संपादक के कर्त्तव्यों तथा कुशल लेखन में सुधार की स्थिति को व्यक्त करते आए हैं।

संदर्भ संकेत :–

1. सं0 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी– अज्ञेय (संपादक अज्ञेय, प्रभाकर माचवे पृ0 सं0 236)
2. सं0 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी– अज्ञेय (संपादक अज्ञेय, प्रभाकर माचवे पृ0 सं0 236)
3. अज्ञेय – तारसप्तक की भूमिका से
4. दूसरे सप्तक की भूमिका से पृ0 सं0 3
5. दूसरे सप्तक की भूमिका से पृ0 सं0 5
6. धर्मयुग, 10 अप्रैल 1988
7. रमेश चन्द्र शाह– पत्रकारिता के युग निर्माता सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन पृ0 35
8. रमेश चन्द्र शाह– पत्रकारिता के युग निर्माता सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन पृ0 36
9. रमेश चन्द्र शाह– पत्रकारिता के युग निर्माता सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन पृ0 88
10. साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 18 मार्च 1981 (अज्ञेय से भेंटवार्ता, त्रिलोक दीप)
11. रमेश चन्द्र शाह– पत्रकारिता के युग निर्माता सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन पृ0 49
12. कृष्ण दत्त पालीवाल– अज्ञेय होने का अर्थ, पृ0 सं0 193

डॉ0 उर्मिला कुमारी
मो0 9572474739
Email-urmilakumari0870@gmail.com
C/O मुकेश कुमारग्राम– भुड़वा (मिडिल स्कूल के पास)
पो0– शोले, थाना– पाटन, जिला– पलामू (झारखण्ड),
पिन– 822123

भारतीय ज्ञान परंपरा में श्रीरामचरितमानस की महत्ता

7

दीपिका व्यास

सारांश

गोस्वामी तुलसीदास रचित 'श्रीरामचरितमानस' एक सुप्रसिद्ध अवधी भाषा से अलंकृत कालजयी महाकाव्य है। यह भारतीय कला संस्कृति एवं आस्था की अनमोल प्रतिभूति है। इसे हिंदूओं का पवित्र ग्रंथ माना जाता है। मानवतावादी यथार्थ के संदर्भ में रामचरितमानस संपूर्ण काल के लिए व्यवहारिकता और सैद्धांतिकता का अनूठा चित्रण है। इसके साथ–साथ वर्तमान और भविष्य के मूल्यों की झलक और नैतिकता की बहुत सुंदर प्रस्तुति है। हिन्दी भाषा का यह ग्रंथ, मर्यादा, भक्ति, ज्ञान, त्याग और सदाचार की शिक्षा का सर्वोतम स्रोत है। नियमित धर्म, विशिष्ट धर्म तथा आपद्धर्म के विभिन्न रूपों की संकल्पना इसकी विशेषता है। पितृधर्म, पुत्रधर्म, मातृधर्म, गुरुधर्म, शिष्यधर्म, भ्रातृधर्म, मित्रधर्म, पतिधर्म, अर्धांगिनीधर्म और विरोधीधर्म आदि सम्बन्धों के विश्लेषण के साथ ही साथ दास–स्वामी, पूजक–पूज्य एवं आराधक–आराध्य संबंधी कर्तव्य परायणता का संपूर्ण वर्णन इस ग्रन्थ में मिलता है। इसीलिए यह ग्रंथ स्त्री–पुरुष, वृद्ध–बाल–युवा, निर्धन, धनी, शिक्षित, अशिक्षित, गृहस्थ, संन्यासी सभी के लिए लाभदायी एवं उत्कृष्ट ज्ञान का भंडार है। श्रीरामचरितमानस एक शाश्वत कृति है जिसमें समाज के यथार्थ का बहुत सुदंर चित्रण है। मानवजाति की मर्मस्पर्शी पीड़ाओं और दुःखों का समाधान इस ग्रंथ के माध्यम से मिलता है। श्रीरामचरितमानस की रचना का मुख्य लक्ष्य मानवता की रक्षा करना और जीवन यात्रा, सामाजिक चेतना और मूल्य परक शिक्षा का प्रसार करना है। मानस की परिधि में केवल मानव ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण लोक के जीवधारी शामिल है। वर्तमान समय में कर्तव्यपरायणता के सिद्धान्त का अनुमोदन करना होगा तभी लोकतंत्र की लाज बचेगी और राम राज की सार्थकता सिद्ध होगी।

बीज शब्द– ज्ञान, धर्मपरायणता, नैतिकता, सदाचार की शिक्षा, मर्यादा, मानवतावादी यथार्थ, कर्तव्यपरायणता।

भारतीय ज्ञान परंपरा भारतवर्ष में अनादि काल से चली आ रही शिक्षा प्रणाली है। यह एक समृद्धशाली बौद्धिक संपदा और समस्त जगत को प्रदीप्त करने वाली गरिमापूर्ण परंपरा है। वैदिक काल इसका आधार स्तंभ है। इसका प्रमुख ध्येय चरित्र को समृद्धशाली एवं जन्म–मरण के चक्र से छुटकारा दिलाना है।

"भारतीय ज्ञान परंपरा का तात्पर्य उस परंपरा से है जो ज्ञान से उत्पन्न, ज्ञान से पोषित तथा ज्ञान से ही संचालित होती है। यह परंपरा ऋग्वेद में स्तुति, यजुर्वेद में कर्मकांड, सामवेद में संगीत तथा अथर्ववेद में लोक उपचार के रूप में सुरक्षित है। वहीं उपनिषदों में ज्ञान की परंपरा के संवर्धन एवं संवहन की धारणा संरक्षित है। दर्शन ग्रंथो में इसी ज्ञान परंपरा के मानव उपयोगी स्वरूप को सुरक्षित रखने का उपक्रम है।" पश्चाद्वर्ती लोक जीवन साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की उपयोगिता को भली भाँति समझाया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में श्रीरामचरितमानस की महत्ता इसके मानवता के नैतिक मूल्य, जीवन यात्रा, सामाजिक चेतना, ज्ञान और शिक्षा के प्रसार से महसूस होती है। मानस की परिधि में केवल मानव ही नहीं है बल्कि संपूर्ण संसार का प्राणि वर्ग शामिल है। बिना किसी जाति या वर्ग भेदभाव के संपूर्ण प्राणी जगत् का उद्धार और कल्याण करना ही सर्वोपरी है।

मनुष्य जीवन के शांतिपूर्वक निर्वाह के लिए मानव धर्म को स्वीकार करना जरूरी है। यहां धर्म का मतलब उपासना या तिलक लगाने से नहीं, बल्कि कर्तव्य परायणता से है। हिंदू संस्कृति में परोपकार को सबसे बड़ा धर्म माना गया है। हालाकिं विश्व की सभी पुरातन एवं अधुनातन सभ्यताओं में परोपकार की भावना का उल्लेख है। सभी धर्मों में परोपकार की भावना को सही माना गया है। लेकिन हिन्दू धर्म में इसे सर्वोपरी माना गया है। इस बारे में तुलसीदास जी उत्तरकांड में चौपाई लिखते है–

"पर हित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।
निर्नय सकल पुरान बेद कर। कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर।।"

भावार्थ– दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को दुःख पहुँचाने के समान कोई नीचता (पाप) नहीं है। हे तात! समस्त पुराणों और वेदों का यह निर्णय (निश्चित सिद्धांत) मैंने तुमसे कहा है, इस बात को विद्वान लोग जानते हैं।

सामाजिक सद्भाव की स्थापना के लिए जीवन मूल्यों की समझ होना अति आवश्यक है। "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" को ध्यान में रखकर सामाजिक मूल्यों और आदर्शो की स्थापना करना ही लक्ष्य होना चाहिए। राम इन्हीं मूल्यों और आदर्शो मे पारंगत थे। राम राज्य लोक पक्ष पर आधारित था, केन्द्रीय पक्ष पर नहीं। जो वास्तविक रूप में नजर भी आया। वर्तमान लोकतान्त्रिक युग में प्रत्येक राज्य अपनी यथास्थिति अनुसार आगे बढ़ रहे है। प्रजातांत्रिक

व्यवस्था को बेहतर से बेहतर करने में लगे है। वर्तमान में जहां हिंसा, छल–कपट, अन्याय, अत्याचार, अनाचार और आडंबर का प्रभुत्व है। आज के सभी लोकतान्त्रिक देशों को राम राज्य की प्रजातान्त्रिक व्यवस्था से ज्ञान और सीख लेने की आवश्यकता है क्योंकि राम राज में सुशासन, समृद्धि, धर्मपरायणता, समानता और सौहार्दपूर्ण व्यवस्था थी। लोग वैर भावना नहीं रखते है बल्कि प्रेम करते है। इस पर तुलसीदास जी उत्तरकांड में चौपाई लिखते है–

"राम राज बैठें त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका।।
बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप बिषमता खोई।।"

भावार्थ– श्री रामचंद्र जी के राज्य पर प्रतिष्ठित होने पर तीनों लोक हर्षित हो गए, उनके सारे दुख जाते रहे। कोई किसी से वैर नहीं करता। श्री रामचंद्रजी के प्रताप से सबकी विषमता (आंतरिक भेदभाव) मिट गई।

भगवान राम की कर्तव्य परायणता और नैतिकता ही उनको मर्यादा पुरूषोत्तम बनाती है। राम ने सदा परोपकारी जीवन जिया हैं। मानस में भाई का भाई के प्रति समर्पण, पत्नी का पति के प्रति समर्पण, संतान का माता–पिता के प्रति आज्ञापालक होने का स्पष्ट चित्रण मिलता है। पुत्र का धर्म है कि वह बिना उचित अनुचित का विचार किये, पिता की आज्ञा का पालन करें, यही भारतीय परंपरा है। तुलसीदास जी इस संबंध में अयोध्याकांड में दोहा लिखते है–

"पितु आयस भूषन बसन तात तजे रघुबीर।
बिसमउ हरषु न हृदयँ कछु पहिरे बलकल चीर।।"

भावार्थ– हे तात! पिता की आज्ञा से श्री रघुवीर ने भूषण–वस्त्र त्याग दिए और वल्कल वस्त्र पहन लिए। उनके हृदय में न कुछ विषाद था, न हर्ष।

आधुनिक युग में स्वार्थपरता व लोभ प्रवृति के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं और एकल परिवार का चलन बढ़ रहा है। परिवारों में वैमनस्यता बढ़ रही है। भाई, भाई का दुश्मन बना बैठा है। वहीं धर्म के वास्तविक ज्ञान के लिए चित्रकूट प्रसंग एक अद्भुत उदाहरण है। भरत, बड़े भाई राम के लिए सर्वस्व त्यागने को तैयार हैं। भरत के त्याग जैसा उदाहरण मिलना बहुत मुश्किल है। भाई के लिए उन्हें राज्य तुच्छ वस्तु नजर आता है। भाई का भाई के प्रति प्रेम अमृत्व हो गया है। इस पर तुलसी जी लिखते है–

"चलत पयादें खात फल पिता दीन्ह तजि राजु।
जात मनावन रघुबरहि भरत सरिस को आजु।।"

भावार्थ– भरत, पिता के दिए हुए राज्य को त्याग कर पैदल चलते और फलाहार करते हुए श्री रामजी को मनाने के लिए जा रहे हैं। इनके समान आज कौन है ?

आज के समय में हिंसा और उग्रवाद ने एक गंभीर समस्या का रूप धारण कर रखा है। दुनिया भर में हिंसा के कारण हर साल लाखों लोग मारे जा रहे हैं। मनुष्य में धैर्य की कमी और आक्रामकता प्रबल हो रही हैं। देश–विदेश में समाज को बड़े स्तर पर नुकसान झेलना पड़ रहा हैं। जिसका विस्फोटक उदाहरण हैं– मुम्बई के ताज होटल पर हमला व न्युयार्क के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर 9/11 का हमला।

आज हमें राम के सिद्वांतों व नियमों के महत्त्व का अहसास हो रहा है। वर्तमान में हमें इस ज्ञान परंपरा की सर्वाधिक जरूरत है। क्योंकि आज भारत के साथ–साथ संपूर्ण विश्व सांप्रदायकिता, नक्सलवाद और आतंकवाद जैसी अनेंको समस्याओं से जूझ रहा है। हर तरफ अशान्ति ही अशान्ति है। आज के लोकतान्त्रिक राजा भी अपनी स्वार्थपूर्ति में लगे हैं। तुलसीदास जी कर्तव्यहीन राजा के संबंध में अयोध्याकांड में चौपाई लिखते है–

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अवसि नरक अधिकारी।।"

भावार्थ– जिस राज्य की जनता कष्ट में होती है और वहां का राजा अगर अपने कर्तव्य का पालन ढंग से. नहीं करता है तो वह नरक में जाने का अधिकारी होता है। अतः प्रत्येक जिम्मेदार व्यक्ति/राजा को अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन ईमानदारी से करना चाहिए।

मानस के अनुसार राज्य के सुशासित संचालन के लिए ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति की नियुक्ति होनी चाहिए। आज के समाज में ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ तो ढूंढे नहीं मिलते तथा छल–कपट करने वाले भरे पड़े है। इसीलिए आज समाज क्षुद्रताओं से अक्षुण्ण हो चुका है। वहीं राम का राज्य इन नीचता व ओछेपन के विपरीत एक धन धान्य से परिपूर्ण एवं समृद्धशाली राज्य था।

राम राज में हर औरत सुरक्षित थी। यहां तक की सीता–हरण के दौरान भी सीता माता सुरक्षित थीं। रावण ने माता सीता के अशोक वाटिका निवास के दौराने उन्हें कभी स्पर्श करने की चेष्टा तक नहीं की। अतः यह कह सकते हैं कि मानस के राक्षस–रूपी राजा के शासन में भी नारी सुरक्षित और सम्माननीय थी। वहीं वर्तमान में माँ, बहन और बेटी असुरक्षित हैं। हर समय आशंका का भय बना रहता है। वर्तमान मनुष्य शैतान बन चुका है और नारी अस्मिता को तार तार कर रहा है। इस संदर्भ में तुलसीदास ने उत्तरकाण्ड की चौपाई में लिखते है–

"कलिकाल बेहाल किए मनुजा। नहिं मानत क्वौ अनुजा तनुजा।।
नहिं तोष बिचार न सीतलता। सब जाति कुजाति भए मगता।।"

भावार्थ– कलिकाल ने मनुष्य को बेहाल (अस्त–व्यस्त) कर डाला। कोई बहिन–बेटी का भी विचार नहीं करता। (लोगों में) न संतोष है, न विवेक है और न शीतलता है। जाति, कुजाति सभी लोग भीख माँगने वाले हो गए।

वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में कोख में बेटी की हत्या, दहेज प्रथा, शोषण व अत्याचार जैसी समस्याएं नए रूप में उभर रही हैं, जिनसे महिलाओं के अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा है। ऐसे में दोषी लोगों को दंड देना पाप नही, पुण्य है। किष्किन्धाकाण्ड की ये चौपाई यहां सटीक बैठती है–

"अनुज बधू भगिनी सुत नारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी।।
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई। ताहि बधें कुछ पाप न होई।।"

भावार्थ– छोटे भाई की स्त्री, बहिन, पुत्र की स्त्री और कन्या, ये चारों समान हैं। इनको जो कोई बुरी दृष्टि से देखता है, उसे मारने में कुछ भी पाप नहीं होता।

परिवर्तन संसार का नियम है लेकिन इस परिवर्तन में ऊँट किस करवट बैठगा, यह विचारणीय बिंदू हैं। वर्तमान में बढ़ती जनसंख्या, प्रतिस्पर्धा, मंहगाई और बाजारीकरण के कारण बेरोजगारी की समस्या शिखर पर है, जो बढ़ते अपराध और अत्याचार के लिए उतरदायी है। धैर्य और संवेदनशीलता की कमी के कारण अनैतिकता एवं दुष्कर्म बढ़ रहे है। मानस कीं लोक कल्याण, लोकहित एवं समन्वय के सिद्धांत द्वारा इनका समाधान कर सकते है।

मानस के राम में हम उनके व्यक्तित्व का वह रूप देखते हैं जहाँ राम का उद्देश्य ''स्वान्तः सुखाए'' न होकर ''बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'' है। दूसरों के अधिकारों की रक्षा करते हुए न्याय करते हैं। प्रजा के दुःखों को स्वयं के दुःख मानकर यथोचित उपाय करते है। सब पर प्रेम रूपी अमृत बरसाते है। इस संदर्भ में तुलसीदास ने अयोध्याकांड में दोहा लिखते है–

"प्रेम अमिअ मंदरु बिरहु भरतु पयोधि गँभीर।
मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुबीर।।"

भावार्थ– प्रेम अमृत है, विरह मंदराचल पर्वत है, भरतजी गहरे समुद्र हैं। कृपा के समुद्र श्री रामचन्द्रजी ने देवता और साधुओं के हित के लिए स्वयं (इस भरत रूपी गहरे समुद्र को अपने विरह रूपी मंदराचल से) मथकर यह प्रेम रूपी अमृत प्रकट किया है।

वर्तमान दौर में राजनीति, धर्म में घुस कर अधर्म का काम कर रही है। मतदाता को मत के लिए लोक लुभावने वादों के हसीन सपनें दिखाए जा रहे है। इन दोनों समस्याओं के कारगर उपाय की सख्त जरूरत है। एक बेहतरीन राज्य के निर्माण हेतु सुचिता का होना अति आवश्यक है। मानस में राम राज्य की संकल्पना सचमुच में अतुलनीय है। जहाँ सामाजिक संतुलन को सरल और सुगम रूप में दर्शाया गया है। मौजूदा व्यवस्था का राम राज से तुलनात्मक अध्ययन करने पर हमें रात दिन जैसा अंतर मालूम पड़ता है।

वर्तमान काल में मनुष्य केवल मनुष्य का ही बैरी नहीं है। वह जैवमंडल से भी खिलवाड़ कर रहा है। वहीं मानस में मानव समन्वयता के साथ–साथ जैवमंडल संतुलन का भी शानदार चित्रण देखने को मिलता हैं। जिसका वर्णन तुलसी ने उत्तरकांड की निम्न चौपाई द्वारा व्यक्त किया हैं–

"फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन। रहहिं एक संग गज पंचानन।।
खग–मृग सहज बयरू बिसराई। सबहिं परस्पर प्रीति बढ़ाई।।"

भावार्थ– वनों में वृक्ष सदा फूलते और फलते हैं। हाथी और सिंह (वैर भूलकर) एक साथ रहते हैं। पक्षी और पशु सभी ने स्वाभाविक वैर भुलाकर आपस में प्रेम बढ़ा लिया है।

पूरे विश्व में आज अराजकता के घिनौने रूप ने मानवता को खतरे में डाल रखा है। तब मानस की याद आती है, जिसमें रास्ते से भटक चुके रावण को सही मार्ग दिखाने के लिए आज्ञाकारी, धैर्यवान, न्यायप्रिय और आत्मसंयमित राम आते हैं। जो समाज के कष्टों का हरण करते हैं। घमंडी पथ भ्रष्ट रावण को मौत की नींद सुलाते हैं। मानवता की रक्षा करते हुए विजयी पताका लहराते हैं। तुलसी जी ने मानस में ऐसे आज्ञाकारी सुपुत्र का उल्लेख किया है जो अपने गुणों एवं कर्मो से पिता सहित संपूर्ण परिवार को आनंदित रखते। तब ऐसे में अयोध्याकांड की निम्न चौपाई की याद आती है–

"धन्य जनमु जगतीतल तासू। पितहि प्रमोदु चरित सुनि जासू।।
चारि पदारथ करतल ताकें। प्रिय पितु मातु प्रान सम जाकें।।"

भावार्थ– इस पृथ्वीतल पर उसका जन्म धन्य है, जिसके चरित्र सुनकर पिता को परम आनंद हो, जिसको माता–पिता प्राणों के समान प्रिय हैं, चारों पदार्थ (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) उसके करतलगत (मुट्ठी में) रहते हैं।

मानस में हमें एक व्यक्ति, एक काम, श्रेष्ठ काम का शानदार चरित्र चित्रण देखने को मिलता है अर्थात् जो व्यक्ति जिस काम में दक्ष था उसी अनुसार उसे काम सौंपा गया, वहीं वर्तमान में इसके बिल्कुल विपरीत है। कार्य में निपुण बेरोजगार है और अनिपुण पद स्थापित हुए बैठे हैं। अतः वर्तमान में मानस से ज्ञान लेने की जरूरत है।

वर्तमान शासन व्यवस्था भी मानस की शासन व्यवस्था से मेल नहीं

खाती है। मानस के अनुसार, कोई अनीति या अन्याय करे, तो उसे बिना किसी डर के दंड दिया जाए। तुलसी लिखते है कि राजा को प्रजा के कल्याण (लोकहित) हेतु काम करना चाहिए, लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वमत व स्वहित की प्रधानता है।

मनुष्य के आचार–विचार से ही समाज में सामंजस्य स्थापित हो सकता है। अर्थात पितृधर्म, पुत्रधर्म, मातृधर्म, गुरुधर्म, शिष्यधर्म, भ्रातृधर्म, मित्रधर्म, पतिधर्म, अर्धांगिनीधर्म और विरोधीधर्म आदि सम्बन्धों के विश्लेषण के साथ–साथ दास–स्वामी, पूजक–पूज्य एवं आराधक–आराध्य संबंधी कर्तव्य परायणता से ही समाज में सामंजस्य स्थापित हो सकता है। इसीलिए यह ग्रंथ स्त्री–पुरुष, वृद्ध–बाल–युवा, निर्धन, धनी, शिक्षित, अशिक्षित, गृहस्थ, संन्यासी सभी के लिए लाभदायी एवं उत्कृष्ट ज्ञान का भंडार है।

रामचरितमानस के दोहे वेद सम्मत नहीं बल्कि लोक सम्मत हैं। इसालिए यह सर्व साधारण के लिए कंठ का हार बन गई है। तुलसी ने मानस में जिस प्रकार से समाज में सामंजस्य स्थापित किया है, उसी का अनुसरण वर्तमान समाज स्थापना में किया जाये तो समाज में व्याप्त विसंगतियाँ और असमानताएँ स्वतः ही खत्म हो जाएगी। वर्तमान समाज को श्रीरामचरितमानस की ज्ञान परंपराओं, आदर्शों और सिद्धान्तों से ज्ञान व सीख लेने की आवश्यकता है, तभी एक सभ्य व स्वस्थ समाज / राज्य का निर्माण हो सकेगा।

आज के भौतिकतावादी युग में नैतिक मर्यादाओं और मूल्यों का क्षय हो रहा है। सर्वे भवन्तु सुखिनः के विचार के बावजूद लोग दुःखों की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। हमारे संस्कार और संस्कृति का पतन हो रहा है। मानवीय संवेदनाओं में कमी हो रही है। सामाजिक सोच सिकुड़ती जा रही है। भौतिकतावादी सोच हमारे समाज पर इस कदर हावी होती जा रही है कि हम केवल अपने काल्पनिक सुख–सुविधा की मृगतृष्णा में धर्म–अधर्म और सत्य–असत्य का फर्क करना तक भूलते जा रहे हैं। इनके परिणामस्वरूप अवसाद, आत्महत्या, अंतर्कलह जैसी प्रकृति–विरुद्ध घटनाएं हो रही हैं। तब मनुष्य वर्ग की मुक्ति के लिए मानस की ज्ञान परंपरा अतिआवश्यक हो जाती है।

मानस की सामाजिक व्यवस्था में धर्म, परोपकार, दान, दया, की विचारधाराएं प्रमुख थी जबकी वर्तमान में उनकी जगह अधर्म, अपकार, कामुकता, निर्दयता, कटु–बहस, द्वेष और ईर्ष्या आदि ने ग्रहण कर लिया है। मानस के कुलीन परिवार में जन्में राजकुमार 'राम' ने समाज के लिए अद्वितीय आदर्श, जैसे मर्यादा, करूणा, दया, सदाचार, सत्य, धर्म तथा एक पत्नीव्रत नियम का पालन आदि प्रस्तुत किए। इसी कारण वे मर्यादा पुरूषोत्तम राम कहलाए। गुरु व पिता की आज्ञा उनके लिए सर्वोच्च थी। इन्हीं सब आदर्शो के कारण लक्ष्मण उनके कायल थे। इसीलिए राम श्रेष्ठ व्यक्तित्व के धनी माने जाते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान परिदृश्य में ज्ञान परंपरा की महत्ता और अधिक प्रासंगिक है क्योंकि हमारे प्राचीन ग्रंथ अथाह ज्ञान के सागर हैं। यह मनुष्य को कर्तव्य बोध व कर्तव्य परायणता के साथ–साथ तनाव रहित जीवन जीने की कला सिखाती है। वर्तमान काल की इस वेला में प्राचीन भारतीय ज्ञान का संवर्धन करके हर भारतीय को इसके प्रति जागरूक एवं आत्मसात करने की जरूरत है। पारंपरिक ज्ञान, कला, एवं मूल्यों को ढूंढ कर मौजूदा वक्त के साथ सांमजस्य स्थापित करना ही आज की आवश्यकता है। यह सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं रचनात्मक अधिगम के साथ–साथ सहयोग, एकता एवं भातृत्व की भावना के विकास पर जोर देती है।

विज्ञान की उन्नति हर युग की जरूरत है लेकिन इसमें दूरदृष्टि और मनुष्य की भलाई का ध्येय प्रमुख होना चाहिए। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा अद्भुत ज्ञान और चैतन्यता का खजाना है इसमें ज्ञान–विज्ञान, लौकिक–पारलौकिक, कर्म–धर्म, भोग–त्याग का अतुलनीय समन्वय है। वैदिक काल की कृतियां ज्ञान ज्योति पुंज से प्रदीप्त है। श्री रामचरितमानस, भारतीय ज्ञान परंपरा का एक सारगर्भित एवं परिष्कृत सार संग्रह है।

हमारी 'वसुधैव कुटुंबकम' की परंपरा को उच्च कोटि का बनाए रखने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक युग के साथ सामंजस्य व तालमेल बैठाने की जरूरत है, तब मानस की वास्तविक महत्ता दृष्टिगत होगी। वर्तमान समय में मानस के कर्तव्यपरायणता के सिद्धान्त का पालन करने पर ही लोकतंत्र की लाज बचेगी और राम राज्य की सार्थकता सिद्ध होगी।

संदर्भ सूची –

1.कृष्ण कुमार यादव : भारतीय ज्ञान परंपरा महाभारत से अभिशापित द्विधाग्रस्त : द्वापर तक, ई–बुक भारतीय ज्ञान परंपरा, पृ0सं0– 93

2.श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीविरचित श्रीरामचरितमानस (विशिष्ट संस्करण) : टीकाकार – हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण–67, स0–2021, उत्तरकांड चौपाई, पृ0स0– 948

3.श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीविरचित श्रीरामचरितमानस (विशिष्ट संस्करण) : टीकाकार – हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण–67, स0–2021, उत्तरकांड चौपाई, पृ0स0– 930

4.श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीविरचित श्रीरामचरितमानस (विशिष्ट संस्करण) : टीकाकार – हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण–67, स0–2021, अयोध्याकांड, दोहा–165, पृ0स0– 481
5.श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीविरचित श्रीरामचरितमानस (विशिष्ट संस्करण) : टीकाकार – हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण–67, स0–2021, अयोध्याकांड, दोहा–222, पृ0स0– 528
6.श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीविरचित श्रीरामचरितमानस (विशिष्ट संस्करण) : टीकाकार – हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण–67, स0–2021, अयोध्याकांड, चौपाई, पृ0स0– 402
7.श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीविरचित श्रीरामचरितमानस (विशिष्ट संस्करण) : टीकाकार – हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण–67, स0–2021,
8.उत्तरकांड, चौपाई, पृ0स0– 1004 श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीविरचित श्रीरामचरितमानस (विशिष्ट संस्करण) : टीकाकार – हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण–67, स0–2021, किष्किंधाकांड, चौपाई, पृ0स0– 691
9.श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीविरचित श्रीरामचरितमानस (विशिष्ट संस्करण) : टीकाकार – हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण–67, स0–2021, अयोध्याकांड, दोहा–238, पृ0स0– 542
10.श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीविरचित श्रीरामचरितमानस (विशिष्ट संस्करण) : टीकाकार – हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण–67, स0–2021, उत्तरकांड, चौपाई, पृ0स0– 932
11.श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीविरचित श्रीरामचरितमानस (विशिष्ट संस्करण) : टीकाकार – हनुमानप्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर, संस्करण–67, स0–2021, अयोध्याकांड, चौपाई, पृ0स0– 381

पता – श्रीमती दीपिका व्यास पत्नी डा. विक्रम जोशी,
वार्ड न0–17, हरगोबिंद नगर, चौटाला रोड़,
मंडी डबवाली, जिला सिरसा, हरियाणा।
मोबाइल न0– 8295652028
ई–मेल –luckyjoshi84@gmail.com

कोरोना काल की कविताएँ

8

डॉ० बाबू जोसफ

सारांश

कवि, कहानीकार एवं निबन्धकार के रूप में विख्यात विजय संदेश की नवीनतम काव्य कृति है 'कोरोना काल की कविताएँ'। इस संकलन में उनकी कुल 53 काव्य रचनाएँ संकलित की गई हैं, जिनमें कोरोना काल के जीवन संघर्ष, नाउम्मीदी एवं मायूसी के बीच आशा का स्वर मुखरित हुआ है। कोरोना काल के दौरान हमारे रोजमर्रा के जीवन के अनुभवों को आधार बनाकर ही विजय संदेश ने कविताएँ लिखी हैं जो हर संवेदनशील आदमी को कविता की ओर खींचती हैं। इन कविताओं में विषयगत विविधता तो नहीं है, लेकिन इनमें गहन अनुभूति एवं संवेदना की गहराई है। कविताओं का विषय भले ही एक हो, परंतु कवि ने संकलन की हर कविता में अपना एक अलग रंग भरने की चेष्टा की है।

24 मार्च 2020 में सरकार द्वारा घोषित लॉकडाउन के बाद लोगों की जिन्दगी अपने अपने घरों में कैद हो गयी थी और सड़कों पर, हाट–बाजारों में एक भय मिश्रित सन्नाटा पसर गया था। यह लॉकडाउन महीनों जारी रहा। इस अवधि में सार्वजनिक स्थल चाहे वे स्कूल–कालेज हों, पार्क या सिनेमाघर हों, व्यापारिक केन्द्र या सरकारी–गैर सरकारी संस्थान हों, सभी बंद कर दिये गये थे। कोरोना महामारी से बचाव के लिए सरकार की ओर से एक गाइड–लाइन जारी की गयी थी, जिसका पालन पूरी सख्ती से करने की बात कही गयी थी। विश्व में कोरोना घातक बीमारी के रूप में वर्ष 2019 के अंत में आया और जनवरी 2020 से इसने जोर पकड़ लिया जिसे कोरोना का प्रथम लहर कहा गया। कोरोना की दूसरी लहर का प्रभाव अप्रैल 2021 में देखा गया जो प्रथम लहर की अपेक्षा अधिक घातक था। इन दो लहरों में लोगों की जान–माल की काफी क्षति हुई। कोरोना के इस प्रकोप से विश्व को जो दुखद त्रासदी झेलनी पड़ी, उस त्रासदी के प्रभावस्वरूप विश्व की सभी भाषाओं में अनेक साहित्यिक रचनाएँ व्यापक स्तर पर रची गयीं। विजय संदेश की 'कोरोना काल की कविताएँ' इसी श्रृंखला की एक कड़ी है। इस संकलन की कविताओं में महामारी के बीच जीवन की तलाश, भय–दहशत के बीच उम्मीद और साहस–धीरज के बीच संतुलन की रेखाएँ खींचने की कोशिश की गयी है। कवि के मन में कभी ऐसी कोई चिंता नहीं थी कि दुनिया के सामने अपनी लाल–लाल आँखें तरेरने वाले भी एक अदृश्य विषाणु के आगे अपनी ही आँखें चुराते नजर आयेंगे। कवि ने यह भी सोचा नहीं था कि अणु–आयुधों से खेलने वाले तथा दंभ में शीश उठाकर चलने वाले एक अदृश्य शत्रु के हमले में निःसहाय और बेबस नजर आयेंगे। पूरी दुनिया में यह कोरोना विषाणु काल बनकर, मौत का यमदूत बनकर पसर गया और अपने नाखूनी पंजों के साथ वैज्ञानिक उपलब्धियों को धत्ता बताकर मृत्यु के गीत गाने लगा। कविता के शीर्षकों से प्रतीति होती है कि यह कविता संकलन कोरोना काल के मानवीय जीवन के हर छोटे–मोटे पहलू को छूने का प्रयास करता है। इस संकलन की कविताओं के पाठ से मालूम होता है कि विजय संदेश के लिए कविता केवल सौंदर्यबोध को अभिव्यक्त करने की चीज मात्र नहीं है, बल्कि वह मानवीय संकटों को अभिव्यक्त करने का साधन भी है। 'सोचा नहीं था', 'बुरे दिन बनाम अच्छे दिन', 'थम गयी जिन्दगी', 'वे अभागे', 'महामारी', 'दहशत', 'सिलसिला जारी है', 'ठहर गयी है जिन्दगी', 'कोशिश तो करें' आदि अनेक कविताएँ इस बात की ओर संकेत देती हैं। कवि ने इस अति सूक्ष्म विषाणु की विनाशक शक्ति और उससे उत्पन्न व्यापक विनाश का चित्रण कई कविताओं में उभारने का श्रम किया है। 'थम गयी जिंदगी' ऐसी ही एक कविता है, जिसमें कवि ने लिखा है कि इस सूक्ष्म विषाणु के कारण हमारी सारी जिंदगी थम गयी है, हर रफ्तार थम गया है, धरती ठहर गयी है और सारा संसार ठहर गया है। इसके कारण एक दहशत भरा खौफ आस–पास चतुर्दिक मंडराने लगा है। संकलन की कुछेक कविताएँ महामारी के दौरान हुई सामाजिक, आर्थिक, मानसिक और सांस्कृतिक समस्याओं को जाहिर करती हैं। 'कोरोना संक्रमण' शीर्षक कविता में कवि ने देखा है कि महामारी के विषम दौर का प्रभाव हमारी आर्थिक व सामाजिक गतिविधियों पर खूब पड़ा है। लोग अपने अपने घरों में कैद हो गये क्योंकि खुद की सुरक्षा के लिए एकांत जरूरी समझा गया। इस तरह उस त्रासद दौर में हमारे सार्वजनिक जीवन का अंत हो गया था। 'कोरोना के खिलाफ' कविता में कवि ने इस यथार्थ का वर्णन किया है कि लॉकडाउन के समय जब संगरोध का ऐलान हुआ तब लोग–बाग सभी त्राहि–त्राहि कर रहे थे। उन्होंने अनुभव किया था कि इस भयानक विपदा से आम आदमी का अत्यन्त बुरा हाल हुआ है। 'कोरोना के नाखूनी पंजे' कविता में कवि के अपने ही परिवार में कोरोना ने किस प्रकार दस्तक दिया– इसका सटीक चित्रण किया है। कवि को मालूम हुआ कि कोरोना केवल महामारी ही नहीं, बल्कि इसने जीने के ढंग और आजादी पर पाबंदियों का पहाड़ खड़ा कर दिया है। कवि का यह भी अनुभव है कि कोरोना के आने से दिलों के दरवाजे पर अटूट ताले लग गए हैं। कोरोना संक्रमितों के माथे की अनगिनत सिलवटें बता रही हैं कि नाते–रिश्ते भी एक–दूजे से आँख चुराने लग

गए हैं। शायद ही कोई घर, गली–मुहल्ला हो, शायद ही कोई कस्बा, गाँव–टोला हो, शायद ही कोई नगर–महानगर, देश–महादेश हो धरती के चप्पे–चप्पे पर इस कोरोना काल में ब्याल घूम रहा है। महामारी के दौरान मानवीय संबंधों में एक अजीब तरह की दूरी आ गयी थी, जिसका सही वर्णन यहाँ मौजूद है। कवि ने अहसास कराया है कि महामारी ने मानवता को असहाय बना दिया था और हर दिशा में बेबसी, पीड़ा, अकेलापन, सामूहिक भय, गरीबी और भुखमरी की खबरें देखने–सुनने को मिली थी।

प्रकृति, मनुष्य और समाज के बीच तालमेल टूटने की स्थिति का वर्णन भी कवि ने कई कविताओं में किया है। उन्होंने 'वे अभागे' शीर्षक कविता में दहशत भरे समय में अपने–अपने गाँव की तरफ पलायन करने वाले अभागे लोगों की बेबसी का सटीक वर्णन किया है– 'वे अभागे / सैकड़ों, हजारों, लाखों अभागे / पाँव–पैदल भाग रहे हैं। / बच्चे–बूढ़े, औरत–मर्द / सभी उस भीड़ में शामिल हैं। / थक कर चूर, लक्ष्य हजारों मील / बिना रुके चल रहे / पर, दूर अभी साहिल है। वे अभागे / जो हैं भूखे–प्यासे / अपनी जड़ों से उखड़कर / खुद का पाँव रोपने चले थे / एक अदृश्य खूनी वायरस के कारण / अब दो जून की रोटी के भी लाले पड़े हैं।' कोरोना वायरस के आतंक के कारण दुनिया में करोड़ों–अरबों लोगों की साँस और जान पर आफत आ गयी थी, इसलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे महामारी घोषित कर दिया था। इस महामारी के दहशत की सारी विभीषिकाओं को अनुभवजन्य यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने में कवि विजय संदेश को पूरी तरह सफलता मिली है। 'दहशत' कविता इसका ज्वलंत उदाहरण है– 'शहर में दहशत / गाँव में दहशत / दहशत कस्बे में, दहशत टोलो–मुहल्ले में है। / हवा में दहशत / पानी में दहशत / दहशत कपड़े में, दहशत हर चीज छूने में है। / प्यार में दहशत / मनुहार में दहशत / संपर्क में दहशत / दहशत वायरस के तांडव में है।' इस महामारी की सारी विभीषिकाओं का चित्रण 'कोरोना उर्फ अछूत' कविता में भी कवि ने बखूबी उभारा है। कवि का अनुभव है कि कोरोना ने हमें–तुम्हें एक दूसरे के लिए अछूत बना दिया है, हम न हाथ मिला सकते हैं और तो हम साथ–साथ, पास–पास बैठ भी नहीं सकते हैं। इस 'अज्ञात शत्रु' को जीतने के लिए दो गज की दूरी और एकांत ही दवा है। 'एकांत ही सहारा' कविता में कवि ने उसे यों लिखा है– 'पास होकर भी हम दूर–दूर हैं / असहज जीवन जीने के लिए मजबूर हैं / मौन हैं हम, मौन हो तुम, मौन जग सारा है / इस संकट की घड़ी में एकांत ही सहारा है।' एक–दूसरे से दूरी बनाना एक अनिवार्य नियम बन गया है, इस तरह जीवन में आज पहली बार 'अछूत' शब्द का सही अर्थ समझ में आया। मानवता पर कोरोना महामारी के प्रभाव, मानवीय संबन्धों के विघटन और जीवन की अस्थिरता को शब्दबद्ध करने में कवि को यहाँ पूर्ण सफलता मिली है। मानवीय रिश्तों में आए बदलाव की दर्दात्मक सच्चाई को एक जीवन्त दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत करने की कारगर कोशिश कवि ने की है।

विजय संदेश के लिए कविता केवल शब्दों का खेल नहीं है, वह सघन मानवीय अनुभूतियों की सार्थक अभिव्यक्ति है। 'सिलसिला', 'अंधेरा और लघुदीप', 'घायल होता केवल आदमी है', 'नमन', 'सुबह सुबह' आदि कविताएँ इस बात को उजागर करती हैं। 'सिलसिला' कविता कवि के रोजमर्रा जीवन की अभिव्यक्ति है। इस वायरस ने दुनिया में जो तबाही–तांडव मचाया है उसका खुलासा करते हुए कवि कहते हैं– 'किसी ने भाई खोया, किसी ने पिता / किसी ने पुत्र खोया, किसी ने माता / किसी ने पत्नी खोई, किसी ने बहन / बच्चे–बुजुर्ग खोये, बहुतों ने खोये आत्मीय परिजन / यह सिलसिला जारी है / गाँव हो या शहर हो / सुरसा के मुँह की तरह / फैलती जा रही यह।' इस अभिशप्त कोरोना काल में मानव समुदाय को जो नुकसान हुआ, उसकी सटीक व्याख्या कवि ने 'ठहर गयी है जिन्दगी में' यों व्यक्त किया है– 'बंद घड़ी के सूई–सी / ठहर गई है जिंदगी / वीराने में पड़ी छुई–मुई–सी / सिमट–सिकुड़ गई है जिंदगी। / बाजार बंद, सारे व्यापार बंद हैं / घरों के दरवाजे बंद, शिक्षालय बंद हैं / राजमार्ग बंद, कल–कारखाने बंद हैं / बंदी के दौर में, ठिठक–ठहर गई है जिंदगी।' कवि की नजर में इस अभिशप्त कोरोना काल में इंसानियत को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है क्योंकि जिंदगी पूरी तरह पटरी से उतर गयी है। इस संकट के समय जो अपनी जान की परवाह किए बिना खुद को जोखिम में डाल कर दूसरों के प्राण बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे, उन्हें कवि नमन करते हैं। जो भूखे–प्यासे रह कर घर घर जाकर नंगे–भूखे जनों को अन्न–वस्त्र बाँट रहे हैं, उन्हें भी कवि ने नमन किया है। यहाँ, कवि ने कोरोना–योद्धाओं की साहसिक कार्य–शैली के संबन्ध में संवेदना व स्तुति के शब्द कहे हैं। इस मायूसी के क्षणों में कवि कहीं अपनी उम्मीद छोड़ने को तैयार नहीं, क्योंकि गहन अंधेरे की इस दारुण–वेला में आशा की एक क्षीण रेखा दिखने लगी है। कवि का यह अटूट संकल्प है कि बुझे उम्मीदों में विश्वास का एक दिया जलाना होगा। 'बीती रजनी', 'कोशिश तो करें', 'बारिश के दिन', 'एक नया सूरज उगेगा' आदि कविताओं में कवि प्रकृति की जीवंतता और उसके महत्व को अत्यन्त प्रभावशाली शब्दों में पाठकों के दिल तक पहुँचाने का श्रम किया है। इन कविताओं में कहीं चेतावनी का स्वर मुखरित हुआ है तो कहीं आत्ममंथन की गूँज उठी है। 'गौरैया', 'बारिश के दिन', 'मैं पेड़ हूँ', 'पेड़रू मनुष्य का अग्रज' आदि कविताओं में कवि ने प्रकृति, मनुष्य और समाज के बीच तालमेल टूटने की स्थिति को लेकर अपनी चिंता व्यक्त की है जो पाठकों को आत्मचिंतन के लिए जरूर प्रेरित करती है। 'तुम मेरी' कविता भी कई दृष्टियों से एक मर्मस्पर्शी कविता है जिसमें कवि ने कोरोना काल के संघर्ष और उससे ऊपर उठने की प्रेरणा को जगाते हुए यह सूचित

किया कि संकट के समय हमें अपने नाते–संबन्धों को तथा एकजुटता को बनाए रखना चाहिए।

इसमें कोई संदेह नहीं कि 'कोरोना काल की कविताएँ' शीर्षक काव्य संकलन साहित्य और समाज के प्रति कवि की जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। इसमें कोरोना काल के जीवन के विभिन्न पहलुओं को बड़ी सरलता और गहराई के साथ अभिव्यक्त किया गया है। संकलन की कई कविताएँ अत्यन्त प्रभावशाली हैं और गहन सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करने में सक्षम हैं। यह काव्य संग्रह कवि का भोगा हुआ यथार्थ, संवेदना, करुणा, संघर्ष, बेबसी तथा नाउम्मीदी के भीषण दौर में भी उम्मीद को जगाने की छटपटाहट आदि का बेहतरीन संगम है। इनमें केवल व्यक्तिगत भावनाएँ ही नहीं, बल्कि एक ज्वलंत सामाजिक समस्या के हर पहलू को उसकी सारी विभीषिकाओं के साथ शामिल कर दिया गया है। कवि ने अपने आस–पास की दुनिया ही नहीं, बल्कि बाहर की दुनिया को भी खूब देखने–परखने की कोशिश की है। संकलन की एक विशेषता यह भी है कि यह न केवल एक कविता संग्रह है, बल्कि यह अपने समकालीन समय एवं समाज, जीवन और प्रकृति का जीवन्त दस्तावेज भी है। कविताओं की भाषा सरल, सजीव, मार्मिक एवं प्रभावशाली है, भाषा में कहीं कोई कृत्रिमता नहीं है, वाक्य विन्यास संगीतात्मक है किंतु कोई शब्दाडंबर कही नहीं दीख पड़ता है। आम आदमी के बोलचाल की भाषा में कवि ने अपनी सृजनात्मक उपादेयता का परिचय दिया है, इसलिए यहाँ संवेदनाओं की गहराई एवं विचारों की स्पष्टता परिलक्षित हुई हैं।

डॉ० बाबू जोसफ
पूर्व सह आचार्य व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
के० ई० कालेज मन्नानम, कोट्टायम
केरल–686633

9

भारतीय संस्कृति और समाजः रामचरितमानस के विशेष संदर्भ में

निक्की कुमारी

"श्रीगुर पद नख मनि गन जोती । सुमरित दिव्य दृष्टि हियँ होती
दलन मोह तम सो सप्रकासू । बड़े भाग उर आवइ जासू"

श्री गुरु महाराज के चरण–नख की ज्योति मणियों के प्रकाश की तरह है जिसे याद करते ही ह्रदय में दिव्य दृष्टि उत्पन्न हो जाती है । इस प्रकार से अज्ञान के अंधकार का नाश होता है । यह प्रकाश जिसे मिल जाए वह भाग्यशाली है । अर्थात् जिसे गुरु कृपा मिल जाए वह व्यक्ति भाग्यशाली है ।

जब हम भारतीय संस्कृति की बात करते हैं तो हमें इतिहास के पन्नों को पलटते हुए अतीत की ओर रुख करना होगा । वर्तमान से 5000 ईसवी पूर्व सिंधु घाटी सभ्यता में क्या हुआ ? किसी भी विद्वान को इसकी सटीक जानकारी नहीं है परंतु इतिहास द्वारा प्राप्त अभिलेखों एवं पुरातत्व अवशेषों से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि यह सभ्यता एवं संस्कृति ऐसी रही होगी । सिंधु घाटी सभ्यता से मातृ देवी की उपासना, पशुपतिनाथ की उपासना, योग आसन की परंपरा एवं विभिन्न कला (मूर्ति कला, नृत्य कला, चित्रकला) की जानकारी प्राप्त होती है । सिंधु घाटी सभ्यता के बाद वैदिकयुगीन संस्कृति का आरंभ होता है । कुछ विद्वानों का मानना है कि आर्य मध्य एशिया से आए और अपनी भाषा और संस्कृति से भारत के पश्चिमोत्तर भाग को उन्नत किया । आर्य सभ्यता अपनी संस्कृति के लिए बहुत प्रसिद्ध रही । वैदिक युग अपने ग्रंथों के लिए बहुत प्रसिद्ध है । जैसे– वेद, उपनिषद, पुराण आदि । भारतीय संस्कृति की एक साकार झलक हमें वैदिक काल में दिखती है । यह संस्कृति का कबीलाई संस्कृति थी जहां गौ के मालिकों के लिए को गौपति की अवधारणा विकसित हुई । ज्यादा 'गाय' रखने को वाला व्यक्ति शक्तिशाली माना जाता था । पुरुषों के समान महिलाओं को शिक्षा एवं यज्ञ करने के अधिकार प्राप्त थे । वैदिक काल के बाद जब भारत में 'महाजनपद' अस्तित्व में आए तब 'मगध' एक शक्तिशाली पद के रूप में उभरा । भारतीय संस्कृति एवं विचारों की झलक हमें रामायण, महाभारत, गीता, कालिदास एवं भवभूति के साहित्य में दिखती है । हर्यक वंश के बिंबिसार द्वारा मगध राज्य के मजबूती में इजाफा हुआ । समय के साथ अजातशत्रु, महापद्मनंद एवं मौर्य शासकों द्वारा यह राज्य अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त हुआ । अब मगध पद मगध साम्राज्य में तब्दील हो गया । तत्कालीन समाज सामंती था जिसकी जानकारी हमें ऐतिहासिक ग्रंथों, पुरातत्व अवशेषों एवं स्मारकों से प्राप्त होती है । इस समय भारत कोसल और मगध गण की महत्वपूर्ण भूमिका थी । इसके अलावा तमिल का संगम साहित्य, तेलगू का अवधान साहित्य हिंदी भक्ति साहित्य, मराठी पोवग साहित्य और बांग्ला के मंगल गीत भी यहां निहित हैं । "ऋग्वैदिक गणों में भरत सबसे महत्वपूर्ण है । सारे देश को उन्होंने अपना नाम दिया । ऋग्वेद के युग में वे सरस्वती और यमुना के बीच वाले प्रदेश में बसे हुए थे । ऋग्वेद में सुदास और त्रिप्सू के संदर्भ में उनकी उल्लेखनीय चर्चा हुई है । वे पूरूगण के शत्रु है उनके राजा (गण नायक) सरस्वती, दृषद्वली और आपथा के तटवर्ती प्रदेश में बसे हुए थे जो आगे चलकर कुरुक्षेत्र कहलाया ।" इससे हमें ज्ञात होता है कि भारत की भाषा संस्कृत थी और इसी भाषा में वैदिक साहित्य का सृजन हुआ है ।

जहां भारत में एक ओर भरतगण द्वारा यज्ञवादी संस्कृति का प्रचार प्रसार हो रहा था वहीं दूसरी और मगधगण में जैन एवं बौद्धों का उदय और विकास हुआ । बौद्ध धर्म में तर्कशास्त्र और जैनियों में अनेकांतवादी तर्क–पद्धति का विकास हुआ । उत्तर वैदिक काल में वैदिक काल की प्रथाएं रूढ़ि बन गई थी । इस समाज में आम व्यक्ति छटपटाहट महसूस कर रहा था । इस समाज में वर्ण व्यवस्था, गोत्र व्यवस्था, भूपति, ब्राह्मणों का महत्व एवं त्रिदेव की उपासना का विकास हुआ । उत्तर वैदिक काल की कठोरता, असंतोष, संस्कृत भाषा का एकाधिकार इसे आम जनता से दूर करता गया ।

उपरोक्त कारणों से भी बौद्ध एवं जैन धर्म अस्तित्व में आए । बौद्ध एवं जैन विचारकों ने ब्राह्मणवादी सोच का विरोध किया । इनके विचार वैज्ञानिकता, तार्किकता एवं अनुभव पर आधारित थे। जिससे तत्कालीन समाज लाभान्वित हुआ । समय के साथ बौद्ध धर्म से वज्रयानी और फिर सिद्ध एवं नाथ अस्तित्व में आए सिद्धों एवं नाथों ने भी ब्राह्मणवादी संस्कृति के विपरीत लोक संस्कृति को महत्व दिया । इनके विचारों ने तत्कालीन समाज में चेतना पैदा की । लोक भाषा अपभ्रंश में इनकी सारी रचनाएं मिलती है । जैनियों ने प्राकृत एवं अपभ्रंश में अपनी रचनाएं की । "प्राइव मुणीहवि भंतडी ते मणिअडा गणति, अखइ निरामइ परम–पइ उज्जवि लउ न लहंति" इन पंक्तियों में ब्राह्मणों एवं मुनियों की आलोचना की गई है । जो मनका गिनने से परमपद (ईश्वर) की लौ नहीं लगा पाते अर्थात केवल मनका गिनने से ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती ।

सिद्धों एवं नाथों की परंपरा का विकास भक्तिकाल के संत साहित्य में मिलता है । तत्कालीन समाज बाहरी (अरबों एवं तुर्कों) आक्रांताओं से ग्रस्त था । भारत की सामंती संस्कृति का ह्रास भी इन्हीं

आक्रांताओं के कारण हुआ । तुर्की आक्रांताओं ने मुख्यतः हिंदी भाषी क्षेत्र पर अधिकार किया । 12वीं शताब्दी तक आते–आते भारतीय समाज व्यापार का केंद्र बन गया । मुगलों की विलासिता की आवश्यकताओं को शिल्पकार, बुनकर एवं यहाँ के शूद्रों ने को पूरा किया । जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ । उनकी आर्थिक स्थिति के सुधार ने सामाजिक स्थिति को मजबूती प्रदान की । रामविलास शर्मा के अनुसार "पंद्रहवी शती, सोलहवीं शती और सत्रहवीं शती में यहां व्यापार की बड़ी–बड़ी मंडियां कायम होती है । पचीसों नगर व्यापार और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के केंद्र बनकर उठ खड़े होते हैं । लोहे और कपास का सामान काफी बड़े पैमाने पर तैयार किया जाता है । सैकड़ो वर्ष के बाद सामाजिक जीवन की धुरी गांव से घूम कर नगर की ओर आ जाती है । इस समय सामाजिक जीवन की बागडोर सामंतों के साथ–साथ व्यापारियों के हाथ में आ जाती है, सिक्कों का प्रचलन बढ़ जाता है, समाचार भेजने के लिए हरकारों की व्यवस्था होती है । आज के भाषा में कहें तो एक प्रकार का दूरसंचार व्यवस्था कायम होती है । इससे मध्यदेश की भाषा के प्रचारित–प्रसारित होने की स्थिति तैयार होती है । भक्ति साहित्य अखिल भारतीय है।"

जहां एक ओर लोक में ब्राह्मणवादी विचारधारा का विरोध हो रहा था वहीं दूसरी ओर अतीत को पुनर्जीवित करने के लिए सायण, माधव, आनंद तीर्थ, भट्ट भास्कर आदि विद्वानों ने वेदादि ग्रंथों पर भाष्य लिखा । सगुण भक्ति धारा में वैष्णव भक्ति का प्रचलन हुआ । इसमें विष्णु के दस अवतारों का जिक्र होता है, जिसमें राम भक्ति को कृष्ण भक्ति की भांति महत्व मिला । यह आंदोलन विशिष्ट रूप से सामाजिक एवं वैचारिक था । इसे केवल धार्मिक आंदोलन कहना उचित नहीं होगा । सगुण भक्ति आंदोलन की परंपरा में राम भक्ति के लिए तुलसीदास अविस्मरणीय हैं । तुलसीदास ने रामचरितमानस के द्वारा भक्ति को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया । भक्ति सभी के लिए उपलब्ध हो गई । कहना न होगा रामानन्द के द्वारा उत्तर भारत में भक्ति का प्रचार–प्रसार हुआ । उनके अनुसार 'जात–पांत पूछै नहीं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई' अर्थात हरि भक्ति हरि को स्मरण करने से मिलती है न कि किसी जाति विशेष में जन्म लेने से ।

रामचरितमानस में मध्यकालीन भारतीय संस्कृति और समाज के दर्शन होते हैं । राम कथा की परंपरा आदिकाल से ही साहित्य में प्राप्त होती है । लेकिन गोस्वामी जी ने रामचरितमानस को पूर्व में लिखे गए राम कथा से भिन्न लिखा है । जिसमें राम के चरित्र का परिष्कार हुआ है । इस कथा में से कई प्रसंग को निकाल दिया है जिससे यह स्पष्ट होता है, कि वह रूढ़िवादी, द्वेषपूर्ण, भेदभाव युक्त समाज नहीं चाहते थे । रामचरितमानस में सूर्यवंशी क्षत्रिय राम की कथा का वर्णन है । राम शील, शक्ति और सौंदर्य का समन्वित रूप हैं । परम औचित्य के प्रतीक हैं । तुलसी की भक्ति और तुलसी के राम भी अपने युग के औचित्य के प्रतिमान से ढले हैं । राम में किसी के लिए भेदभाव की भावना नहीं है वह निश्छल प्रेम, दया एवं त्याग के प्रतीक हैं । तुलसी मानस को संस्कार एवं आदर्श में पिरोते हैं जो भारतीय संस्कृति की आत्मा है । यह संस्कृति लोकमंगल की नींव पर खड़ी है । हमारे ऋषियों ने भी लोक एवं विश्व कल्याण की बात कही है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयारू ।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मां कश्चिद दुख भाग भवेत ॥ (वृहदारण्यक)

अर्थात् सभी सुखी हो, सभी निरोगी हो, सभी को सुख मिले एवं किसी को भी दुख न मिले । हमारी भारतीय संस्कृति संपूर्ण विश्व को परिवार के रूप में देखती है । इस संस्कृति के मूल में अपरिग्रह, सत्य, दान, दया एवं तप है । इस प्रकार की संस्कृति की समकालीन विश्व संस्कृति से न तो तुलना कर सकते हैं और ना ही इस प्रकार के समाज की कल्पना ही कर सकते है ।

भारतीय संस्कृति लोक एवं शास्त्र के भीतर निहित है । जिसका आधार सदियों से चली आ रही कृषि व्यवस्था है । विद्यानिवास मिश्र ने 'लोक की पहचान' निबंध में लिखा है "इस लोक में मनुष्यों का समूह ही नहीं, सृष्टि के सभी चर–अचर सम्मिलित हैं, पशु–पक्षी, वृक्ष–नदी, पर्वत शब्द लोक हैं और सबके साथ साझेदारी की भावना ही लोकदृष्टि है । सबको साथ लेकर चलना लोक संग्रह है और सब के बीच में जीना लोक यात्रा है" । कहना न होगा कि भारतीय संस्कृति के मूल में लोक है । इस संस्कृति में सहिष्णुता, समन्वय और जगत कल्याण की कामना निहित है । भारतीय संस्कृति में समाज, परिवार, अध्यात्म, दर्शन, उत्सव की धारणाएं सम्मिलित हैं । इन्हीं धारणाओं एवं विश्वासों से भारतीय समाज संचालित होता है । यदा–कदा इन विचारों में समय के साथ परिवर्तन भी होता रहता है ।

जनमानस में राम उदात्त चरित्र के प्रतीक हैं, उनका संपूर्ण जीवन संघर्ष, पीड़ा एवं त्याग से भरा है । वे अयोध्या का सिंहासन सहर्ष त्याग देते हैं । केवल पिता के वचनों को पूरा करने के लिए, एक बार भी वे विरोध नहीं करते । लंका विजय के बाद भी वह इसी प्रकार लंका भी विभीषण को दे देते हैं । उनमें हड़पने की भावना नहीं है । उनका संपूर्ण जीवन भौतिकवादी विचारों से परे है । कवि तुलसी का जीवन भी कष्टों में गुजरा था । रामविलास शर्मा के अनुसार "तुलसीदास जन्म भर अपने कष्टों को नहीं भूले । इस जन्म में उनके कष्टों का अंत हो गया यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता" । तुलसी का जीवन राम के जीवन से एकाकार हो जाता है, वह राम के कष्टों से स्वयं को जुड़ा महसूस करते हैं । राम से ही उन्हें अपने जीवन के कष्टों को झेलने की शक्ति प्राप्त होती है–मंगल करनी कलिमल हरनी तुलसी कथा रघुनाथ की ।

गति कूर कविता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की ।

प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी ।

भव अंग भूति मसान की सुमरित सुहावनी पावनी ।
(रामचरितमानस)

अर्थात् राम कथा कलयुग के पापा को मिटाने वाली है । यह कविता गंगा की तरह पवित्र एवं इसकी चाल टेढ़ी है । रघुनाथ का यश कहने से यह कविता सुंदर लोगों को भाएगी । श्मशान की राख यदि महादेव शंकर अपने शरीर पर स्वयं मल लेते हैं तो वह सुहानी हो जाती है और स्मरण करते ही पवित्र करने वाली होती है । अर्थात् राम की भक्ति स्मरण और संत संगति से व्यक्ति के दुख दूर हो जाते हैं ।

भक्ति काल का वैष्णव मत रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत पर आधारित है उनके अनुसार जगत भ्रम नहीं है बल्कि ब्रह्म, जीवात्माएं और भौतिक जगत सभी यथार्थ हैं तथा एक दूसरे से अलग हैं । अर्थात् परमात्मा और जीवात्मा एक होकर भी उनका अस्तित्व भिन्न है । वह परमात्मा का ही अंग है परंतु दोनों की एकता द्वितीय की भावना में निहित है । यह मत शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन से भिन्न है । शंकर मत के विपरीत रामानुजाचार्य का कहना था कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है और उसने स्वयं अपने अंदर से ही संसार की सृष्टि की है । एक मकड़ी जिस प्रकार अपने अंदर से जाल बुनती है उसी प्रकार ईश्वर ने जगत की रचना की है । उनके अनुसार आत्मा एक अत्यंत सूक्ष्म कण है, जो किसी भी निर्जीव अथवा अचेतन पदार्थ में प्रवेश कर सकती है । शरीर के अंदर आत्मा ने इसी प्रकार प्रवेश किया है । अपने स्वभाव से आत्मा शाश्वत, चेतन और शुद्ध है । किंतु वह जब किसी और अचेतन पदार्थ से संयुक्त हो जाती है तब वह सुख और दुख का अनुभव करने लगती है ।

भारतीय संस्कृति कई दर्शनों से संचालित दिखती है, जहां एक ओर अद्वैतवाद है तो दूसरी ओर विशिष्टाद्वैत । इसके अलावा द्वैताद्वैतवाद, अद्वैत वेदांत, सांख्य प्रणाली, वैशेषिक दर्शन, योग प्रणाली, मीमांसा, शैव एवं वैष्णव आदि दर्शन भी इसके पथ प्रदर्शक रहे हैं । रामचरितमानस का कथानक अयोध्या के सूर्यवंशी राम पर आधारित है । गोस्वामी जी ने राम के चरित्र के द्वारा ऐसे समाज की स्थापना की है जो भारतीय संस्कृति का हिस्सा है । राम के जन्म से लेकर रावण युद्ध को सात सोपानों में विभक्त किया गया है । राम का भाइयों सहित शिक्षा के लिए गुरुकुल जाना, सभी भाइयों का परस्पर प्रेम, विवाह, युद्ध आदि का सूक्ष्म विवेचन किया गया है । यह भारतीय संस्कृति की ही झलक है । गोस्वामी जी ने मानस में नीतिगत प्रसंगों को भी रखा है जो इस अद्भुत बनाते हैं–

"बिनु सत्संग विवेक ना होई । राम कृपा बिनु सुलभ न सोई"

अर्थात् सत्संग के बिना विवेक प्राप्त नहीं होता है और यह सत्संग राम की कृपा से ही मिलता है । गोस्वामी जी जीवन में विवेक की प्राप्ति के लिए सत्संग (सही संगति) पर जोर देते हैं । जो राम की कृपा से ही मिल सकती है ।

यूं तो संपूर्ण रामचरितमानस ही भारतीय संस्कृति और समाज की अभिव्यक्ति करती है परंतु सभी का जिक्र कर पाना संभव नहीं है । राम का चरित्र मध्यकालीन युग–संदर्भ से जुड़ा है । यह कथाकाल त्रेता युग के युग संदर्भों को व्यक्त करता है । राम कथा बुराई पर अच्छाई की जीत को प्रदर्शित करती है । राम की विजय और राम राज्य की स्थापना तुलसी का स्वप्न है । सीता का चरित्र ऐसी स्त्री को प्रदर्शित करता है जो भारतीय आदर्श है । भारतीय समाज की स्त्रियों को सीता आदर्श पुत्री, आदर्श पत्नी, आदर्श बहू बनना सिखाती हैं । जो रावण के पास रहकर भी अपने सतीत्व की रक्षा करती हैं । रामचरितमानस के सभी चरित्र मानव मूल्य को प्रदर्शित करते हैं । आज के समय में इन मूल्यों की अत्यंत आवश्यकता है, आज का व्यक्ति एकांतिक, स्वार्थी और अकेला हो गया है । वह विज्ञान एवं यांत्रिकता से जुड़कर बहुत अधिक भौतिकवादी हो गया है । जिसने सारे संबंधों एवं उनके विविध संदर्भ में अलगाव एवं विसंगतियों को समाविष्ट कर लिया है तथा उन सभी आदर्शों की धज्जियां उड़ा दी हैं जिनके कारण ढूंढने पर नहीं मिल सकते ।

लब्बोलुबाब यह है कि हमारी संस्कृति जो परिवार की एकता पर बल देती थी, जो रामराज्य की चाह रखती थी वह आधुनिक समाज में कहीं खो गई है । रामचरितमानस के जीवन मूल्यों की वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यकता है जिससे आमजन प्रेरित होकर आदर्श समाज की स्थापना कर सकें । तुलसी ने मानस में राम को मनुष्य रूप में दिखाया है, जो आम मनुष्य के निकट है । वह अपने जीवन को राम के जीवन से जोड़कर संघर्ष के क्षणों में साहस और प्रेरणा पाता है । राम का मानवीय गुणों से परिपूर्ण होना उन्हें लोक के निकट बनाता है । जिस सामंती समाज में नारी भोग की वस्तु थी उसी समय तुलसी ने सीता के द्वारा स्त्री आदर्श खड़ा किया । सीता का चरित्र संघर्ष और कठिनाई दोनों की प्रतिमूर्ति है । राम के चरित्र में व्यक्ति, परिवार एवं संपूर्ण समाज की पूरी झलक मिलती है जो वर्तमान समाज के नवयुवकों के लिये प्रेरणा का स्त्रोत बन सकता है ।

संदर्भ ग्रंथ :–

1.परंपरा का मूल्यांकन, रामविलास शर्मा, 2016, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली ।

2. रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास, 2015, गीता प्रेस, गोरखपुर ।

3. लोक की पहचान, विद्यानिवास मिश्र, 2010, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली ।

4. लोकवादी तुलसीदास, विश्वनाथ त्रिपाठी, 2007, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

5. गोस्वामी तुलसीदास, रामचन्द्र शुक्ल, 2006 नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

6. तुलसीदास और उनकी कविता, रामनरेश त्रिपाठी, 1937, हिन्दी

मंदिर, प्रयाग ।
7. तुलसीदास, माताप्रसाद गुप्त, 2022, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली ।
8. संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, 2015, नई दिल्ली ।
9. रामचरितमानस की पांडुलिपियाँ, उदय कुमार दुबे, 2019, डॉ. विजय नाथ मिश्र, आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा) ।
10. भारतीय चिंतन परंपरा, के. दामोदरन, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि., नई दिल्ली ।
11.तुलसी, स. राममूर्ति त्रिपाठी, 2013, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद (प्रयागराज) ।
12.वैदिक काल, इरफ़ान हबीब,विजय कुमार ठाकुर, अनुवादक–कनक, राजकमल प्रकाशन, 2016, दिल्ली ।
13. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास, विश्वनाथ त्रिपाठी, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्रकाशन, 2016, नई दिल्ली ।
14. मध्यकालीन भारत, सं. इरफान हबीब, राजकमल प्रकाशन, 2018, नई दिल्ली ।
15. साहित्य और संस्कृति, रामविलास शर्मा, किताबघर प्रकाशन, 2012, इलाहाबाद (प्रयागराज) ।

निक्की कुमारी
(शोधार्थी)
हिन्दी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली
मो. 9871471357
kumarinikki0669@gmail-com

सामाजिक चेतना की सकारात्मक भूमि पर पुष्पित शुभ्र काव्य वल्लरीः 'उजाले की ओर'

10

प्रो० डॉ० एस० एल० गोयल

सारांश

गद्य साहित्य–यात्रा वृतांत, कथा साहित्य और समीक्षा के स्थापित हस्ताक्षर श्री विजय 'संदेश' के अब तक तीन काव्य संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं। भारतीय संस्कृति के महान उद्घोष 'तमसोमाज्योतिर्गमय' से अनुप्राणित है उनकी समस्त काव्यानुभूति। उनके प्रथम दोनों काव्य संग्रहों के नाम 'अंधेरे के विरुद्ध' एवं 'उजाले की ओर' स्पष्ट इसका संकेतन है–

जहाँ उषा काल की शुभ्र लालिमा
क्षितिज के पोरपोर में, दमक जहाँ
नव गंतव्य, नव सूर्योदय की ओर चलें,
....
इस ठौर नहीं, उस ठौर चलें
चलो, उजाले की ओर चलें। (उजाले की ओर, पृष्ठ–15)

कवि डॉ. विजय कुमार 'संदेश' पेशे से हिंदी के प्राध्यापक हैं। उन्होंने साहित्य को खूब पढ़ा–पढ़ाया है, अध्ययन–मनन किया है, उसकी गहराइयों को नापा और तत्वों का आलोड़न किया है। इन सब का प्रभाव प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में उनके रचना जगत पर भी दृष्टिगोचर होता है। भले ही वह कम या ज्यादा हो। उनके पहले काव्य संकलन 'अंधेरे के विरुद्ध' से गुजरते हुए सहज ही हिंदी के दिग्गज प्रयोगवादी कवि श्री गजानन माधव मुक्तिबोध की सुप्रसिद्ध व चर्चित लंबी कविता 'अंधेरे में' की याद हो आती है। इसी प्रकार 'उजाले की ओर' में संकलित 'कविता क्या है?' पढ़ते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इसी शीर्षक के सुप्रसिद्ध निबंध का स्मरण हो आना स्वाभाविक है।

कवि संदेश के आलोच्य काव्य संकलन 'उजाले की ओर' के परिवर्धित संस्करण में बत्तीस कविताएँ संग्रहीत है। इसमें कोरोना काल की पाँच कविताएँ भी अंत में जोड़ दी गई हैं। प्रथम संस्करण कब प्रकाशित हुआ था ? इसका कहीं उल्लेख नहीं है।

राजनीतिक, सामाजिक या साहित्यिक किसी भी विचारधारा यानी वाद का कवि वादी नहीं है। वह तो खुले आँख–कान से संसार को निहारता–सुनता हुआ दृष्टिपथ में जो कुछ भी आता है उस पर केंद्रित होते हुए अपनी भाव संवेदनाओं को अपने अंदाज में कविता में ढाल देता है। माँ दिखी तो– 'माँ की साँस में' और पिताश्री दिखे तो– 'पिता की साधना' में कविता विचरण करने लगती है। घर से बाहर निकले– छोटे–बड़े, गरीब–अमीर नाना भेदभाव से भरे हुए संसार को देखते ही आवाह्न फूट पड़ता है– 'एक नया संसार बसायें'। इसी प्रकार माँ–बाप के साथ बचपन के दिन और आसपास के वन, बाग बगीचे वाली हरियाली के दिन स्मृति पटल पर उभरते हैं और अब उनकी जगह दिख पड़ती हैं बड़ी–बड़ी अट्टालिकाएँ तो कवि मन का दर्द यूँ बहता है–

उन खेतों में अब धान नहीं, गेहूँ, नहीं, सब्जियाँ नहीं
और न जैव विविधता का वह संसार है।
मिट्टी के घर नहीं, खपरैल छप्पर नहीं
बस/केवल और केवल जमीन खोरों की टेढ़ी नजर है। (कंक्रीट के पहाड़, पृष्ठ 35)

इसी तारतम्य में देश–विदेश की यात्राओं के दौरान लिखी गई कविताओं को भी देखा जा सकता है। 'पत्थरों को बना दिया सोना' (मेरी मॉरीशस यात्रा) 'नया वर्ष' (भूटान यात्रा), 'पर्वतराज हिमालय' (हिमाचल, उत्तराखंड और कश्मीर की यात्रा) के क्रम में लिखी गई थी। मॉरीशस के गिरमिटिया मजदूरों के जीवन संघर्ष पर लिखी गई प्रथम कविता कवि 'संदेश' के कविताईसामर्थ्य का संदेश संप्रेषित करने में पूर्णतया सक्षम है। खाली हाथ, अत्यंत प्रतिकूल स्थितियों–परिस्थितियों में सैकड़ों साल संघर्ष कर जीवन को सुव्यवस्थित रूपाकार में ढालनेवाले लोगों का चित्रण तदानुरुप ही पाठकों में विचार ही नहीं, भावानुभूति जगाने में समर्थ है। कवि के शब्दों का चयन व उनकी विशिष्ट जमावट... को ही इस जादू का श्रेय है–

उनके स्वेद–बूँद और लाल पसीने से भीगी हुई मिट्टी
कंकरीली–पथरीली, धूसर और ऊसर मिट्टी
लहू से सींचकर अपने, पत्थरों को बना दिया सोना।
....
त्रासद, मानसिक पीड़ा में वर्षों जीकर
भूले–बिसरे गीतों में रचकर बसकर
साँसें अटकी–लटकी, पर वे थमें नहीं
खुद मिटकर, तपकर, गलकर

कण–कण को बना दिया सोना...'पत्थरों को बना दिया सोना', (पृष्ठ 20)

अपनी संवेदनाओं, भावबोधों और वैचारिकता को काव्यात्मक अभिव्यक्ति में ढालने की कला कवि संदेश के पास अच्छी खासी है। इस कार्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण युक्ति उनके पास है, वह है– भाषा पर अधिकार, संगति पूर्ण शब्दों की सुंदर व प्रभावी जमावट और काव्य की परख। कवि संदेश जी का यह सबसे सशक्त पक्ष है और इसे उनकी कविताओं

में कदम–कदम पर देखा और महसूस किया जा सकता है–
शिशिर की मीठी ठिठुरन हो
या वासंती धीमी सिहरन हो
हर मौसम के अपने सुख हैं
हर मौसम के अपने दुख हैं
नियति की नीयत को स्वीकार करो।
पर कवि का वैचारिक तर्क अनेक जगह गले उतरने योग्य नहीं होता–
यह है आयातित वर्ष, पर खुशियाँ मनाने में हर्ज कहाँ है ?
चौत्र मास की प्रतिपदा में,हम फिर
सेनववर्षमनालेंगे।
('नया वर्ष', पृष्ठ 24–25)

सटीक सार्थक शब्दों का खूबसूरत विन्यास जो इन्हें कवि बनाने में सबसे सार्थक भूमिका निभाता है पद–पद पर बानगी देखी जा सकती है–

धूल–मिट्टी से सने बच्चों की
कहाँ गई वे बेफिक्र टोलियाँ
हाथ में जिनके होते थे
रबर–गुलेल, कंचे की गोलियाँ
....
कहाँ गुम हो गई वह सोन चिरैया?
कहाँ गए वे ताल–तलैया ?'मेरा वह गाँव कहाँ गया?' (पृष्ठ 70)

प्रकृति के साथ गहरा लगाव भी अनेक कविताओं में मोहता है। प्रकृति पर बहुत सारी कविताएँ 'उजाले की ओर' काव्य संकलन में संकलित है। जैसे– पुष्प प्रकृति के शृंगार, प्रकृति और सृजन, वसंत आ गया है, वासंती सांझ, पर्वतराज हिमालय, पहली फुहार, मानव प्रकृति और पर्यावरण आदि।

आकार की दृष्टि से संदेश जी प्रायः छोटी कविताएँ ही लिखते हैं। लगभग एक पेज से कुछ कम ही। पर तीन–चार लंबी कविताएँ भी इसमें है। लंबी कविताओं के अंतर्गत 'पत्थरों को बना दिया सोना', 'पर्वतराज हिमालय' और 'नया वर्ष।' ये तीन कविताएँ हैं, जो अच्छी कविताएँ भी हैं।

सबसे लंबी कविता, जो साढ़े पाँच पृष्ठ की है, 'संघर्ष संगठन और एकता' शीर्षक से लिखी गई है। सीधी, सपाट बयानी वाली यह कविता अपनी संवेदना, विचार, गठन आदि दृष्टि से कविता नहीं, कविता के रूप में विचार प्रधान निबंध कहे तो अतिशयोक्ति न होगी। इसी प्रकार 'लोक यज्ञ अनुष्ठान' (पृष्ठ 69) नामक कविता– प्रजातंत्र में सब लोग मतदान करें के विचार–प्रसार के लिए लिखी गई है। इसके शीर्षक वाले शब्द ही विशेष हैं। बाकी सब कुछ वही सपाट बयानी है। अभिधेयात्मकता है।

छोटे–छोटे नुस्खे कविताओं में सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करते हैं। वे भी इन कविताओं के आकर्षण है। जैसे 'परिवर्तन' (पृष्ठ 22) में देखिए–
संघर्ष/जीवन और प्रकृति का
अटूट, अविच्छिन्न हिस्सा है
सृजनात्मकता की कसौटी है
सफलता की गारंटी है।

मानव प्रकृति और पर्यावरण में पृष्ठ 23 पर देखिए–
प्रकृति सत्य है
प्रकृति शिव है।

'आत्मनिरीक्षण', 'आँसू', 'तिमिर क्षण में', 'पुष्प प्रकृति के श्रृंगार',' 'तनाव भरी इस जिंदगी में' आदि कविताएँ भी इन संदर्भों में देखी जा सकती है।

कोरोना काल की पाँच कविताएँ परिशिष्ट में संकलित है। इन्हें पढ़ते हुए लॉकडाउन वाला कोरोना काल मन की आँखों में पुनर्जीवित हो जाता है। सपाट बयानी तो है पर शब्दों की अच्छी पहचान, पकड़ होने से प्रभावी दृश्य अंकन में ये कविताएँ सक्षम हैं।

भाषा और शिल्प पक्ष की दृष्टि से इन कविताओं के संदर्भ में अनेक तत्व स्वतः उभर कर आते हैं। संदेश जी की काव्य भाषा बोलचाल की या रफ–टफ शब्दावली ना होकर विशिष्ट कोमलकांत मृदुल संस्कृत आभा से दमकती हुई शब्दावली है। इसके लिए अलग से उदाहरण की जरूरत नहीं है क्योंकि सर्वत्र यह बिंदु दृष्टिगोचर होता है। कवि को उत्प्रेक्षा अलंकार भी बड़ा प्रिय है–
जैसे भीषण लू के बाद...
जैसे कंपकंपाती शीत के बाद... (ठहर गई है जिंदगी, पृष्ठ 77)
जैसे लहर का तीव्र आवेग...
जैसे हर शिशिर के साथ... (प्रकृति और सृजन, पृष्ठ 55)

अनेक कविताओं में देखा जा सकता है, उदाहरण के लिए 'पहली फुहार' (पृष्ठ 48) कविता में प्रायः हर दूसरी पंक्ति उत्प्रेक्षा अलंकार के वाचक शब्द जैसे से शुरु होती है। कवि की काव्य भाषा पर क्षेत्रीय प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। विशेष कर लिंग के संदर्भ में। जो शब्द हिंदी भाषा क्षेत्र में पुलिंग है वे संदेश जी की कविताओं में स्त्रीलिंग के रूप में प्रयोग किए गए हैं–

कुछ उदाहरण देखिए–
हर बूँद सृजन का प्रतीक, पृष्ठ 48
एक शपथ यह भी है मेरा, पृष्ठ 65
सूरज में भी चमक आ गया है, पृष्ठ 67
थम गया रफ्तार, पृष्ठ 77
महानगरी मुंबई का वह चाल, पृष्ठ 79

काव्य भाषा में संदेश जी के यहाँ कुछ नवीन प्रयोग भी दिखाई देते हैं जैसे– जड़ से बेजड़ हुए लोग, (पृष्ठ 19)

नए या अप्रयुक्त शब्द जैसे– रातों में चाँद सितारों की मलक बढ़ गई है, (पृष्ठ 74) एक ही अर्थ के वाचक शब्द का बार–बार प्रयोग... नहीं अछूत कोई इसके लिए, न ही कोई अस्पृश्य है, (पृष्ठ 75)
न तीर से विंधेगा, न वाण ही इसे चुभेगा (पृष्ठ 76)
'कंक्रीट के जंगल', 'जीवन परिवर्तन' आदि अनेक कविताएँ बहुत अच्छी कविताएँ हैं। इनमें से एक श्रेष्ठ कविता है– 'जीवन' जो पाठकों को पुनः पुनः पढ़ने के लिए आमंत्रित करती है। कविता छोटी–सी है केवल एक पृष्ठ की, पर है बहुत खूबसूरत

जीवन सुख है
जीवन दुख है
जीवन सुख–दुख का संगम है।

जीवन जीने की कला
सही है यदि
तो जीवन सुख है
और यदि नहीं है सही
तो जीवन दुख है।

मौसम की तरह है यह
जिसमें सर्दी है / गर्मी है / बारिश है
तीनों ही सुख देते हैं / दुख देते हैं
सुरभि भी है / दुर्गंध भी है उसमें

तो / हर मौसम में सुख है / सुख है / सुख है।

कवि डॉ. विजय 'संदेश' के काव्य संसार में विन्यास के सभी स्तरों शब्द, वाक्य, संवेदना, भाव–बोध, वैचारिकता– आदि दृष्टि से किसी भी प्रकार की जटिलता, गुत्थी, तिलस्मी जंजाल, धुंधलापन नहीं है। सब कुछ प्रभात काल की सुंदर चमकती वेला की तरह अत्यंत स्पष्ट और सरल है जिसका पाठक सहजता से आनंद ले सकता है।
'मेरी सोच, मेरी दृष्टि' (पृष्ठ 39) एवं 'कविता क्या है ?' (पृष्ठ 37) ये दो कविताएँ कवि और उसके काव्य जगत को संपूर्णता से समझने के लिए कुँजी सदृश्य हैं–

मैं जो देखता हूँ वही सोचता हूँ
जो सोचता हूँ वही बोलता हूँ
और जो मेरे बोल हैं वही मेरा लेखन है
सहज, सरल शब्द, सीधी सपाट भाषा
छोटे वाक्य और शब्दों की छोटी काया

स्पष्टत कवि संदेश के सृजन संसार से रूबरू होने के लिए हिंदी के अधिकांश कवि, लेखकों के रचना जगत की तरह जटिल शब्द व भाषिक संरचनाओं के तिलिस्म से माथापच्ची नहीं करना पड़ती। सीधे–सीधे संदेश जी की कविता के गले में बांहें डालते हुए सहज संवाद की ओर उन्मुख हुआ जा सकता है। हिंदी कविता के पाठकों की तेजी से घटती संख्या की चिंताजनक स्थिति से उबारने में ऐसी कविताएँ और कवि सहायक हो सकते हैं।

प्रो० डॉ० एस० एल० गोयल
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नीमच (म०प्र०)
निवासः 147, टीचर्स कॉलोनी नीमच (म०प्र०)–458441
मो०रू 9827306660

रस, उसका स्वरूप और रसात्मक बोध

11

रोहित केरकेट्टा

सारांश

रस काव्य का आनंदमय आस्वाद है। भाव पर आश्रित होते हुए भी भावानुभूति से भिन्न होता है। रसानुभूति सुखात्मक और दुखात्मक दोनों प्रकार की होती है और वह कृतिकार, सहृदय, सापेक्ष होता है।

जब कोई व्यक्ति किसी की सुन्दरता पर रीझता है – मुग्ध होता है, तो कह उठता है कि अमुक व्यक्ति बहुत सुन्दर है, उसकी आँखें बड़ी रसीली हैं, उसके अधर बड़े रसीले हैं। किसी वस्तु का स्वाद लेते हुए हठात् मुख से निकल जाता है कि यह वस्तु अत्यन्त रसदार है। जीवन के संघर्षों से हताश–निराश व्यक्ति कहता है 'जीवन नीरस हो गया है, इसमें अब कोई रस नहीं रहा। जीवन में – जीवन के अनेक संदर्भों में हर क्षण रस की तलाश में ही मनुष्य के मन की प्रवृत्तियाँ संलग्न रहती हैं। आखिर, आत्मा की तरह ही अबूझ रस है क्या? किसी मृग की कस्तूरी–गन्ध की जिज्ञासा की तरह ही 'रस क्या है' की जिज्ञासा अनादिकाल से अनसुलझी पहेली बनी हुई है। वस्तुतः जिस प्रकार मृग के शरीर के भीतर ही कस्तूरी रहती है, उसी प्रकार 'रस' तो व्यक्ति के अन्दर ही रहता है। गीता में श्रीकृष्ण का कथन है –– 'रसोऽमप्सुकौन्तेय' हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! मैं रसों में जल हूँ। दरअसल, शरीर की संरचना में पांच तन्मात्राओं का योग है, उसमें एक जल भी है और मुख्य तन्मात्रा है। जल को रस कहा गया है जो हमारी निर्मिति में है। जल को लोग में 'पानी' कहा जाता है। यह पानी ही रस है जिसे बाहर खोजा जाता रहा है। अपने अन्दर का पानी सौन्दर्य के रूप में उजागर होता है। यह सौन्दर्य काव्य का प्रतिपाद्य बनता है। इस सौन्दर्य का आस्वाद प्रत्येक व्यक्ति लेता है। इसी 'आस्वाद में सन्निहित' – छिपे हुए प्रीति को रस कहा जाता है। यह सृष्टि, संसार के प्रत्येक पदार्थ, प्रकृति यहाँ तक कि मुक्ति तक में इस अनूठे 'रस' का फैलाव है। हम सभी आम खाते हैं। उसमें का तरल, मीठा द्रव रस है और उसका सेवन करने पर जो स्वाद मिलता है उसमें भी रस होता है। मीठा रस से भरपूर आम को देखकर ही कोई नहीं छोड़ देता बल्कि उसके रस का आस्वाद लेता है और उसके स्वाद की प्रशंसा करता है। मनुष्य अपने जीवन में कुछ रसों का सेवन इन्द्रियों के द्वारा करता है, कुछ रसों का आस्वाद मन के द्वारा लेता है, मस्तिष्क के द्वारा लेता है और प्राणों के द्वारा भी लेता है। 'रस' को 'रस' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उसमें एक प्रकार का स्वाद होता है, रस का स्वाद लिया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन किसी न किसी प्रकार के रस का स्वाद लेता है और उस स्वाद का अनुभव करता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में –– "सहृदय पुरूषों के हृदय में वासना रूप में स्थित रति आदि स्थायी भाव ही विभाव, अनुभाव और संचारी के द्वारा अभिव्यक्त होकर रस के स्वरूप को प्राप्त होते हैं।"[1] रस–दशा में व्यक्ति की अस्मिता का भोग नही होता बल्कि उसका विसर्जन हो जाता है। वह स्वाभाविक रूप से अलग न होते हुए भी अपने फल–रूप में भिन्न होता है। रस का सर्वसामान्य अनुभव या तो सुखात्मक होता है अथवा दुखात्मक। किन्तु उसी रस का काव्यात्मक अनुभव अत्यधिक उदात्त होता है या फिर अवदाह रूप में होता है। रस के स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में विचारक मनीषियों में मतान्तर पहले भी रहा है और वर्तमान काल मे भी है। पाश्चात्य विचारकों के विचार भिन्न रहे हैं और भारतीय विचारकों के भिन्न। द0के0 केलकर के विचार में –– "काव्य से सहृदय का हृदय–सागर उमड़ आता है। इस उमड़ते हृदय–सागर में जब सहृदय तन्मय हो जाता है तब उसकी तदाकार वृत्ति में जो निहित आनन्द है उसे ही रस कहा जाता है।"[2] डॉ0 वाटवे के कथनानुसार –– "कल्पना की सहायता से प्राप्त आह्मलाददायक अनुभव को ही रस कहते हैं। इस रस को उत्पन्न करने वाली मूल सामग्री काव्य में ही होती है – रस काव्य में ही होता है।"[3] श्री जोग ने बड़ी गंभीरतापूर्वक रस के स्वरूप पर विचार किया है। उनका कहना है –– "काव्याध्ययन में पाठक का वैयक्तिक स्वार्थ जुड़ा नहीं रहता, अतः उसमें दुख भी नहीं होता। परन्तु इतने मात्र से यह समझना असंभव है कि सहृदय की सारी रजोगुणी, तमोगुणी वासनाएँ नष्ट होकर उसमें सत्वोद्रेक मात्र शेष रहता है। भावनाएँ जिस प्रकार की होंगी तदनुरूप रसोत्पत्ति भी त्रिगुणात्मक ही होगी।"[4] सारांशतः कहना उचित होगा "कलात्मक सर्जना की प्रक्रिया समंजन की प्रक्रिया है : करूण प्रसंगों के आश्वादन में सहृदय की चित्तवृत्ति शोक, त्रास आदि के अनुभव से कुछ क्षणों के लिए विक्षुब्ध होकर भी अन्ततः समंजित हो जाती है और चित्तवृत्ति का समंजन निश्चय ही एक सुखद स्थिति है। इस प्रकार करूण रस का आस्वाद शोक–त्रास आदि का आस्वाद न होकर उनकी कलात्मक परिणति का आस्वाद है – आस्वाद की इस प्रक्रिया में सहृदय को थोड़ा बहुत कटु अनुभव भी होता है परन्तु परिणति आत्म–परितोष में ही होती है।"[5]

इस बहुरंगी सृष्टिठ के प्रभाव से ही प्रत्येक व्यक्ति में कल्पनाशीलता तथा मनोगत भावों का सृजन हुआ है। रूप, उसकी अपरूपता, उसकी विस्मयकारी वृत्ति एवं भाव–संकल्पनाएँ वाह्य विश्व के स्वरूपाकृतियों से ही सृजित हुई हैं। "जब हमारी आँखें देखने में

प्रवृत्त रहती हैं तब रूप हमारे बाहर प्रतीत होते हैं, जब हमारी वृत्ति अन्तर्मुख होती हैं तब रूप हमारे भीतर दिखाई पड़ते हैं। बाहर–भीतर दोनों ओर रहते हैं रूप ही। सुन्दर, मधुर, भीषण या क्रूर लगने वाले रूपों या व्यापारों से भिन्न सौन्दर्य, माधुर्य, भीषणता या क्रूरता कोई पदार्थ नहीं, सौन्दर्य की भावना का जगना, सुन्दर–सुन्दर वस्तुओं या व्यापारों का मन में आना ही है। इसी प्रकार मनोवृत्तियों और भावों की सुन्दरता, भीषणता आदि की भावना भी रूप होकर मन में उठती है। किसी की दयाशीलता या क्रूरता की भावना करते समय दया या क्रूरता के किसी विशेष व्यापार या दृश्य का मानसिक चित्र ही मन में रहता है जिसके अनुसार भावना तीव्र या मन्द होती है। मन के भीतर यह रूपविधान दो तरह को होता है। या तो यह कभी प्रत्यक्ष देखी हुई वस्तुओं का ज्यों का त्यों प्रतिबिम्ब होता है अथवा प्रत्यक्ष देखे हुए पदार्थों के रूप, रंग, गति आदि के आधार पर खड़ा किया हुआ नया वस्तु व्यापार–विधान। प्रथम प्रकार की अभ्यन्तर रूप–प्रतीति स्मृति कहलाती है और द्वितीय प्रकार की रूप सौन्दर्य या मूर्तिविधान को कल्पना कहते हैं। इन दोनों प्रकार के भीतरी रूप–विधानों के मूल हैं प्रत्यक्ष अनुभव किए हुए बाहरी रूप–विधान। रूपविधान तीन प्रकार के होते हैं –– (1) प्रत्यक्ष रूपविधान (2) स्मृति रूपविधान (3) कल्पित रूपविधान।"[6]

जब रचनाकार, कवि और सहृदय दोनों की अनुभूतियाँ अथवा भावनाएँ एक–दूसरे में तिरोहित हो जाती हैं तभी यह निःसंकोच माना जाता है कि दोनों का समान रूप से रसात्मक बोध पूर्ण हुआ। जितने अंशों में सहृदय रचनाकार की रचना के रस में एकमएक होगा, उतने अंशों में रस–बोध की चरम सफलता मानी जायेगी। यह तभी संभव है जब काव्य में अभिव्यक्त भाव में सच्चाई और यथेष्ट गहराई हो तथा अभिव्यंजना भी सच्ची मर्मस्पर्शिनी हो। यह सत्य है –– और सदा सत्य ही रहेगा कि सहृदयता के बिना काव्य के रसात्मक बोध की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। डॉ0 नगेन्द्र का कथन–सारांश है –– "काव्य–रस की अनुभूति आनन्द रूप ही – संवेदन–रूप ही है। परन्तु ये संवेदन स्थूल एवं प्रत्यक्ष न होकर सूक्ष्म और प्रतिबिम्ब–रूप होते हैं। साधारण रूप से प्रत्यक्षता और तीव्रता की मात्रा के विचार से तीन प्रकार के संवेदन होते हैं ––

(क) शुद्ध प्राकृतिक संवेदन
(ख) स्पर्श के स्मरण से प्राप्त संवेदन
(ग) स्मृति के विश्लेषण अथवा बौद्धिक अध्ययन से प्राप्त होते हैं।

ये तीनों प्रतिबिम्ब के भी प्रतिबिम्ब हैं। ये आन्तरिक और सूक्ष्म होते हैं। रस के संदर्भ में, अथवा प्रत्यक्ष जीवन में ये ही तीन प्रकार के संवेदन अनुभव में आते हैं।"[7]

निष्कर्ष – रस अनुभूति जीवन गत अन्य अनुभूतियों से भिन्न है और अनिर्वाचन यह है। रस की संवेदना सूक्ष्म और प्रतिबिंब रूप होती है।

संदर्भ–सूची :

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, रस मीमांसा, पृ0 307 नागरी प्रचारिणी सभा काशी संपादक आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र संवत 2048
2. द0के0 केलकर, आधुनिक हिन्दी–मराठी काव्यशास्त्रीय अध्ययन, पृ0 109
3. डॉ0 वाटवे, रस–विमर्श, पृ0 73 आत्माराम एंड संस दिल्ली सन 1955
4. रा0 श्री0 जोग, अभिनव काव्य प्रकाश, पृ0 97 लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद 1962
5. डॉ0 नगेन्द्र, रस–सिद्धान्त, पृ0 110 नेशनल पब्लिशिंग हाउस 23 दरियागंज नई दिल्ली 2
6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि, भाग–1, पृ0 176 प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली
7. डॉ0 नगेन्द्र, रस–सिद्धान्त, पृ0 119 प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली 2

रोहित केरकेट्टा
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
राँची विश्वविद्यालय
राँची (झारखण्ड)
Address: S/O Bande Kerketta,
ward no - 01, vill- arru, po- arru, ps- senha,
Arru, PO:Arru, DIST:Lohardaga,
Jharkhand, 835302
+918210577618

12 राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में नारी समस्याएँ

ऋतु रत्नम

सारांश

भारतीय आधुनिक नारी की स्थिति और उनकी समस्याओं का अध्ययन करने से पहले उसके इतिहास को जानना जरूरी है। डॉ. बाबासाहब अम्बेडकर जी ने एक स्थान पर कहा है कि, भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री दलितों में भी दलित है। इस व्यवस्था ने न केवल उसकी अस्मिता को नकारा है, अपितु उसे हमेशा दोयम दर्जा दिया है। ज्ञान क्षेत्र से लेकर धर्म क्षेत्र तक में उसका प्रवेश वर्जित था। हजारों वर्षो से स्त्री उपेक्षिता का जीवन जी रही थी।नारी को देवी कहने वाले इस समाज में उसकी दयनीय एवं समस्याओं से घिरी अवस्था थी। उसे सैकड़ो वर्षों से दर्दनाक यात्रा पार करनी पड़ी है। उन्नीसवी शताब्दी से ही उसकी भीतरी घुटन को शब्द मिलने लगे थे। धर्म–प्रधान भारत वर्ष में वेद, पुराण, स्मृति, इतिहास, दर्शन ने नारी को नर की अर्धांगिनी माना है। भारतीयों की यह धारणा थी कि नारी के बिना पुरूष अधुरा है। उसके बिना कोई भी मंगलमय कार्य पूर्ण नहीं होता था। नारी को गृहलक्ष्मी मानने वाले भारतीयों का विश्वास था कि उस घर को घर कहा जाता है, जहाँ गृहणी का निवास होता है। वैदिक काल में यद्यपि पुत्र का जन्म पुत्री की अपेक्षा श्रेष्ठ समझा जाता था। कन्या पुत्र के समान प्रत्येक क्षेत्र की अधिकारिणी समझी जाती थी। पुत्र एवं पुत्री में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखा जाता था। नारी को वेदाध्ययन, सृजन तथा तपस्या करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। उस समय देश में पर्दा प्रथा नहीं थी। नारी स्वच्छंदतापूर्वक समाज के प्रत्येक कार्य में भाग लेती थी। वर चुनने में वह स्वतंत्र थी। अधिकांश विवाह संबंध कन्या की इच्छानुसार ही हुआ करते थे। विधवा को पुनर्विवाह की अनुमति थी। समर भूमि में उसका सक्रिय सहयोग रहा करता था। धीरे–धीरे नारी पर भी प्रतिबंध लगने लगे। मनु ने नारी को देवी की उपाधि से विभूषित करते हुए भी प्रतिबंधों के कटघरों में सीमित कर दिया। उसकी स्वतंत्रता समाप्त हो गई और वह पुरूष के हाथ में सौप दी गई। रामायण और महाभारत काल में नारी ने पूर्ववत स्वतंत्रता प्राप्त की। स्त्रियों की शिक्षा–दीक्षा घर पर ही होती थी। राजकुल की ललनाएँ परामर्श देती थी, परंतु वह शासिका नहीं बन सकती थी। उनका अपहरण किया जाता था, जबर्दस्ती विवाह भी किए जाते थे। गौतम बुध्द के समय स्त्रियाँ बौध्द धर्म में दीक्षा ले सकती थीं। इस संबल को पाकर नारी ने कई बार अपना विद्रोहिणी रूप दिखाया था। बुद्ध के निर्वाण के पश्चात संघ में फैले भ्रष्टाचार के कारण एक बार फिर नारी को बंधनों में जकड़ा गया। हिंदी का सिध्द साहित्य इसका प्रमाण है। उसके बाद मुसलमानों के आक्रमणों एवं अत्याचारों के फलस्वरूप नारी की स्थिति और भी सोचनीय हो गई। इस काल में पर्दा प्रथा, सती प्रथा, जौहर प्रथा, बाल विवाह आदि बर्बरतापूर्ण रीति–रिवाजों के प्रचलन ने नारी जीवन को नरकमय बना दिया। वह चारदिवारी में कैद हो गई। उसका जीवन पुरूष के लिए ही हो गया। नारी की इसी स्थिति पर प्रकाश डालते हुए महादेवी वर्मा ने लिखा है – नारी शून्य के समान पुरुष की इकाई के साथ सबकुछ है, परंतु उससे रहित कुछ नहीं।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्व तक नारी की स्थिति इसी प्रकार की थी। उसका गौरवमय पद समाप्त हो चुका था। यत्र नार्यस्तु पूज्यंते वाला सिध्दान्त महत्वहीन हो चुका था। महादेवी वर्मा लिखती है – इस युग में हिंदू परिवारों में आदर्श रूप में पत्नी अर्धागिनी, गृहस्वामिनी, सम्मानिता मानने वाली विचारधारा केवल सिध्दान्त मात्र रह गई थी। व्यावहारिक रूप में परिवार में उसकी स्थिति अत्यंत दयनीय थी। परिवार में नारी को कोई स्थान प्राप्त नहीं था। माता, पत्नी, पुत्री सभी रूपों में वह पुरूष पर आश्रित थी। पुरूष ने अपनी स्वामित्व की शक्ति से लाभ उठाकर उसे इतना अधिक परावलंबी बना दिया था कि वह उसकी सहायता के बिना संसार पथ में एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकती थी।नारी आधी दुनिया है, उसकी स्थिति पर प्रकाश डालते हुए रोहिणी आग्रवाल कहती है "नारी पुत्री है, भगिनी है, पत्नी है, बस है नहीं तो नारी।ष ऐसा नारी का ऐतिहासिक जीवन भारतीय समाज में देखने को मिलता है। नारी जीवन अनेक अभाओं से भरा होने के कारण, उपेक्षित, वंचित जीवन होने के कारण नारी जीवन सैकडों समस्याओं से घिरा हुआ नज़र आता है। कमाकर लाना पुरूष का पौरूष हो गया और नारी की सार्थकता संतान को जन्म देकर उसे बड़ा करना। पुरूष स्त्री का रक्षक हो गया। उसको यह अधिकार मिला कि नारियों की रक्षा हेतु वह स्त्री को संपत्ति के रूप में स्वीकारता चला गया। उसे रहने के नाम पर घर का एक कोना, खाने के नाम पर दो जून रोटी, पहनने के नाम पर तीन वस्त्र और खेलने–खिलाने के नाम पर कुछ शिशु उसकी गोद में डालकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझने लगा। मानों वह कोई पालतू जानवर हो। घर गृहस्थी के धंधों में उलझे रहना ही उसके जीवन का ध्येय बन गया। शिक्षा स्त्रियों को निर्लज्ज बना देती है तथा वे विधवा हो जाती है इस तरह की मान्यताओं के कारण उसे शिक्षा से दूर किया गया। नारी मानवी न रहकर उपभोग की सामग्री बन गई, पुरुष के हाथ की कठपुतली बनी। नारी की यही उपेक्षित, वंचित, प्रताड़ित स्थिति हिंदी साहित्य में सदियों से चित्रित हो रही है। नारी जीवन के सवालों पर कई साहित्यिकारों ने आवाज उठाई

है। ठीक उसी प्रकार समकालीन साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर राजेंद्र यादव जी ने आधुनिक नारी जीवन का गइराईयों से चिन्तन करके अपने उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याओं पर वास्तविक रूप में चित्रण करके अपना साहित्यिक दायित्व निभाने की पूरी कोशिश की है। नारी के पारिवारिक जीवन से लेकर सामाजिक जीवन की सभी समस्याओं पर उन्होंने अपने उपन्यास में कई स्त्री चरित्रों के माध्यम से प्रकाश डाला है।

राजेंद्र यादव जी ने कई उपन्यास लिखे है । सारा आकाश, उखड़े हुए लोग, कुलटा, शह और मात, अनदेखे अंजान पुल, एक इंच मुस्कान और मंत्र – विध्द आदि। इन्हीं उपन्यासों में कई स्त्री चरित्रों के द्वारा राजेंद्र यादव जी ने नारी समस्याओं को विस्तार रूप से अभिव्यक्त किया है जिसे अग्रलिखित बिंदुओ के माध्यम से समझा जा सकता हैं –

विवाह और बाल विवाह रू

आधुनिक समाज में पढ़ी–लिखी लड़कियों की समाज मान्य विवाह की उम्र लगभग समाप्त होती है, साथ ही पढ़ी लिखी लड़कियों का पारम्पारिक विवाह पध्दतियों पर अविश्वास होने के कारण वे आज कल विवाह के बगैर ही अपनी चहेते लड़के के साथ सम्मलित जीवन जीने में विश्वास करने के कारण ऐसे संबंधों की अस्थिरता होने के कारण उनके सामने कई प्रश्न उपस्थित होते हैं। राजेंद्र यादव जी ने इसी सच्चाईयों को विवाह की समस्या के रूप में श्उखड़े हुए लोगश उपन्यास में चित्रित करने की कोशिश की है । जया उपन्यास की एक आधुनिक पढ़ी–लिखी लड़की है, जो बी. ए., बी. टी. सी करके एक अध्यापिका के रूप में कार्यरत है । जया के विवाह संबंधी अपने विचार वर्तमान समाज की लड़कियों की तरह है । जया जिस माहोल में पली है, वहाँ सोलह–सत्रह की उम्र के बाद लड़कियों की शादी करके ही उम्र निकल जाती है । जया जैसी लड़कियों की उम्र शिक्षा के कारण बढ़ती है और ज्यों ज्यों उम्र बढ़ने लगती है, उनके विवाह की समस्या गंभीर होती जाती है। जया और शरद के वार्तालाप से जया की शादी संबंधी उसकी भूमिका को लेखक ने उद्घाटित किया है। शरद जया की विवाह विषय मान्यता को लेकर उसकी अधिक स्वतंत्रता को देखकर शरद उसे कहता है ″इस शिक्षा ने तुम्हें जरूरत से ज़्यादा स्वतंत्र कर दिया है ।.... .. सीधे–सीधे शब्दों में तुम बने–बनाये सपने चाहती हो, उन्हें बनाना नहीं और उसी बनाने से डरती हो।.... और जो दिन–रात तुम कहती हो, मेरा मतलब आज की लड़की से है कि मै शादी नहीं करूँगी, आजन्म यूँही रहूँगी, ये सब झूठ है, गलत है इस बात को तुम खुद जानती हो । वैसे भी यह संभव नहीं है ।जया विवाह को क्यों नकारती है ? उसका मानना है कि विवाह करके स्त्री पुरूषों की गुलाम बनती है। विवाह के बाद वह पारिवारिक कामकाज करने से नहीं डरती, लेकिन आज कल पारिवारिक आर्थिक स्थिति और नौकरी की जरूरत पर जोर देकर शरद से कहती है ″किसी जमाने...... डॉक्टरनी और मास्टरनी बनना भले ही फैशन की बात रहीं हो, लेकिन आज वह जरूरत है। घर में एक कमाने वाला है और दस खाने वाले है। कुछ लोगों की जो अच्छे खाते–पीते हैं, बात छोड़िए, लेकिन आज अधिकतर लोगों की जिंदगी बद से बदत्तर होती जा रही है।इतना ही नहीं, जया का मानना है कि बौध्दिक परिश्रम करने के बाद सारी दुनियाँ कैद कर दी जाती है इसलिए शादी करके कौन बेवकूफ शारीरिक परिश्रम करने को तैयार होगा । आधुनिक शिक्षा प्राप्त लड़की अगर शादी करके घर की चारदीवारी में बंद रहकर घर के कामकाज के परिश्रम में ही जकड़ी रहे तो उसके शिक्षा का लाभ क्या होगा ? ऐसे कई सवाल जया के शादी को लेकर है । शरद उसे कहता है कि विवाह, शादी मजबूरी नहीं तो जरूरत होती है जो हर स्त्री–पुरूष को एक दूसरे के दायित्व के रूप में बांधती है। जया शरद से सवाल करती है कि विवाह का जो आपने यह सैध्दान्तिक पक्ष बतलाया, मैं इससे हर्फ़–ब–हर्फ़ सहमत हूँ, लेकिन इससे तो निराशा और बढ़ती है। मैं यह जानना चाहती हूँ कि आज विवाह का प्रैक्टिकल रूप, संभव क्या है ?″ शरद जया को विवाह की आम बात कहता है जो हर विवाहित स्त्री–पुरुषों में होती है। वह है समझौता, फिर जया का परम्परागत विवाह संस्था पर विश्वास नहीं बैठता। जया शरद के साथ सम्मिलित जीवन बिताना चाहती है। इसकी स्वीकृति को उजागर करते हुए शरद कहता है – हम लोग सम्मिलित जीवन बिताने का आज निश्चय कर रहे हैं । प्रकृति को अनिवार्य मानकर दो इकाइयों के सामूहिक जीवन की सामाजिक स्वीकृति का नाम विवाह है। परिवर्तित सामाजिक रूपों में व्यक्तियों स्त्री – पुरुष के बीच की यह अडरस्टैंडिंग भी बदलनी चाहिए और जया शरद के साथ सम्मिलित जीवन जीती है। राजेंद्र यादव जी ने इस जया चरित्र के माध्यम से आधुनिक पढ़ी–लिखी लड़कियों की विवाह को लेकर जो वर्तमान सच है, वही जया के माध्यम से यथार्थ रूप में चित्रित किया है। राजेंद्र यादव जी ने नारी जीवन के बाल विवाह के पक्ष को भी अपने सारा आकाश उपन्यास में अंकित किया है। नायिका प्रभा का विवाह दसवी कक्षा तक ही पढ़ाकर उसका विवाह घरवाले समर से करवातें हैं। ज़्यादातर मध्यवर्गीय परिवारवालों की ऐसी मानसिकता होती है कि बच्चों का कम उम्र में ही विवाह करके आपने आप में ही गर्व महसूस करते हैं। अगर बच्चों के विवाह में देरी हो जाय तो बिरादरी में बदनामी होने का डर इस वर्ग में होता है। ये लोग बच्चों का विवाह कर देने के बाद श्गंगा नहा लियाश की भाँति उत्सुक होते हैं। इसी सोच के कारण समर की बहन मुन्नी का विवाह भी उसके माता–पिता उसकी पढ़ाई बंद करके सोलह वर्ष की आयु में ही करवाते हैं। शिरीष भाई की बहन की शादी भी अल्प आयु में ही कर दी गयी थी। जब वह बड़ी होने पर उसका पति उसे ससुराल ले जाने में मना करता है । शिरीष भाई इस संदर्भ में कहता है – गलती हमारे घरवालों की ही थी। उसकी शादी कर दी छोटी–सी उम्र में । मुश्किल से तब वह होगी ग्यारह– बारह साल की । पतिदेव उस समय पढ़ रहे थे। अब उन्होंने

पढ़ाई पूरी की तो अचानक महसूस हुआ कि पत्नी अशिक्षित है और उसके साथ निभाव नहीं हो सकता, सो तब एक तरह से छोड़ ही रखा। तो ऐसे समय में उनकी बहन अपने जीवन के बारे में सोच सोचकर पागल बन जाती है। शिरीष भाई उसे मेंटल अस्पताल में दाखिल करवा आते हैं।

अतः राजेंद्र यादव जी ने अपने उपन्यासों में विवाह और बाल विवाह की समस्याओं पर यथार्थ रूप में प्रकाश डालने वाले एक जागृत रचनाकार के रूप में उभरकर आते हैं ।

दहेजः दहेज समस्या समाज को सदियों से नासूर बना रही है। लड़कियों की शादी में लड़कियों के माता–पिता द्वारा लडके वालों को धन, सम्पत्ति, वस्तुएँ, पैसा, या मूल्यवान वस्तु देकर उनका विवाह करने की प्रथा । यह समाजिक मान्य संकीर्ण परम्परा है, जो लड़कियों के जीवन को बरबाद की जानेवाली समस्या है। मॅक्सिरॉडीन दहेज की परिभाषा करते हुए कहते हैं ष दहेज याने विवाह के समय में दूल्हे को उसकी दुल्हण की ओर से मिली हुई संपत्ति यानी दहेज है ।ष इन संकीर्ण मान्यतानुसार आज दहेज जैसी कुप्रथा ने मानव की संवेदनशीलता को कम कर लड़कियों को और उनके माता–पिता को दहेज की व्यवस्था करने के लिए यातनाओं का सामना करना पड़ता है । दहेज प्रथा के सिवा लड़की का विवाह होता ही नहीं इसलिए लड़कियों को जन्म देने के लिए माता–पिता डरते हैं और समझों जन्म देकर उसका विवाह की दहेज देकर कर दिया तो भी लड़की को अपने ससुरालवालों की सेवा करके उनके यातनामय तानों को भी सुनना पड़ता है। इतना नासूर बना देती है यह दहेज प्रथा लड़कियों के जीवन को ।आज आधुनिक सभ्य समाज में भी दहेज प्रथा समाज में प्रचलित है, कितने भी कानून बने, लेकिन यह समाज मान्य रूढ़ प्रथा दहेज देना–लेना अपना कर्तव्य एवं सम्मान माना जाता हैं । परंतु इस प्रथा के कारण लड़कियों को कई समस्याओं का सामना करते हुए उन्हें अपना जीवन प्रताड़ित ही जीना पड़ता है। ऐसी कई बातों को राजेंद्र यादव जी ने यथार्थ रूप में अपने उपन्यासों में चित्रित करने की पूरी कोशिश की है।

'सारा आकाश की नायिका प्रभा सर्व गुण सम्पन्न होने के बावजूद भी उसे केवल अपने मायके से अधिक धन संपत्ति या साजो–सामान न लाने से उसे सास, जेठाणी के द्वारा बार–बार अपमानित होना पड़ता है । ससुरालवालों द्वारा प्रभा के प्रति के उपेक्षापूर्ण व्यवहार का कारण ही दहेज होता है, अगर वह कुछ पैसा मायके से लाती तो उसे प्रताड़ित जीवन से शायद मुक्ति मिल सकती थी। थोडी सी भी प्रभा की गलती घर के कामकाज में हो तो सास उसे भला–बुरा कहकर उसे प्रताड़ित करती रहती है ।बड़ी आई दाल तो मैंने चख ली थी । अरे, तुम्हारे यहाँ निरा नमक खाया जाता हो, हमे क्या मतलब ? ज़रा कम ही डाल देती। दुबारा माँगने में कौनसी इज्जत जाती है। लो, अब इन्हें यह भी सिखाओं। हमें तो इस शादी में कुछ भी नहीं मिला, बस लड़की ही मिली.....इतना ही नहीं दहेज न मिलने के कारण प्रभा की साड़ी फटने के बावजूद भी उसके सास द्वारा उसकी शादी में की एक साड़ी उसे नहीं मिलती है। बेटा समर अपनी माँ को प्रभा के लिए एक साड़ी की माँग करता है तो माँ बौखलाकर कहती हैं– " शादी का रखा है पत्थर। तू क्यो कहीं चला गया था ? कौन सा खजाना आया था शादी में ? और कितने जनम हो गए शादी को कि उसकी बात याद दिला रहा है ? क्यों रे, तब की सब चीजें अभी तक रखी ही होंगी ? मुन्नी को नहीं दिया कुछ जाते वक्त ? यह गईं थी तब इसे कुछ नहीं दिया ?" इस प्रकार दहेज जैसी संकीर्ण प्रथा के कारण मानवीय रिश्तों की अहमियत समाप्त हो जाती है । विवाह अब केवल दो पवित्र दिलों का केवल बंधन ही नहीं रहा तो वह एक व्यापार बन गया है और इस व्यापार में लड़कियों का सौदा एक वस्तु के रूप में होता है। प्रभा के सास–ससुर ने अपने समर की शादी में दहेज मिलने की अपेक्षा के कारण खुब पैसे उधार लेकर खर्च किय थे, लेकिन दहेज की अपेक्षा केवल पढ़ी–लिखी बहू ही घर को मिली, दहेज नहीं। इसी कारण प्रभा को घरवालो ने कई शब्दों द्वारा, शारीरिक श्रम के द्वारा काम लगाकर उसको अपमानित, प्रताड़ित करते रहते हैं । प्रभा भी अपने मायके वालों की तरफ से इन्हें दहेज न मिलने के कारण पढ़ी–लिखी और आधुनिक सोच के होने के बावजूद वह शांत रहकर सभी के बातों को सुनती रहती है। मगर पलटकर जवाब किसी को भी नहीं देती है। उसें मालूम है कि सिर्फ़ दहेज के कारण उसे परिवारवालों द्वारा उपेक्षित व्यवहार मिल रहा है। डॉ. राधा गिरधारी प्रभा के चरित्र के बारे लिखती है "प्रभा त्याग की प्रतिमूर्ति है, – सुशिक्षित है, किन्तु दहेज में अतुल सम्पत्ति न ला सकने के कारण सुशील एवं सुदंर होने पर भी परिवार के लिए महत्वहीन है। भारतीय परम्परा और रूढ़िवादी सामाजिक परिप्रेक्ष्य में दहेज समस्या, पुनर्विवाह प्रणाली को भी जन्म दे सकती है। इसका अति यथार्थ श्सारा आकाशश में चित्रित है।सारा आकाशश की मुन्नी भी दहेज जैसी अमानवीय परम्परा से प्रताड़ित जीवन जीती है। मुन्नी एक मध्यवर्गीय परिवार की बेटी होने के कारण ऐसे परिवार को दहेज और बारातियों के खातिरदारी करने की परम्पराओं को निभाने के लिए पैसों का इंतजाम करते–करते कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी परेशानी को व्यक्त करते हुए समर कहता है –इतनी बड़ी कर ली कि लगातार प्रहारों से मजबूर होकर घर की कुछ चीजें बेंच बाधंकर, कुछ भाई साहब की शादी में मिली चीजें मिलाकर दहेज दिया । उफ, क्या तंग किया बारातियों ने भी हमारी खातिर यों होनी चाहिए, हमें यह चाहिए । ससुराल से मुन्नी के बड़े ही करूणा पूर्ण खत आते । यहाँ आती तो बुरी तरह बिलख बिलखकर रोती । सास और पति मिल–मिलकर जो–जो अत्याचार करते उन्हें किसी से कह भी तो नहीं सकती थी ।इस प्रकार 'सारा आकाशश उपन्यास के द्वारा राजेंद्र यादव जी ने प्रभा और मुन्नी

किस प्रकार दहेज के कारण शोषित– अपमानित एवं प्रताड़ित जीवन जीती है इसका यथार्थ दर्शन उन्होंने कराकर दहेज से प्रताड़ित नारी हमे आज भी प्रासंगिक लगती है ।

महिलाओं के विरूध्द हिंसाः

महिलाओं के विरूध्द हिंसा की समस्या कोई नई नहीं है। भारतीय समाज में महिलाएँ एक लम्बे काल से अवमानना, यातना और शोषण का शिकार हो रही है। भारतीय सामाजिक संकीर्ण प्रथाएँ, परम्पराओं से उन्हें प्रताड़ित होकर हिंसा का सामना करना पड़ता था। स्वतंत्रता के बाद हमारे समाज में महिलाओं के समर्थन में बनाये गये कानून, महिलाओं में शिक्षा का फैलाव और महिलाओं की धीरे–धीरे बढ़ती हुई आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद असंख्य महिलाएँ अब भी हिंसा की शिकार है। उनको पीटना, अपहरण करना, बलात्कार करना और साथ दहेज के लिए पति, सास–ससुर द्वारा शारीरिक, मानसिक यातनाएँ देकर उसे प्रताड़ित करना यह सभी महिला के विरूध्द हिंसा या घरेलु हिंसा जैसी समस्याओं के श्रेणी में आता है। राजेंद्र यादव जी ने अपनी उपन्यासों में महिलाओं के हिंसा को समस्या के रूप में चित्रित किया हुआ मिलता है। 'सारा आकाशश उपन्यास में चित्रित स्त्री पात्रों में मुन्नी, और प्रभा दोनो महिलाए घरेलू हिंसा से प्रताड़ित एवं अपमानीत दिखाई देती है। मुन्नी एक ऐसी भारतीय अबला नारी का प्रतीक है, जो अत्याचार एवं अन्याय का विरोध कभी कर नहीं पाती, बल्कि चुपचाप अंदर ही अंदर घुटती रहती है और अंत में मृत्यु को प्राप्त होती है। मुन्नी एक मध्यवर्गीय परिवार की लड़की होने के कारण पिता ठाकुर साहब उसका विवाह सोलह–सतरह साल में कर देते हैं। विवाह होते ही उसके दुर्भाग्यपूर्ण दिन शुरू हो जाते हैं और बेचारी इस प्रकार तड़पती रहती है, जिस प्रकार 'जल बिन मछलीश । समर उसकी दुर्भाग्य की कहानी अपने शब्दों में कहता है – "ससुराल से मुन्नी के बड़े करूणापूर्ण खत आते । यहाँ आती तो बिलख कर रोती । सास और पति मिलकर जो–जो अत्याचार करते, उसे किसी से कह भी तो नहीं सकती थी ।" इतने मारपीट में कभी कभार सास पति को रोकती थी। लेकिन सास मरते ही मुन्नी पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पडा। अब पतिदेव मुन्नी को रोजाना पीटना, अपशब्दों से उसे अपमानित करना रोज का काम बनगया था। अब पतिदेव का हाथ पकडने वाला भी घर में कोई नहीं था । इतना ही नही घर में पत्नी के होते ष उसने किसी को लाकर घर में डाल दिया । सुनते है कोई ब्राह्मण जाति की थी। ...... एक दिन शरीर पर कूले बैलटों के निशान को लेकर मुन्नी सुबह – सुबह वापिस आ गयी, बस तब से यही है । ष लेकिन अपने माइके में सहनशील एवं किसीका विरोध न करने के रूप में जीवन जिना चाहती है कि तो उसका पति ठाकुर सहाब से क्षमा मांगकर अपनी पत्नी मुन्नी को वापिस ससुराल ले जाना चाहता है। ठाकुर, साहब जैसे ही बैठक से बाहर आकर कहते हैं कि, "कल मुन्नी जायेगी, सुबह दस बजे को गाडी से।" लेकिन मुन्नी उस आदमी के साथ नही जाना चाहती है और वह फूट–फूटकर रोते हुए अपने बाबूजी से अत्यंत करूणामय रूप में बिनती करती है कि ष्बाबूजी, तुम मुझे अपने आथ से जहर देकर मार डालो, मेरा गला घोंट दो.... मुझे वहा मत भेजो..... मुझे वहाँ मत भेजों, बाबुजी ! मै वहाँ मर जाऊँगी..... मैं तुम्हारे हाथ जोडती हूँ.... पाँव पड़ती हूँ – मुझे कहीं मत जाने दो.... बाबूजी, मैं किसी का चौका–बरतन कर लूँगी, पीस – कूट लूँगी, मुझे वहाँ मत भेजो उनके साथ ।" और अंत में वही होता है, जो मुन्नी ने बाबूजी को कहाँ था । उसका पति उसे मारकर मुन्नी के परिवार वालो को तार से मुन्नी की मृत्यु की खबर भेजता है । ष मुन्नी ऐक्सपायर्ड, मुन्नी मर गई !" इस प्रकार मुन्नी को बार–बार प्रताड़ित करकर, शारीरिक यातनाएँ देकर पति २३ द्वारा मार दिया जाता है।

प्रभा को भी दहज के कारण परिवारवालों द्वारा मानसिक हिंसा का सामना करना पड़ता है। सास, जेठानी उसे पारिवारिक काम ज़्यादा लगाना दहेज के कारण शाब्दिक अपमान जैसे व्यवहार करकर उसकी हिंसा एवं प्रताड़ना की जाती है, परंतु यह हिंसा मध्यवर्गीय परिवारवालों के मन में बैठे दहेज के लालच के कारण होती है । मुन्नी के समान प्रभा को शारीरिक यातनाएँ नही मिलती ।

अतः राजेंद्र यादव जी ने सारा आकाश उपन्यास में प्रताड़ित घरेलू हिंसा से परेशान महिलाओं का जो चित्रण किया है वह आज भी वर्तमान समकालीन समाज की प्रासंगिकता है। इसलिए सन् 2005 में भारत सरकार को 'महिला प्रतिबंधित कानुनश पास करना पड़ा है।

अंधविश्वासः

राजेंद्र यादव जी के उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज का चित्रण ज़्यादा हुआ है। और सभी सामाजिक वर्गो से ज़्यादा मध्यवर्गीय परिवार और उसमें भी ज़्यादा महिला वर्ग का ज़्यादा अंधविश्वास होता है। यह महिलाएँ रूढ़ि, प्रथा और अंध परम्पराओं पर विश्वास रखने वाली होती है। अपने पारिवारिक और सामाजिक जीवन के कई व्यावहारों को लेकर इन महिलाओं में अंधविश्वास को त्याग ने की हिम्मत नही होती। अनपढ़ नारियों में तो सबसे ज़्यादा अंधविश्वास होता हैं । 'सारा आकाशश उपन्यास में समर की माँ और भाभी में इतना अंधविश्वास भरा होता है कि पढ़ी–लिखी समर की पत्नी प्रभा को भी वृत रखने के साथ ही सैयद बाबा की धूनी पोटली कमर में बँधवाकर ही रहती है, ताकी उसको संतान प्राप्त हो सके। इसलिए प्रभा को उपवास, वृत करवाए जाते हैं । अम्मा और भाभी अंधविश्वासी होने के कारण बाँझ प्रभा को भाभी भी अपनी बेटी से दूर रखती है । प्रभा कहती है "बाँझ–बाँझ कह–कहकर भाभी और अम्मा कोसती रहती हैं । भाभी अपने बिटिया के पास नहीं झाँकने देतीं । छाया से बचाती हैं..... श इन तर्कहीन बातों पर प्रभा का जरा भी विश्वास नहीं है, लेकिन एक साथ परिवार में रहने के कारण इच्छा के विरूध्द जाकर भी कुछ बातों को

करना पड़ता है, मानना पड़ता है। प्रभा समर से कहती है कि, "विश्वास तो मेरा भी नहीं है, लेकिन एक घर में रहने पर बिना इच्छा के भी बहुत कुछ करना पड़ता है। भाभी ने रखा था। मैं नहीं रखती तो कितना ऊधम मचता ! चलों, किसी अच्छी ही भावना से रखा था, अब तुम उसके लिए लड़ो तो मत । ष प्रभा के इस कथन से विधित होता है कि मध्यवर्गीय परिवारों में जो अनपढ़ नारियाँ है वे अंधविश्वासों से प्रताड़ित है, लेकिन जो आधुनिक काल की पढ़ी–लिखी बहूएँ है वे व्रत , उपवास जैसी बातों पर कतई विश्वास नहीं रखती है। यही बात प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा राजेंद्र यादव जी दिखाना चाहते हैं ।

कुलटा उपन्यास की मिसेज रूद्रा चरित्र भी अंधविश्वास को मानने वाली है। पूरे दो महिने के लिए मिसेज तेजपाल का पति कैम्प छोड़कर जाता है तो घर में कोई दूसरा नहीं होने के कारण खुद को अकेलापन महसूस करती है।निसंतान होने के कारण अकेलापन उसे अखरता है, तो अपना मन बहलाने के लिए मिसेज रूद्रा की बच्ची गुड्डी से प्यार करने लगती है, उसे साथ लेकर इधर–उधर घूमती है। वह मिसेज रूद्रा को अच्छा नहीं लगता। वह अपनी बच्ची को बाँझ औरत के साथ बाहर भेजना बंद कर देती है। इसका कारण यह कि "मिसेज रूद्रा को अंधविश्वास भी था कि कही गुड्डी को वे कुछ कर–करा न दे ।"शह और मात की सुजाता का चरित्र भी अंधविश्वासी है। वह अपने कॉलेज में ध्रुवस्वामीनी नाटक में ध्रुवस्वामिनीश की भूमिका अदा करने वाली थी। ऐसी भूमिका को पूरा करने के लिए कुशलता और अभिनय की जरूरत होती है, किन्तु सुजाता अंधविश्वासी होने के कारण उसका खुद पर का विश्वास खत्म जाता है ! तो ऐसे समय वह देवी दर्शन करने का तय करकर कहती है – अगर अब संभल जाए तो महालक्ष्मी पर जाकर सवा रूपये का प्रसाद चढाऊँगी।" इससे वह अपने अंधविश्वास का परिचय देती है। दरअसल राजेंद्र यादव जी के उपन्यासों में चित्रित नारी चरित्र मध्यवर्गीय समाज के है इसलिय रूढ़ी, प्रथा, परम्पराओं के तहेद ऐसी अंधविश्वासों का होना स्वाभाविक ही है, लेकिन पढ़ी–लिखी औरते भी इन्ही परम्पराओं में चलना याने अंधविश्वास को बढ़ावा देने जैसा है।

अकेलापन, निराश, हताश एवं कुण्ठाः

आधुनिकता के चलते कई चुनौतियों का सामना आधुनिक युग की नारियों को करना पड रहा है। और साथ ही उत्तर आधुनिक युग के सामाजिक मुल्यों के कारण भारतीय नारी में अकेलापन, निराशा, हताश और कुण्ठा से गुजरना पड़ता है यदी वास्तविक चित्र राजेंद्र यादव जी ने आधुनिक नारी जीवन की समस्या के रूप में चित्रित किया है।

'उखड़े हुए लोग उपन्यास की पद्मा एक आधुनिक युग की अकेलेपन, निराशामय जीवन जिने वाली लडकी है। उसके पास धन–दौलत सब कुछ है, लेकिन वह बचपन से अपने माँ–बाप के प्यार से वंचित रही है। उसकी माँ मायादेवी का अनैतिक संबंध देशबंधु के साथ होने से वह अपने पति के साथ कभी भी पत्नी बनकर नहीं रही हैं । इसका परिणाम पद्मा के जीवन पर पड़ता गया। पिता की मौत के बाद मायादेवी पद्मा को देशबंधु जी के स्वदेश महल में रहने को ले आती है। पद्मा काफी भावुग किस्म की लड़की होने के कारण उसे अपने माँ के साथ स्वदेश महल में रहना पसंद नहीं है । वहाँ पर वह घुटन सी महसूस करती है । उसको अपने माँ के अनैतिक संबंध जरा भी पसंद नहीं है। जब से वह यहाँ रहने आती है उसे बिल्कुल अकेला, हताश और उखड़ा–उखड़ा सा महसूस होने लगता है। शरद जया से पद्मा के परेशानी के बारे में कहता है – "ऐसे ही घुटती रही तो बेचारी को टी. बी. हो जायेगी । ...... दिन–भर गुमसुम रहती है, मै तो उसे यहाँ खुश कभी देखा ही नहीं ...... कितनी अच्छी लड़की है, संगीत की ग्रेजुएट है ।" शरद का साथ होने कारण कुछ हदतक उसे अच्छा लगने लगता है। अपनी व्यथा, वेदना और मन की संवदेनशील भडास शरद के साथ चर्चा करके निकालती रहती है। पद्मा शरद से कहती है – षमुझे तो हमेशा ऐसा लगा जैसे अपने भीतर की किसी बात को छिपाने के लिए देशबंधु का बात–बात में बेटी का संबोधन है । मुझे वहाँ हमेशा बड़ा घुटा–घुटा और बना–बना सा लगता है ।..... और इस वातावरण में मैं अपने आपको फिट नहीं पाती । ...... कुछ ऐसी मनहूसियत इस बिल्डिंग की दीवारों में है, जैसे किसी को कोई घुटे कमरे में बंद कर दे ।..... बड़ा उदास उदास, सुस्त, सिर भारी–सा मैं समझ नहीं पाती मुझे क्या हो जाता है ?.... मुझे तो ऐसा लगने लगा था कि या तो मैं भाग जाऊँगी या मर जाऊँगी।" इतनी खुद को अकेला पाने वाली पद्मा लड़की है कि जिसका अपने माँ के साथ नहीं बनता । कारण है उसके माँ का देशबंधु के साथ अनैतिक संबंध । ऐसे समय वह अपना क्लास फेलो शरद को ही अपनी मानसिक द्वंद्व को अभिव्यक्त करते हुए कहती है मैं तो जब से पैदा हुई हूँ, शायद ही कभी निश्चिंतता और सुख जाना हो, हमेशा हमेशा एक घुटन, प्रताड़ना ! जैसे भीतर कहीं एक लाश के पास बैठा कोई रात दिन बिसूरा करता हो। बड़ा अकेला – अकेला लगता रहता है, जैसे किसी ने अनजान लोक में पकड़कर छोड़ दिया हो.... दिन–रात में यही आवाज गूंजती है कही भाग चल, कही भाग चल.. ." माँ–बाप होते हुए भी पद्मा को ऐसा लगा कि वह अनाथ है, अकेली है। उसको समझने वाला कोई नहीं पिता के बाद माँ ने उसको अकेला कभी भी महसूस नहीं होने देना चाहिए था, लेकिन माँ को केवल देशबंधु जी के साथ यौन संबंध रखने से फुरसत ही नहीं मिलती थी और ऐसे समय में एक पढ़ी–लिखी सुशील लड़की अकेली पड़ जाने के कारण हताश, निराशमय जीवन जीने से वह मानसिक घमासानों से पीड़ित होना स्वाभाविक ही है ।

अतः राजेंद्र यादव जी पद्मा चरित्र के माध्यम से आधुनिक युग की पढ़ी–लिखी लड़की किस प्रकार पारिवारिक स्थिति और आत्मजनो से दुखी होकर खुद को अकेली पाकर हताश भरा जीवन जीती है। इसका यथार्थ चित्रण किया है।

'सारा आकाश उपन्यास की नायिका प्रभा हताश, निराश और कुण्ठाग्रस्त समस्याओं से खुद गुजरी हुई है। शादी में दहेज ना लेकर आने के कारण ससुरालवालों के सास–ससुर, जेठानी एवं स्वयं के पति समर का बर्ताव भी उसके प्रति उपेक्षाभरा ही होने के कारण उसका पारिवारिक जीवन दुखों से ही शुरू होता है। प्रभा सभी के तानों को सहन कर अपना काम बगेर शिकायत से करती है। अपमान, उपेक्षा एवं प्रताड़ना चूपचाप सहती रहती है। समर की शादी उसकी इच्छा के विरूध्द होने के कारण वह पत्नी प्रभा से बात तक नहीं करता। दोनो पति–पत्नी में लगलभग साल तक संवाद नहीं होता। फिर भी प्रभा पति के प्यार के बगैर पारिवारिक कामकाज चुपचाप से करती है। कितनी मानसिक पीडाओं को सह लेती है, जब सास, जेठानी उसे कामकाज के कारण भला बुरा कहती है तो ऐसे समय अपने मन की पीड़ा सूनने वाला भी उसका कोई नहीं होता बिल्कुल अकेली रहती है। एक दिन प्रभा को रोता देखकर समर को रहा नहीं जाता और प्रभा से बात करने की कोशिश करता है तब प्रभा अपनी वेदना, हताशा और दुखी जीवन से तडपकर कहती है –एक साल से कभी आपको चिंता हुई कि मरती है या जीती है ? ऐसी क्या खास जरूरत आ पड़ी अब ! आप जाकर सोइए न।...... मुझे बताओं, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? क्या कसूर किया है मैंने तुम्हारा ? मैं तुम्हारे लायक नही हूँ, मैं तुम्हें पसंद नही हूँ, तो अपने हाथों से मेरा गला घोंट दो, मै चूँ नहीं करूंगी, तुम शौक से दूसरी शादी कर लो, लेकिन मुझे..... लेकिन मुझे बताओ तो सही... ।" इन दुख भरे कथन से पता चलता हैं कि प्रभा कितनी अकेली और कितनी मानसिक पीड़ाओं से गुजरी है। समर का प्रभा के साथ विवाह हो जाने के बाद कितनी उसकी उपेक्षा करकर उसे उसने प्रताड़ित किया है। प्रभा के बारे में अब वह सोचता है –जब भी इस बात का ध्यान आता कि निरीह बेकसूर किसी की लाड़–प्यार से पाली गई इकलोती लड़की को लाकर मैंने क्या–क्या अत्याचार नहीं किए, कौन – कौन से कहर उस पर नहीं तोड़े, उसे कितनी – कितनी यातनाएँ नहीं दी, और उसका यहाँ था ही कौन, जिससे अपने दुखड़ा रोती, तो हजारों बरछे–जैसे एक साथ ही छाती में आ लगते और रूलाई दुगनी चौगुनी होकर उमड़ने लगती। उस बेचारी के पास धीरे–धीरे घुलने के सिवा चारा ही क्या था ? उस क्षण तो ऐसा लगा जैसे आँसु, जिसकी तड़प किसी में भी ऐसी शक्ति नहीं है कि हृदय के इस पश्चाताप और मन की इस बेचौनी को इस छटपटाहट और मर्मान्तक पीड़ा को बाहर निकालकर ला सके ।৮ प्रभा का पति उससे संवाद नहीं करता, वह विवाह करना ही नहीं करने वाला था, जब यह मालूम प्रभा को होता है तो वह खुद को अकेला महसूस करती हुए अपना दुख सहेली रमा को पत्र द्वारा लिखती है अब मैं अनुभव करती हूँ कि हमारा चाहना कितना झूठा होता है। हम लोक न जाने क्या–क्या चाहा करते है ! कोई सीमा होती है हमारे चाहने की ? संसार की हर अच्छी चीज़ को चाहने की स्कूलों के दिनों की कल्पना, वे भावुकता भ –भरे सपने....। रमा, उस समय हमें कोई क्यों नहीं रोकता कि यह सब झूठ है ? किसी भी लड़की की शादी होती, ओर मैं जाकर उसके पति को देखती तो सोचा करती थी कि हिशू, मेरा ऐसा थोडे ही होगा । मेरा पति तो प्रोफेसर होगा, कहीं अफसर होगा, किसी बड़ी कंपनी का मैनेजर होगा। हम और वह बस दो ही प्राणी होंगे, ये किल–बिल, किल–बिल, सास, देवर, भाभी भतीजे, कुछ नहीं – होंगे।" ऐसे कई सपने प्रभा ने वैवाहिक जीवन के संदर्भ में देखे थे, लेकिन वास्तव में शादी के बाद ही उसे अकेलापन, हताश और दुख भरा जीवन ही मिला। इसलिए वह अपना अकेला पन प्रभा रमा सहेली के साथ बाटने की कोशिश करती है।

कुलटा उपन्यास की मिसेज तेजपाल आधुनिक सभ्यता में जिते–जिते अकेलापन अजनबीपन एवं वेदना भरा जीवन से परेशान लगती है। राजेंद्र यादव मिसेज तेजपाल के बारे में स्वयं कहते हैं – ष्कर्नल तेजपाल के अनुशासनबध्द अभिजात परिवेश में संवदेनशील पत्नी का दम घुटता है, यौन संबंधों के असंतुलन और सैनिक – जकड़बंदी के बीच वह संगीत में अपनी मुक्ति तलाश करती है। और फिर निहायत फटीचर वॉयलनिस्ट के साथ एक अनिश्चित भविष्य का चुनाव कर लेती है।" इसके साथ ही मिसेज तेजपाल आधुनिक नारी होने के कारण वह जिस सैनिकी माहोल में रहती है वहाँ की सभी औरते परम्परावादी विचारों की थी। इसलिए उन्हें इन महिला के साथ रहकर उन्हें अकेलापन महसूस ज़्यादा लगने लगता है। पति भी परम्परावादी विचारों के होने के कारण उनकी कोई भी बौधिक चर्चा नहीं होती थी केवल एक दूसरे की गलती निकालने को ही इनकी चर्चा होती थी । परिणामी मिसेज तेजपाल अकेलेपन से हताश होकर परेशानी का सामना करती नज़र आती है ।

'अनदेखे अनजान पुल की निन्नी अपनी असुंदरता के कारण काफी अकेलापन महसूस करकर परेशान होती है। अपने खालिपन से वह छुटकारा पाना चाहती रहती है। कई प्रयासों के बावजुद भी उसका कालापन दूर न होते देखकर वह निराश हो जाती है। उसके मन में यह बात बैठ जाती है कि वह देखने में कुरूप, मन से पापिनी और बुध्दि से अस्थिर है। न उसका इस दुनिया में उपयोग है न आवश्यकता । इस प्रकार अपनी कुरूपता का अहसास उसमें 'हीनता–ग्रंथिंश उत्पन्न करता है। स्नान करती है तो उसे लगता है इससे कोई फर्क पड़ने वाला नहीं । अपनी, भूतनी सी शक्ल न देखने पड़े इसलिए आईने के सामने नहीं जाती सोचती है... "भगवान कुछ और कर देता उसकी आँखे खराब कर देता, बहरा बना देता, चेचक के दाग दे देता, लेकिन बस रंग जरा–सा साफ देता। यह तो सबसे पहले दीखता है। इसे छिपाया भी तो नहीं जा सकता।" ३५ इतना ही नहीं निन्नी इस सौंदर्य संस्कृति के कारण आत्महत्या करने की भी सोचती रहती है। इतनी हताश और निराश निन्नी होती है।

कुल मिलाकर राजेंद्र यादव जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से आधुनिक युग में प्रभा, मिसेज तेजपाल, निन्नी और पद्मा जैसे कई स्त्री – चरित्र अकेलापन, निराश, हताश और कुण्ठा से परेशान होते हुए आज भी वर्तमान समाज में दिखाई देते हैं।

परित्यक्ताः

सामान्यतः तलाकशुदा या पति द्वारा छोडे औरत को परित्यक्ता कहा जाता है। पुरूष द्वारा अनेक शादियाँ, पुरुषी अहं जैसी कई कारणों के द्वारा सदियों से पुरूष प्रधान संस्कृति औरत से शादी करने के बाद उसे अकेला छोड़ने की परम्परा चली आ रही है। ऐसे परिस्थिति में नारी अपनी अविजिका खुद या माइके में रहकर सामाजिक संकीर्ण मानसिकताओं का सामना करती है। लेकिन पुरूष को समाज कुछ नहीं बोलता, उसे कोई बंधन नहीं होते । परंतु परित्यक्ता स्त्री को कई सामाजिक बंधन होते हैं ।आधुनिक समाज में कुछ परिवर्तन शायद हुए है, लेकिन मूल सामाजिक परिस्थिति में कोई बदलाव नही आया है । इसलिए परित्यक्ता स्त्री को कई प्रश्नों से झूझकर जिना पड़ता है। राजेंद्र यादव जी ने परित्यक्ता नारी जीवन का सच श्सारा आकाशश उपन्यास में मुन्नी के माध्यम से यथार्थ रूप में चित्रित किया है ।

मुन्नी ठाकुर सहाब की तीसरी सन्तान है। दुर्भाग्य से मुन्नी को परित्यक्ता जीवन की व्यथा को सहना पड़ा है। शादी के बाद बड़ी ही धूमधाम से ससुराल को विदा हुई मुन्नी को अपने पति द्वारा शोषण, प्रताड़ना भरा जीवन जिना पड़ा, कई शारीरिक, मानसिक पीडाओं से उसे गुजरना पड़ा था। समर मुन्नी की यातनामय पीड़ा के बारे में कहता है –उसने जाने किसकों लाकर घर में डाल दिया। सुनते हैं, कोई ब्राह्मण जाति की थी। नौकरानी की तरह अपनी और अपनी उस रखैल की मुन्नी से सेवा कराता, और दो–दो, तीन–तीन दिन खाना नहीं देता था और भी न जाने कितने अनेक अत्याचार किए। मुन्नी तो बताती ही नहीं थी। रात–रात भर इसकी दोनों हथेलियों पर खाट के पाए रखकर इसे कुढ़ाने और जलाने को अपनी आनंद – क्रीडा के प्रदर्शन किए जाते और एक दिन सारे शरीर पर बेंतों के फूले हुए नीले निशान लेकर मुन्नी सुबह–सुबह फिर हमारे यहाँ आ गई। बस तब से यहीं है।" और तभी से मुन्नी पति को छोड़कर अपने मायके में रहती है । उसका दुख सब घरवाले समझ तो सकते हैं, लेकिन बाँट नहीं सकते। मुन्नी के दुख की समस्या का समाधान उनके पास नही हैं। क्योंकि मुन्नी एक मध्यवर्गीय परिवार की बेटी है और मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति हमेशा तंगहाली होती है। इसके साथ ऐसे परिवार सामाजिक मान्यताओं से जुडी होने के कारण अब मुन्नी उन्हें एक बोझ लगने लगती है। ष मुन्नी जब आई थी तो सभी उसके प्रति हमदर्दी दिखाते, उसे हिम्मत बँधाते थे। अब तो प्रायः सभी भूल चुके है। हाँ, अगर नहीं भूली है तो वह स्वयं कि घर के ऊपर वह बोझ है ।ष समाज भी परित्यक्ता नारी को लोग कई प्रकार से लांछन लगाकर उसके परिवार का जीना हराम करते हैं । सामाज की ऐसी संकीर्ण मानसिकता होती है कि लड़की की बिदाई घर से हो तो अर्थी उसके ससुराल से। बगैर पति के लड़की को कोई सामाजिक स्थान या अस्तित्व नहीं होता । इसलिए मुन्नी के परिवारवालों को लोग ताने मार–मारकर उनको यातना देने का काम करते हैं। इसलिए बाबुजी कहते हैं षअब मुन्नी को भी यहीं रहना है। सारी बिरादरी के लोग थूकते हैं, लेकिन करें क्या, एक मुसीबत है ?ऐसी बातों को मुन्नी को भी एहसास होते रहता है, लेकिन करे तो क्या ? वह एक अबला स्त्री है सिर्फ चुप रहकर मन ही मन उदास रूप यातनाओं को वह सहती रहती है। समर उसकी मनोदशा का वर्णन करता है – मुन्नी तो पता नहीं कुछ सोचती भी है या नहीं। अधिक से अधिक चुप और तटस्थ रहना उसका स्वभाव हो गया है, सब नीचे होंगे वह ऊपर अकेली बैठी–बैठी एकटक ताका करेगी। ऊपर से आई तो सिकुडी – सिकुड़ाई सी सब की निकाहों से बचती रहेगी। जाने क्या उलटा सीधा सोचा करती है । भीतर जैसे उसे कोई चीज पीसे डाल रही हो, हम सब देखते रहते हैं, वह दिन–दिन पीली पड़ती चली जा रही है । अठारह उन्नीस बरस की चमकते उम्र झुर्रिया और दुख के पाले में मुरझा गई है। लेकिन करें भी तो क्या अब तो शायद जिंदगी भर उसे यही रहना है।" बाबूजी अम्मा को अब उसके सिवाय अपनी ईज्जत की पड़ी थी । मुन्नी मायके में ही रहेगी तो बिरादरी में जो उनकी बदनामी हो रही है उनसे वह परेशान है। मुन्नी का पति उसे दुबारा ससुराल ले जाने आने के बाद बाबूजी को भी लगता है मुन्नी ने अब अपने घर जाना चाहिए और वे मुन्नी को उसके पति के साथ भेजने का निर्णय लेते हुए मुन्नी को भी समझाते हुए कहते हैं– "तेरी भलाई के लिए ही तो कर रहे हैं बिटिया ! वहाँ अपना घर है, तू नहीं सँभालेगी तो फिर बिगड़ेगा । तेरी भलाई इसी में है, बेटी ! यहाँ बिरादरी में बदनामी फैलती है, सब लोग उँगलीं उठाते हैं, किस–किसका मुँह रोकेगे ?" लेकिन मुन्नी को मालूम है कि वहाँ जाना याने नर्क जैसा जीवन ही जीना है। इसलिए बाबूजी से प्रार्थना करते हुए कहती है – "जिस दिन मेरे बारे में ऐसी–वैसी बात सुनों, मुझे अपने हाथ से जहर देकर मार देना, बाबूजी !" मुन्नी को ना चाहते हुए भी उसे ससुराल जाना ही पड़ता है और वहाँ जाने के बाद कुछ ही दिनों में मुन्नी की मरने की खबर तार से आती है। इस प्रकार भारतीय समाज में मुन्नी जैसी कितनी तो भी परित्यक्ता नारियों को सामाजिक संकीर्ण मानसिकताओं का सामना करना पड़ता है और अंत में ससुरालवालों द्वारा मृत्यु को भी स्वीकारना पड़ता है।

अतः राजेंद्र यादव जी ने सारा आकाश उपन्यास के द्वारा परित्यक्ता स्त्री का यथार्थ जीवन चित्रित करकर हमे सोचने पर मजबूर किया कि परित्यक्ता नारी जीवन की समस्याएँ कितनी संवदेनशील होती है।

आत्महत्याः

उखड़े हुए लोगउपन्यास की पद्मा की आत्महत्या के माध्यम से राजेंद्र यादव जी आधुनिक युग में नारी की आत्महत्या जैसी भीषण समस्या को उजागर करते हैं। पद्मा पढ़ी–लिखी संवेदनशील और शीलवान लड़की है । बचपन से ही माँ–बाप के प्यार को तरसने वाली यह लड़की

बिल्कुल अकेली, हताश और कुण्ठा में जीवन जी रही है। ऐसे परिस्थिति में वह अपनी माँ मायादेवी के प्रेमी देशबंधुजी के श्स्वदेश महलश में रहने को आती है । देशबंधु की ललचाई नज़रे और कामुक दृष्टि पद्मा पर पड़ती है जिसको पाकर वह अपनी भूख मिटाना चाहता है । परंतु पद्मा उसकी इन नजरों को अपनी पैनी दृष्टि से भांप जाती है। एक दिन स्वदेश महल में सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान देशबंधु उसकी इज्जत लूटना चाहता है, लेकिन पद्मा अपनी इज्जत को बचाते हुए श्स्वदेश महलश की खिड़की से कूद कर आत्महत्या कर लेती है ।

– 'सारा आकाश उपन्यास की शुरवात में ही साँवल की बहू मिट्टी का तेल छिड़ककर आत्महत्या करने की खबर को राजेंद्र यादव जी अपने शब्द में कहते हैं – "गली के पार, ठीक हमारे घर के सामनेवाले साँवल की बहू मिट्टी का तेल छिड़ककर कोठरी में जल मरी थी..... धुएँ के बगूले देखकर लोग भागे, लेकिन किवाड़ तोडते–तोडते तो उसके प्राण–पखेरू उड़ चुके थे। हाय, ऐसी शुभ घड़ी में यह सब क्या हुआ ? जाने किस अनिष्ट की आशंका से सबके दिल धड़क उठे। ऐसी चीख–पुकार, भाग–दौड़ मच गई थी जैसे कहीं भूचाल आ गया हो ।" इस प्रकार आधुनिक युग की नारियों को आत्महत्या करने की क्यों नौबत आ रही है ? इस वास्तविक समस्या को भी राजेंद्र यादव जी ने अपने उपन्यासों में उजागर किया है।

निष्कर्ष:

निष्कष के रूप में कहे तो राजेंद्र यादव हिंदी साहित्य के प्रमुख कथाकार, उपन्यासकार और विचारक थे, जिन्होंने विशेष रूप से सामाजिक यथार्थ और नारी समस्याओं को अपनी रचनाओं में उकेरा। उन्होंने स्त्री–पुरुष संबंधों, समाज में नारी की स्थिति, पितृसत्ता की जकड़बंदी, और स्त्री मुक्ति के सवालों को अपने उपन्यासों में प्रमुखता दी। राजेंद्र यादव ने अपने उपन्यासों में आधुनिक नारी जीवन के विभिन्न इकाईयों का यथार्थ चित्रण किया है। शिक्षा के कारण किस प्रकार नारी जीवन में आधुनिकता आई और जीवन में सकारात्मक बदलाव हुए, साथ ही सामाजिक रूढ़ी, परम्परा और प्रथा का आधुनिक नारी विरोध करकर अपने परिवर्तनशील और वैचारिक प्रतिबध्दता का परिचय किस प्रकार दे रही है , इसके दर्शन राजेंद्र यादव जी ने अपने उपन्यासिक स्त्री चरित्रों के द्वारा रेखांकित किया है। इतना ही नहीं एक शिक्षित नारी गुलामी में अपना जीवन जी नहीं सकती, क्योंकि उसको भी अपने अस्तित्व और स्वाभिमान की पहचान होती है। इसलिए यादव जी की हर नायिका अपने अस्तित्व एवं स्वाभिमान के प्रति सजग दिखाई देती है।नारी जीवन की समस्याएँ हमें सोचने पर मजबूर करती है कि नारी आधी आबादी है और वही समस्याओं से घिरी है तो समाज का विकास रूक जायगा, क्योंकि नारी की स्थिति सामाजिक विकास के मापने की स्थिति होती है। यानि विकसित समाज की स्थिति, नारी विकास पर निर्भर होता है । नारी अधिकार और नारी शिक्षा के विकास से वर्तमान समय में नारियों के जीवन में बदलाव जरूर आया है, परंतु समाज, रूढ़ी, परंपरा, पुरुष प्रधानसमाज के संस्कारगत जडत्व से नारी आज भी मुक्त नहीं हुई।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. यादव, राजेन्द्र, सारा आकाश, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1952
2. यादव, राजेन्द्र, उखड़े हुए लोग, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1956
3. यादव, राजेन्द्र, कुलटा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1957
4. यादव, राजेन्द्र, शह और मात, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली,1959
5. यादव, राजेन्द्र, अनदेखे अनजान पुल, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1963
6. यादव, राजेन्द्र, मंत्रबिद्ध, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1967
7. यादव, राजेन्द्र, एण्ड मन्नू भंडारी, एक इंच मुस्कान सहयोगी उपन्यास, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 1961
8. यादव, राजेन्द्र, एक था शैलेन्द्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
9. यादव, राजेन्द्र, अठारह उपन्यास, अक्षर प्रकाशन, प्रथम संस्करण, नई दिल्ली, 1981
10. मदान, डॉ. इन्द्रनाथ, हिन्दी उपन्यास रू एक नई दृष्टि, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975
11. देसाई, डॉ. पारूकान्त ,आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास, चिंतन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1994
12. गुप्त, डॉ. गणपतिचंद, आधुनिक साहित्य और साहित्यकार एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1989
13. मायावंशी , प्रो. के. एम.,आधुनिक हिन्दी उपन्यास साहित्य में संस्कृति, चिंतन प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2011
14. डॉ. बेचन, आधुनिक हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास, सन्मार्ग प्र. दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1971
15. सिंह काजल, डॉ. अजमेर, उपन्यासकार राजेन्द्र यादव (समाजशास् अध्ययन), संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2002
16.चव्हाण, डॉ. अर्जुन, राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1995
17 भंडारी, .डॉ. माधवी श्रीधर, राजेन्द्र यादव कथा साहित्य के विविध आयाम, अल्का प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2007
18. कुर्यन, निरदा मर्या राजेन्द्र यादव के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, अल्का प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2012

ऋतु रत्नम
शोधार्थी
विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग
भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा
Email - reetu-rtm@gmail-com

13

भारत में माइक्रोफाइनेंस

Dr. Saneh Yadav (Principal)

सारांश

एमएफआई (भारत में माइक्रो फाइनेंस) विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। माइक्रोफाइनेंस उन लोगों और सूक्ष्म उद्यमों के लिए वित्तीय सेवाओं का एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्रोत है, जिनकी बैंकिंग और संबंधित सेवाओं तक आसान पहुंच नहीं है। यह ऐसे ग्राहकों को वित्तीय सेवाओं की डिलीवरी है जो व्यक्तिगत उद्यमियों, छोटे व्यवसाय, समूह आधारित मॉडलों के लिए संबंध आधारित बैंकिंग हैं। एमएफआई को बढ़ावा देने वाले बहुत से लोग आम तौर पर मानते हैं कि इस तरह की पहुंच गरीब लोगों को गरीबी से बाहर निकालने में मदद करेगी। दूसरों के लिए यह गरीबों के लिए अपने वित्त को अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और जोखिमों का प्रबंधन करते हुए आर्थिक अवसरों का लाभ उठाने का एक तरीका है। माइक्रो–क्रेडिट से माइक्रो–फाइनेंस और अब शवित्तीय समावेशनश तक शब्द विकसित हुए हैं। यह पेपर भारत में माइक्रो फाइनेंस की भूमिका और इसके मॉडल से संबंधित है।

माइक्रोफाइनेंस संस्थान (MFI) क्या हैं?

परिचयः व MFI वित्तीय कंपनियाँ हैं जो उन लोगों को सूक्ष्म ऋण और अन्य वित्तीय सेवाएँ प्रदान करती हैं जिनकी बैंकिंग सुविधाओं तक पहुँच नहीं है।

उद्देश्यः वइसका उद्देश्य आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देकर कम आय वाले और बेरोजगार व्यक्तियों को सशक्त बनाना है।

व यह वित्तीय समावेशन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, विशेष रूप से सामाजिक समानता और आर्थिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देकर महिलाओं सहित हाशिये पर पड़े समूहों को लाभान्वित करता है।

- नियामक ढाँचाः RBI NBFC&MFI ढाँचे (2014) के तहत MFI को विनियमित करता है, जिसमें ग्राहक संरक्षण, उधारकर्त्ता सुरक्षा, गोपनीयता और ऋण मूल्य निर्धारण शामिल हैं।
- माइक्रोफाइनेंस में व्यवसाय मॉडलः स्वयं सहायता समूह (SHG) और माइक्रोफाइनेंस संस्थान (MFI)

माइक्रोफाइनेंस ऋणदाताओं की श्रेणियाँः

- भारत में MFIः व 31 मार्च, 2024 तक, भारत के माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र में 29 राज्यों, 4 केंद्रशासित प्रदेशों और 563 ज़िलों में 168 डथ्थ शामिल हैं, जिनके द्वारा 4.33 लाख करोड़ रुपए के ऋण पोर्टफोलियो के साथ 3 करोड़ से अधिक ग्राहकों को सेवा प्रदान की जा रही है।

1. अति–ऋणग्रस्तता

माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र भारतीय समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों से संबंधित है जो अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने का इरादा रखते हैं, और इस प्रकार अत्यधिक ऋणग्रस्तता इसके विकास के लिए एक गंभीर चुनौती है। ग्राहकों द्वारा कई बार उधार लेने की बढ़ती प्रवृत्ति और अकुशल जोखिम प्रबंधन भारत में माइक्रोफाइनेंस उद्योग पर दबाव डालने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र बिना किसी संपार्श्विक के ऋण देता है, जिससे खराब ऋणों का जोखिम बढ़ जाता है। तेज गति से विकास के लिए उचित अवसंरचनात्मक योजना की आवश्यकता होती है, जिसका भारतीय माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र में स्पष्ट रूप से अभाव है।

इसके अलावा, भारत में एमएफआई पर किसी शीर्ष नियंत्रण का अभाव भी अति–ऋणग्रस्तता का एक प्रमुख कारण है। इन कारकों ने भारत में 2008 के माइक्रोफाइनेंस संकट में भी योगदान दिया। अति–ऋणग्रस्तता एमएफआई को ऋण जोखिम के प्रति संवेदनशील बनाती है और निगरानी की लागत को बढ़ाती है जो उन्हें लंबे समय तक लाभदायक बने रहने के लिए उठानी पड़ती है।

2. मुख्यधारा के बैंकों की तुलना में उच्च ब्याज दरें

भारत में वाणिज्यिक बैंकों की तुलना में एमएफआई की वित्तीय सफलता सीमित है। सदियों पुरानी बैंकिंग प्रणाली ने भारतीय जमीन पर मजबूत पकड़ बना ली है और समय की जरूरतों को पूरा करने के लिए धीरे–धीरे विकसित हो रही है। अधिकांश माइक्रोफाइनेंस संस्थान वाणिज्यिक बैंकों (8–12ः) की तुलना में बहुत अधिक ब्याज दर (12–30ः) लेते हैं। नियामक प्राधिकरण त्ठप् ने डथ्थ् ऋणों पर 26ः ब्याज

की ऊपरी सीमा को हटाने के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं।

आरबीआई के दिशा–निर्देशों के अपडेट से जहां कई एमएफआई सेक्टर के खिलाड़ियों को फायदा हुआ, वहीं कर्जदारों को नुकसान उठाना पड़ा। आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में किसानों की आत्महत्या का एक बड़ा चलन उच्च ब्याज दरों के कारण कर्जदारों के कर्ज में डूबे होने का नतीजा है।

3. भारतीय बैंकिंग प्रणाली पर व्यापक निर्भरता

भारत में माइक्रोफाइनेंस की एक महत्वपूर्ण समस्या बैंकिंग प्रणाली पर व्यापक निर्भरता है। चूँकि अधिकांश माइक्रोफाइनेंस संस्थाएँ पंजीकृत गैर–सरकारी संगठनों (एनजीओ) के रूप में कार्य करती हैं, इसलिए वे अपनी स्वयं की ऋण गतिविधियों को चलाने के लिए स्थिर वित्तपोषण के लिए वाणिज्यिक बैंकों जैसे वित्तीय संस्थानों पर निर्भर हैं। इनमें से अधिकांश वाणिज्यिक बैंक निजी संस्थाएँ हैं जो उच्च ब्याज दर वसूलती हैं। वे छोटी अवधि के लिए ऋण भी स्वीकृत करते हैं। बैंकों पर भारतीय एमएफआई की अत्यधिक निर्भरता उन्हें ऋण देने वाले भागीदार के रूप में अक्षम बनाती है।

4. अपर्याप्त निवेश सत्यापन

भारत में माइक्रोफाइनेंस संस्थानों के सामने एक और समस्या अपर्याप्त निवेश सत्यापन है। निवेश मूल्यांकन एक एमएफआई के स्वस्थ कामकाज के लिए एक महत्वपूर्ण क्षमता है। हालांकि, जिन बाजारों में एमएफआई संचालित होते हैं, उनकी विकासशील प्रकृति के कारण, बाजार गतिविधि अक्सर सीमित होती है। यह सीमा एमएफआई के लिए मूल्यांकन उद्देश्यों के लिए बाजार डेटा तक पहुंच प्राप्त करना मुश्किल बनाती है। सुसंगत और विश्वसनीय मूल्यांकन प्रक्रियाओं की कमी एमएफआई प्रबंधन टीमों को निवेश निर्णय प्रभावी ढंग से करने के लिए आवश्यक गुणवत्ता की जानकारी प्राप्त करने में बाधा डालती है।

5. अर्थव्यवस्था में वित्तीय सेवाओं के बारे में पर्याप्त जागरूकता का अभाव

विकासशील देश बनने की ओर अग्रसर भारत में साक्षरता दर कम है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी अधिक मध्यम है। भारतीय आबादी का एक बड़ा हिस्सा बुनियादी वित्तीय अवधारणाओं को समझने में विफल रहता है। आम जनता के बीच माइक्रोफाइनेंस उद्योग द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सेवाओं के बारे में जागरूकता की भारी कमी है। पर्याप्त ज्ञान की यह कमी एक महत्वपूर्ण कारक है जो ग्रामीण आबादी को अपनी वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए आसान ऋण के लिए एमएफआई तक पहुंचने से रोकता है।

यह देश में व्यापक वित्तीय बहिष्कार में भी योगदान देता है। ऋण देने से पहले लोगों को शिक्षित करने और उनमें विश्वास स्थापित करने का अतिरिक्त कार्य भी एमएफआई के कंधों पर पड़ता है। एमएफआई द्वारा पेश की जाने वाली नीतियों और उत्पादों के बारे में जागरूकता की भारी कमी के कारण इन संस्थाओं के लिए विकासशील देशों में अत्यधिक प्रतिस्पर्धी माहौल में टिके रहना मुश्किल हो जाता है।

6. विनियामक मुद्दे

विनियामक मुद्दे भारत में माइक्रोफाइनेंस की एक महत्वपूर्ण समस्या हैं। जबकि भारतीय रिजर्व बैंक (त्ठप्) प्रमुख विनियामक निकाय के रूप में कार्य करता है, यह डथ्‍ की तुलना में वाणिज्यिक और पारंपरिक बैंकों को अधिक सेवा प्रदान करता है। माइक्रोफाइनेंस संस्थानों की ज़रूरतें और संरचना पारंपरिक ऋण देने वाली संस्थाओं से पूरी तरह अलग हैं। कुछ विनियमनों ने डथ्‍ को लाभान्वित किया है, लेकिन अन्य ने कई मुद्दों को अनदेखा कर दिया है।

छिटपुट और अभूतपूर्व विनियामक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप संरचनात्मक और परिचालन परिवर्तन होते हैं, लेकिन वे आचरण के मानदंडों में अस्पष्टता भी पैदा करते हैं। यह उप–इष्टतम प्रदर्शन नए वित्तीय उत्पादों और सेवाओं के विकास में बाधा डालता है, जिससे माइक्रोफाइनेंस उद्योग के लिए एक अलग विनियामक प्राधिकरण की आवश्यकता पर बल मिलता है।

7. उपयुक्त मॉडल का चयन

भारत में माइक्रोफाइनेंस संस्थानों के लिए उचित ऋण मॉडल का चयन एक और समस्या है। अधिकांश भारतीय एमएफआई ऋण देने के लिए स्वयं सहायता समूह मॉडल (एसएचजी मॉडल) या संयुक्त देयता समूह मॉडल (जेएलजी मॉडल) का पालन करते हैं।

हालांकि, मॉडल का चयन अक्सर वैज्ञानिक तर्क या स्थिति पर विचार करने के बजाय यादृच्छिक विकल्पों पर आधारित होता है। इससे कमजोर वर्ग के लिए अपनी क्षमता से अधिक उधार लेने का जोखिम बढ़ जाता है, और एक बार निर्णय हो जाने के बाद, यह अपरिवर्तनीय हो जाता है। मॉडल का चुनाव एमएफआई संगठन की दीर्घकालिक स्थिरता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

माइक्रोफाइनेंस ऋण पर RBI के दिशा–निर्देश (2022)

- 3 लाख रुपए तक की वार्षिक आय वाले परिवारों के लिये माइक्रोफाइनेंस ऋण संपार्श्विक–मुक्त हैं।
- ऋणदाताओं को लचीली पुनर्भुगतान नीतियों का क्रियान्वन सुनिश्चित करना चाहिये तथा घरेलू आय का आकलन करना चाहिये।

- प्रति उधारकर्त्ता ऋणदाताओं की संख्या पर लगी सीमा हटा दी गई है, लेकिन ऋण की चुकौती मासिक आय के 50ः से अधिक नहीं हो सकती।
- NBFC&MFI के लिये अपने ऋण पोर्टफोलियो का 75ः माइक्रोफाइनेंस में बनाए रखने की अनिवार्यता (85ः से कम) है।
- संस्थाओं को आय विसंगतियों और घरेलू आय के विवरण की रिपोर्ट करनी होगी।
- कोई पूर्वभुगतान दंड नहीं; विलंब शुल्क केवल अतिदेय राशि पर लागू है।

माइक्रोफाइनेंस से संबंधित सरकारी योजनाएँ कौन सी हैं?

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY) प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY), जिसे 8 अप्रैल 2015 को शुरू किया गया था, एक ऐसी योजना है जो गैर–कृषि, सूक्ष्म और लघु उद्यमों को 10 लाख रुपये तक का ऋण प्रदान करती है.

योजना के मुख्य बिंदुः

- उद्देश्यः गैर–कॉर्पोरेट, गैर–कृषि लघु/सूक्ष्म उद्यमों को विनिर्माण, व्यापार और सेवा क्षेत्र में ऋण उपलब्ध कराना, जिसमें कृषि से जुड़ी गतिविधियाँ जैसे मुर्गी पालन, डेयरी, मधुमक्खी पालन आदि शामिल हैं.
- ऋण सीमारू 10 लाख रुपये तक.
- शुरुआतरू 8 अप्रैल 2015.
- लक्ष्यः छोटे व्यवसायों और पहली पीढ़ी के उद्यमियों के बीच उद्यमशीलता को बढ़ावा देना.
- योजना के तहत ऋण के प्रकार'
- शिशुः 50,000 रुपये तक.
- किशोरः 50,001 रुपये से 5 लाख रुपये तक.
- तरुणः 5 लाख रुपये से 10 लाख रुपये तक.
- ऋण के लिए आवेदन कैसे करेंरू आप किसी भी बैंक, एनबीएफसी, एमएफआई आदि के नजदीकी शाखा कार्यालय से मुद्रा ऋण प्राप्त कर सकते हैं.
- उद्यमीमित्र पोर्टलः आप उद्यमीमित्र पोर्टल (www-udyamimitra-in) पर मुद्रा ऋण के लिए ऑनलाइन आवेदन भी कर सकते हैं.
- मुद्रा योजना का उद्देश्यरू सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचितों को वित्तीय समावेशन और सहायता प्रदान करना.
- स्वयं सहायता समूह (SHG) – बैंक लिंकेज कार्यक्रम स्वयं सहायता समूह (ैभ्ळ) एक स्वैच्छिक संगठन है. इसमें आम सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि वाले लोग मिलकर आर्थिक और सामाजिक उद्देश्यों को पूरा करते हैं. स्वयं सहायता समूहों के ज़रिए सदस्यों को वित्तीय संसाधन, आजीविका के अवसर, और निर्णय लेने की शक्ति मिलती है.

स्वयं सहायता समूह की खास बातेंः

- स्वयं सहायता समूह में आमतौर पर 10–20 सदस्य होते हैं.
- इनका संगठनात्मक ढांचा अनौपचारिक होता है.
- सदस्य अपनी बचत को एकत्रित करके एक साझा कोष बनाते हैं.
- इस कोष का इस्तेमाल ज़रूरतमंद सदस्यों को लोन देने के लिए किया जाता है.
- सदस्यों के बीच आपसी विश्वास, सहयोग, और समर्थन की भावना बढ़ती है.
- प्रशिक्षण और कार्यशालाओं के ज़रिए सदस्यों के कौशल और क्षमता में सुधार होता है.

स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा देने के लिए सरकार की योजनाएंः दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई–एनआरएलएम), महिला स्वयं सहायता समूह योजना (डबल्यूएसएचजी), लखपति दीदी योजना, मनरेगा, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम (एमजीएनआरईजीए).

सूक्ष्म और लघु उद्यमों हेतु क्रेडिट गारंटी फंड (CGTMSE) सूक्ष्म और लघु उद्यमों (MSE) के लिए क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट (CGTMSE) एक सरकारी योजना है जो MSE को बिना किसी गारंटी के ऋण प्राप्त करने में मदद करती है, जिससे उन्हें व्यवसाय शुरू करने या विस्तार करने में आसानी होती है.

CGTMSE योजना के बारे में विस्तार सेः

- उद्देश्यः

CGTMSE का उद्देश्य सूक्ष्म और लघु उद्यमों को ऋण उपलब्ध कराना है, खासकर उन उद्यमों के लिए जो बिना किसी गारंटी के ऋण प्राप्त करने में सक्षम नहीं होते हैं.

- कैसे काम करता हैरू

यह योजना ऋण देने वाले संस्थानों (जैसे बैंक) को ऋण की गारंटी प्रदान करती है, जिससे वे डैम् को ऋण दे सकें.

- पात्रताः

नए और मौजूदा दोनों डैम् इस योजना के तहत लाभ प्राप्त कर सकते हैं.

- कवरः
- यह योजना 2 करोड़ रुपये तक के ऋण के लिए गारंटी प्रदान करती है.
- लाभः
- बिना किसी गारंटी के ऋण प्राप्त करना.
- व्यवसाय शुरू करने या विस्तार करने में आसानी.
- ऋण की उपलब्धता में वृद्धि.
- CGTMSE की सीपिनाः

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय और भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI) के सहयोग से 2000 में ब्ळज्डैम् की स्थापना की गई थी.

- आवेदन कैसे करें:

आप CGTMSE योजना के तहत ऋण के लिए आवेदन करने के लिए किसी भी सदस्य ऋणदाता संस्थान (MLI) से संपर्क कर सकते हैं.

- भारत में माइक्रोफाइनेंस क्षेत्र के धारणीय विकास हेतु प्रस्तावित सुधार क्या हैं?
- ऋण मूल्यांकन को सुदृढ़ बनानारू एक मानकीकृत घरेलू आय मूल्यांकन मॉडल की स्थापना करने के साथ ऋण ब्यूरो डेटा अपलोड को पाक्षिक से बढ़ाकर साप्ताहिक करके वास्तविक समय पर देयता की ट्रैकिंग को उन्नत बानाया जाना चाहिये।
- उधारकर्त्ता की पहचानः ऋण दोहराव को रोकने एवं सटीक देयता मूल्यांकन सुनिश्चित करने के क्रम में MFI के लिये आधार–आधारित KYC को अनिवार्य बनाया जाना चाहिये।
- अधिक पारदर्शिता के लिये सभी संस्थागत ऋणदाताओं (विनियमित और अनियमित दोनों) को शामिल करने के क्रम में क्रेडिट ब्यूरो की भागीदारी का विस्तार करना चाहिये।
- आवश्यकता–आधारित ऋण मॉडल अपनानाः MFI को केवल SHG या श्रस्ळ पर निर्भर रहने के बजाय उधारकर्त्ता की ज़रूरतों के आधार पर ऋण मॉडल चुनना चाहिये।
- MFI को ऋण के अलावा बचत, बीमा एवं सूक्ष्म निवेश को भी इसमें शामिल करना चाहिये जिससे व्यापक वित्तीय समावेशन सुनिश्चित होने के साथ ऋण पर निर्भरता कम हो।
- लैंगिक रूप से समावेशी वित्तपोषणरू बैंकिंग एवं ऋण तक महिलाओं की पहुँच में सुधार करके लैंगिक रूप से समावेशी वित्तीय नीतियों को बढ़ावा देना चाहिये।
- सशक्त प्रभाव आकलनरू गरीबी उन्मूलन में इनकी प्रभावशीलता को सटीक रूप से मापने के साथ डेटा–संचालित नीति सुधार सुनिश्चित करने के क्रम में माइक्रोफाइनेंस हस्तक्षेपों का व्यापक और निष्पक्ष मूल्यांकन करना चाहिये।

निष्कर्ष

हालाँकि यह एक लंबा सफ़र तय कर चुका है, लेकिन भारत में माइक्रोफाइनेंस सेक्टर अभी भी कई चुनौतियों का सामना कर रहा है। भारत में माइक्रोफाइनेंस की समस्याओं को तकनीकी सहायता की मदद से हल किया जा सकता है, जिससे यह सेक्टर ग्रामीण आबादी को ज़्यादा प्रभावी ढंग से ऋण दे सकेगा।

फिनेज़ा ऋण प्रबंधन समाधान माइक्रोफाइनेंस संस्थानों और एनबीएफसी के लिए एक अच्छी तरह से एकीकृत सॉफ्टवेयर समाधान है। सॉफ्टवेयर समाधान एमएफआई को विश्व स्तरीय बैंकिंग क्षमताओं तक पहुंचने में मदद करता है ताकि वे मुख्यधारा के वाणिज्यिक बैंकों के प्रदर्शन से मेल खा सकें और कुशलतापूर्वक प्रतिस्पर्धा कर सकें। 360–डिग्री सूट न केवल ऋणदाताओं को संतुलित निर्णय लेने में सहायता के लिए उधारकर्ता का एक संपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है, बल्कि एआई और एमएल प्रौद्योगिकियों का उपयोग प्रक्रिया को और अधिक जोखिम मुक्त बनाता है।

Dr. Saneh Yadav (Principal)
SSDCMT,
Saharanwas
Ph.D. in Economics, M.Phil, M.A
Economics, MBA, PGDCA, PGDLL
(16+years of experience and enduring passion in
Management Teaching, Corporate experience, Business
Administration, Research and Relationship Management.)
Mob :- 8178293304

14

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय भाषाएं

डॉ0 मुकेश कुमारी

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनेक महत्वपूर्ण पक्ष है।यह अपने स्वरूप और प्रक्रिया में ऐतिहासिक कही जा सकती है। भारतवर्ष जैसे विभिन्न विविधताओं वाले देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 महत्वपूर्ण प्रावधानों के साथ सामने आई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मुख्य उद्देश्य भारतीय भाषाओं के सशक्तिकरण को बढ़ाना है।भारतीय भाषाओं में ज्ञान– विज्ञान की एक सुदीर्घ परंपरा चली आ रही है।अंग्रेजी की बढ़ती हुई महत्ता के कारण भारतीय भाषाएं उपेक्षित हुई है और यह कहना भी गलत नहीं है कि हमारी कई भाषाएं विलुप्त होने की अवस्था में है। भारतीय भाषाओं के लिए सरकार द्वारा कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं। विविध भाषाओं वाले इस भारतवर्ष में सामान्य व्यक्ति मुख्य धारा से कोसों दूर रहा। भाषा से ही प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान होती है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा में जो संस्कार, विचार, ज्ञान और व्यवहार का विकास कर सकता है, वह किसी अन्य भाषा में नहीं। यदि सार रूप में कहा जाए तो व्यक्ति समाज राष्ट्र और विश्व के प्रति दायित्वबोध जगाने का काम करती है। डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था–ष शिक्षा केवल आजीविका प्राप्त करने का साधन नहीं है, न ही यह नागरिकों को शिक्षित करने का अभिकरण है, न ही यह प्रारंभिक विचार है। यह जीवन में आत्मा का आरंभ है, सत्य तथा कर्तव्य पालन हेतु मानवीय आत्मा का प्रशिक्षण है। यह दूसरा जन्म है जिसे षदिव्यात्म जन्मष कहा जा सकता है। गांधी जी ने भी कहा था–सच्ची शिक्षा वह है जो बालकों के आध्यात्मिक बौद्धिक तथा शारीरिक विकास हेतु प्रेरित करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विभिन्न बदलावों के साथ भारतीय जीवन मूल्यों की स्थापना की गई है ।यह शिक्षा नीति इसलिए भी विशेष है कि पहली बार ने केवल भारत में अपितु विश्व इतिहास में राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाते हुए लोकतांत्रिक आधार को ग्रहण किया गया। यह शिक्षा नीति बनने में लगभग दो–तीन वर्ष लगे,किंतु समुद्र मंथन के समान अमृत रूप में सामने आई है। इसमें विद्यार्थी को एक समग्र व्यक्ति के साथ–साथ एक अच्छा नागरिक बनने की संकल्पना निहित है। इस शिक्षा नीति के विज़न में कहा गया है कि–षइस राष्ट्रीय शिक्षा का विजन भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है,जो सभी को उच्चतम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराकर, भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनकर एक जीवंत और न्याय संगत ज्ञान समाज में बदलने के लिए योगदान करेगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि यह शिक्षा नीति शिक्षण संस्थानों की पाठ्यचर्या और शिक्षण विधि, छात्रों में अपने मौलिक दायित्वों और संवैधानिक मूल्यों ,देश के साथ जुड़ाव और बदलते विश्व में नागरिक की भूमिका एवं उत्तरदायित्व की जागरूकता उत्पन्न करने वाली है। नीति का विजन स्पष्ट करता है कि–छात्रों में भारतीय होने का गर्व न केवल विचार में बल्कि व्यवहार बुद्धि और कार्यों में भी और साथ ही ज्ञान,कौशल, मूल्य और सोच में भी होना चाहिए। जो मानवाधिकारों, स्थाई विकास और जीवनयापन तथा वैश्विक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हो ताकि वे सही मायने में वैश्विक नागरिक बन सके। शिक्षा नीति की इस भावना को स्पष्ट करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने संबोधन में कहा था–हमारे छात्र ग्लोबल सिटीजन को तो बने, साथ–साथ अपनी जड़ों से भी जुड़े रहे। जड़ से लेकर जग तक, मनुष्य से मानवता तक, अतीत से आधुनिकता तक सभी बिंदुओं का समावेश करते हुए इस राष्ट्रीय शिक्षा नीति का स्वरूप तय किया गया है।स्पष्ट है कि यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति जड़ों से जोड़ने वाली होगी और जड़ों से जोड़कर छात्र को ग्लोबल सिटीजन के रूप में भी स्थापित करने में महत्वपूर्ण अथवा कारगर सिद्ध होगी।

पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति वर्ष 1968 में और दूसरी वर्ष 1986 में लागू की गई थी, जिनमें शिक्षा से संबंधित कई महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए थे परंतु व्यावहारिक स्तर पर वह सफल नहीं हो पाई।इन नीतियों में भारतीय भाषाओं की प्रायरू अवहेलना की गई है। स्वतंत्र भारत में भी शिक्षा नीतियों में मैकाले की शिक्षा नीतियों और भारत विरोधी शिक्षा दृष्टि को बनाए रखा गया। कहीं न कहीं हम देखते हैं कि भारतीय भाषाओं की अपेक्षा अंग्रेजी को अधिक महत्ता दी गई।भारतीय भाषाओं अथवा राष्ट्रभाषा के रूप में जब भी हिंदी की चर्चा की गई तो बुद्धिजीवियों व राजनीतिज्ञों ने विरोध का वातावरण बनाया।हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता है कि क्या भारतीय भाषाओं की संकल्पना के बिना भारत की संकल्पना करना समुचित है? हिंदी और भारतीय भाषाएं व्यावहारिक या व्यावसायिक तौर पर विदेशी भाषाओं का बहिष्कार नहीं करती है,बल्कि समायोजन के साथ आगे बढ़ने का भाव हमें प्रदान करती है।राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी हमेशा से प्रायोजित विरोध का सामना करती रही। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाने के लिए श्मील का पत्थरश साबित होगी।राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अध्ययन–अध्यापन की दृष्टि से प्रारंभिक स्तर पर,माध्यमिक स्तर पर और यदि संभव है तो उच्च शिक्षण में भी

मातृभाषा के प्रयोग, प्रोत्साहन की संकल्पना निश्चित रूप से सराहनीय और ऐतिहासिक प्रयास है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारत की विभिन्न भाषाओं को महत्व दिया गया है। नीति में यह स्पष्ट किया गया है कि–ष्कम से कम कक्षा 5 तक और बेहतर यह होगा की कक्षा 8 और उससे आगे तक भी यदि हो सके तो शिक्षा का माध्यम घर की भाषा, मातृभाषा, स्थानीय भाषा,क्षेत्रीय भाषा होनी चाहिए। इसके साथ–साथ यह भी महत्वपूर्ण है कि यह प्रावधान सार्वजनिक और निजी दोनों प्रकार के विद्यालयों पर लागू होगा। विज्ञान सहित अन्य सभी विषयों के लिए मातृभाषा में पाठ्य– पुस्तकें उपलब्ध कराई जाएगी।विभिन्न शोधों से पता चला है कि आरंभिक शिक्षा बच्चों को मातृभाषा में दी जाए तो वह अधिक सहजता व स्पष्टता से चीजों को सीखता है।प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में लेने के साथ वह इसके माध्यम से दूसरी भाषाओं को भी सहजता से समझ सकता है।गांधी जी ने कहा था–मेरी मातृभाषा में कितनी ही खामियां क्यों न हो, मैं उससे उसी तरह चिपटा रहूंगा,जिस तरह अपनी मां की छाती से। वही मुझे जीवनदायी दूध दे सकती है.... रूस ने बिना अंग्रेजी के विज्ञान में इतनी उन्नति की है। आज अपनी मानसिक गुलामी की वजह से ही हम यह मानने लगे हैं कि अंग्रेजी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता।मैं इस चीज को नहीं मानता।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति मातृभाषा के साथ–साथ संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित सभी भारतीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और शिक्षण की दिशा में खुलापन लेकर आई है। भारतीय चिंतन, दर्शन, अध्यात्म और ज्ञान– विज्ञान हमेशा से विश्व को प्रभावित करता रहा है। प्राचीन समय से ही भारतीय गुरुकुल की शिक्षा देश–विदेश में प्रसिद्ध रही है। आज के समय में शिक्षा केवल व्यवसाय का साधन मात्र बनकर रह गई है। प्राचीन समय में जहां विद्यालयों को ज्ञान का मंदिर समझा जाता था और उनमें शिक्षा का खर्च न के बराबर था। ज्ञान–विज्ञान की शिक्षा के साथ–साथ वेद– उपनिषद का भी सांस्कृतिक ज्ञान विद्यार्थी को दिया जाता था,वही आज के समय में विद्यालय, विद्यालय न रहकर बड़े–बड़े भव्य भवनों के रूप में निर्मित हो चुके हैं।इन भवनों में अपनी मातृभाषा हिंदी बोलना गवारु समझा जाता है और अंग्रेजी बोलना पढ़ा लिखा समझा जाता है।समग्र मानव की संकल्पना पीछे छूट गई है। आज विद्यार्थी अधूरे ज्ञान के साथ शिक्षा ग्रहण कर रहा है। अधूरा ज्ञान उसे केवल विषय की शिक्षा तक की सीमित कर देता है।

भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत साहित्य में गणित,दर्शन, व्याकरण, संगीत, राजनीति, चिकित्सा, वास्तुकला, धातु विज्ञान, नाटक, कविता, कहानी और बहुत कुछ इतने विशाल रूप में है यदि उसका अवगाहन किया जाए तो एक बड़े ज्ञान का भंडार हमारे सामने उपलब्ध हो सकता है। इसी प्रकार भारतवर्ष की अन्य शास्त्रीय भाषाओं जैसे तमिल, तेलगु, कन्नड़,मलयालम और उड़िया आदि में भी समृद्ध ज्ञान परंपरा विद्यमान है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं के साथ–साथ अंग्रेजी, कोरियाई,जापानी, थाई, जर्मन, स्पेनिश, पुर्तगाली, रूसी आदि भाषाओं के शिक्षण– अध्ययन के भी प्रावधान है ताकि विद्यार्थी अंग्रेजी ही नहीं अपितु अन्य वैश्विक भाषाओं और संस्कृति को भी जान सके।राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारे लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि विभिन्न भारतीय भाषाओं में बच्चों को शिक्षित करने से हम भारतीय संस्कृति को भी पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रख पाएंगे। अगर हम अपनी संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन चाहते हैं तो जरूरी है हम विभिन्न भारतीय भाषाओं को भी संरक्षण दें ।आज यह बड़ी विडंबना है कि विभिन्न भारतीय भाषाएं विलुप्त होने की कगार पर है और कुछ भाषाएं विलुप्त हो चुकी है।यूनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं को लुप्तप्रायरूघोषित किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति जहां संविधान की आठवीं अनुसूची की 22 भारतीय भाषाओं की संरक्षण, शिक्षण और संवर्धन की दिशाएं खोलने वाली है वहीं लुप्तप्राय रूभाषाओं को महत्व देने वाली है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भारतीय भाषाओं को तकनीकी और डिजिटल माध्यम से जोड़कर जो समन्वय स्थापित किया है उससे भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय ही नहीं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रोत्साहन मिलेगा। समस्त भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत को विशेष आदर, सम्मान,संरक्षण और संवर्धन के प्रावधान किए गए हैं। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति वह मजबूत कड़ी साबित होगी जिससे भारतीय भाषाओं के सशक्तिकरण के साथ भारतवर्ष की सांस्कृतिक विविधता के अनेक आयाम खुलेंगे और इसके माध्यम से जो एक श्रेष्ठ भारत की संकल्पना जिसमें भारतवर्ष एक विकासशील देश से विकसित देश बनने तक का सपना साकार करेगा।

संदर्भः

(1) मेरे सपनों का भारत पृष्ठ 196

(2) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृष्ठ 8

(3) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृष्ठ 8

(4) राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर 7 अगस्त 2020 को प्रधानमंत्री का संबोधन।

(5) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, पृष्ठ 19

(6) हरिजन सेवक, 25 अगस्त 1946

डॉ0 मुकेश कुमारी,

सहायक प्राध्यापक, भारतीय ज्ञान एवं भाषा विभाग, गुरुग्राम विश्वविद्यालय(गुरुग्राम)

8053855692

Mail id& sushankyadav4988@gmail.com

15 समकालीन हिंदी उपन्यासों में सांप्रदायिक समस्याएं

डॉ0 पुष्पा रानी

सारांश

समकालीन शब्द का कोशीय अर्थ ष्एक ही समय का या अपने समय काष् यह अंग्रेजी के ब्वदजमउचतवतल कालबोधक भी है। ैजमचीमद ैचमदकमत ने अपनी पुस्तक "The Struggle The Modern] में लिखा है कि आज बीसवीं शताब्दी के लेखकों में कुछ समकालीन हैं तो कुछ ब्वदजमउचतवतल है तथा कुछ सच में उवकमतद हैं। ैजमचीमद ैचमदकमत ने समकालीन के बारे में बताया है कि ये आधुनिक संसार के होते हैं जिसे वे अपनी कृतियों में अभिव्यक्त करते तथा उस ऐतिहासिक ऊर्जा को स्वीकार करते हैं जो आधुनिक युग के वैज्ञानिक मूल्यों और विकास से गुजरते हैं।2 सीधे शब्दों में लेखक या रचनाकारों के समय या काल की समस्याओं, विस्तृत विसंगतियों एवं चुनौतियों को दर्शन वाला साहित्य समकालीनता का बोधक है।

समकालीन हिन्दी के सांप्रदायिक उपन्यासों के अध्ययन से विदित होता है कि समकालीन सांप्रदायिक उपन्यासकारों का मस्तिष्क आज भी देश के विभाजन की सांप्रदायिक हिंसा एवं अमानवीय घटनाओं को भुला नहीं पाया है।

इसका तथ्यपूर्ण उदाहरण हमें समकालीन उपन्यासों की कथानक पृष्ठभूमि से ज्ञात होता है। बंटवारा बीसवीं सदी में घटित भारत का वह सच है जो विश्व इतिहास को साबित करने वाला सिद्ध हुआ था। सुनील गंगोपाध्याय कृत श्सरहद के उस पारश का औपन्यासिक विजन इन्हीं सारी विभाजन से पलायन और शरणार्थियों की समस्याओं के इर्द–गिर्द घूमता है। इसी की तरह विभाजन की भीषण घटनाओं को लेकर अपने उपन्यासों को गति प्रदान करने वालों में द्रोणवीर कोहली कृत वाह कैम्प प्रताप सहगल कृत श्अनहदनादश नासिरा शर्मा कृत जिन्दा मुहावरे अपनी विशेषता एवं भाषाई परिपक्वता लिये दिखाई देते हैं।

सरहद के उस पार उपन्यास में पूर्वी बंगाल में विभाजन की मार से उपजी धार्मिक कट्टरता एवं वैचारिक वैमनस्य, वहां के हिन्दुओं की अपनी जन्मभूमि त्यागकर पराई धरती पर अजनबियों जैसा जीवन व्यतीत करते, बंगला हिन्दुओं की छटपटाहट घुटन और जीने की जद्दोजहद को प्रस्तुत किया है। यहां भारत भूमि पर इन शरणार्थियों के साथ गैर बंगालियों का भेदपूर्ण व्यवहार, उनसे रफूजियों मुहजीरों जैसा व्यवहार, लगातार परस्त होती उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता, उनके मनोभावों संवेदनशीलता को गहराई से प्रस्तुत किया है।

सरहद के उस पार उपन्यास में सामाजिक व्यवस्था की त्रुटि के चलते एक समय हिन्दुओं ने पूर्वी बंगाल में मुसलमानों के प्रति बहुत अत्याचार और अन्याय किया था लेकिन अभी के निरीह लोगों से उनसे बदला लेने के पक्षधर वे नहीं थे और और दोनों देशों में, दो जात बहुसंख्यक थी, इसलिए अल्पसंख्यक को दबाकर रखने की कोशिश को वे अभद्रता मानते थे।3 यह उपन्यास पूर्वी बंगाल से बिहार तक व अन्य क्षेत्रों में आकर बसे बंगाली शरणार्थियों के जीवन का सच्चा दस्तावेज है।डोरावीर कोहली ने ष्वाह कैम्पष् उपन्यास में पश्चिमी पाकिस्तान में मुसलमानों की धर्मांधता, हिंदू – मुस्लिम, मुस्लिम – सिक्ख मतभेदों एवं सांप्रदायिक दंगों से अपनी जान बचाकर भारत पहुंचे। हिन्दू एवं सिक्ख शरणार्थियों के परिवारों की कथा बताई है। इसकी कथा इस्लाम के धर्मांतरण की कट्टरता को उदघाटित करती है। उपन्यास के केन्द्र में एक अति संवेदनशील लड़का है जिसके व्यक्तित्व में लेखक स्वयं समा जाते हैं। लेखक का मन पाकिस्तान में हुए हिंदू और सिक्खों की स्त्रियों एवं बच्चों पर हुए अत्याचार से पीड़ित है। सिक्ख हमारे दुश्मन हैं। यह इसलिए कहते हैं, क्योंकि सिक्खों के पास हथियार होते हैं। सिक्खों से उन्होंने कहा,– बुधवार शाम तक सारे सिक्ख चले जाएं, अगर जान की खैर चाहते हो।4 साथ ही हिन्दू सिक्ख विस्थापितों का पाकिस्तान से हिंदुस्तान आने का संघर्षपूर्ण त्रासदियों का संवेदनापूर्ण अंकन हुआ है।

प्रताप सहगल कृत अनहदनाद उपन्यास में सन् 1947 के देशव्यापी सांप्रदायिक दंगों को भारतीय समाज की ऐतिहासिक सच्चाई के रूप में अंकित किया है । उपन्यास का केंद्रिय पात्र जगतनारायण अपने परिवार के संग शरणार्थियों के शिविरों में रहकर पाकिस्तान की सीमा में सांप्रदायिक तत्वों से जूझता भारतीय सीमा में प्रवेश करता है लेखक ने जगतनारायण के परिवार को उन हजारों लाखों के परिवार को प्रतीक रूप में देखा है जो विभाजन के बाद पाकिस्तान से भारत आते समय विभाजन की सांप्रदायिक काली आंधी से अपनी जान तथा इज्जत बचाने, मौत से लड़ते अपने प्रियजनों से बिछुड़ते, संघर्ष करते हिंदुस्तान की सरजमीं पर प्रवेश किया। लेखक ने नायक जगतनारायण की सद्यः प्रसूता पत्नी और नवजात शिशु की जीवन – मृत्यु से संघर्ष की कथा को पाकिस्तान से भारत आते अनेकानेक परिवारों को रूपक बनाया है। पाकिस्तान में हिंदुओं पर हुए कुकृत्यों का चित्रण किया है – मुसलमानों ने अल्लाह हू अकबर के नारे लगाते हुए कैसे – कैसे हिन्दुओं के घरों को लूटा है, जवान लड़कियों को अगवाह किया, कैसे कत्लेआम हुआ और जगह – जगह आग लगा दी गई।ष्5 ऐसा अनेक घटनाओं का आंखों देखा हाल शिवा अपने पिता से सुना करता था। उपन्यासकार

का उद्देश्य विभाजन कालीन शरणार्थी परिवारों की घुटन, तकलीफ,वेदनाओं और संवेदनाओं को पाठकों के समक्ष परिलक्षित करना है।

उपन्यासकार नासिरा शर्मा ने जिंदा मुहावर मैं पाठकों की दृष्टि विभाजन के दौरान धार्मिक संकीर्णता और वैचारिक वैमनस्य की ओर खींचा है। विभाजन के पश्चात मुसलमान युवा पीढ़ी की संकीर्ण मजहबी सोच, जिन्होंने नए केवल पाकिस्तान के निर्माण हेतु मतदान किया था, बल्कि विभाजन के बाद पाकिस्तान जाकर अपने मुंह भांग से हताश एवं घुटन भरी जिंदगी जीने के लिए मजबूर थे। उपन्यास का नायक निजाम पाकिस्तान गए उन समस्त नौजवानों का प्रतीक है जिन्हें पराए वतन जाकर अपनी जन्मभूमि की अहमियत पता लगती है। पाकिस्तान गए मुसलमानों को जन्मस्थान,जन्मभूमि को देखने की ललक, रह रहकर दिल को ठेस पहुंचाता अतीत निजाम के अकेलेपन उसकी बेबसी हिंदुस्तान न जा पाने का चित्रण किया है। ष्दड़ी दौड़ धूप के बाद भी निजाम को इजाजत नहीं मिली। वजह बताई गई की सियासी तनाव है। हिंदुस्तान एक सपना बन गया है और तन्हाई उसका भाग्य।ष्6 पाकिस्तान में जीवन भर सम्मानजनक जीवन जीने की जद्दोजहद, जिल्लतें और घुटन भरे वातावरण से मानसिक रूप से परास्त होने की कहानी लेखिका के भाषाई कौशल से मर्मस्पर्शी बन जाती है। भारतीय समाज में आंतरिक सांप्रदायिक दंगों की सच्चाई को संवेदनात्मक स्तर पर अपनी कथावस्तु बनाने वाले उपन्यासकार प्रियवंद असगर वजाहत, गीतांजलि श्री, रवींद्र वर्मा, भगवान सिंह, कमलेश्वर तथा भीष्म साहनी आदि ने वर्ग व प्रांत की राजनीति, राजनीतिक स्वार्थ से उत्पन्न, धार्मिक संगठनों से प्रेरित सांप्रदायिकता के तत्वों को अपने उपन्यासों का विषय बनाया है।प्रियवंद कृत श्वे वहां कैद हैश में धार्मिक फासीवादी संगठनों के उन्मादों की सच्चाई है। लेखक की भाषायी संवेदनशीलता ने सांप्रदायिकता को धर्म का चोला पहनकर हिंदुत्व की राजनीति करते नेताओं का भयानक चेहरा प्रस्तुत किया है। चिन्मय और अविनाश की आपसी बातचीत से इस बात की पुष्टि होती है। चिन्मय अविनाश से कहता है–ष्शहर में बहुत तनाव है।सात दिन बाद पूरा शहर बंद होना तय हुआ है। बंद तो होता ही रहता है, इसमें तनाव की क्या बात है? इस बार बंद दूसरी तरह का होगा, हिंदू शक्ति का खुला प्रदर्शन होगा। हिंदू तिलक लगाकर निकलेंगे और उस दिन से रात ठीक नो बजे हर घर में घंटे घड़ियाल और शंख बजेंगे तथा एक साथ जयघोष होगा।ष्7 इसके पीछे लेखक का उद्देश्य भारतीय फासिस्ट राजनीति को पाठकों के समक्ष रखना है। इसके लिए उन्होंने अपनी वैचारिक तटस्थता, ईमानदारी और संवेदनात्मकता का अच्छा परिचय दिया है।

असगर वजाहत कृत सात आसमान की कथा शिया सैयद नवाबों की शानौ– शौकत से आरंभ होकर उनकी धार्मिक विचारधारा में वैमनस्य के इतिहास को बयान करती है और साथ ही अपनी दीवानगी के मद में चूर नवाबों की आलसी और संकीर्ण विचारधारा से उत्पन्न पुरानी और नई पीढ़ी के द्वंद को प्रस्तुत किया है। विभाजन के दंगों के दौरान आग लगाकर लोगों को मौत के घाट उतारने की खबरों का उल्लेख करते हुए लेखन लिखना है–शहर में एक आध जगह दंगे हुए, आग लगाई गई। लोग मरे भी, लेकिन दंगाइयों की यहां आने की हिम्मत नहीं पड़ी।8

उपन्यासकार गीतांजलि श्री कृत श्हमारा शहर उसे बरसश उपन्यास में हिंदू फासीवादी ताकतों की संकीर्ण मानसिकता का अंकन किया है जो अपनी धार्मिक संकीर्णता के कारण हिंदू मुसलमानों को देशो के नाम पर विभाजित करते हैं। लेखिका ने देशव्यापी उन मठो मंदिरों के महंतों एवं मुल्ला मौलवियों के धार्मिक प्रचार से प्रेरित वैमनस्य को उकेरा है जो भारतीय राजनीति एवं राजनेताओं के मेलजोल से समाज में अस्थिरता पैदा करते हैं। यही अस्थिरता दंगों के रूप में मनुष्य की मनुष्यता को अग्नि कुंड में दबाकर दहाकर पाश्विकता का रूप धारण कर लेती है। उपन्यास के एक संदर्भ मेंश्शरदश ।ठल। के छात्रों द्वारा एक पत्र में छापे गए बयान को पढता है तो विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में राजनीतिक घुसपैठ से उत्पन्न सांप्रदायिक तनाव का खुलासा होता है–ष्सांप्रदायिक जहर फैलाने वाले यह है... हम यूनिवर्सिटी में पढ़ने आते हैं। यहां यह राजनीति घुसा रहे हैं। आज तक हम यह जानते थे कि हम हिंदुस्तानी हैं, यह हमें जबरदस्ती सांप्रदायिकता की सीख दे रहे हैं। छात्रों को गुमराह करके उन्हें धर्म का बैरी बना रहे हैं।9 लेखिका एवं उनकी संवेदनशीलता के आगे धर्मांधता एवं धार्मिक कट्टरता परास्त हो जाती है। उपन्यासकार अलका सरावगी कृत श्कलीकथा वाया बाईपासश में एक दो स्थानों में सांप्रदायिक दंगों से प्रभावित हिंदू मुस्लिम जनजीवन का चित्रण देखने को मिलता है। मुख्य रूप से लेखिका का उद्देश्य अति धर्मपरायण मारवाड़ी समाज की रोग ग्रस्त रग को टटोला है। साथ ही दोनों धर्म में उपस्थित संकीर्ण सोच, स्वधर्म की श्रेष्ठता, आकर्मक उन्मादी हमलो, हत्याओं,लूटपाट की मनोवृत्ति की और पाठको का ध्यान आकर्षित किया है। एक संदर्भ दृष्टव्य है–क्या हिंदू क्या मुसलमान सब पर शैतान सवार हो गया है।10

उपन्यासकार रवींद्र वर्मा कृत निन्यानवे उपन्यास में राजनीतिक स्वार्थ में उत्पन्न सांप्रदायिकता पर कई प्रश्न उकेरे गए हैं। उपन्यास का मुख्य पात्र हरिउन फासिस्ट विचारधारा वाले नेताओं का प्रतिनिधित्व करता है जो धर्म का चोला पहनकर स्वयं की राजनीतिक रोटियां संकते हैं। अपना दबदबा बनाए रखने के लिए निरंतर समाज में हिंदू मुस्लिम मतभेदों को बनाए रखने के लिए संप्रदायिक राजनीतिक धार्मिक घटनाओं की पुनरावृति करते रहते हैं। कुछ लोगों को संबोधित करते हुए हरि कहता है कि–यह वही राम मंदिर था जो अभी नहीं था मगर जिसे होना था, जिसे बाबरी मस्जिद की जगह होना था, जहां राम

कौशल्या मां की गोद से पैदा हुए थे।ष्1 लेखक ने 1984 के दंगों में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद जन्मे कांग्रेसियों–सिक्खों के नर–संहार को हिंदू मुस्लिम दंगों का 1990 ईस्वी में कार सेवकों पर गोलाबारी से उत्पन्न देशव्यापी दंगों की राजनीति तथा बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद देश के सांप्रदायिक दंगों का चित्रण किया है। साथी इस्लाम में शिया– सुन्नी संप्रदायों की आपसी टकराव की सच्चाई से पाठकों को अवगत कराया है। भगवान सिंह कृत श्उन्मादश उपन्यास में एक प्रेम कथा से उत्पन्न मतभेदों को केंद्र में रखकर धर्म संप्रदाय और राष्ट्रीयता हिंदू धर्म के गौरवशाली अतीत की गुत्थियां सुलझाती हैं । इसकी कथावस्तु सांप्रदायिकता की सूक्ष्म और जटिल विसंगतियों को परिलक्षित करती है जो महज कुछ धार्मिक और राजनीतिक षड्यंत्रों ने फैलाया है। समाज के उन बड़े विध्वंशो को उद्घाटित करने की चुनौती उपन्यासकार की प्रौढता और संवेदना के तालमेल को बनाए रखने में सफल हुई है। विशेष कर यह उपन्यास नास्तिकता –आस्तिकता और ईश्वर संबंधी वैचारिक तत्वों को बयां करती है–भगवान है अवश्य, वह साकार है जब उसके आकार की बात सोचता हूं तो पता नहीं क्यों लगता है कि वह पिता से मिलता जुलता होगा।12 धर्म गुरुओं की प्रचार नीति स्वधर्म की श्रेष्ठता की ग्रंथि धार्मिक वैमनस्य की जड़े हैं। उपन्यासकार भगवान सिंह ने इस्लाम धर्म की परिवर्तन की नीति का विरोध किया है।कमलेश्वर कृत शकितने पाकिस्तानश उपन्यास में नस्लवाद, प्रांतवाद वर्गवाद,क्षेत्रवाद की विभाजित राजनीति से पीड़ित मानसिकता को श्रृंखलाबद्ध अतीत के सामाजिक सांस्कृतिक विकास के परिपेक्ष्य में प्रस्तुत किया है। एक संदर्भ में–उपन्यासकार ने लिखा है ष्अर्दली अदालत को बता रहा था इनके अलावा भी बहुत से हुजूर... जाहिलों की कमी नहीं है इस मुल्क में। अदालत ने पूछा तो एक मुर्दा करहाता हुआ उठ खड़ा हुआ सरकार यह फसल सन् सैंतालीस में बोई गई, इस फसल को खून से सींचा गया है।13 इसमें राष्ट्रीयता एवं अंतर्राष्ट्रीय विसंगतियों का बौद्धिक विमर्श प्रस्तुत है। लेखक ने अतीत के गर्भ से धार्मिक एवं सांप्रदायिक उन्मादों की बेखौफ पड़ताल की है। इनका वास्तविक मंतव्य प्राचीनकाल से संस्कृतियों ,प्रजातियां, धर्मों , नस्लों प्रथाओं प्रांतों एवं सैद्धांतिक विचारों के नाम पर विश्व की विस्तृत भौगोलिक सिकुड़न को कथा रूप दिया है। लेखक ने आर्यों के भारत आगमन की वास्तविकता से कथा को आरंभ किया, मुगल इतिहास को खंगालती ब्रिटिश साम्राज्यवादी भेद नीति का पर्दाफाश किया है। साथ ही अयोध्या की बाबरी मस्जिद से जुड़े ऐतिहासिक साक्ष्यों एवं तथ्यों से छेड़छाड़ की खाई को उजागर किया है। लेखक का उद्देश्य समय समय पर ब्राह्मणों के द्वैत, कठमुल्लाओं की कट्टरता ने सामान्य जनता की भावनाओं विश्वासों एवं मूल्यों को उग्र बनाकर उनकी अवहेलना करने के सत्य को अपनाया है। साथ ही अंग्रेजी सरकार द्वारा अखंड भारत का खंडन हुए एवं भीषण रक्तपात की नई दृष्टि प्रदान कर एक सफल एवं सांप्रदायिक उपन्यास प्रस्तुत किया है। भीष्म साहनी की सांप्रदायिकता की ओर पैनी दृष्टि गई है। सांप्रदायिक वैमनस्य के प्रति उनकी सोच को श नीलू–नीलिमा नीलोफरश उपन्यास में प्रेमकथा को एक नए तार में पिरोया है। कथा दो प्रेमियों के बीच नीलू नीलिमा नीलोफर विधर्मियों के विवाह से उत्पन्न धार्मिक वैमनस्य, धर्मांधता कट्टरता के कारणों को उजागर करता है जो हिंदू मुसलमानों की मजहबी संकीर्णता का घातक है। धर्म मजहब के नाम पर मानवता की धज्जियां उड़ाता नीलू का भाई हमीद उन सभी धर्मांध व्यक्तियों का प्रतीक है जो अपनी संकीर्ण विचारधारा के कारण संवेदन शून्य हो गए हैं। इनके आगे उदार मानसिकता मानवीय संवेदनाएं मूल्यहीन नजर आती हैं।उपन्यास शवितस्ता कहती हैश में चंद्रकांता ने आजादी के साथ कश्मीर में आतंकवाद के उदय एवं धार्मिक वैचारिक मतभेदों से विकृत होती वहां की संस्कृति का सच्चा आईना प्रस्तुत करती है। उपन्यास की कथा राजनाथ और उसके परिवार के इर्द–गिर्द घूमती कश्मीरी संस्कृति सभ्यता की जड़ों को खोखला करते तत्वों को उजागर करती है। कश्मीरी पंडितों के विरुद्ध इस्लामी जिहादियों की आतंकवादी गतिविधियों, कबाइली हमलो से बिगड़ती कश्मीर की जीवन शैली का पर्दाफाश किया है। लेखिका ने अपने समस्त जीवन के अनुभवो का आंखों देखा हाल बयां किया है।
पद्मा सचदेव के उपन्यासश्जम्मू जो कभी शहर थाश में कश्मीरी सभ्यता संस्कृति के पतनशील वृत्तांत को कथावस्तु के रूप में रखा है।

राम जन्मभूमि एवं बाबरी मस्जिद विध्वंस से जुड़ी घटनाओं एवं सांप्रदायिक दंगों के सच को उजागर करते प्रख्यात उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में आधार बनाया है।

आबिद सुरती कृत बीसवीं सदी का आखिरी दशक मैं मुंबई में शिवसेना के कार्यकर्ताओं द्वारा सांप्रदायिक उन्मादों का आंखों देखा हाल उजागर किया है। मुंबई में बाबरी मस्जिद ढहाने की प्रक्रिया स्वरूप मंदिर पर मुसलमान ने हमला किया तो शिव सैनिक भड़क उठे और एक मस्जिद में आग लगा दी। इस कुकृत्य के बारे में लेखन लिखते हैं कि " मंदिर का बदला बैगनवाड़ी के हिंदुओं ने नूरे इलाही मस्जिद को आग लगा कर लिया।14 साथी बाबरी मस्जिद विध्वंस कालीन मुंबई पुलिस प्रशासन की शिवसेना ने मुसलमानों के घिनौने रूप का पर्दाफाश किया। उपन्यासकार दूधनाथ सिंह कृत श्आखिरी कलामश उपन्यास में लेखक ने कथानायक के रूप में मार्क्सवादी विचारक श प्रो. तत्सत पांडेश को हिंदू फासीवादी का सेवकों से संघर्ष करते हुए दिखाया है।उपन्यास का नायक तत्सत पांडे चिल्लाता हुआ एक संदर्भ में कहता है–ष्सब झूठे मक्कार और सब हिंदू, सब केवल हिंदू ,सब बर्बर , सभी कार सेवक सोए हैं वे भी और जो चींख रहे हैं सारे अखबार और तथाकथित मीडिया और तथाकथित निरपेक्षता के ठेकेदार देश विदेश में एक ही थाली के चट्टे बट्टे हैं–कोई फर्क नहीं है।15 पूरे उपन्यास की कथा कारसेवको एवं लूटपाट, कट्टरता राजनीति एवं धर्म गुरुओं के षडयंत्रों के इर्द–गिर्द

घूमती है। साथ ही बाबरी मस्जिद विध्वंस से दो दिन पूर्व से दो दिन विध्वंश के बाद की तार्किक व वास्तविक कथा प्रस्तुत कर तत्कालीन पुलिस सेना और प्रशासन की असमर्थता से पीड़ित असंतुष्ट अल्पसंख्यकों की निराशा को रेखांकित करती है।

वही मोहम्मद आरिफ कृत उपयात्रा उपन्यास में कारसेवकों अल्पसंख्यकों मुस्लिम समाज के हीनभावना,विद्वेषपूर्ण वैमनस्य का चित्रण किया है। साथ ही मस्जिद विध्वंस में जन्मे असुरक्षा बोध के विश्वसनीय प्रसंग सामने रखे गए। लेखक ने लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाते हुए हिंदू फ़ासिस्टों की कट्टरता एवं मुसलमानों की मानसिक पीड़ा, उथल–पुथल व घबराहट भरी जिजीविषा को विश्वसनीय प्रसंगों के माध्यम से सामने रखा।

निष्कर्षः

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उपन्यासकारों ने सांप्रदायिकता से संबंधित किसी न किसी तत्व को छूने का प्रयास किया है। यह विषय भी गंभीरता एवं परिपक्वता को लिए हुए हैं। सभी समकालीन उपन्यासकारों ने सांप्रदायिक दंगों उन्मादों के पीछे की धार्मिक व राजनीतिक कारणों की तलाश की है। साथ ही हिंदू –मुस्लिम धर्मों की संकीर्ण विचारधारा, कट्टरता के मनोवैज्ञानिक तत्वों को पुष्ट किया है। देश में उभरती फासिस्ट ताकतों को पाशविक करार दिया है। गिरते हुए पतनशील सांस्कृतिक मूल्यों को सांप्रदायिक वैमनस्य से जोड़ा है। धर्मगुरुओं, मुल्ला मौलवियों के भ्रष्ट व्यक्तित्व से मानवता विहीन ताकतों के उदय की सच्चाई बताई है। सभी उपन्यासकारों ने उन्मादों , आतंकवादी हमलो,सांप्रदायिक दंगों से पीड़ित भारतीय जनता की संवेदनाओं को बखूबी प्रस्तुत कर अपने औपन्यासिक दायित्व का निर्वाह किया है।

संदर्भ –

1. फादर कामिल बुल्के – अंग्रेजी हिंदी कोश, पृष्ठ संख्या – 134
2. डॉ बेचन – समकालीन साहित्य की समीक्षा, पृष्ठ संख्या – 26
3. सुनील गंगोपाध्याय – सरहद के उस पार – पृष्ठ संख्या – 314. 4. द्रोणवीर कोहली – वाह कैम्प, पृष्ठ संख्या – 174
5. प्रताप सहगल – अनहदनाद, पृष्ठ संख्या – 08
6. नासिरा शर्मा – जिंदा मुहावरे, पृष्ठ संख्या – 32
7. प्रियवंद – वे वहां कैद है, पृष्ठ संख्या – 23
8. असगर वजाहत – सात आसमान, पृष्ठ संख्या – 155
9. गीतांजलि श्री – हमारा शहर उस बरस, पृष्ठ संख्या – 268
10.अलका सरावगी – कलिकथारू वाया बायपास, पृष्ठ संख्या –170
11. रवींद्र वर्मा – निन्यानवे, पृष्ठ संख्या –179
12. भगवान सिंह – उन्माद, पृष्ठ संख्या – 90
13. कमलेश्वर – कितने पाकिस्तान, पृष्ठ संख्या – 64–65
14. आबिद सुरती – बीसवीं सदी का आखिरी दशक, पृष्ठ संख्या – 12
15. दूधनाथ सिंह – आखिरी कलाम, पृष्ठ संख्या – 150

प्रोफ़ेसर
डॉ0 पुष्पा रानी
हिन्दी – विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

16

संस्मरणकार महादेवी सुभद्रा के साथ

डॉ0 दीनदयाल

सारांश

आधुनिक युग की मीरा अर्थात पीड़ा की गायिका नाम से प्रसिद्ध महादेवी हिन्दी काव्य साहित्य की साधिका थींद्य हिन्दी साहित्य के लिए उनका योगदान अपूर्व हैद्य महादेवी का काव्य ही नहीं उनका गद्य भी सशक्त, और प्रभावी हैद्य रेखाचित्र और संस्मरण के लिए वे विशेष रूप से जानी जाती हैं।

संस्मरण एक अंतर्विरोधी प्रकृति वाला गद्य साहित्य हैद्य उसके लिखने में परिचय का विस्तार बहिर्मुखता की माँग करता है, जबकि उसका कलात्मक पक्ष हार्दिकता एवं अंतर्मुखता की अपेक्षा करता हैद्य एक सीमा तक इन दोनों को साध पाना संभव है, लेकिन एक अच्छा एवं उल्लेखनीय संस्मरण किसी भी भाषा में बहुत अधिक नहीं मिलताद्य लेखक की स्वभावगत संकोची प्रवृत्ति संस्मरण–लेखन विरोधी हैंद्य अंतरंगता संस्मरण की शिराओं में प्रवाहित रक्त की भांति हैद्य संस्मरण के सबसे बड़े शत्रु औपचारिकता एवं अविश्वसनीयता हैद्य यही कारण है कि संस्मरण परिचय की माँग करता रहा। महादेवी वर्मा के अनुसार "संस्मरण हमारी स्थायी स्मृति से सम्बन्ध रखने के कारण संस्मरण के पात्र से हमारे घनिष्ठ परिचय की अपेक्षा रखता है, जिसमें हमारी अनुभूति के क्षणों का योगदान भी रहा है।"

जिस व्यक्ति के संबंध में संस्मरण लिखे जाते थे, उसकी रचना–दृष्टि, सामाजिक दायित्व, विभिन्न मुद्दों पर प्रकट विचार पूरी विश्वसनीयता और प्रामाणिकता के साथ उनमें उपस्थित होने चाहिएद्य अपनी प्रकृति में संस्मरण आगे–पीछे दोनों ओर लगे शीशे की भांति होता है जिसमें देखने वाले के साथ दिखाने वाला भी कहीं न कहीं प्रतिबिंबित हो ही जाता हैद्य अतः संस्मरण मात्र उसे ही आलोकित नहीं करता जिसपर वह लिखा गया, अपितु एक सीमा तक वह अपने लेखक का परिचय भी देने में सक्षम होता है।

डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत के अनुसार, ष्भावुक कलाकार जब अतीत की अनन्त स्मृतियों में से कुछ स्मरणीय अनुभूतियों की अपनी कोमल कल्पना से अनुरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं से वेष्ठित कर रोचक ढंग से यथार्थ में व्यक्त कर देता है, तब उसे संस्मरण कहते हैं। वस्तुतः अच्छा और प्रामाणिक संस्मरण वही होता है जिसमें लेखक अपने को पृष्ठभूमि में रखकर अपने विषय के विभिन्न पक्षों को आदर सहित आत्मीयता एवं विनम्रता के साथ धैर्यपूर्वक स्पष्ट करता चलता है। एक अच्छा संस्मरण अपने विषय में विनम्रता और वस्तुपरकता को समाहित रखता है।

सामान्यतः संस्मरण बहुत कुछ लेखक पर पड़े उस व्यक्ति के निजी प्रभाव का फल होताहैद्य किन्तु इस प्रभाव का आकलन संबद्धित व्यक्ति की संपूर्णता में अधिक विश्वसनीय एवंग्राह्य होता हैद्य संस्मरण लेखक का यह कार्य उसे एक जीवनीकार के निकट पहुँचाता हैद्य मूलतः रेखाचित्र व्यक्ति के बाह्य रूप का चित्र है जिसके द्वारा उसके व्यक्तित्व को जाना जा सकता हैद्य उसकी शारीरिक बनावट,व्यक्तित्व को प्रखर करने वाले कारक, उसका रहन–सहन और बातचीत के साथ उसके क्रियाकलापों का चित्रण, ऐसा रेखाचित्र प्रस्तुत करते हैं जो उसके सीधे–सादे व्यक्तित्व को एक स्थायी बनाता है। सामान्यतः जिस व्यक्ति से अपने संपर्क का चित्र जब कोई संस्मरण लेखक देता है तो वह यह स्पष्ट करता चलता है कि उससे भेंट के समय वह व्यक्ति क्या पहने था, कैसे, किस परिवेश में यह भेंट हुई थी एवं तब होने वाली बातचीत के बीच वह कैसा व्यवहार करता हैद्य यह संबंधित व्यक्ति का रेखाचित्र उसकी विशेष पहचान बनाकर पाठक और लेखक के बीच विश्वास तथा संवाद की स्थिति को वास्ताविक बनाती है।

प्रायः संस्मरण में दो व्यक्तियों के बीच होने वाले संवाद और विभिन्न मुद्दों पर होने वाली बातचीत की विशेष भूमिका होती हैद्य यही संवादात्मकता संस्मरण को साक्षात्कार के निकट ले जाती हैद्य संस्मरण की अपेक्षा साक्षात्कार अधिक औपचारिक विधा है, जिसमें परिचय का सघन वृत्त उतना आवश्यक नहीं; जितना संस्मरण में होता है। इसके पश्चात् भी संस्मरण में से साक्षात्कार के तत्त्वों को निष्कासित करना मुश्किल होता है। जिस व्यक्ति के संबंध में संस्मरण लिखा जाता है, उस संस्मरण का लेखक से पूर्व और दीर्घ परिचय संभव है। यह सारे उपकरण उस केंद्रीय व्यक्ति को अपेक्षाकृत अधिक पूर्ण एवं विश्वसनीय बनाकर हमारे सामने प्रकट करने में सहायक होते हैं।

सुभद्राकुमारी चौहान की रचनाओं में देशभक्ति और राष्ट्रीयता का स्वर व्याप्त हैद्य उनके काव्य की ओजपूर्ण बोली ने भारतीयों में नवचेतना का संचार कियाद्य उनकी अकेली कविता 'झाँसी की रानी' ने उन्हें अमर कर दियाद्य उनकी कविता 'वीरों का कैसा हो वसन्त' भी राष्ट्रीय भावनाओं को जगाने वाली ओजपूर्ण कविता है। उन्होंने राष्ट्रीयता के अतिरिक्त वात्सल्य भाव से परिपूर्ण कविताएँ लिखीं।

सुभद्रा महादेवी वर्मा द्वारा रचित संस्मरण है। जिसे 'पथ के साथी' में संकलित किया गया है। इसमें उन्होंने अपनी बचपन की सखी सुभद्राकुमारी चौहान से जुड़ी स्मृतियों का उल्लेख किया है। इस

संस्मरण में उन्होंने सुभद्रा के सभी गुणों और प्रतिभा को बड़ी स्पष्टता से व्यक्त किया हैद्य सामान्यतः बचपन से वर्तमान के बीच जैसे–जैसे दूरी अथवा समय बढ़ता है, वैसे–वैसे मनुष्य की स्मृतियाँ धुंधली होती जाती हैं। हमारे स्मृतिपटल पर मात्र उन्हीं लोगों के स्मृति चिह्न स्पष्ट रह जाते हैं, जिनसे हमारा आत्मीय संबंध होद्य महादेवी के ऐसे अविस्मरणीय चित्रों में सबसे पहला स्थान सुभद्राकुमारी चौहान का था। इतने वर्षों पश्चात् भी उनसे जुड़ी हर याद लेखिका के स्मृतिपटल में ज्यों की त्यों थी।

महादेवी वर्मा और सुभद्राकुमारी चौहान की भेंट स्कूल के हॉस्टल में हुई थी। उस समय सुभद्रा कक्षा सात में और महादेवी कक्षा पाँच में पढ़ती थी। उस समय महादेवी को कविता लिखने का शौक था। यही शौक उन दोनों की मित्रता का कारण बनाद्य सुभद्रा का शब्दचित्र बनाना इतना आसान नहीं था क्योंकि उनकी भावनाओं ने उन्हें असाधारण बना दिया था। उनके गुणों को एक–एक करके देखने पर भी उनमें कुछ विशेष नहीं दिखता है, किन्तु महादेवी ने उनके गुणों को दृष्टि से अधिक हृदय से ग्रहण किया इसलिए वे इस संस्मरण की रचना कर सकीं।

महादेवी वर्मा लिखती हैं कि "सुभद्रा जब कक्षा आठ में पढ़ती थी, तब उनका विवाह स्वतन्त्रता सेनानी लक्ष्मणसिंह से हो गया था। प्रायः सुभद्रा में हीन भावना नहीं थी। वह कविता लिखने के साथ गोबर के कंडे पाथती, घर के सभी काम निपटाती थीं।" महादेवी और सुभद्रा दोनों सखियां अक्सर गोबर एक साथ लीपती थी। सुभद्रा ने अपने आँगन में अनेक प्रकार के पौधे लगाए थे। उन्होंने ऐसे संघर्षों से अपना मार्ग प्रशस्त करते हुए कामयाबी के चरम को छुआ, लेकिन इन भावनाओं से उन्हें सख्त और कठोर नहीं बनाया।

महादेवी वर्मा ने सुभद्रा के व्यक्तित्व को बहुत ही करीब से देखा था इसलिए वे कहती हैं कि "आमतौर पर स्त्री अपने भीतर के वीरत्व और रौद्र रूप को मात्र अपने अस्तित्व निर्माण की बाधाओं को दूर करने या अपनी कल्याणकारी सृष्टि की रक्षा हेतु धारण करती हैद्य सुभद्रा का जीवन किसी क्षणिक उत्तेजना से प्रेरित होकर आगे नहीं बढ़ा,बल्कि उनके स्वभाव गुणों और विस्तृत सोच से प्रेरित होकर आगे बढ़ा हैद्य साथ ही उनकी कविताएँ कभी एक लीक पर न चलकर उनके हृदय से उपजे भावों और तत्कालीन परिस्थितियों का परिणाम थीं। वह थककर बैठने वालों में से नहीं थींद्य वह उस मधुमक्खी के समान थी,जो हर प्रकार के फूलों से समान रूप से रस इकट्ठा करके शहद तैयार बनाती है। ठीक उसी प्रकार उनके सभी कोमल–कठिन, सहनीय और असहनीय अनुभवों का परिणाम सभी हेतु समान है। तब स्त्री के अस्तित्व को पति से स्वतंत्र नहीं माना जाता था बल्कि स्त्री को पुरुष की परछाई कहा जाता था। ऐसे समय में उनकी मान्यता थी कि आत्मा स्वतंत्र है, उसका व्यक्तित्व अलग है, चाहे वह पुरुष के शरीर में हो या स्त्री के शरीर म।"

सुभद्रा व्यक्ति को बाँधने वाले हर बंधन को देश एवं समयानुसार बदलने हेतु तैयार रहती थी। उनकी सोच थी कि यदि इन बंधनों को बदला न जाए तो वह व्यक्ति के विकास में बाधा पहुँचाते हैं। अपनी पुत्री के विवाह के समय उन्होंने कन्यादान करने की प्रथा का पुरज़ोर विरोध कियाद्य स्वतंत्रता के पश्चात् उन्होंने अभाव और पीड़ा के विरुद्ध अपने संघर्षों को जारी रखा था।

जब कभी लेखिका और सुभद्रा साथ होती, हँसी का माहौल बना जाता है। दोनों सम्मेलनों में साथ में भाग लेती थी, किन्तु जब महादेवी ने कवि सम्मेलन में जाने से मना किया तो उन्होंने कभी भी लेखिका को इसके लिए विवश नहीं किया था। उस समय में आज की भांति साहित्य जगत् में व्यक्तिगत स्पर्धा और ईर्ष्या–द्वेष का भाव नहीं था। वह अन्य साहित्यकारों के गुणों के मूल्यांकन के प्रति सदैव उदार रहती। स्वयं को श्रेष्ठ दिखाने के लिए उन्होंने कभी भी किसी को नीचा नहीं दिखाया।

सुभद्रा के सरल स्वभाव ने लेखिका के हृदय में ऐसी अमिट रेखा खींची जिसे कभी मिटाया नहीं जा सका। लेखिका बचपन से ही गंभीर रहीं, किन्तु सुभद्रा पर उनकी इस गंभीरता का कभी कोई प्रभाव नहीं पड़ाद्य वह सदैव लेखिका के साथ मुक्त भाव से रहती हैंद्य सुभद्रा जब भी प्रयाग आती तो लेखिका के लिए कोई न कोई उपहार अवश्य लाती थी। जब कभी वह प्रयाग नहीं उतर पाती थी तो वह लेखिका को मिलने के लिए स्टेशन बुला लेती थीं।

सुभद्रा के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए महादेवी वर्मा ने लिखा कि "अपने निश्चित लक्ष्य पथ पर अडिग रहना और सब कुछ हँसते–हँसते सहना उनका स्वभाविक गुण था।" आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद उनके चरित्र के इस पक्ष ने उन्हें और आधिक महान बना दिया। उनके व्यक्तित्व में राजनीतिक जागरुकता ही नहीं अपितु सामाजिक जागरुकता भी थीद्य उन्होंने कविता लिखकर जिस विद्रोही स्वभाव का परिचय बचपन में दिया है, वह जीवन पर्यंत बना रहाद्य अपने बच्चों पर किसी तरह का अंकुश लगाने की बजाए उन्होंने उन्हें स्वाभाविक रूप से आगे बढ़ने का अवसर दियाद्य इसी तरह अपनी बेटी का अंतर्जातीय विवाह कर उन्होंने सामाजिक रूढियों को तोड़ने में जो साहस का परिचय दिया, वह इस बात को और अधिक मुखर कर देता हैद्य उन्होंने कन्यादान प्रथा का विरोध करते हुए कहा कि स्त्री कोई निर्जीव वस्तु नहीं है जिसका दान किया जाए।

महादेवी वर्मा कहती हैं कि "अपने पारिवारिक जीवन में ही नहीं सामाजिक–राजनीतिक जीवन में भी उन्होंने अपने प्रगतिशील साहसी व्यक्तित्व का परिचय दिया......हरिजन महिलाओं के अधिकारों के

लिए उन्होंने जो संघर्ष किया वह इस बात का जीवंत प्रमाण है।"

वस्तुतः अपने जीवन में सुभद्रा ने जो कुछ किया, उसे महादेवी ने अपने इस संस्मरण में उनकी सुविचारित दृष्टि से कहा है। सुभद्रा का यह कथन इस बात का द्योतक है कि समाज और परिवार व्यक्ति को बंधन में बांधकर रखते हैं। ये बंधन देशकालानुसार बदलते रहे और उन्हें बदलते रहना चाहिए वरना वे व्यक्तित्व के विकास में सहायता करने केबदले बाधा पहुँचाने लगते हैंद्य बंधन कितने ही अच्छे उद्देश्य से क्यों न नियत किये गये।हों, हैं बंधन ही, और जहाँ बंधन है वहाँ असंतोष तथा क्रांति है।

संस्मरण के अंत में महादेवी वर्मा लिखती हैं कि "वसंत पंचमी के दिन सुभद्रा ने इस संसार से विदा ले लीद्य उनकी इच्छा थी कि मृत्य के पश्चात् वह इस धरती पर समाधि के रूप में रहें। ताकि उनकी समाधि पर मेला लगे। मृत्यु के पश्चात् भी उनके शिथिल मुख पर वही मधुर मुस्कान थी, जो जीवित रहते समय थी।"

सही मायने में महादेवी कवयित्री ही नहीं, चित्रकार भी थींद्य सुभद्रा कुमारी चौहान संबंधी अपने संस्मरण का प्रारंभ उन्होंने चित्रों और चित्रशाला वाले रूपक की भाषा से किया था। किसी भी रचना में भाषा अभिव्यक्ति का मुख्य साधन हैद्य रचना में भाषा की वही भूमिका होती है जो मनुष्य के शरीर में प्रवाहित रक्त की भांति हैद्य भाषा से लेखक अपनी अभिव्यक्ति को सटीक और प्रभावशाली बनाता है। महादेवी के विवेचनात्मक गद्य का एक प्रतिनिधि संकलन वर्षों पहले गंगाप्रसाद पाण्डेय के संपादन में प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार उन्होंने रेखाचित्रों और संस्मरणों में गद्य के विभिन्न रूपों का प्रयोग किया। उनके गद्य की भाषा संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों से परिपूर्ण होने के बावजूद क्लिष्ट और दुर्बोध नहीं थीद्य उपमाओं और रूपकों के प्रयोग से बनी यह भाषा उनके मन्तव्य को संप्रेषित करने में सहायक थी। उनकी गद्य भाषा का एक प्रतिनिधि उदाहरण है – "शैशव की चित्रशाला के जिन चित्रों से हमारा रागात्मक संबंध गहरा होता है, उनकी रेखाएँ और रंग इतने स्पष्ट और चटकीले होते चलते हैं कि हम वार्धक्य की धुंधली आँखों से भी उन्हें प्रत्यक्ष देख सकते हैं।"

बोलचाल के सामान्य शब्दों के बजाय संस्कृत मूल के तत्सम शब्दों के प्रयोग के प्रति उनकी विशेष रुचि है। चित्रकार होने के कारण उनकी भाषा में चित्र कर्म के उपकरणों का उपयोग बहुत हुआद्य उनके गद्य में एक प्रीतिकर चित्रमयता के दर्शन होते थे, जिसे छायावादी काव्य के एक आधारभूत वैशिष्ट्य के रूप में रेखांकित किया गया थाद्य महादेवी वर्मा सुभद्राके व्यक्तित्व का रेखांकन अपनी इस प्रिय चित्र पद्धति से करती हैं, "मझोले कद तथा उस समय की कृश देहयष्टि में ऐसा कुछ उग्र या रौद्र नहीं था जिसकी हम वीर गीतों की कवयित्री में कल्पना करते हैं।" महादेवी की यह भाषा संस्कृत और मध्यकालीन हिन्दी काव्य की अंतर्प्रवृत्ति की गूँजपूर्ण भाषा है।

वस्तुतः इस संक्षिप्त संस्मरण में महादेवी सुभद्रा को उनके संपूर्ण जीवन–फलक पर फैलाकर देखती हैं और उनके विभिन्न पक्षों को उद्घाटित करके चलती हैं। दूसरी रचनाओं की भांति संस्मरण में संबंधित व्यक्ति के चारित्रिक वैशिष्ट्य को उभारना लेखक का मुख्य ध्येय रहा हैद्य महादेवी ने सुभद्रा का गृहिणी रूप, महिमामयी माँ, आदर्श पत्नी के साथ आर्थिक अभावों के बीच उनके मस्त और आनंदी स्वभाव के स्रोतों का उद्घाटन बड़े कलात्मक ढंग से कियाद्य इसी तरह वह उनके चरित्र के विद्रोही और प्रगतिशील पक्ष पर सटीक टिप्पणी करती हैं अपने निजी प्रसंगों में वह सुभद्रा की ममता और अन्तरंगता के अनेक उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। उनके द्वारा लाई ढेरों सौगातें और छोटी बहन जैसा प्यार महादेवी गहरी कृतज्ञता के साथ याद करती थीं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि इस संस्मरण में महादेवी ने सुभद्रा के अहेतुक स्नेह को गहरी आत्मीयता के साथ याद कियाद्य यद्यपि उपभोक्ता संस्कृति की आँधी में जीवन का अर्थ बहुत कुछ बदल चुका है। बिना कारण के ऐसी कृतज्ञता के साथ एक अवसाद का बोध जगाता है। संस्मरण में स्मृति की विशेष भूमिका होती हैद्य इन स्मृति–खंडों को सजीव और विश्वसनीय रूप में प्रस्तुत करने वाली भाषा महादेवी के पास थी। जीवनी की भांति संस्मरण में अपने चरित्र नायक पर पड़नेवाले युगीन प्रभावों और परिवेश के बीच उसके विकास को अंकित करने की सुविधा नहीं होतीद्य यहाँ छोटे–छोटे प्रसंगों के बीच उसके चरित्र की रेखाओं को उजागर किया है। इस प्रक्रिया में अंतरंगता का चमत्कारी प्रभाव होता हैद्य इस अंतरंगता के अभाव में किसी अच्छी संस्मरण की कल्पना करना कठिन है। पथके साथी में संकलित अन्य संस्मरण की भांति सुभद्राकुमारी चौहान संबंधी अपने संस्मरण में महादेवी संक्षिप्त और सघनता के संतुलन को साध पाने में सफल रहीं।

संदर्भः

1. संस्मरण, महादेवी वर्मा, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 2004, पृष्ठ 4
2. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत, डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत, भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली, 1956, पृष्ठ 18
3. पथ के साथी, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1982, पृष्ठ 36
4. वही, पृष्ठ 36
5. वही, पृष्ठ 37
6. वही, पृष्ठ 37
7. वही, पृष्ठ 38
8. वही, पृष्ठ 38
9. वही, पृष्ठ 38
10. वही, पृष्ठ 39

डॉ0 दीनदयाल
सहायक आचार्य
हिंदी विभाग
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

भारतीय कृषि : विकास प्रवृत्तियां, धीमी वृद्धि के कारण और भविष्य की चुनौतियाँ

17

डॉ० भूपेंद्र

सारांश

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत की लगभग 46 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर है और हमारे देश की राष्ट्रीय आय में कृषि का लगभग 16 प्रतिशत योगदान है। भारतीय उद्योग भी कृषि पर निर्भर है। कृषि से ही इनकों कच्चे माल की प्राप्ति होती है। हमारे देश की आर्थिक नियोजन की सफलता भी कृषि क्षेत्र की प्रगति पर निर्भर करती है। अधिकतर खाने–पीने की वस्तुएं, जिनको हम भोजन के रूप में प्रयोग करते हैं, वे कृषि से ही प्राप्त होती है जैसे गेहूं, चावल, दालें, बाजरा, मक्का इत्यादि। तेजी से बढ़ती जनसंख्या के भरण–पोषण के लिए कृषि क्षेत्र की उत्पादकता का बढ़ते रहना अनिवार्य है। आज हमारे देश की जनसंख्या जिस गति से बढी है उस गति से खाद्य–पदार्थों के उत्पाद न में वृद्धि नहीं हुई। भारत के विदेशी व्यापार में भी कृषि क्षेत्र की अहम भूमिका है। कृषि संबंधी वस्तुओं में जैसे चाय, कॉफी, तंबाकू, पटसन इत्यादि का निर्यात करके हम अपने व्यापार शेष को संतुलित करते हैं। कृषि क्षेत्र से हमें छोटी–छोटी बचते प्राप्त होती है जिनका हम बड़े स्तर पर कृषि क्षेत्र में पूंजी निर्माण करते है जैसे सिंचाई के साधन, पशुपालन, कृषि संबंधी उपकरण, ट्रैक्टर इत्यादि।

सूचक शब्द : प्रमुख सूचक शब्द है– कृषि, खाद्य–फसलें, उत्पादन, उत्पादकता, विकास प्रवृत्तियां, पिछड़ापन, चुनौतियां।

भूमिका

भारतीय कृषि का अंतरराष्ट्रीय महत्व भी देखने को मिलता है। भारत के कुछ कृषि उत्पादकों का अंतरराष्ट्रीय महत्व भी है। भारत पटसन, दालें, गन्ना, चावल, गेहूं, फल, सब्जियां, चाय, तंबाकू इत्यादि के उत्पादन में विश्व के अन्य देशों से अग्रणीय है। इनका बड़े स्तर पर हम निर्यात करके विदेशी मुद्रा की भी प्राप्ति करते हैं। यदि कृषि का विकास निरंतर होता है तो हमारे निर्यातों पर निर्भरता घटती जाएगी। भारतीय कृषि का अंतरराष्ट्रीय महत्व ही नहीं है बल्कि आंतरिक व्यापार में भी कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका है। अनाज, फल, सब्जियां, दूध इत्यादि के व्यापार में बहुत सारे लोगों को रोजगार मिला हुआ है। कृषि से सरकार को टैक्स के रूप में आय की प्राप्ति भी होती है। हमारे यातायात के साधन जैसे ट्रक, रेलवे इत्यादि कृषि पदार्थों को एक राज्य से दूसरे राज्य तक पहुंचते हैं और इससे आय की प्राप्ति करते हैं।

यदि कृषि का तीव्र गति से विकास होता है तो इसका सामाजिक और राजनीतिक महत्व भी देखने को मिलता है भारत एक ग्रामीण पृष्ठभूमि का देश है। यदि कृषि का विकास होता है तो इसका ग्रामीणों के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में भी सुधार देखने को मिलता है। देश के लगभग 75 प्रतिशत मतदाता ग्रामीण क्षेत्र में निवास करते हैं इसलिए अधिकतर राजनीतिक पार्टियों के लोग भी ग्रामीण क्षेत्र में कृषि विकास के माध्यम से अपनी राजनीति में सुधार पर ध्यान देते हैं। इस प्रकार आर्थिक विकास की दर को तीव्र करने में कृषि के विकास की अहम भूमिका है। देश की विकासात्मक नियोजन की सफलता भी कृषि के विकास पर निर्भर करता है। भारत जैसे अल्पविकसित देश के लिए कृषि के बढ़ते महत्व के कारण ही वर्तमान शोध–आलेख कृषि की घटती उत्पादकता और इसकी भविष्य की चुनौतियों पर प्रकाश डालता है।

साहित्य समीक्षा

पांडेय तथा गुगलानी (1972), अपना अध्ययन बिहार के चोतनगुर के पहाड़ी क्षेत्र में जनजातीय समुदायों द्वारा की गई कृषि में रोजगार, आय और उत्पादन बढ़ाने की संभावना का विश्लेषण किया।

सिंह और भाटिया (1988), हिमाचल प्रदेश में पहाड़ी क्षेत्रों में की गई कृषि में सब्जियों का आय और रोजगार बढ़ाने में भूमिका का अध्ययन किया। यह निष्कर्ष निकाला कि अनाज की फसलों की तुलना में सब्जियां उगाने पर आय और रोजगार की संभावना ज्यादा पाई गई।

सिंह और सिंह (1991), हरियाणा का एक अध्ययन, 1966–67, 1988– 89 के मध्य किया गया जिसमें बदलते फसल स्वरूप और उत्पादन का विश्लेषण किया गया।

गुप्ता और सिंह (1996), हरियाणा के उदय, 1966 से प्रमुख फसलों के स्वरूप और उत्पादन में हुए परिवर्तन का विश्लेषण किया। अध्ययन में पाया कि उच्च मूल्य फसलों जैसे सरसों, धान, कपास इत्यादि ने कम आय वाली फसलें जैसे बाजरा,ज्वार इत्यादि का स्थान ले लिया।

शर्मा, एस०पी० (1999–2000), भूटान में अपने एक अध्ययन से पाया कि परंपरागत फसलों से आय और उत्पादकता दोनों में कमी आई है। यह देश बागवानी फसलों के उत्पादन को बढ़ाने की तरफ प्रयासरत है।

बिरथल, पी०एस० (2006), एक अध्ययन में पाया की तीव्र आर्थिक विकास और शहरीकरण के कारण उच्च मूल्य वाली खाद्य वस्तुएं जैसे फल, सब्जियां, दूध, अंडा इत्यादि की मांग बड़ी है। ये फसले मुख्यतः ज्यादा वर्षा, छोटे आकार के खेत और ज्यादा श्रम वाले क्षेत्रों में विख्यात है।

अध्ययन के उद्देश्य

भारतीय कृषि के विकास का अध्ययन करने के लिए वर्तमान शोध–आलेख के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित होंगे–

1. योजना–अवधि में खाद्य–फसलों की उत्पादन की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना।
2. वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन की प्रवृत्ति का मूल्यांकन करना।
3. प्रमुख फसलों की प्रति हैक्टेयर उत्पादकता का विश्लेषण करना।

शोध–प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र मात्रात्मक एवं गुणात्मक विधि तंत्र के फ्रेमवर्क में किया गया वर्णन और विश्लेषण है। शोध पत्र मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। द्वितीय स्रोतों में मुख्य रूप से कृषि जनगणना आंकड़े, आर्थिक सर्वेक्षण इत्यादि से प्राप्त सूचनाओं का प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त विषय से संबंधित शोध–पत्र, किताबों, समाचार–पत्रों एवं विभिन्न शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों, वेबसाइटों आदि का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण तथा परिणाम

खाद्य–फसलों के उत्पादन की प्रवृत्तियां

भारत में योजना अवधि के दौरान खाद्य–फसलों के उत्पादन की प्रवृत्ति में लगातार परिवर्तन देखने को मिले है। प्रमुख फसलें जैसे चावल, गेहूं, दालें, तिलहन, इत्यादि के उत्पादन में तेजी से परिवर्तन हुआ है। इन खाद्य– फसलों का हमारे देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यदि इनका उत्पादन देश में पर्याप्त मात्रा में होता है तो देश खाद्यानों के उत्पादन में आत्मनिर्भर होगा। इससे देश के गरीब लोगों को भी लाभ होगा। आज खाद्यानों के अभाव में गरीब लोग भुखमरी के कारण मर रहे है। यदि हम खाद्यानों के उत्पादन में आत्मनिर्भर होंगे तो देश में कीमतों में भी स्थिरता देखने को मिलेगी। यदि लोगों को पर्याप्त मात्रा में भोजन खाने को मिलता है तो उनके जीवन में भी सुधार देखने को मिलता है। इससे किसानों की भी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद खाद्य–फसलों के उत्पादन की प्रवृत्ति में काफी परिवर्तन देखने को मिला है। यह नीचे दी गई तालिका में दिखाया गया है–

तालिका संख्या– 01 में दिखाए गए आंकड़ों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त होता हैं कि विभिन्न खाद्य–फसलों के उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई है। तालिका में विभिन्न फसलों जैसे चावल, गेहूं, बाजरा, मक्का, ज्वार, दालें इत्यादि के उत्पादन को लाख तन में दिखाया गया है। तालिका में प्रथम योजना 1951– 56 से लेकरके 2021–22 तक के उत्पादन की प्रवृत्तियों को दिखाया गया है। पिछले 70 सालों में कुल खाद्यान्नों का उत्पादन जोकि प्रथम योजना में, 1951–56 में 632 लाख टन था वह 2021–22 में बढ़कर के 3157 लाख टन हो गया अर्थात अनाज के उत्पादन में लगभग 5 गुना वृद्धि देखने को मिली। दालों का उत्पादन जो प्रथम योजना, 1951–56 में 101 लाख टन था वह 2021–22 में बढ़कर के 277 लाख टन तक पहुंच गया अर्थात दालों का उत्पादन तीन गुना बढ़ गया। इसी प्रकार चावल के उत्पादन में भी वृद्धि देखने को मिली है। चावल का उत्पादन 1951–56 में 250 लाख टन से बढ़कर के 2021–22 में 1303 लाख टन पहुंच गया अर्थात चावल के उत्पादन में भी लगभग 5.5 गुना वृद्धि देखने को मिली है। गेहूं का उत्पादन 1951–56 में 79 लाख टन था वह 2021–22 में बढ़कर के 1068 लाख टन पहुंच गया। तालिका से स्पष्ट होता है कि गेहूं के उत्पादन में भी तेजी से वृद्धि देखने को मिली है। गेहूं के उत्पादन में लगभग 14 गुना वृद्धि हुई है। बाजरा, मक्का और ज्वार का उत्पादन प्रथम योजना, 1951– 56 में क्रमशः 34 लाख टन, 27 लाख टन और 75 लाख टन था जो 2021–22 में बढ़कर के क्रमशः 96 लाख टन, 336 लाख टन और 42 लाख टन पहुंच गया। गेहूं और बाजार के उत्पादन में वृद्धि देखने को मिली जबकि ज्वार के उत्पादन में कमी हुई। अन्य खाद्यान्नों के उत्पादन में कमी देखने को मिली। मुख्य फसलें जैसे चावल, गेहूं, बाजरा, मक्का और दालें जिनमें तेज गति से वृद्धि देखने को मिली। इनकी वृद्धि मुख्यतः 1967– 68 में घटित हरित क्रांति के प्रभाव के बाद देखने को मिली है।

कृषि उत्पादन की औसत वृद्धि दर

तालिका संख्या–01 में कृषि उत्पादन की औसत वार्षिक वृद्धि दर को भी दिखाया गया है। प्रथम योजना, 1955–56 में यह 5.2 प्रतिशत थी। 1965–66 में वार्षिक वृद्धि दर– 2 प्रतिशत रही। तीसरी वार्षिक योजना (1966–69) में वार्षिक वृद्धि दर 9.4 प्रतिशत रही। जबकि दसवीं योजना, 2006–7 में वार्षिक वृद्धि दर कम होकर के 2.5 प्रतिशत रही। 11वीं और 12वीं योजना में वार्षिक वृद्धि दर बढ़कर के 6.5 प्रतिशत तथा 9.3 प्रतिशत रही। 2021–22 में कृषि उत्पादन की वार्षिक वृद्धि दर 1ण्9 प्रतिशत रही।**तालिका 1 : खाद्यानों के उत्पादन की प्रवृत्तियां**

पिछले वर्ष की योजना	योजनावधि	चावल	गेहूं	बाजरा	मक्का	ज्वार	अन्य अनाज	दालें	कुल खाद्यानों का उत्पादन	औसत वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत)
प्रथम योजना	1951–56	250	79	34	27	75	66	101	632	5.2
द्वितीय योजना	1956–61	303	97	34	36	87	65	117	740	3.9
तृतीय योजना	1961–66	351	111	39	46	88	63	111	810	–2.0
चतुर्थ योजना	1969–74	418	254	60	61	83	64	109	1030	2.8
पंचम योजना	1974–79	473	298	50	63	108	71	117	1181	5.4
सप्तम योजना	1985–90	651	483	52	76	109	54	125	1550	3.5
अष्टम योजना	1992–97	787	629	67	98	107	49	133	1890	3.4
नवम योजना	1997–2002	873	713	71	116	79	45	131	2029	2.1
दशम योजना	2002–07	856	702	82	140	72	36	133	2022	2.5
ग्यारह योजना	2007–12	973	844	92	198	70	40	159	2374	6.5
बारह योजना	2012–17	1064	933	90	239	50	38	188	2603	9.3
	2018–19	1165	1036	83	277	35	31	221	2852	2.1
	2019–20	1189	1079	104	288	48	37	230	2975	4.3
	2020–21	1244	1096	109	316	48	39	255	3107	4.4
	2021–22	1303	1068	96	336	42	35	277	3157	1ण्9

Source : Economic Survey, 2002-03, 2007-08, 2015-16, 2021-22

उपरोक्त तालिका से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कई पंचवर्षीय योजनाओं में खाद्यानों के उत्पादन में गिरावट भी देखने को मिली है क्योंकि खाद्य फसलों का उत्पादन कई कारकों से प्रभावित है। खाद्य फसलों के उत्पादन की प्रवृत्ति में परिवर्तन के कई कारण है। कृषि एक मौसमी व्यवसाय है। यह वर्षा पर निर्भर रहता है। जब समय पर वर्षा नहीं होती या कम वर्षा होती है तो खाद्यानों के उत्पादन में तेजी से गिरावट देखने को मिलती है। हमारी कृषि का 51 प्रतिशत उत्पादन वर्षा पर निर्भर रहता है। बाढ़, सूखा, अत्यधिक वर्षा इत्यादि सीधे कृषि क्षेत्र में उत्पादन को प्रभावित करता है।

भारत में कृषि के उत्पादन में क्षेत्रीय असमानता भी देखने को मिलती है। देश के कई राज्य जैसे पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश , मध्य प्रदेश इत्यादि में उत्पादन में तेज गति से वृद्धि देखने को मिली है जबकि कुछ राज्य जैसे केरल, झारखंड, छत्तीसगढ़, उड़ीसा इत्यादि में खाद्यानों के उत्पादन में बहुत कम वृद्धि देखने को मिली है क्योंकि कृषि भौगोलिक दशाओं पर भी निर्भर करता है। भूमि की उर्वरा शक्ति भी इसको प्रभावित करती है क्योंकि उत्तर भारत का क्षेत्र जिस पर हरित क्रांति का सबसे ज्यादा प्रभाव देखने को मिला है। यही कारण है कि उत्तर भारत में विभिन्न राज्यों में खाद्यानों के उत्पादन में तेज गति से वृद्धि देखने को मिली है। उत्तर भारत में नदियों का जाल बिछा हुआ है जिससे कृत्रिम ढंग से सिंचाई की व्यवस्था कर ली जाती है और बाढ़, सूखा जैसी स्थितियों से भी निपट लिया जाता है। यही कारण है कि उत्तर भारत जिस पर हरित क्रांति का सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ा और खाद्यानों के उत्पादन में भी तेजी से वृद्धि देखने को मिली जबकि दक्षिण भारत में खाद्यानों के उत्पादन में बहुत कम वृद्धि देखने को मिली और हरित क्रांति का भी प्रभाव बहुत कम हुआ।

तालिका संख्या–2 में वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन को दिखाया गया है। वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन की प्रवृत्तियों को भी 1951– 56 से लेकरके 2021–22 तक की समयावधि को दिखाया गया है।

तालिका 2 : वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन की प्रवृत्तियां

Agriculture Census, 2021-22

समयावधि	तिलहन (लाख टन)	गन्ना (लाख टन)	कपास (लाख गांठ) 1 गांठ = 170 किलोग्राम	पटसन (लाख गांठ) 1 गांठ = 170 किलोग्राम
1951—56	55	553	39	39
1956—61	67	803	48	44
1961—66	73	1092	54	57
1969—74	83	1281	59	55
1974—79	89	1533	68	52
1985—90	139	1964	84	89
1992—97	219	2584	122	81
1997—2002	212	2924	108	96
2002—2007	232	2770	160	101
2007—2012	289	3259	281	103
2012—2017	297	3421	336	104
2018—2019	315	4054	280	95
2019—20	332	3705	361	94
2020—21	359	4054	352	90

Sourse : Economic Survey, 2002-03, 2007-08, 2015-16 Agriculture Survey, 2021-22

वाणिज्यिक फसलों का हमारे देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। इन फसलों ने किसानों की आय में भी वृद्धि की और देश के निर्यातों को भी बढ़ाने का काम किया है। हमारे घरेलू उद्योगों में भी कच्चे माल के रूप में इन फसलों का प्रयोग किया जाता है। उपरोक्त तालिका के आंकड़ों के विश्लेषण से पता लगता है कि योजनाकाल में वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन में तेज गति से वृद्धि हुई है। तिलहनों का उत्पादन 1951– 56 में 55 लाख टन था। यह 2021–22 में बढ़करके 377 लाख टन पहुंच गया। कपास का उत्पादन 1951–56 में 39 लाख गांठ प्रतिवर्ष था। यह 2021–22 में बढ़करके 312 लाख गांठ पहुंच गया। इसी प्रकार पटसन का उत्पादन भी 1955– 56 में 39 लाख गांठ था, 2021–22 में बढ़करके 99 लाख गांठ हो गया। गन्ने का उत्पादन 1955– 56 में 553 लाख टन था यह 2021–22 में बढ़करके 4318 लाख टन तक पहुंच गया। इस प्रकार से वाणिज्यिक फसलों के उत्पादन में भी योजनाकाल में तीव्र वृद्धि देखने को मिली। वाणिज्यिक फसलों का देश के निर्यात के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इन फसलों ने किसानों की आर्थिक स्थिति को सुधारने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किसान की आय में तीव्र गति से वृद्धि हुई है।

कृषि उत्पादकता की प्रवृत्तियां

योजना काल में भारत की कृषि की उत्पादकता में वृद्धि हुई है। खाद्य फसलों और अखाद्य फसलों दोनों के उत्पादन में वृद्धि देखने को मिली है। असामान्य वर्षों को छोड़कर के कृषि की उत्पादकता में ज्यादातर समय वृद्धि देखने को मिली है। विशेषकर खाद्य फसलों के उत्पादन में ज्यादातर समय निरंतर वृद्धि रही है। 1950–51 से 2021–22 के मध्य में अधिकतर समय कृषि की उत्पादकता में लगभग तीन प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि रही है। तालिका संख्या–3 से पता लगता है कि भारत में कृषि की उत्पादकता में निरंतर वृद्धि की प्रवृत्ति पाई गई है। तालिका में प्रमुख फसलों की प्रति हैक्टेयर उत्पादकता को किलोग्राम में दिखाया गया है। गेहूं और चावल की प्रति हेक्टर उत्पादकता 1950–51 में क्रमानुसार 655 किलोग्राम और 668 किलोग्राम थी। यह 2021–22 में बढ़करके 3507 किलोग्राम और 2809 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पर पहुंच गई। इसी प्रकार बाजरा, दालें, ज्वार और तिलहन की उत्पादकता 1950–51 में क्रमानुसार 288 किलोग्राम, 441 किलोग्राम, 353 किलोग्राम, और 481 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर थी। यह 2021–22 में बढ़कर के, क्रमानुसार 1436 किलोग्राम, 892 किलोग्राम, 1110 किलोग्राम और 1292 किलोग्राम पर पहुंच गई । मक्का, कपास और पटसन की उत्पादकता 1950–51 मे क्रमानुसार 547 किलोग्राम, 88 किलोग्राम और 1043 किलो ग्राम थी। यह 2021–22 में बढ़करके क्रमानुसार 3349 किलोग्राम, 445 किलोग्राम और 2774 किलोग्राम हो गई। सब खाद्यानों की कुल उत्पादकता 1950–51 में 552 किलोग्राम

थी। यह 2021–22 में 2419 किलोग्राम पहुंच गई। इस प्रकार उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि हमारी ज्यादातर फसलों की प्रति हैक्टेयर उत्पादकता में तेजी से वृद्धि हुई है। ज्यादातर फसलों की उत्पादकता में चार गुणा तक वृद्धि हुई है।

तालिका 3 : प्रमुख फसलों की प्रति हैक्टेयर उत्पादकता

(किलोग्राम प्रति हेक्टेयर)

फसल	1950–51	1960–61	1980–81	1990–91	2000–01	2019–20	2020–21	2021–22
गेहूं	655	851	1630	2281	2708	3421	3521	3507
चावल	668	1013	1336	1740	1901	2705	2717	2809
बाजार	288	286	458	658	688	1368	1420	1436
दालें	441	539	473	578	544	817	885	892
तिलहन	481	507	532	771	810	1236	1247	1292
मक्का	547	926	1159	1518	1822	2945	3199	3349
ज्वार	353	533	660	814	764	1005	1099	1110
कुल खाद्यान्न	552	710	1023	1380	1626	2325	2394	2419
कपास	88	125	152	225	190	451	451	445
पटसन	1043	1049	1245	1833	2026	2686	2591	2774

Source : Economic Survey 1980-81, 2021-22

Agricultural Census, 2021-22

भारत में कृषि क्षेत्र में विकास की धीमी वृद्धि के कारण और भविष्य में आने वाली चुनौतियां

जैसाकि ऊपर तालिका में दिखाया गया है कि योजनावधि में कृषि उत्पादकता में तेजी से वृद्धि हुई है, लेकिन फिर भी विकसित तथा विकासशील दोनों देशों की तुलना में हमारे देश की उत्पादकता उतनी तेज गति से नहीं बढ़ पाई है। देश की उत्पादकता के धीमी गति से बढ़ने के अनेक कारण है जो आज भारतीय कृषि के लिए चुनौती बने हुए हैं। ये चुनौतियां आज देश की कृषि क्षेत्र की उत्पादकता को घटाने के मुख्य कारण रही हैं। यद्यपि भारत सरकार इन चुनौतियों से निपटने के लिए प्रयासरत है लेकिन फिर भी आज हमें पूरी सफलता नहीं मिल पाई है।

हमारे देश का किसान ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़ा हुआ है। गांव में आज भी ज्यादातर लोगों में रूढ़िवादिता, अंधविश्वास और भाग्य में विश्वास करते हैं। किसान कम पढ़ा– लिखा है। इसलिए किसान जागरूकता के अभाव में समय के साथ–साथ अति आधुनिक तकनीकी को अपनाने में असमर्थ है।

हमारे देश में भूमि पर जनसंख्या का दबाव भी लगातार बढ़ता जा रहा है। बहुत छोटे खेतों पर उत्पादकता का स्तर भी नीचे होता जाता है। जब खेतों का आकार घटता जाता है तो वैज्ञानिक खेती करना मुश्किल हो जाता है। छोटे–छोटे आकार के खेतों में सिंचाई की सुविधा को भी उपलब्ध कराना बड़ा मुश्किल कार्य है।

कृषि की उत्पादकता घटने का महत्वपूर्ण कारण जमींदारी प्रणाली रहा है। हमारे देश में लंबे समय तक जमींदारी प्रथा प्रचलित रही। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार ने जमींदारी प्रथा का उन्मूलन कर दिया और मध्यस्थों को समाप्त करने के लिए कड़े कानून बनाए । लेकिन इसके बावजूद भी आज भी हमारे देश की भूमि कुछ व्यक्तियों के हाथों में केंद्रित है। वास्तविक खेती करने वाले लोगों को जमींदारों से कोई खास भूमि प्राप्त नहीं हुई। हमारे देश में काश्तकारों की स्थिति आज भी अच्छी नहीं है। वे भूमि पट्टेदारी पर लेकरके खेती करते हैं। उनके अधिकार सुरक्षित नहीं है।

भारतीय कृषि पूरी तरह से वर्षा पर निर्भर करती है। लेकिन वर्षा की अनिश्चिता के कारण कृषि एक जोखिम भरा व्यवसाय बन गया है। देश का लगभग आधा कृषि योग्य क्षेत्र मानसून पर निर्भर करता है। भारतीय किसान आर्थिक रूप से भी कमजोर है। इसलिए वह कृषि के आधुनिकीकरण करने में असमर्थ है जिसके कारण आज भी किसान कृषि पुराने ढंग से करता है। यही कारण है कि किसान उर्वरकों तथा अधिक पैदावार देने वाले बीजों का प्रयोग अब भी सीमित मात्रा में करता है।

साख एवं विपणन संबंधी सुविधाओं के अभाव के कारण भी किसान अपनी खेती की उत्पादकता बढ़ाने में असमर्थ है। किसान लगातार अपनी फसल की न्यूनतम समर्थन कीमत(MSP) बढवाने के लिए संघर्षरत है। देश का किसान लंबे समय तक सरकार के खिलाफ अपनी विभिन्न मांगों के लिए आंदोलन किए हुए हैं। ग्रामीण क्षेत्र में साख सुविधाओं का भी अभाव देखने को मिलता है। इसलिए किसान को गांव के महाजनों और साहूकारों से अधिक ब्याज पर ऋण लेना पड़ता है। जिसके कारण किसान को अपनी आय का अधिकतर भाग ब्याज के रूप में भुगतान करना पड़ता है। यदि किसान की आय कम होगी, तो उसकी उत्पादकता भी घटेगी। साहूकार उनका हर प्रकार से शोषण करते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में बिजली की भी पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति नहीं है जिसके कारण किसान अपनी सिंचाई के लिए ट्यूबवेल इत्यादि का आवश्यकता अनुसार प्रयोग नहीं कर पाता। वर्षा की कमी से निपटने के लिए

ट्यूबवेल आज हमारी सिंचाई का मुख्य साधन बना हुआ है लेकिन अत्यधिक ट्यूबल के प्रयोग के कारण हमारा भूमिगत जल स्तर तेज गति से नीचे जा रहा है। इसलिए दीर्घकाल में ट्यूबल सिंचाई का एक स्थाई साधन नहीं है। कृषि के सतत विकास के लिए हमें ट्यूबल का कोई वैकल्पिक साधन खोजना होगा। ग्रामीण क्षेत्र में संचार के साधनों की कमी के कारण किसान को उसकी फसलों की कीमतों के बारे में विभिन्न नियमित बाजारों से सूचना समय पर प्राप्त नहीं हो पाती। सूचना के अभाव के कारण वह अति आधुनिक कृषि उपकरणों और नई उत्पादन विधियों से भी अनभिज्ञ रह जाता है।

कृषि की उत्पादकता बढ़ाने के लिए इसके सतत विकास में कृषि विविधीकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। लेकिन जागरूकता के अभाव में किसान अपने फसल–चक्र में बदलाव नहीं कर पा रहा, जिसके कारण कृषि की उत्पादकता लगातार गिरती जा रही है। साथ ही उसकी भूमि की उपजाऊपन शक्ति में भी गिरावट आ रही है।

भारत में कृषि क्षेत्र में दूसरे क्षेत्रों की तुलना में निवेश भी कम देखने को मिला है। हमारी विभिन्न योजनाओं में कृषि क्षेत्र में निवेश को आकर्षित करने में असफलता मिली है। घरेलू और विदेशी निवेशकर्ताओं ने कृषि क्षेत्र में निवेश करने में रुचि नहीं दिखाई है। कृषि की उत्पादकता बाढ़, भूकंप, सुखा और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित है। इन जोखिमों से बचने के लिए फसल बीमा जरूरी है। लेकिन किसानों के मध्य में आज भी फसल बीमा इतनी विख्यात नहीं है। यद्यपि भारत सरकार ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना चला रखी है लेकिन जागरूकता के अभाव में आज भी किसान इससे दूर है।

निष्कर्ष और सुझाव

कृषि के सतत विकास के लिए और इसकी उत्पादकता बढ़ाने के लिए सरकार को कुछ जरूरी कदम उठाने होंगे। कृषि एक मौसमी व्यवसाय बन गया है जोकि जोखिम भरा है। इसलिए सरकार को फसल बीमा योजना को पहले से ओर ज्यादा आकर्षक बनाना होगा और साथ ही किसान को इस योजना के बारे में ओर ज्यादा जागरूक करना होगा। हमारे देश का लगभग आधे से ज्यादा क्षेत्र वर्षा पर निर्भर करता है इसलिए वर्षा की अनिश्चितता को देखते हुए सिंचाई के कृत्रिम साधनों के विकास पर ध्यान देना होगा। सरकार को चाहिए कि कृत्रिम सिंचाई के लिए नहरें, ट्यूबल, तालाबों इत्यादि साधनों को ओर ज्यादा प्रभावी ढंग से विकसित करना होगा।

किसान ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़ा हुआ है। अधिकतर किसान आज भी अंधविश्वासी, अशिक्षित और रूढ़िवादिता में फंसा हुआ हैं। किसान अपनी फसल की कम उत्पादकता और गरीबी के लिए अपने भाग्य को दोषी मानता है। इसलिए आवश्यकता है कि किसान को ओर ज्यादा शिक्षित करना होगा ताकि किसान सरकार के द्वारा चलाई गई विभिन्न योजनाओं को प्रभावी ढंग से अपना सकें और अपने खेत की उत्पादकता को बढ़ा सके। इससे उसकी आय भी बढ़ेगी और वह गरीबी के दुष्चक्र से भी बाहर निकल पाएगा।

सरकार को चाहिए कि ग्रामीण क्षेत्र में यातायात की सुविधाओं में ओर ज्यादा सुधार किया जाए। नहरों, सड़कों और कोल्ड स्टोरेज की बेहतर व्यवस्था की जाए। सरकार को चाहिए कि किसानों को मोबाइल फोन, रेडियो, दूरदर्शन इत्यादि संचार के साधनों के माध्यम से समय रहते किसान को मौसम की जानकारी दी जाए ताकि वह अनिश्चिता के वातावरण से निकल सके। संचार के साधनों को प्रभावी ढंग से विकसित करने से किसान नियमित बाजारों से जुड़ पाएगा और उसे नियमित बाजारों में कीमतों में होने वाले उतार–चढ़ाव के बारे में पल–पल की जानकारी मिलती रहेगी।

यदि किसान शिक्षित होगा तो वह कृषि विविधीकरण को बढ़ावा देगा। इससे उसकी आय भी बढ़ेगी। कृषि विविधीकरण किसानों की जोखिम और अनिश्चिता को भी कम कर देगा। इसलिए सरकार को चाहिए कि किसानों को शिक्षित किया जाए। साथ ही कृषि व्यवसाय के बारे में समय–समय पर जानकारी देने के लिए और किसानों को प्रशिक्षित करने के लिए शिविर लगाए जाए। जहां किसानों को कृषि के आधुनिक विधियों और नए–नए यंत्रों के बारे में जानकारी दी जाए। यहां सरकार द्वारा किसानों के उत्थान के लिए चलाई गई योजनाओं के बारे में भी जागरूक किया जाए।

आज भारतीय कृषि की उत्पादकता को बढ़ाने के लिए अच्छी गुणवत्ता के बीच, कृत्रिम खाद, कीटनाशक दवाइयों, की जरूरत है। अच्छी गुणवत्ता के बीज विकसित करने के लिए कृषि क्षेत्र में अनुसंधान पर ओर ज्यादा ध्यान देना होगा। सरकार को नए कृषि अनुसंधान केंद स्थापित करने चाहिए। कृषि अनुसंधान का कार्य निरंतर चलता रहना चाहिए। ज्यादा उत्पादकता वाले अच्छी गुणवत्ता के बीजों को विकसित किया जाए। आज भारतीय किसान के सामने खाद की एक बहुत बड़ी समस्या है। फसल की बुवाई के समय किसान को समय पर खाद उपलब्ध नहीं हो पाता। इसलिए सरकार को चाहिए कि खाद की मात्रा किसान को समय पर उपलब्ध करायी जाए।

आज भारत का किसान सरकार से न्यूनतम समर्थन (MSP) कीमत प्राप्त करने के लिए आंदोलनरत है। यद्यपि सरकार ने बहुत सारी फसलों की समर्थन कीमत दी हुई है। लेकिन आज भी बहुत सारी

फसलों की न्यूनतम समर्थन कीमत न होने के कारण किसान उन फसलों की कीमत बारे अनिश्चितता की स्थिति में बना रहता है। कीमत संबंधी अनिश्चितता को दूर करने के लिए सरकार ने ऐसी फसलों को भी न्यूनतम समर्थन कीमत देनी चाहिए, ताकि किसान फलों, सब्जियों इत्यादि नकदी फसलों के प्रति भी आकर्षित हो सके। इससे फसलों का भी विविधीकरण अधिक से अधिक किया जा सकेगा।

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि आज भारतीय कृषि की उत्पादकता को तेजी से बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिए सरकार को पहले से भी ज्यादा प्रभावी ढंग से काम करना होगा। ताकि किसान की आय भी बढ़े और देश के विकास में कृषि क्षेत्र का योगदान पहले से भी ज्यादा हो। कृषि क्षेत्र केवल जीवन– निर्वाह क्षेत्र बनकरके ना रहे, बल्कि वाणिज्यिक खेती को बढ़ावा देकरके इसे ओर आकर्षित व्यवसाय बनाया जाए।

संदर्भ

1. Ahluwalia, M. 1999, 'India economic reforms', in Sachs, J., Varshney, A. and Bajpai, N. (eds), India in the Era of Economic Reforms, Oxford University Press, New Delhi, pp. 26-79.
2. Chadra, R. 2001, Trade and balance of payments' in Economic and Policy Reforms in India, National Council of Applied Economic Research, New Delhi, pp. 89-128.
3. Desai, A. 2004, Problems and prospects', in The Hindu Survey of Indian Agriculture 2004, Chennai, India.
4. World Bank, India : Sustaining Reform, Reducing Poverty (New Delhi: Oxford University Press,2003), Box 5.1, p.74.
5. Reserve Bank of India, Annual Report 2016-17 (Mumbai, 2017) Box 11.2, p.18.
6. Puri V.K. and S.K. misra ",Indian Economy " 34th revised edition, p.211- 218.
7. Mearns, R. 2000, Access to Land in Rural India, World Bank Working paper Series No. 2123, Washington DC.
8. Pai Panandiker, V.A. 1997, "The political economy of centre-state relations in India", in Ahluwalia, I. and Little. I. eds, India's Economic Reforms and Development, Oxford University Press, Calcutta, pp. 375-96.
9. Sharma, A. 2001, "The agricultural sector in Economic and Policy Reforms in India, National Council of Applied Economic Research, New Delhi, pp. 185-231.
10. World Bank 1999, India Foodgrain Marketing Policies: Reforming to Meet Food Security Needs, Report No. 18329-IN, Washington DC.

डॉ० भूपेंद्र,

सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र,

राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, रोहतक

Email I'd : bhupinderahlawat1981@gmail.com

Postal Address

Dr. Bhupinder, H.No.-46, Friends Colony, Ext-9,

Behind Nakastra Property, Near Omaxe City Gate,

Delhi Road Rohtak, PIN-124001 Haryana,

Mobile No 9812138717

18

डिजिटलिकरण से ग्रामीण विकास (राजस्थान के टोंक जिले के सन्दर्भ में शोध अध्ययन का विश्लेषण)

डॉ0 निमिशा गौड़

सारांश

भारत के सन्दर्भ में ग्रामीण विकास शब्द ग्रामीणों का जीवन स्तर सुधारने के साथ ग्रामीण क्षेत्र के समग्र विकास को प्रदर्शित करता है। यह एक व्यापक एवं बहुआयामी संकल्पना है। इसमें विकास के लाभों को ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले सबसे गरीब लोगों तक पहुँचाना सम्मिलित है। इसमें किसान, काश्तकार और भूमिहीन शामिल है। ग्राम–उत्थान के स्वतन्त्रता पूर्व एवम पश्चात् ई–गर्वनेंस के अनवरत प्रयासों में डिजिटल इंडिया अभियान वर्ष 2015 से शुभारम्भ हुआ।
डिजिटलीकरण अभियान से 140 करोड़ देशवासियों को सरकार के पोर्टल से सीधा जोड़ने की पहल प्रारम्भ की। जिनके प्रभाव से ग्रामीण क्षेत्रों में परिवर्तन देखने को मिला है।

डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य **पॉवर टू एम्पॉवर** है। जिसके नौ स्तम्भों में प्रत्येक क्षेत्र अपने आप में एक जटिल कार्यक्रम है और कई मंत्रालयों व विभागों से जुड़ा है।

डिजिटल इंडिया के नौ स्तम्भ

परिचय

डिजिटल इंडिया अभियान से डिजिटलिकरण का उद्देश्य भारत के ग्रामीण क्षेत्रों को डिजिटल प्रौद्योगिकियों और सेवाओं से सशक्त बनाना है। उक्त अभियान ने राजस्थान राज्य के टोंक जिले की ग्रामीण स्वायत्त संस्थानों और समुदायों में शासन, शिक्षा, कृषि, और वित्तीय सेवाओं में बहुस्त स्तरों पर सुधार किया है।

डिजिटल इंडिया अभियान के अंतर्गत लागू किए गए ई–गवर्नेंस टूल्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने ग्रामीण क्षेत्रों में शासन की प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और कुशल बनाया है। ग्राम पंचायतों और अन्य स्वायत्त ग्रामीण संस्थानों द्वारा डिजिटल रिकॉर्ड रखने, ऑनलाइन शिकायत निवारण प्रणाली और सरकारी योजनाओं की जानकारी की आसान उपलब्धता ने प्रशासनिक प्रक्रियाओं में तेजी और पारदर्शिता उत्तरोत्तर बढ़ी है। ग्रामीण स्वायत्त संस्थाओं के सहयोग से ग्रामीण स्थानीय प्रशासन की दक्षता में सुधार किया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का डिजिटलीकरण एक महत्वपूर्ण विषय है। डिजिटल इंडिया ने ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म्स, डिजिटल कक्षाओं और शैक्षिक ऐप्स के माध्यम से टोंक के ग्रामीण छात्रों और शिक्षकों को नई तकनीकों से जुड़ने का अवसर दिया है। अध्ययन का एक उद्देश्य यह है कि इन डिजिटल पहल ने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता और उपलब्धता में कितना सुधार किया है, और इन सेवाओं तक छात्रों की पहुँच कितनी आसान हुई है।

इसी तरह कृषि के क्षेत्र का अध्ययन उन तरीकों का मूल्यांकन करेगा जिनसे डिजिटल प्लेटफार्मों ने ग्रामीण किसानों की कृषि से संबंधित निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाया है। इससे किसानों की उत्पादकता और आय में सुधार की संभावनाओं का पता लगाया जा सकेगा।

इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी है कि डिजिटल इंडिया के तहत ग्रामीण भारत में बैंकिंग सेवाओं और वित्तीय सेवाओं की उपलब्धता और उपयोग पर क्या प्रभाव पड़ा है।
इस अध्ययन की अनुसंधान क्रियाविधि के लिए प्राथमिक नमूना विधि का उपयोग किया गया है, विशेष रूप से स्तरीकृत नमूना चयन को अपनाया गया है । टोंक जिले के 8 गाँवों को तीन उपखंडों (टोंक, निवाई, और उनियारा) से चुना गया है ।

नमूना चयन की सटीकता और प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक गाँव से लगभग 50 प्रतिभागियों को चुना गया, जिससे कुल 400 प्रतिभागियों का एक संतुलित और प्रतिनिधि नमूना तैयार किया गया ।

- अलियावाद
- चौनपुरा
- जोधपुरिया
- देवपुरा
- निमोला
- मेहंदवास
- हटौना

डिजिटल इंडिया अभियान का प्रभाव मापने के लिए एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण इन गाँवों से प्रतिभागियों की सामाजिक, आर्थिक, और डिजिटल उपयोग की स्थिति का संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है।

आंकड़े संग्रह एवं विश्लेषण विधि

इस अध्ययन के लिए प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ो के संग्रह विधियों का उपयोग किया गया। उक्त गाँवों के निवासियों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार और संरचित प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ो एकत्र किया गया।

द्वितीयक आंकड़ो के लिये सरकारी रिपोर्ट्स, जनगणना आंकड़ो, और अन्य संबंधित अनुसंधान सामग्री का उपयोग किया गया ताकि डिजिटल इंडिया अभियान के अंतर्गत ग्रामीण विकास का समग्र दृष्टिकोण प्राप्त हो सके। अध्ययन में एकत्रित आंकड़ो का विश्लेषण सांख्यिकीय और आर्थिक उपकरणों का उपयोग करके किया गया।

उक्त शोध अध्ययन डिजिटल इंडिया अभियान का ग्रामीण क्षेत्रों पर प्रभाव मापने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। गाँवों में डिजिटल सेवाओं की पहुँच और उपयोग, ग्रामीण स्वायत शासन संस्थानों की पारदर्शिता और दक्षता में सुधार, और शिक्षा, कृषि, और वित्तीय समावेशन पर डिजिटल इंडिया के योगदान का मूल्यांकन किया गया।

अनुसंधान उद्देश्य

1. डिजिटल इंडिया अभियान ने ग्रामीण संस्थानों में शासन की पारदर्शिता और दक्षता में कैसे सुधार किया है, इसका परीक्षण करना।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म, डिजिटल कक्षाओं और शैक्षिक ऐप्स तक पहुंच पर डिजिटल पहलों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
3. किसानों के लिए कृषि जानकारी, जैसे मौसम की जानकारी, फसल के दाम और सरकारी योजनाओं के प्रसार में डिजिटल प्लेटफार्मों की भूमिका का आकलन करना ।
4. डिजिटल बैंकिंग प्लेटफार्मों, मोबाइल वॉलेट्स और अन्य वित्तीय सेवाओं के उपयोग का ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाओं और वित्तीय समावेशन पर प्रभाव का परीक्षण करना ।

अनुसंधान परिकल्पना

परिकल्पना 1

शून्य परिकल्पना (H_0) : ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के उत्थान पर भारत सरकार की विभिन्न डिजिटल पहलों का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है ।

वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) : ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के उत्थान पर भारत सरकार की विभिन्न डिजिटल पहलों का महत्वपूर्ण प्रभाव है ।

परिकल्पना 2

शून्य परिकल्पना (H_0) : ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों को कृषि जानकारी के प्रसार पर विभिन्न योजनाओं और डिजिटल पहलों का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है ।

वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) : ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों को कृषि जानकारी के प्रसार पर विभिन्न योजनाओं और डिजिटल पहलों का महत्वपूर्ण प्रभाव है ।

परिकल्पना 3

शून्य परिकल्पना (H_0) : ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन और बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच पर डिजिटल इंडिया अभियान का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) : ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन और बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच पर डिजिटल इंडिया अभियान का महत्वपूर्ण प्रभाव है।

परिकल्पना 4

शून्य परिकल्पना (H_0) : ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक सेवाओं के शासन और कार्यप्रणाली पर डिजिटल इंडिया अभियान का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) : ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक सेवाओं के शासन और कार्यप्रणाली पर डिजिटल इंडिया अभियान का महत्वपूर्ण प्रभाव है।

भारत के ग्रामीण विकास से सम्बंधित साहित्यिक अध्ययनों को जानना अपरिहार्य है क्योंकि अब तक के अध्ययन एवं इतिहास भविष्य के विकास का आधार बनते हैं।

अनुसंधान अंतराल

उपलब्ध साहित्य के अध्ययन के दौरान यह अनुभव किया गया कि अनुसंधान परियोजना क्षेत्र से सम्बंधित सरकारी प्रतिवेदन व गैरसरकारी शोध ग्रंथ या संदर्भित लेख की उपलब्धता कम रही है। डिजिटल लेनदेन से पारदर्शी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की जानकारी तो मिली किन्तु राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटलीकरण से ग्रामीण स्वायत संस्थाओं की भूमिका पर मूल शोध की कमी रही।

शोध परियोजना क्षेत्र राजस्थान के टोंक जिले के अन्तर्गत 8 तहसीलें (मालपुरा, पीपलू, निवाई, टोंक, टोड़ारायसिंह, देवली, उनियारा, दूनी) हैं। टोंक जिले का भौगोलिक धरातल लगभग पतंग के आकार का है। इस क्षेत्र का धरातल भौतिक दृष्टि से समान नहीं है। जिले में कहीं पर नदियाँ हैं तो कहीं पर अर्द्धशुष्क क्षेत्र तो कहीं पर उच्चावच क्षेत्र भी पाए जाते हैं। जिले में भू–उच्चावच समुद्र तल से 150 मीटर से 600 मीटर की ऊँचाई तक पाए जाते हैं तथा ढ़ाल 150 मीटर प्रति किलोमीटर तक पाए जाते हैं। उच्चावच एवं जलप्रवाह के आधार पर जिले को 3 मुख्य भागों में तथा 13 उप विभागों में बांटा गया है ।

2011 की जनसंख्या आंकड़ों के अनुसार सर्वाधिक जनसंख्या टोंक तहसील की रही है उसके बाद निवाई, मालपुरा, देवली, जिनमें जनसंख्या 2 लाख से अधिक रही है क्योंकि इन तहसीलों में शिक्षा, रोजगार, परिवहन, चिकित्सा सेवाएँ, कार्यकलापी सेवाएँ आदि आसानी से उपलब्ध है, क्योंकि इन तहसीलों का निर्माण आरंभ में ही हो चुका था। उनियारा, टोडारायसिंह, पीपलू, दूनी आदि तहसीलों का निर्माण कालान्तर में हुआ है। अतः यहाँ उपरोक्त सेवाओं के विकास में अभी समय लगेगा एवं इन तहसीलों का क्षेत्रफल भी कम है।

??????	???	???????	????
???? ????	198	159	1314
????????	200	153	2570
????	368	269	3689
?????			
???????	163	143	770
?????	173	173	0
?????	239	200	967
????	2732	168	2732
???????????	149	132	435
?????	182	149	5884
????	166	166	0
???????	171	151	5044

स्रोतः जिला जनगणना पुस्तिका, 2011

शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल शिक्षा / साक्षरता की महत्तता

डिजिटल शिक्षा शिक्षण तथा सीखने के लिए तकनीकी का इस्तेमाल करना है। जिसमें ई–लर्निंग, ऑनलाईन शिक्षा, वर्चुअल लर्निंग, ई–लर्निंग और मिश्रित शैली जैसी कई प्रकार की शिक्षाओं को शामिल किया जा सकता है। समयानुसार डिजिटल शिक्षा ने कई ऐसे मार्ग विकसित किये हैं जिनसे पर्यावरण संरक्षण, लागत की प्रभावशीलता, आपसी सहयोग की भावना, अध्ययन कर्ताओं पाठ्यक्रम की आसान पहुँच तथा व्याख्यान और सेमिनार रिकॉर्डिंग करके विद्यालयों में लगे डिजिटल बोर्ड पर पढ़ाना इत्यादि।

राजस्थान में डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए कई जिलों में मॉडल स्कूलों की स्थापना की गई है। स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालय के नाम से तीन चरणों में स्थापित किये गये। वर्ष 2014–15 के प्रथम चरण में राज्य में 71 मॉडल विद्यालयों की स्थापना की गई। जिसमें टोंक जिले की निवाई तहसील के जुगलपुरा में तथा टोडारायसिंह तहसील में प्रथम विद्यालयों को द्वितीय चरण वर्ष 2016–2017 में टोंक जिले की मालपुरा तहसील के बृजलाल नगर तथा उनियारा तहसील के खातोली में तथा तृतीय चरण में राज्य में 52 विद्यालयों की स्थापना की जिसमें केवल एक टोंक जिले के वजीरपुर क्षेत्र में स्थापित किया गया है। जिसमें सभी प्रकार की डिजिटल तकनीक सुविधाओं से युक्त किया गया है।

ई–एजुकेशन

कोविड महामारी के दौरान, 'डिजिटल इण्डिया' अभियान से लाभान्वित गांवों में ई.एज में शिक्षा प्रसार थमा नही और इस नीति के माध्यम से अनेक नवाचार किये जा रहे हैं। ई–शिक्षा में मुख्य रूप से मिश्रित और वर्चुअल लर्निंग समेत कई प्रकार की पद्धतियाँ शामिल की जाती हैं।

वर्ष 2022–23 में भारत सरकार द्वारा पीएम श्री योजना के प्रथम चरण में टोंक जिले की रा.सी.उ.मा. विद्यालय कोठी नातमाम, रा. सी.सै. स्कूल टोरडी, रा.सी.सै. स्कूल रानोली, रा.सी.सै. स्कूल अलीगढ़, रा.सी.सै. स्कूल बरवास, रा.सी.सै. स्कूल राहोली, रा.सी.सै. स्कूल देवली तथा रा.उ.प्रा. स्कूल का चयन किया गया है।

राजस्थान की कुल 654 विद्यालयों को पीएमश्री स्कूल योजना में शामिल किया है। जिनमें टोंक जिले के कुल 14 विद्यालयों को शामिल किया गया है। जिनमें से 8 विद्यालयों में ई–एजुकेशन सुचारू रूप से प्रारम्भ कर दिया गया है (राजस्थान पत्रिका सितम्बर, 2023)।

ई–पाठशाला

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की पुस्तकों के डिजिटल संस्करण अब प्रत्येक विद्यार्थी के लिये मुफ्त उपलब्ध है। वर्ष 2022–23 से भारत सरकार द्वारा टोंक जिले में 16 करोड़ रु. में कुल 8 विद्यालयों को हाईटेक किया जा रहा है। इन विद्यालयों में प्रत्येक विद्यालय के लिए 2–2 करोड़ रुपये की राशि से विद्यालय में नवीनीकरण किया जा रहा है।

दीक्षा

शिक्षा देने वाले शिक्षकों के लिये दीक्षा मंच है जो सभी वर्गों के शिक्षकों को क्षमता निर्माण में मदद करता है। इससे 50 लाख से अधिक शैक्षिकगणों को शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने में मदद मिलेगी।

स्वयं

यह मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्सेज उपलब्ध कराने वाला एक समन्वित प्लेटफार्म है, जिसके अन्तर्गत स्कूल (9वीं कक्षा से 12वीं कक्षा) से लेकर स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रम उपलब्ध है।

नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी

ई अध्ययन के युग में नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी सीखने में काम आने वाले अनेकों संसाधनों का एक ऐसा वर्चुअल भण्डार है जिसमें एक ही स्थान से सभी अध्ययन सामग्री को ढूँढा जा सकता है।

ई–यंत्र

ग्लोबल दुनिया में भारत के इंजीनियरिंग कॉलेजों के तकनीकी अध्ययन स्तर को सामानान्तर लाने के लिए एम्बेडेड सिस्टम और रोबोटिक्स पर प्रभावी शिक्षा को सक्षम करने की एक परियोजना है।

डिजिटल यूनिवर्सिटी

डिजिटलीकरण के युग में डिजिटल यूनिवर्सिटी के माध्यम से छात्र–छात्राएं देश के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों और संस्थानों से डिजिटल माध्यम से जुड़ सकेंगे।

स्वयंप्रभा

शिक्षा को प्रत्यक्षतः उपलब्ध करवाने के लिए स्वयंप्रभा 32 डीटीएच चौनलों का एक समूह है जिन पर विभिन्न भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाले एजुकेशनल कंटेंट प्रसारित किये जाते हैं।

कृषि क्षेत्र में भूमिका

डिजिटल प्रौद्योगिकियां कृषि के क्षेत्र में भी क्रान्ति ला रही है, जिससे छोटे किसान भी नवीन तकनीकी संचालित कृषि खाद्य प्रणाली को अपना रहे है। डिजिटलीकरण ने कृषि खाद्य श्रृखंला को हर स्तर पर परिवर्तित किया है। डिजिटल कृषि उच्च उत्पादकता, जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलनशीलता और प्रत्याशित क्षमताओं को सुनिश्चित करती है जो संभावित रूप से भविष्य के लिये खाद्य सुरक्षा,

लाभप्रदता और स्थिरता को बढ़ाती है।

डिजिटलीकरण ने किसान सेवाओं को मजबूत करने, वित्तीय सेवाओं और बाजारों तक उनकी पहुँच को बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिजिटल उपकरण किसानों को उर्वरकों और कीटनाशको के अनुकूलित उपयोग पर मार्गदर्शन करते है। ड्रोन और उपग्रह प्रणाली जैसी उन्नत तकनीकें फसल चक्र, मिट्टी के स्वास्थ्य और जल के उपयोग मे अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करते है।

ई–नाम (इलेक्ट्रोनिक राष्ट्रीय कृषि बाजार) एक अखिल भारतीय इलेक्ट्रोनिक ट्रेडिंग पोर्टल है जो मौजूदा भौतिक रूप से विनियमित थोक बाजार (।च्डब् बाजार) को एक आभासी मंच के माध्यम से, कृषि वस्तुओं के लिये एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाने के लिये तैयार किया गया है।

इसका उद्देश्य किसानों को उनके उत्पादों की अच्छी कीमत मिल सकें, इस हेतु कृषि बाजार में आवश्यक सुधारों को प्रोत्साहित करना है।

वर्ष 2016 से प्रारम्भ की गई केन्द्रीय कृषि पोर्टल ई.राष्ट्रीय कृषि बाजार कृषि योजनाओं के लिये एकीकृत एक केन्द्रीय पोर्टल है। एग्रीस्टैक, प्रौद्योगिकियों और डिजिटल डेटाबेस का एक संग्रह है जो किसानों और कृषि क्षेत्र पर केन्द्रित है। इसका उद्देश्य भारत में भूमि के डिजिटलीकरण से लेकर मेडिकल रिकॉर्ड तक के आंकड़ों को डिजिटालाइज करने के लिये व्यापक प्रयास करना है। इसमें मिट्टी का परीक्षण, कीटनाशक छिड़काव के लिये ड्रोन, कृषि उपज में सुधार तथा किसानों की आय को बढ़ावा देना आदि शामिल है। ड्रोन प्रौद्योगिकी एक ऐसा मानव रहित विमान है जिसे दूर से ही नियंत्रित तरीके से उड़ाया जा सकता है।

कृषि में डिजिटल तकनीकी के प्रयोग के लाभ

कृषि क्षेत्र में डिजिटल तकनीकी के प्रयोग से कृषि उत्पादों की मार्केटिंग एवं व्यापार के लिये एक सकारात्मक मार्ग प्रशस्त किया है। कृषि क्षेत्र में डिजिटल तकनीकी के प्रयोग के निम्नांकित लाभ है –

- कृषि उत्पादकता को बढाती है ।
- मृदा के क्षरण को रोकती है ।
- फसल उत्पादन में रासायनिक अनुप्रयोग को कम करती है ।
- जल संसाधनों का कुशल उपयोग ।
- परामर्श सेवा की उपलब्धता ।
- क्षमता निर्माण एवं सशक्तिकरण ।
- वित्तीय समावेषन, बीमा एवं जोखिम प्रबंध ।
- आपदा प्रबन्धन एवं त्वरित चेतावनी प्रणाली का विकास ।
- पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहन।

डिजिटलीकरण प्रयोग से भारतीय कृषि का भविष्य उज्जवल दिखलाई पड़ रहा है, इसमें बावजूद निम्नांकित ऐसे क्षेत्र है जो डिजिटल कृषि के क्षेत्र में चुनौतियां बनकर खड़े है।

- उच्च पूंजी लागत जो किसानों को खेती के डिजिटल तरीकों को अपनाने के लिये हतोत्साहित करती है।
- बुनियादी कम्प्यूटर साक्षरता की कमी ई–कृषि के तीव्र विकास में एक प्रमुख बाधा है।
- किसानों को कुशल व सुचारू बिजली आपूर्ति की अनुपलब्धता कृषि के क्षेत्र में एक प्रमुख बाधा है जिसके चलते सिंचाई व अन्य व्यवस्थायें ठप्प पड़ जाती है और किसानों को उत्पादन के क्षेत्र में भारी नुकसान उठाना पड़ता है।
- भारत में नौकरशाही का वेबेरियन मॉडल कृषि क्षेत्र में एक मुख्य बाधा है।
- सीमित वित्तीय संसाधन, छोटे खेत व अधिकांश कृषि भूमि को पट्टे पर देना भी कृषि क्षेत्र के एक महत्वपर्ण चुनौती है।

वित्तीय संस्थाओं की भूमिका

वर्ष 2015 में डिजिटल इण्डिया योजना प्रारम्भ होने के साथ अन्य क्षेत्रों के समान ही वित्तीय क्षेत्र में भी कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुये। वर्तमान में परम्परागत बैंकिंग का दौर समाप्त हो चुका हैं, उसका स्थान पर बैंकलेस बैंकिंग की अवधारणा ने ले लिया है। तकनीकी विकास ने आज बैंकों के स्वरूप को पूर्णरूपेण बदल दिया है। इसमें बिग डेटा, क्लाउड कम्प्यूटिंग, स्मार्टफोन और ऐसे अन्य नवाचार शामिल हैं। मोबाइल बैंकिग ने तो ग्राहकों और बैंक के बीच संवाद के माध्यम को ही पूरी तरह से बदल दिया है। मोबाइल बैंकिंग के द्वारा घर से दूर रहकर भी अपने बैंक के खातों की जानकारी ली जा सकती है, पैसों को ट्रांसफर करना, बिलों का भुगतान इत्यादि बहुत ही आसान हो गया है, साथ ही यह मोबाइल बैंकिंग सुविधा 24 घंटे उपलब्ध होती हैं। समान रूप से एटीएम मशीनों ने बैंकिंग व्यवस्था को काफी सीमा तक सरल, सुरक्षित और सुविधाजनक बना दिया है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में किसान कल्याणकारी योजनाओं को लाभार्थी तक सीधा पहुचाने का माध्यम डिजिटलीकरण बन गया है।

आज किसानों को बेहतर बाजार मूल्य निर्धारण में सक्षम बना दिया है। ब्लॉकचेन तकनीकी खेतों, स्टॉक, सुरक्षित लेन–देन और खाद्य ट्रेसेबिलिटी पर छेड़–छाड़ प्रूफ और सटीक डेटा प्रदान करती है। इस प्रकार किसानों को महत्वपूर्ण डेटा रेकार्ड करने और संग्रहित करने के लिये दस्तावेजों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

डिजिटलीकरण से ग्रामीण विकास (राजस्थान के टोंक जिले के

अध्ययन के सन्दर्भ में शोध अध्ययन का विश्लेषण) के लिए अनुसंधान की संरचना को स्पष्ट किया गया, जिसमें शोध परियोजना में अनुसंधान की विधि, अनुसंधान उद्देश्य, अनुसंधान परिकल्पनाएँ, चर की पहचान, अनुसंधान डिज़ाइन, जनसंख्या नमूना, नमूना चयन विधि और उसका औचित्य, डेटा संग्रहण विधि, नैतिक विचार, अनुसंधान उपकरण, विश्वसनीयता विश्लेषण और पायलट अध्ययन के परिणामों को शामिल किया गया।

अध्ययन के दौरान, नमूना चयन और डेटा संग्रहण के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान प्रक्रियाओं का पालन किया गया, ताकि प्राप्त परिणाम विश्वसनीय और प्रामाणिक हों । इसके साथ ही, अध्ययन के अंतर्गत विभिन्न खंडों में जनसांख्यिकीय विश्लेषण, डिजिटल इंडिया अभियान की जागरूकता और उपयोगिता, शासन, शिक्षा, कृषि और बैंकिंग पर डिजिटल इंडिया का प्रभाव, तथा डिजिटल सेवाओं के उपयोग में आने वाली चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

शोध अध्ययन ने राजस्थान में टोंक जिले के ब्लॉकों का अनुभवमूलक अध्ययन का विश्लेषण किया है टोंक जिले के आठ ग्रामीण (आलियाबाद, उनियारा, चेनपुरा, जोधपुरिया, देवपुरा, निमोला, महंदावास, हटौना) निवासियों में डिजिटल तकनीक के प्रति सकारात्मक जागरूकता रही है। शोध परिकल्पना का अनुमानित गुणांक भी डिजिटल इंडिया अभियान का प्रभाव शासकीय स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया में सकारात्मक प्रमाणित करता है अन्ततः विशाल लोकतांत्रिक देश भारत सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास के अन्तयोदय दर्शन को सार्थक सिद्धीकरण को ओर गतियमान है।

शासन, शिक्षा, कृषि और बैंकिंग पर डिजिटल इंडिया अभियान का प्रभाव

डिजिटल इंडिया अभियान को सशक्त समाज व ज्ञान अर्थव्यवस्था के लिये एक कार्यक्रम के रूप में उद्घोषित किया है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इस कार्यक्रम को आई. टी. (इंडियन टैलेंट / भारतीय प्रतिभा) + आई. टी. (इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी/ सूचना प्रौद्योगिकी) = आई. टी. (इंडिया टुमारो / कल का भारत) के रूप में परिभाषित किया है। यह कार्यक्रम सरकारी विभागों और भारत के नागरिकों को एक–दूसरे के समीप लाने की भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी पहल है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना रहा है कि बिना कागजी इस्तेमाल के सरकारी सेवायें इलेक्ट्रॉनिक रूप से जनता तक पहुँच सकें साथ ही इस कार्यक्रम का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों को उच्च गति इंटरनेट के माध्यम से जोड़ना हैं।

टोंक जिले की 236 ग्राम पंचायतें, जो ग्रामीण टोंक के स्थानीय स्वशासन के लिये जिम्मेदार है गाँवों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में किये गये प्रत्येक प्रयास को लागू करने के लिये एक प्रेरक शक्ति हैं। केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों की योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में इन पंचायतों की महत्वपूर्ण भूमिका है। पंचायती राज मंत्रालय विभिन्न तरीको से आत्मनिर्भर गाँवों के निर्माण की दिशा में सार्थक योगदान दे रहा है, जैसे पंचायतों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना, अपने स्वयं के राजस्व स्रोत विकसित करने के लिये उनकी क्षमताओं का नये सिरे से आकलन करना, उन्हें डिजिटल अनुकूल बनाना, उन्हें पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाना और भविष्य के जलवायु परिवर्तन से मुकाबले के लिये तैयार करना आदि।

इस शोध अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि डिजिटल इंडिया अभियान ने ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न **पहलुओं पर** सकारात्मक प्रभाव डाला है। विशेष रूप से वित्तीय समावेशन और प्रशासनिक सुधार के क्षेत्रों में डिजिटल इंडिया का प्रभाव अत्यधिक महत्वपूर्ण पाया गया, जबकि शिक्षा और कृषि के क्षेत्रों में इसके प्रभाव अपेक्षाकृत कमजोर रहे।

डिजिटलीकरण से ग्राम उत्थान की संकल्पना को साकार करने के लिए केंद्र–राज्य सरकार, ग्रामीण स्वायत्त संस्थाओं के सहयोग से स्थानीय प्रशासन, निजी क्षेत्र, एनजीओ, शिक्षण संस्थान और ग्रामीण नागरिक, सभी को मिलकर काम करना होगा, ताकि डिजिटल सेवाओं के माध्यम से टोंक जिले का समतुल्य विकास सुनिश्चित हो सके। टोंक जिला राजस्थान में डिजिटल अभिसंरचनाओं से ग्रामीण विकास का आदर्श प्रतिमान स्थापित करने की क्षमता रखता है। टोंक जिले के साथ–साथ सम्पूर्ण भारत में ग्रामीण श्रमिकों को रोजगार के साथ कौशल प्रशिक्षण से आत्मनिर्भर बनाने के अभियान चल रहे हैं। वर्ष 2021–22 के वर्ष में मनरेगा में 5 लाख करोड़ से ज्यादा प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण मैं मध्यस्थों की भूमिका का अंत किया गया है भारत के गांव रोजगार युक्त, शिक्षा युक्त, पोषण युक्त और खाद्य सुरक्षा से सुनिश्चित स्वस्थ और सुरक्षित बन सके, इसमें डिजिटलीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। जी–20 की अध्यक्षता में भारत के डिजिटल अभियान को विकसित देशों के मध्य सराहा गया। आने वाला कल डिजिटल अभियान से नए भारत के नवनिर्माण के संकल्प से प्रेरित आत्मनिर्भर भारत का होगा।

15वें वित्त आयोग में 2,97,509 करोड़ रुपए का बजट ग्रामीण विकास को समर्पित कर नए ग्रामीण भारत के निर्माण को गतिशीलता दी है। अंततः ग्रामीण स्तर पर डिजिटल वित्तीय समावेशन से भारत आर्थिक स्तर पर पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था से आगे के पायदान की और

से बढ़ रहा है।

निष्कर्षतः डिजिटलीकरण की आमजन तक सुलभ पहुँच से ग्रामीण भारत को सशक्त बनाया जा सके। स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर ग्रामीण भारत सशक्त भारत की नींव होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तकें और पत्रिकाएँ

1. लाखा राम चौधरी (2021). "ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थायें". जयपुर : रावत पब्लिकेशन्स।
2. लोक प्रशासन, अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका, खण्ड–14, अंक–2, जुलाई–दिसम्बर, 2022, नई दिल्ली।
3. अंजली वर्मा (2012). "भारत में पंचायती राज". नई दिल्लीः ओमेगा पब्लिकेशन्स।
4. सी.एम. चौधरी (1991). "ग्रामीण विकास–एक अध्ययन". जयपुरः सबलाइम पब्लिकेशन्स।
5. कटार सिंह (2017). "ग्रामीण विकास–सिद्धान्त, नीतियाँ एवं प्रबन्ध", तृतीय संस्करण, सेज पब्लिकेशन्स।
6. डॉ. के.के. शर्मा (2009). "भारत में पंचायती राज", जयपुर : कॉलेज बुक।
7. मुन्नी पड़लिया (2009). "भारत में पंचायती राज व्यवस्था". नई दिल्लीः अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा.लि.।
8. डॉ. राजकुमारी (जैन) सुराणा (2000). "भारत में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण एवं नव पंचायती राज". जयपुरः राज पब्लिशिंग हाउस।
9. महिपाल (1996). "पंचायती राज अतीत, वर्तमान और भविष्य". नई दिल्लीः सारांश प्रकाशन प्रा.लि.।
10. नीतिश कुलश्रेष्ठ (2012). "पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास योजनायें". जयपुरः रितु पब्लिकेशन्स।
11. जॉर्ज मैथ्यू (2003). "भारत में पंचायती राज परिप्रेक्ष्य और अनुभव". नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन।
12. अजय कुमार (2019). "डिजिटल इंडिया", नई दिल्लीः प्रभाव प्रकाशन।
13. अखिलेश, एस एवं शुक्ला, संध्या (सम्पादक). "भारत में ग्रामीण विकास". रेवाः गायत्री पब्लिकेशन्स, 2010।
14. अखिलेश, एस. (2010). "रूरल डवलपमेंट इन इंडिया". रेवाः गायत्री पब्लिकेशन्स।
15. बाबेल, बसंतीलाल (2001): "पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास योजनायें. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
16. प्रो. आर.पी. जोशी एवं रूपा मंगलानी (2000). "भारत में पंचायत राज", जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
17. डॉ. अरूण कुमार श्रीवास्तव (1994). "भारत में पंचायती राज". जयपुरः आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स।
18. डॉ. जनक सिंह मीना (2016). "भारत में प्रशासनिक सुधार एवं सुशासन". जयपुरः पोइन्टर पब्लिशर्स।
19. महीपाल (2012). "पंचायती राज चुनौतियाँ एवं सम्भावनायें", नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट।
20. बी.सी. नरूला (2009): "पंचायती राजव्यवस्था". नई दिल्लीः अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।
21. डॉ. (श्रीमती) पारूला शर्मा (2007). "पंचायती राज प्रशासन". जयपुरः रितु पब्लिकेशन्स।
22. भावना गुप्ता (2010). "पंचायती राज और कानून". जयपुरः इशिका पब्लिशिंग हाउस।
23. डॉ. गिरवर सिंह राठौड़ (2016). "भारत में स्मार्ट पंचायती राज व्यवस्था". जयपुरः गौतम बुक कम्पनी।
24. वीर गौतम (2012). "पंचायती राज व्यवस्था". नई दिल्लीः ओमेगा पब्लिकेशन्स।
25. शर्मा, शकुन्तला (1994). "ग्रॉस रूट पोलिटिक्स एण्ड पंचायती राज". नई दिल्लीः दीप पब्लिकेशन्स।

डॉ निमिशा गौड़

असिसटेन्ट प्रोफेसर

कनोड़िया पी. जी. महिला महाविधालय

जयपुर।

Email: nimishagaur1@gmail.com

Mob.No. 9214982003

19

सामाजिक उत्थान : हिन्दी साहित्य की भूमिका

डॉ0 सुनीता रानी

सारांशः

साहित्य वह सशक्त माध्यम है, जो समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करता है। जहाँ एक ओर यह सत्य के सुखद परिणामों को रेखांकित करता है, वहीं असत्य का दुखद अंत कर सीख व शिक्षा प्रदान करता है । अच्छा साहित्य व्यक्ति और उसके चरित्र निर्माण मे भी सहायक होता है। यही कारण है कि समाज के नव निर्माण में साहित्य की केंद्रीय भूमिका होती है। साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ–साथ जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देता है तथा कालखंड की विसंगतियों, विद्रूपताओं एवं विरोधाभासों को रेखांकित कर समाज को सन्देश प्रेषित करता है, जिससे समाज में सुधार आता है और सामाजिक विकास को गति मिलती है। यह निर्विवाद है कि साहित्य द्वारा समाज में परिवर्तन अवश्य लाया जा सकता है। विकृत साहित्य से समाज पतन की ओर तथा सद्साहित्य से उन्नति पर अग्रसर होता है। साहित्य और समाज में घनिष्ट संबंध है। वर्तमान समय में जब समाज दिशाहीन हो रहा है, नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है, जीवन की विसंगतिया साहित्यकार को विरुद्ध लिखने के लिए बाध्य कर रही है । विचारणीय यह है कि वर्तमान में जो अच्छा लिखा जा रहा है, वह पढ़ा नहीं जा रहा और जो पढ़ा जा रहा है वह निर्माण की भूमिका नहीं निभा रहा।समाज के यथार्थवादी चित्रण, समाज सुधार का चित्रण और समाज के प्रसंगों की जीवंत अभिव्यक्ति साहित्य और समाज के नवनिर्माण का कार्य करती है। इसी संदर्भ में अमीर खुसरो से लेकर तुलसी, कबीर, जायसी, रहीम, निराला, प्रेमचन्द तक की श्रृंखला के रचनाकारों ने समाज के नवनिर्माण में अभूतपूर्ण योगदान दिया है । व्यक्तिगत हानि उठाकर भी उन्होंने शासकीय मान्यताओं के खिलाफ जाकर समाज के निर्माण हेतु कदम उठाए। साहित्य समाज को स्वस्थ, कलात्मक, ज्ञानवर्धक मनोरंजन प्रदान करता है। साहित्यकार समाज के प्रत्येक वर्ग के नजदीक होता है। मानव में जो बौद्धिक परिवर्तन आया वह परिवर्तन हमें साहित्य में तो मिलता है लेकिन इतिहास में नहीं । समाज में जो परिवर्तन साहित्य कर सकता है, वह और कोई नहीं कर सकता। साहित्य न केवल मानव में विवेक जागृत करता है अपितु राष्ट्र उत्थान में महत्त्वपूर्ण निभाता है।

प्रस्तावना

साहित्य संस्कृति का संरक्षक और भविष्य का पथ प्रदर्शक है। संस्कृति द्वारा संकलित होकर ही साहित्य 'लोकमंगल' की भावना से समन्वित है। उन्नसवीं एवं बीसवीं शताब्दी को भारतीय साहित्य के सांस्कृतिक एवं समाज निर्माण की शताब्दी कहा जा सकता है। इस काल के साहित्य ने समाज जागरण के लिए कभी अपनी पुरातन संस्कृति को निष्ठा के साथ स्मरण किया है, तो कभी तात्कालिक स्थितियों पर गहराई के साथ चिंता भी अभिव्यक्त की ।[1] आज आवश्यकता इस बात की है कि सभी वर्ग यह समझे किं साहित्य समाज के मूल्यों का निर्धारक है और उसके मूल तत्त्वों को संरक्षित करना जरूरी है क्योंकि साहित्य जीवन के सत्य को प्रकट करने वाले विचारों और भावो की सुन्दर अभिव्यक्ति है। किसी भी रष्ट्र या समाज के स्तर का अनुमान उसके साहित्य के स्तर से लगाया जा सकता है। साहित्य न केवल समाज का दर्पण होता है, बल्कि वह दीपक भी होता है, जो समाज का उसकी बुराइयों की ओर ध्यान दिलाता है तथा एक आदर्श समाज का रूप प्रस्तुत करता है। विद्वानों ने किसी भी देश को बिना साहित्य के मृत्तक समान माना है।

अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है
मुर्दा हैं वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।

साहित्य किसी देश, समाज तथा उसकी सभ्यता या संस्कृति का दर्पण होता है, भारतीय साहित्य की महान परम्पराओं के कारण ही इस देश का गौरव विश्व के मानचित्र पर अक्षुण बना रहा है। जिसमे भारतीय साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से विश्व समाज का सदैव मार्गदर्शन किया है। कालिदास, सूरदास, तुलसीदास, कबीर, मीरा आदि प्राचीन एवं मध्यकालीन कवियों द्वारा फैलाए गए प्रकाश से भारतीय समाज सदैव आलोकित होता रहा है।[2]

विश्व साहित्य का अनुशीलन करने से प्रतीत होता है. साहित्य दो प्रकार का होता है – सार्वकालिक साहित्य और समकालीन साहित्य । सार्वकालिक रचना शाश्वत होती है, जिस पर भूतकाल, भविष्य और वर्तमान का कोई प्रभाव नहीं नहीं होता किन्तु समकालीन समय में साहित्य को संघर्ष उद्देलनो और आलोचनाओ को झेलना पड़ता है।

मानवीय संवेदनाओं से ओत–प्रोत सशक्त रचना कालजयी होकर एक स्थान पर ठहर जाती है और पीढ़ी दर पीढ़ी जनता उसका आस्वादन कर संरक्षण पाते हैं। ऐसी महान कृत्तिया सीमित दायरे में न रहकर संपूर्ण विश्व की शक्ति बन जाती है।

कबीरदास का काव्य आज भी प्रासंगिक है। ये एक

क्रांतिपुरुष है जिन्होंने समाज के भीतरी और बाहरी दोनों पक्षों को आक्रमण का निशाना बनाया। कबीर जी ने देखा कि व्रत, रोजा, और नमाज आदि बाहरी आडम्बरों के कारण हिन्दू और मुस्लिम लोग आपस में लड़ते रहते है। इन्होंने कहा कि दूसरे के धर्म को नीचा दिखाकर खुद के धर्म को ऊंचा नहीं उठाना चाहिए।

दिन भर रोजा रहत है, रात हनत दे गाय ।
यह तो खून व बन्दगी कैसे खुशी खुदाय ॥ 3

कबीरदास जी का मानना है कि ईश्वर तो संसार में कण–कण में समाहित है तो क्यों पत्थर की पूजा करने से ही ईश्वर की प्राप्ति होती है। अगर ऐसा है तो मैं पहाड़ को पूज लेता । इससे अच्छा है घर में उपस्थित चक्की को पूज लेता जो अनाज को पीस कर लोगों का पेट भरती। वे मूर्ति पूजा का विरोध करते हुए कहते हैं–

पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजू पहार ।
घर की चाकि क्यों नाहि पूजै, पीसि खाय संसार । 4

तुलसीदास हिन्दी साहित्य के जगमगाते नक्षत्र है, उन्होंने अपने युग की वास्तविक परिस्थितियों का संपूर्णता से अध्ययन, मनन और चिन्तन किया था। रामचरितमानस के माध्यम से अनेक आदर्श प्रस्तुत किये है। तुलसी ने एक आदर्श समाज एवं आदर्श धर्म की प्रतिष्ठा की है। पात्रों के आदर्श चित्रण द्वारा लोकहित एवं लोकमंगल की शिक्षा देते हुए सम्पूर्ण विश्व के मानवो के सम्मुख आदर्श जीवन की रूपरेखा प्रस्तुत की है। दुष्टों के दलन एवं भक्तों के उद्धार हेतु राम की अवतारणा की है। रामचरितमानस में शाश्वत साहित्य के लिए अनिवार्य सभी गुण विद्यमान है। शासक के कर्तव्यों का विवेचन करते हुए भी उन्होंने लोककल्याण की भावना को प्रधानता दी है।

जासु राज्य प्रिय प्रजा दुखारी,
सो कृप अवसि नरक अधिकारी ।।

जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' एक ऐसा महाकाव्य है जो जीवन जीने की कला सिखाती है। कामायनी का प्रेरक तत्व जीवन के अर्थ की खोज है जो उस महाकाव्य का प्रतिपाद्य विषय है शाश्वत सत्य, सत्–असत् वस्तुओं के संघर्ष में सौन्दर्य की झलक, लोकहित और लोकानुरंजन के समन्वित रूप की प्रस्तुति और सौन्दर्योन्मुखी वृत्ति। श्रद्धा सर्ग की पंक्तियाँ आज भी सम्पूर्ण विश्व को मानवता के सूत्र में पिरोकर शांति का पाठ पढ़ाना चहती है,

शक्ति के विद्युत कण जो व्यस्त विकल बिखरे है।
हो निरुपाय समन्वय उसका करे व्यस्त विजायनी मानवता हो जाय ।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र , मुंशी प्रेमचंद,निराला, मुक्तिबोध जैसे साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज में सदाचार के संस्कार, सामाजिक समरसता के संस्कार आदि की स्थापना की है। भारतेन्दु जी ने अंग्रेजों की कुरीतियों को चुनौति देते हुए अपनी आलसी, रूढ़िग्रस्त, सोए हुए, फूट के शिकार, देशवासियों को जगाने का कार्य किया। भारतेन्दु जी ने स्त्री–शिक्षा का प्रचार किया। किन्तु ऐसी स्त्री शिक्षा का नहीं जो स्त्री को निर्लज्ज बनाती हो।

साहित्य संस्कृति का संरक्षक और भविष्य का पथ–प्रदर्शक है। संस्कृति द्वारा संकलित होकर ही साहित्य 'लोकमंगल' की भावना से समन्वित होता है। सुमित्रानंद पंत की पंक्तियाँ इस संदर्भ में कहती है कि

वही प्रज्ञा का सत्य स्वरूप,
हृदय में प्रणय अपार
लोचनों में लावण्य अनूप
लोक सेवा में शिव अविकार ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश नित नवीन समस्याओं से घिरने लगा है तब साहित्यकारों ने उन समस्याओं को लेकर अपनी लेखनी चलाई। यदि हमारा साहित्य उन्नत है, समृद्धिशील है तो हमारा राष्ट्र विकसित होगा । महिला की क्षमता को अनदेखा करके समाज की कल्पना करना बेमानी होगा। शिक्षा और महिला संशक्तिकरण के बिना परिवार, समाज और देश का विकास संभव नहीं है।

सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, उषा प्रियवंदा आदि लेखिकाओं ने अपने समय की अभिव्यक्ति दी है।

निष्कर्षः

समाज और साहित्य का गहरा सम्बन्ध है, और दोनों एक दूसरे से पूरक हो, समाज शरीर है तो साहित्य आत्मा, मनुष्य न तो समाज से अलग हो सकता है और न साहित्य से । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साहित्य एवं संस्कृति का संरक्षण करना समय की आवश्यकता बन गई है। अच्छे साहित्य के सृजन से समाज में सकारात्मक सोच उत्पन्न होती है आवश्यकता इस बात की है कि सभी वर्ग यह समझे कि साहित्य समाज के मूल्यों का निर्धारक है और उसके मूल तत्वों को संरक्षित करना जरूरी है क्योंकि साहित्य जीवन के सत्य को प्रकट करने वाले विचारों और भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति है ।

सन्दर्भ सूचीः

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
2. वही
3. कबीर ग्रंथावली, श्याम सुंदरदास
4. माता प्रसाद, कबीर ग्रंथावली, पृष्ठ 65
5. मुंशी प्रेमचंद का निबंधः साहित्य का उद्देश्य

पत्र व्यवहार का पता
डॉ0 सुनीता रानी
आई. बी. पी.जी. महाविद्यालय
जी.टी. रोड, पानीपत – 132103
मोबाइल नं – 9996000086

20

प्रकृति की सुरक्षा हमारा कर्तव्य

Dr. Annu

सारांश

भारत में वायु प्रदूषण लगातार बढ़ता जा रहा है। केवल महानगरों में ही नहीं छोटे शहरों में भी वायु प्रदूषण खतरे की सीमा तक पहुँच चुका है। 'जंगल' देश को प्राण वायु प्रदान करने वाले प्रमुख क्षेत्र होते हैं। उनकी सुरक्षा का विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पर्यावरण संरक्षण के लिए हो रहे प्रयासों को स्पष्ट करने का प्रयास इस पेपर में किया गया है। वर्तमान परिस्थितियों को सुधारने के लिए हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए यह भी इसके अंतर्गत बताया गया है। अगर हम इन नियमों की पालना करते हैं तो हम प्रकृति की सुरक्षा करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। जलवायु में परिवर्तन दुनिया भर के देशों के लिए एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है, क्योंकि यह ग्लोबल वार्मिंग के माध्यम से मानव जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। प्रकृति की सुरक्षा में ही हमारी सुरक्षा है इसीलिए हमें अपने जीवन में प्रकृति को विशेष महत्व देने की जरूरत है।

परिचय

भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार देश का कुल वन और वृक्ष आवरण 80.9 मिलियन हेक्टेयर है। यह देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 24.62ः है। इसमें वनावरण क्षेत्र 21.71ः जबकि वृक्षावरण क्षेत्र लगभग 2.91ः है। वन क्षेत्र में 2019 की तुलना में 2261 वर्ग किलोमीटर वृद्धि हुई है। यह वृद्धि मुख्य रूप से तीन राज्यों आंध्र प्रदेश 647 वर्ग किलोमीटर, तेलंगाना 632 वर्ग किलोमीटर तथा उड़ीसा 537 वर्ग किलोमीटर है। केंद्रीय पर्यावरण वन राज्य एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने स्तर्वित भारतीय वन स्थिति रिपोर्ट 2021 जारी की इसी रिपोर्ट के अनुसार 2030 तक भारत के 45 से 64ः वन जलवायु परिवर्तन और बढ़ते तापमान से प्रभावित होंगे। वन किसी भी देश के फेफड़े की तरह होते हैं जो उसको प्राण वायु प्रदान करते हैं, उनमें कमी देश की प्राणवायु में कमी है।

विश्व स्वस्थ्य संगठन के अनुसार , पर्यावरण प्रदूषण के कारण हर साल लगभग 7 मिलियन लोग मरते हैं। भारत में भी हवा लगातार प्रदूषित होती जा रही है कई महानगरों में तो हवा का स्तर बहुत ज्यादा खतरनाक हो चुका है। वायु गुणवत्ता सूचकांक ए क्यू आई एक ऐसा उपकरण है जो बताता है की हवा में प्रदूषण कितना है।

ए क्यू आई के स्तर

- 0 से 50 अच्छी वायु गुणवत्ता
- 51 से 100 संतोषजनक वायु गुणवत्ता
- 101 से 200 मध्य वायु गुणवत्ता
- 201 से 300 खराब वायु गुणवत्ता
- 301 से 400 बहुत खराब वायु गुणवत्ता
- 401 से 500 गंभीर वायु गुणवत्ता

ए क्यू आई को विभिन्न वायु प्रदूषको जैसे कि पीएम 2.5, पीएम 10, ओजोन कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड और सल्फर डाइऑक्साइड के स्तर के आधार पर गणना की जाती है। जैसे जैसे एक क्यू आई का मान बढ़ता है वैसे–वैसे हवा में प्रदूषण का स्तर बढ़ता है। हाल ही में किए गए एक अध्ययन के अनुसार दिल्ली में ए क्यू आई का स्तर 147, हरियाणा में 139, राजस्थान में 136, तेलंगाना में 92 रहा है। सबसे कम मिजोरम में 46 हैं। कुछ घटनाएं स्थिति को और गंभीर बना देती है। पर्यावरण संरक्षण पर चोट पहुंचाने वाली घटना तेलंगाना में देखने को मिली। एक रिपोर्ट के अनुसार तेलंगाना में वन क्षेत्र 27292 वर्ग किलोमीटर है जो कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 24.35ः है। एक रिकॉर्ड के अनुसार 27292 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में से आरक्षित वन क्षेत्र 19696.23 वर्ग किलोमीटर है और संरक्षित वन क्षेत्र 6953.47 वर्ग किलोमीटर है जबकि शेष 64235 वर्ग किलोमीटर अवर्गीकृत है।

मार्च–अप्रैल 2025 में तेलंगाना के कांचा गचिबाबली जंगल की कटाई का मामला सामने आया। हैदराबाद यूनिवर्सिटी के कांचा जंगल में आईटी पार्क के निर्माण के लिए पेड़ों की कटाई की गई। हैदराबाद यूनिवर्सिटी विश्वविद्यालय के छात्र समूह और पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने प्रकृति संरक्षण संबंधी चिंताओं का हवाला देते हुए स्थल पर विकास कार्य करने के प्रस्ताव का विरोध किया। विरोध प्रदर्शन करने वालों ने ए आई का प्रयोग करके वीडियो बनाएं जिससे इस विषय को सोशल मीडिया पर भी खूब प्रचार मिला।

"एक्स पर एक यूजर ने एक तस्वीर को अपने अकाउंट पर शेयर करते हुए कहा की हैदराबाद यूनिवर्सिटी के पास 400 एकड़ जंगल पर बुलडोजर! हजारों वन्य जीवों का दम घोंटा जा रहा हैं। छात्रों की आवाज दबाई जा रही है। क्या विकास का मतलब पर्यावरण की हत्या है?"

"एक अन्य यूजर ने भी इसी तस्वीर को शेयर करते हुए लिखा हैदराबाद में 400 एकड़ जमीन पर फैले जंगल को मात्र इसलिए काटा

जा रहा है कि आईटी सेक्टर का विकास हो सके। क्या आईटी सेक्टर का विकास प्रकृति से बढ़कर है और विकास के चक्कर में कितना विनाश करेंगे हम ? अनुमान है कि यह जंगल काटने से तापमान में 4 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी होगी तो क्या यह सही हो रहा है ?"

इन सभी प्रयासों का परिणाम यह रहा कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय भी इस मामले में शामिल हुआ। सर्वोच्च न्यायालय ने इस मामले का संज्ञान तब लिया जब वरिष्ठ अधिवक्ता के. परमेश्वर ने इसे उसके संज्ञान में लाया, जो वन संबंधी मामलों में न्याय मित्र के रूप में कार्य कर रहे हैं। पीठ ने तेलंगाना उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार (न्यायिक) द्वारा प्रस्तुत अंतरिम रिपोर्ट का अवलोकन किया। जिसमें कहा गया था की बड़ी संख्या में छोटे और मध्य आकार के पेड़ तथा कुछ बड़े पेड़ नष्ट किए जा रहे हैं। पीठ ने 3 अप्रैल के अपने आदेश में कहा, "तेलंगाना उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार (न्यायिक) की रिपोर्ट और उनके द्वारा भेजी गई तस्वीरें चिंताजनक तस्वीर पेश करती हैं। बड़ी संख्या में पेड़ काटे जा रहे हैं और इसके अलावा बड़ी मशीनरी तैनात की जा रही है, जिससे पहले ही लगभग 100 एकड़ क्षेत्र नष्ट हो चुका है" न्यायालय में तेलंगाना के मुख्य सचिव को कई प्रश्नों के उत्तर देने का निर्देश दिया, जिनमें यह भी शामिल था कि क्या राज्य ने वहां ऐसी विकासात्मक गतिविधियों के लिए पर्यावरण प्रभाव आकलन प्रमाण पत्र प्राप्त किया हैं। पीठ ने पूछा कि क्या पेड़ों को काटने के लिए वन अधिकारियों या किसी अन्य स्थानीय कानून से अपेक्षित अनुमति ली गई थी। "सर्वोच्च न्यायालय में केंद्रीय अधिकार प्राप्त समिति को भी संबंधित स्थल का दौरा करने और 16 अप्रैल से पहले अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा था। सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा इस मामले में संज्ञान लेने का प्रभाव यह रहा की कांचा बन की कटाई रोक दी गई। यह पर्यावरण संरक्षण कार्यकर्ताओं की बड़ी जीत है।

आज पर्यावरण संरक्षण में ग्लेशियरों की सुरक्षा भी महत्वपूर्ण मुद्दा है। लद्दाख के हिम मानव के नाम से प्रसिद्ध चेवांग नोरफेल ने थीकसे के निकट एक गांव नांग में सफलतापूर्वक कृत्रिम ग्लेशियर का निर्माण किया था वे 87 वर्षीय इंजीनियर और पूर्व ग्रामीण विकास अधिकारी हैं जिन्होंने अपने समुदाय पर पड़ रहे जलवायु प्रभाव को देखते हुए यह तकनीक खोजी है उनका कहना है "हम पानी नहीं बना सकते इसलिए हमारा एकमात्र विकल्प हमारे पास उपलब्ध स्त्रोत का उपयोग करना है" उन्होंने लद्दाख के विभिन्न गांव की यात्रा की और पाया कि खेतों के लिए जरूरी ग्लेशियर का पिघला पानी जून के मध्य में ही बहाना शुरू होता है जबकि बुवाई का मौसम अप्रैल में शुरू होता है। लंबी सर्दियां होने के कारण पानी की समस्या बनी रहती है। इस समस्या को हल करने के लिए उन्होंने 10 अन्य गांव में भी कृत्रिम ग्लेशियर बनाए हैं ताकि किसानों को समय पर पानी उपलब्ध हो सके । 2025 में सोनम वांग चुक कृत्रिम ग्लेशियर के निर्माण और इसके प्रचार प्रसार में भारत में अहम भूमिका निभा रहे हैं। इसका प्रभाव भारतीय नदियों पर भी देखा जा रहा है।

हम अपनी जीवन शैली में कुछ परिवर्तन लाकर प्रकृति को सुरक्षित करने में अपना योगदान दे सकते हैं

ऊर्जा के नवीन प्राकृतिक फ्रेंडली संसाधनों को बढ़ावा देकर। ऊर्जा के पुराने संसाधन डीजल, पेट्रोलियम आदि हानिकारक और कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन करते हैं। उनकी बढ़ती कीमतें उपभोक्ता के लिए अपने आप में बड़ी समस्या है और इन संसाधनों की एक सीमा तक ही उपलब्धता है इसलिए यह सोचा जाना जरूरी है कि उनके विकल्प में क्या इस्तेमाल किया जा सकता है जो अक्षय भी हो और प्रकृति पर भी उसका कोई नकारात्मक प्रभाव ना हो क्योंकि यह साधन वायु प्रदूषण का प्रमुख कारण हैं। परिवहन के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक तथा सौर ऊर्जा पर संचालित होने वाले वाहन इसका अच्छा विकल्प हो सकते हैं। सोलर ऊर्जा का इस्तेमाल करके हम प्राकृतिक जीवन के साथ सामंजस्य कर सकते हैं। यह बढ़ती ऊर्जा लागत का अच्छा विकल्प है। सोलर लाइट भी पर्यावरण के अनुकूल है। इन्हें लगाना भी आसान है तारों का झंझट भी नहीं होता है। यह सामान्य लाइटिंग से सस्ती पडती हैं गलियों, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मार्गों पर रोशनी के साधन के रूप भी इनका काफी प्रयोग होने लगा है। घर में उपयोग की जाने वाली ऊर्जा की मात्रा को कम करें। जब उपकरण उपयोग में ना ले रहे हों जैसे कि बल्ब, पंखे, मशीन, आयरन आदि, तो उनके स्विच बंद रखें और गैजेट्स के प्लग निकाल दें। लैपटॉप और फोन चार्ज होने बाद चार्जर बंद करें। कुकर में या ढककर खाना पकाएं ताकि गैस अधिक खर्च ना हो।

यात्रा संबंधी विकल्प

यात्रा हमारे नियमित जीवन में कुछ समय के लिए बदलाव लाती है जो हमारे दिनचर्या को राहत देता है। यह हमें प्रकृति के नजदीक ले जाकर, संस्कृतियों के बारे में जानकारी देता है। आज के समय में कैंप हाउस के रूप में रुकने के लिए बहुत सारे विकल्प आपको सहज उपलब्ध हो जाते हैं जिससे आप स्वयं को प्रकृति की गोद में महसूस करते हैं। यात्रा ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव ना डालें इसके लिए हमें कुछ खास बातों का ध्यान रखना चाहिए। हमें उन प्रोडक्ट्स को प्रयोग करना चाहिए जो एक से ज्यादा बार इस्तेमाल हो सके। जहां हम घूमने जाएं वहां कोई भी ऐसा कूड़ा ना फैलाएं जो प्रकृति को नुकसान पहुंचाए। पहाड़ों में विशेष रूप से इन बातों का ध्यान रखना चाहिए। यात्रा के साधन के रूप में संभव हो तो रेल यात्रा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

आहार

पौधों पर आधारित आहार प्राकृतिक संरक्षण में प्रमुख जगह रखता है डिब्बा बंद आहार को बनाने में ऊर्जा की खपत होती है इसे सुरक्षित रखने के लिए जो केमिकल प्रयोग किए जाते हैं वह स्वास्थय और प्रकृति दोनों के लिए हानिकारक है। इस तरह का खाना जीन पैकेट में आता है वह कूड़े के ढेर का निर्माण करता है। जिससे हमारा ग्रह प्रदूषित होता है विकसित राष्ट्रो में यह कूड़े के प्रमुख कारण है। जिनसे निपटाना अपने आप में बड़ी समस्या है जबकि पौधों से सीधे प्राप्त खाना हमारे स्वास्थ्य तथा प्रकृति दोनों के लिए हितकर है क्योंकि उनसे उत्पन्न कूड़े से खाद बन जाती है और फलों और सब्जियों के छिलके पशुओ के द्वारा आहार के रूप में इस्तेमाल कर लिए जाते हैं।

पर्यावरण तथा मौसम के अनुकूल कपड़े पहनना

सोशल मीडिया के प्रभाव में आकर नए–नए कपड़े खरीदना जबकि आपके पास पहले से ही उपयोग लायक कपड़े हैं भी गलत है। कपड़ों के निर्माण, उनकी रंगाई तथा उनकी सिलाई में इस्तेमाल होने वाली मशीनों से भी प्रकृति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह सभी जल, थल तथा वायु के प्रदूषण के कारण बनते हैं अतः कपड़े अपनी जरूरत के अनुरूप खरीदने चाहिए ना की फैशन के अनुरूप. अपने पुराने उपयोग योग्य कपड़ों को चौरिटी में दे सकते हैं ताकि वह जरूरतमंद लोगों के काम आए उनको स्टोर करके ना रखें इस बात का भी ध्यान रखें कि आप जो पहन रहे हैं वह मौसम के अनुकूल हो जैसे गर्मी के मौसम में हल्के कपड़े पहनें ताकि एयर कंडीशनर की जरूरत कम महसूस हो। इसी तरह से सर्दियों में भी गर्म कपड़ों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए ताकि हीटर का प्रयोग कम करना पड़े क्योंकि यह दोनों ही ऊर्जा संसाधनों पर गहरा प्रभाव डालते हैं। यह इलेक्ट्रिसिटी की खपत बढ़ा देते हैं. इलेक्ट्रिसिटी को उत्पन्न करने में प्रयोग होने वाले कोयले की वजह से जो प्रदूषण होता है वह प्रकृति के लिए नुकसानदायक है और यह ग्लोबल वार्मिंग का कारण भी बनते हैं।

प्राकृतिक रूप से घरों का निर्माण

घर को बनाते हुए इस बात का विशेष ध्यान रखें की धूप तथा हवा अच्छे से घर में प्रवेश कर सके। घर की ऊर्जा जरूरत को पूरा करने में सोलर पैनल भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं जो की ऊर्जा का एक अक्षय साधन है बारिश के पानी को सुरक्षित करने के लिए भी घर में उचित व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि उस पानी को जरूरत के हिसाब से इस्तेमाल किया जा सके. हवा को साफ रखने के लिए पौधों को जरूर लगाना चाहिए यह घर के अंदर हवा को तथा माहौल को सकारात्मक और स्वास्थ्य के अनुरूप बनाते हैं। अगर संभव हो तो घर के बरामदे में पेड़ों के लिए जगह जरूर रखी जाए। पेड़ ऑक्सीजन का प्रमुख स्रोत है यही पर्यावरण में हो रहे अचानक परिवर्तनों को रोक सकते हैं। घर में इस्तेमाल होने वाले सामान जैसे पर्दे, फर्नीचर, बल्ब, किचन के गैजेट्स आदि भी पर्यावरण को ध्यान में रखकर इस्तेमाल किए जाने चाहिए। जितना संभव हो प्रकृति से सीधे प्राप्त खाद्य पदार्थो तथा कम से कम केमिकल से बने गैजेट्स को इस्तेमाल करें। पेंट भी पर्यावरण को नुकसान न पहुंचने वाला ही प्रयोग करना चाहिए. प्लास्टिक की जगह शीशे, सिलिकॉन, मिट्टी तथा धातु के बर्तनों का प्रयोग करें क्योंकि इसे इन्हें बार–बार प्रयोग करना संभव है। घर में कुछ ऐसा सामान है जो किसी काम का नहीं है जैसे तेल का डिब्बा, सीडी आदि, तो उन्हें किसी और काम लें। इनसे सजावट का सामान या क्राफ्ट बनाएं। प्राकृतिक तरीकों से सफाई करें खिड़कियां, फर्श, फ्रिज आदि की सफाई के लिए प्राकृतिक क्लीनर तैयार करें। ऐसे उत्पादों को अपनाएं जो पौधा–आधारित अवयवों से बने हों। साथ ही इस्तेमाल के समय रासायनिक अवशेष नहीं छोड़ें और प्रकृति को नुकसान न पहुंचने वाला भी हों, जैसे नारियल के जूट से तैयार किए जूना या स्क्रबर।

बागवानी

इसके माध्यम से आप अपने घर में किचन गार्डन बना सकते हैं जो न केवल आपके किचन की जरूरत को पूरा करेगा बल्कि आपके बिना केमिकल कीटनाशकों के फल तथा सब्जी उपलब्ध हो सकेंगे। कीड़ों को नष्ट करने के लिए इस्तेमाल होने वाले कीटनाशक वायु और भूमि प्रदूषण का प्रमुख कारण होते हैं। यह स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है क्योंकि इसे उपजे फलों व सब्जियों को जब हम खाते हैं तो वह हमारे शरीर में कैंसर जैसी घातक बीमारी का कारण बनते हैं। बागवानी से आपके घर को सजावट तथा साफ हवा दोनों एक साथ मिल जाते हैं। आप रसोई के कचरे को रिसाइकल करके अपने बगीचे के पौधों में खाद तथा कीटनाशक तैयार करने में इस्तेमाल कर सकते हैं। मेरीगोल्ड में प्राकृतिक कीटनाशक गुण होते हैं और इन्हें टमाटर के साथ लगाकर सफेद मक्खियों और निमेटोड को दूर भगाया जा सकता है।

पर्यावरण को बढ़ावा देने वाले उपहार

समाज में होने वाले तथा पारिवारिक आयोजनों में उपहार के रूप में प्रकृति से जुड़े उपहार को शामिल करने की आवश्यकता है। पौधे, बीज, पौधों को लगाने के पोट या इनसे जुड़े और उपहार इस श्रेणी में शामिल किया जा सकते हैं। यह उपहार पौधों के प्रति जागरूकता का विस्तार करेंगे। उपहार की पैकिंग भी अखबार तथा पुराने कैलेंडर का प्रयोग करके की जा सकती है। जो न केवल इन चीजों को दोबारा इस्तेमाल लायक बनाएगा बल्कि यह प्लास्टिक से बने उपहार के पैकिंग से होने वाले प्रदूषण को भी रोकेगा।

नवीन व्यवसायों की स्थापना

उन नवीन उपकरणों को बनाने के लिए नए औद्योगिक प्रतिष्ठान स्थापित किए जाने चाहिए जो प्रकृति की सुरक्षा करने वाले

हो। जिन प्रोडक्ट्स में हम सौर ऊर्जा का प्रयोग कर सकते हैं उनका ज्यादा से ज्यादा उत्पादन किया जाना चाहिए। सोलर पैनल, सोलर से संचालित वाहन व अन्य घरेलू तथा दैनिक जीवन में उपयोग होने वाले उपकरण इसी श्रेणी में आते हैं।

प्रकृति और मनुष्य दोनों के स्वास्थ्य के लिए बेहतर है कि हम आसपास के जगह पर पैदल ही जाएं या साइकिल का इस्तेमाल करें। जिस जगह आपको जाना है अगर वह आपके घर से ज्यादा दूर है तो आप सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल कर सकते हैं। प्रकृति से जुड़ी जानकारियां सोशल मीडिया के माध्यम से आप अपने मित्रों तथा परिवार के सदस्यों के साथ साझा करके उन्हें प्रकृति के प्रति जागरूक कर सकते हैं। कोरोना काल में हमारी जीवनशैली कुछ हद तक बदल गई है। हरियाली, पेड़ पौधों और हरित जीवनशैली का हमने महत्व जाना है। महामारी के बीच घर में सब्जियां उगाईं, पौष्टिक आहार अपनाया, घर में रहकर वाहनों से होने वाले प्रदूषण को भी रोका है। पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए। इन प्रयासों को हम जारी रख सकते हैं। लोग उन चीजों के बारे में बात करते हैं जिन पर वे दृढ़ता से विश्वास करते हैं। हम पृथ्वी को नष्ट कर रहे हैं। लोगों को इस तथ्य के बारे में पता होना चाहिए हम पृथ्वी और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को नुकसान पहुँचाए बिना एक जाति के रूप में प्रगति कर सकते हैं। प्रकृति के संरक्षण में कोई योगदान छोटा नहीं है। हम यह योगदान एक पौधा लगाकर भी कर सकते हैं और सामाजिक संगठनों के साथ शामिल होकर भी, जो नदियों को साफ करने, ग्लेशियर को पिघलने से बचाने, औद्योगिक प्रतिष्ठानों के प्रदूषण कैसे काम किया जाए आदि पर लोगों को जागरुक कर रहे हैं। प्रकृति का दोहन कम करें उसे प्राप्त संसाधनों का उन्हें उपयोग करें तथा एक बार उपयोग के बाद उसे दोबारा उपयोग लायक बनाए। इस प्रक्रिया को अपनाने से हम प्रकृति के साथ सामंजस्य बना सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अच्छा भविष्य निर्मत करने में योगदान दे सकते है।

References:

1 Genoveva, G.; Syahrivar, J. Green Lifestyle among Indonesian Millennials: A Comparative Study between Asia and Europe. *J. Environ. Account. Manag.* **2020**, *8*, 397–413. [Google Scholar] [CrossRef]2

2 Chuah, S.-C.; Mohd, I.H.; Kamaruddin; Binti, J.N.; Noh, M.N. Impact of Green Human Resource Management Practices Towards Green Lifestyle and Job Performance. *Glob. Bus. Manag. Res.* **2021**, *13*, 13–23.

3. https://www. bhaskar.com/madhurima/news/green-lifestyle-is-necessary-for-relaxation- know-how-you-can-adopt-128883233.html

4.https://www.greenofficemovement.org/sustainabl e-lifestyle

5. https://www.mdpi.com/2071-1050/15/1/44

6. https://habitatpoint.com/blog/green-lifestyle-why-does-every-human-need-to-adopt-this-way-of-life/

7. https://navbharattimes.indiatimes.com/india/ telangana-kancha-gachibowli-forest-deforestation-viral-photo-debunked-as-ai-generated-fact-check/amp_articleshow/120036177.cms

8. https://www.bhaskar.com/local/mp/ sidhi/news/protest-against-deforestation-and-killing-of-wildlife-in-telangana-134799062.html

9. The Hindu, “SC to hear matter related to tree felling in Hyderabad's Kancha Gachibowli Forest on April 16”, April 14, 2025 12:11 PM New Delhi. https://www.thehindu.com/news/national/sc-to-hear-matter-related-to-tree-felling-in-hyderabads-kancha-gachibowli-forest-on-april-16/article69448399.ece

10.https://www.thehindu.com/news/national/sc-to-hear-matter-related-to-tree-felling-in-hyderabads-kancha-gachibowli-forest-on-april-16/article69448399.ece

11. https://www.bbc.com/future/article/20240612-the-ice-man-of-ladakh-building-artificial-glaciers-in-the-himalayas

12. https://www.sanskritiias.com/hindi/current-affairs/indian-forest-status-report.

13. https://www.aqi.in/hi/dashboard/india

14. https://www.thehindu.com/news/national/india-should-take-lead-in-preserving-glaciers-sonam-wangchuk-writes-open-letter-to-pm/article69265474.ece

Dr. Annu

Associate Professor, Maharaja Agrasen P.G College for Women, Jhajjar – 124103

Mobile Number: 999 20 44806

Email: annu.bahmania@gmail.com

21

विवाह एक धार्मिक संस्कार बनाम लिव इन रिलेशनशिप अधार्मिक आचरण

डॉ0 ममता

सारांश

हिंदुओं की विवाह संस्था का संसार के समस्त सभ्य समाजों की विवाह संस्थाओं में अपना एक विशिष्ट स्थान है। इसका कारण यह है कि हिन्दू विवाह एक धार्मिक संस्कार माना जाता है। हिंदुओं के लिए विवाह वैधानिक अथवा धार्मिक समझौता नहीं है बल्कि यह एक स्थायी और जन्म–जन्मांतर का सम्बन्ध है। हिंदू धर्म में विवाह अन्य धर्मों की तरह कॉन्ट्रैक्ट या करार नही है। इसका उद्देश्य केवल शारीरिक न होकर आध्यात्मिक भी हैं। हिन्दू विवाह को धार्मिक संस्कार मानने का एक आधार यह है कि विवाह की क्रिया धार्मिक विधि–विधानों, अनेक अनुष्ठानों, कर्मकांडों के सम्पादन से पूरी होती है। विवाह के सम्पादन में वाग्दान, कन्यादान, होम, पाणिग्रहण, लाजा होम, अग्नि परिणयन, अश्यारोहण, सप्तपदी आदि कर्मकांड होते हैं। वाग्दान अनुष्ठान में वर पक्ष की तरफ से रखा गया विवाह प्रस्ताव कन्या पक्ष द्वारा स्वीकार किया जाता है। कन्यादान में पिता वर को अपनी कन्या का दान करके वर से यह आश्वासन लेता है कि वह धर्म, अर्थ और काम की पूर्ति में अपनी पत्नी का कभी भी परित्याग नहीं करेगा। लाजा होम के सम्पादन में वर और वधू के स्थायी बन्धन के साक्षी के रूप में अग्नि प्रज्वलित की जाती है। वर–वधू दोनों अग्नि में आहुति डालते हैं और सुख तथा शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। पाणिग्रहण में वर, वधू का हाथ पकड़कर सुख की कामना करते हुए कहता है कि 'हे वधू! तू मेरे साथ वृद्धावस्था तक रहना और मेरे सन्तान को जन्म देते हुए तू सौ वर्ष तक जीवित रहना।' अग्नि परिणयन में वर व वधू अग्नि की परिक्रमा करते हैं और अग्नि को साक्षी मानकर वर कहता है कि, "हम दोनों प्रसन्नतापूर्वक विवाह करें, साथ मिलकर उत्तम प्रजा उत्पन्न करें, हमारे बहुत से पुत्र हों। हम और हमारे पुत्र सौ वर्षों तक जीवित रहें।'' अश्यारोहण अनुष्ठान में कन्या का भाई कन्या का पैर उठाकर पत्थर की शिला पर रखता है। यहां वर वधू से कहता है कि हे देवी–तू इस पत्थर पर चढ़ और जीवन में हर परिस्थितियों में इस पत्थर के समान ही धर्म कार्यों में दृढ़ बनी रहे। लाजा होम में वधू अपने भाई से खीलें लेकर अग्नि कुण्ड में डालते हुए देवताओं के ऋण से मुक्ति और स्वयं को पति के कुल से जोड़ने के लिए देवताओं से प्रार्थना करती है। सप्तपदी में वर और वधू उत्तर दिशा की ओर सात कदम आगे बढ़ते हैं व हर पग पर भिन्न–भिन्न कामनाएं करते हैं। इस अनुष्ठान के बाद विवाह कार्य सम्पन्न हो जाता है। ये सभी कृत्य हिन्दू विवाह की पूर्णता के लिए आवश्यक हैं। इससे स्पष्ट होता है कि हिंदू विवाह एक धार्मिक संस्कार है।

इसके विपरीत लिव इन रिलेशनशिपमें युवक और युवती माता–पिता की सहमति के बिना साथ रहने लगते हैं और पति–पत्नी की तरह रहते है। लिव इन रिलेशनशिप में पति–पत्नी की तरह रहने के लिए कोई धार्मिक अनुष्ठान नहीं होता है, माता–पिता का आशीर्वाद नहीं होता है और समाज की स्वीकृति भी नहीं होती है। डॉ. शरद सिंह कृत उपन्यास 'कस्बाई सिमोन' में लिव इन रिलेशनशिप की सांस्कृतिक एवं धार्मिक समस्या को देखा जा सकता है। 'कस्बाई सिमोन' की मुख्य पात्रा सुगंधा परमार रितिक के साथ लिव इन रिलेशनशिप में रहती है। वह समाज द्वारा स्वीकृत रितिक की विवाहिता पत्नी नहीं है। इस कारण से पड़ोसी हमेशा शक की निगाह से देखते रहते हैं। उससे तरह–तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं और वह हमेशा सवालों के घेरे में रहती है। सह–संबंध में उसका पार्टनर रितिक भी रहता है। लेकिन वह इन सवालों से मुक्त रहता है। सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक समस्याओं की शिकार सुगंधा ही होती रहती है। दोनों विवाह संस्कार में विश्वास नहीं करते। दोनों शादी के बंधन में बंधे बिना उन्मुक्त जीवन जीना चाहते हैं। लिव इन रिलेशनशिप में रहते हैं। सुगंधा रितिक से कहती है कि – ''ब्याहता हो तो अपनी माँग में विवाह का साक्ष्य भरकर घूमो। पुरूषों के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे कोई भी साक्ष्य रखे।''

वैसे भी हमारे समाज में विवाह के बाद स्त्रियों को वैवाहिक साक्ष्य यानी सिंदूर, मंगलसूत्र, बिछुआ आदि पहनने के लिए दबाव डाला जाता है और ये साक्ष्य न पहनने पर समाज ऐसी स्त्रियों को अच्छा नहीं मानता। उसके न पहनने के पीछे कोई न कोई कारण ढूंढा जाता है यानी सुहाग की निशानी धारण करना हर पतिव्रता स्त्री का परम धर्म माना जाता है, वर्ना उच्छृंखल माना जाता है। हालाँकि इस पुरातन सोच को आज की पढ़ी–लिखी युवा पीढ़ी अस्वीकार करने लगी है। हर धार्मिक व सांस्कृतिक संस्कार को वे तर्क की कसौटी पर कसकर अपनाना श्रेयस्कर समझने लगी है। सुगंधा भी इसी आधुनिक विचारधारा की लड़की है। तभी तो वह कहती है – ''उफ! ये विवाह की परिपाटी। गढ़ी तो गई स्त्री के अधिकारों के लिए जिससे उसे और उसके बच्चों को सामाजिक मान्यता, आर्थिक संबल आदि–आदि मिल सके किन्तु समाज ने ही इसे तमाशा बना कर रख दिया।'' वह इस तमाशे को नहीं जीना चाहती, इसलिए वह कभी विवाह करना नहीं चाहती। मुख्य कारण यह भी है कि वह अपने माता–पिता के वैवाहिक संबंध को बचपन से देखती आई थी कि कैसे दोनों के बीच हमेशा

लड़ाई–झगड़ा हुआ करता था। सुगंधा के माता–पिता तो सामाजिक–धार्मिक संस्कार से ही जुड़े थे परंतु आये दिन घर में कलह होते रहता, प्यार की जगह तिरस्कार, विश्वास की जगह अविश्वास और शक तथा सुरक्षा की जगह असुरक्षित जीवन जीती थी सुगंधा की माँ। तब उस विवाह संस्कार पर क्यों करे भरोसा जो एक भी वचन पूरा न कर सके। वैसे असुरक्षित वैवाहिक संबंध से तो अच्छा लिव इन रिलेशनशिप ही है कि कम से कम बंधन नहीं है। जब तक बने साथ रहो, खटास आये तो अलग हो जाओ। अप्रत्यक्ष में वे सारी परिस्थितियां उत्तरदायी थीं जिन्होंने उसे रिश्तों को घुटन भरा बंधन मानने को विवश कर दिया।

सुगंधा देखती है कि कामवाली बाई तारा का तेरह वर्ष की आयु में विवाह कर दिया गया, जब तक वह रजस्वला भी नहीं हुई थीं। ''स्त्री–पुरूष के दैहिक संबंधों का उसे ज्ञान भी नहीं हो पाया था कि तब वह दो बच्चों की माँ भी बन गई थी।'' ये है हमारे धार्मिक पवित्र संस्कार जहाँ विवाह के लिए उम्र और इच्छा, पसन्द–नापसंद की कोई कद्र ही नहीं। बस पशु समझ कर बांध दो किसी खूँटे से। सुगंधा कहती है ''मेरे सामने दो विकल्प थे – मैं रितिक को विवश करूं कि वह मुझसे विवाह कर ले या फिर हम दोनों बिना विवाह किए साथ–साथ रहें। मुझे यह स्वीकार करने में कोई झिझक नहीं है कि मेरे मन में विवाह को लेकर कोई अच्छी छवि नहीं थी। जब भी मैं अपने विवाह के बारे में सोचती तो मेरा मन मुझसे पूछता कि माँ को क्या मिला विवाह करके? एक उपनाम ही तो न! और एक टैग 'श्रीमती' का''

सुगंधा व रितिक का लिव इन रिलेशनशिप में रहने का मुख्य कारण था विवाह न करने की एक जैसी विचारधारा। वह रितिक के साथ विचार–विमर्श करते हुए कहती है कि विवाह को संस्था कहा जाता है, ''हुंह! तो क्या विवाह चौरिटी का मामला है? हाऊ फनी!''

सुगंधा की माँ अपने वैवाहिक जीवन से त्रस्त है। वह अपने पति से तलाक लेना चाहती है। ''मैं तेरे पापा से तलाक ले रही हूँ। वे तलाक नहीं देना चाहते हैं, लेकिन मैं उन्हें तलाक दे रही हूँ। भला यह कौन सी बात हुई कि वे मुझे अपने साथ भी न रखना चाहें और मुझे तलाक भी न दे। आखिर मैं क्या हूँ।'' सुगंधा की माँ को विधिवत तलाक नहीं मिला। नाते–रिश्तेदारों ने हस्तक्षेप करके, परिवार–खानदान की बदनामी का वास्ता देकर माँ और पापा के बीच समझौता करा दिया। स्वाभिमानी माँ किसी भी मूल्य पर अपनी बेटी को पितृ ऋण से भी मुक्त रखना चाहती थी। वह कहती है ''यदि चाहे तो समय आने पर कन्यादान करने आ जाइएगा। अपनी बेटी को पालने में मैं सक्षम हूँ।''

सुगंधा की माँ स्वेच्छा से अपने पति से अलग हो गई। सुगंधा के पापा का व्यवहार माँ के प्रति ठीक नहीं था। मार–पीट, लांछन, पर–स्त्रीगमन पापा के लिए सामान्य बात थी। माँ एक पढ़ी–लिखी स्त्री थी। वह घुट–घुट कर जीना नहीं चाहती थी। पति के साथ जीवन बिताना उन्हें असंभव लगा, तब उसने अलग होने का कदम उठाया। अदालत में पति बदचलन सिद्ध हुए। लेकिन तलाक के बदले सामाजिक अलगाव स्वीकार करने के बाद भी माँ ही परित्यक्ता कहलाई। समाज ने उन्हें पति द्वारा छोड़ी हुई औरत माना। स्त्री और पुरूष के बीच का मामला हो तो दोषी स्त्री को ही माना जाता है, विशेष रूप से चरित्र के प्रश्न पर। पुरूष छोड़ दिए जाने पर भी छोड़ा गया नहीं कहलाता जबकि स्त्री परित्यक्ता कहलाती है। परित्यक्त पुरूष पर अनेक माँ–बाप की आंखे अपनी सच्चरित्र बेटियां ब्याहने के लिए बिछ जाती है जबकि परित्यक्ता स्त्री को लोग भोगी जा चुकी स्त्री का दर्जा देकर महज उपभोग की वस्तु के रूप में देखने लगते हैं। उदाहरण के तौर पर 'कस्बाई सिमोन' उपन्यास में दीपक मिश्रा और पल्लवी मिश्रा की कहानी है। पल्लवी, दीपक मिश्रा की नवविवाहिता पत्नी है। दहेज के कारण दीपक मिश्रा का परिवार पल्लवी मिश्रा को जलाकर मार डालता है और सामाजिक बहिष्कार से बचने के लिए पल्लवी मिश्रा के चरित्र पर कीचड़ उछाला जाता है कि उसका किसी और से टाँका भिड़ा था। पल्लवी मिश्रा की हत्या से ''अधिक आश्चर्य होता है जब डेढ़ साल के भीतर दीपक का दूसरा विवाह संपन्न हो जाता है। दूसरी लड़की के माता–पिता के आँखों में क्या पट्टी बंधी हुई होती है? जो वे लड़के और उसके परिवार के बारे में पूरी तरह छानबीन किए बिना ही अपनी लड़की से छुटकारा पाने की जल्दी में उसे उन दहेज लोभियों के हाथों में सौंप दिया।'' इन सारी परिस्थितियों को देखते हुए सुगंधा जीवन में शादी न करने का निर्णय लेती है।

हम देखते हैं कि रितिक के पिता को जैसे ही पता चलता है कि उसका बेटा शादी किए बिना ही किसी महिला के साथ रह रहा है तो वह चिंतित होकर दौड़े चले आए और सुगंधा से कहते हैं कि बिना विवाह किए साथ–साथ रहना ठीक नहीं है। लड़के को तो कोई कुछ नहीं कहता है लेकिन समाज लड़की पर ही दोश डालता है और लड़की की ही बदनामी होती है। रितिक के पिता चाहते हैं कि वे दोनों विवाह संस्कार में बंधकर साथ रहे तो ठीक है। उन्हें इस तरह से सुगंधा बहु रूप में स्वीकार्य नहीं है। इसके लिए वह समाज के नियम–कायदे बताते हैं कि विवाह जैसे नियम संबंधों को सुरक्षित रखते हैं। सुगंधा प्रत्युत्तर में कहती है, ''सुरक्षित! माई फुट! आए दिन सैंकड़ों तलाक होते हैं, मियां–बीवी एक दूसरे को धोखा देते रहते हैं और आप कहते हैं कि विवाह पारस्परिक संबंधों को सुरक्षित रखता है।'' सुगंधा रितिक के पिताजी से कहती है कि जिस सामाजिक प्रतिष्ठा की आप बात कर रहे हैं उस समय वह प्रतिश्ठा कहां रहती है जब किसी नववधू को दहेज के लिए जलाकर मार दिया जाता है, जब पत्नी से छुटकारा पाने के लिए

उसे बदचलन कहा जाता है। सुगंधा कहती है कि सामाजिक प्रतिष्ठा उस पति को मिलती है जिसने अपनी पत्नी को जलाया था। दसियों परिवार अपनी बेटियां लेकर खड़े हो जाते हैं कि लो अब हमारी बेटी से शादी करो और खुश रहो। ये समाज प्रतिष्ठा के नाम पर इंसान से उसके अधिकारों को छीन लेता है। तुमने फलां से प्यार किया तो क्यों किया? तुमने फलां से शादी की तो क्यों की? तुम प्यार नहीं कर सकते हो क्योंकि समाज कहलाने वाले चंद लोग नहीं चाहते हैं। तुम अपनी इच्छानुसार शादी नहीं कर सकते हो क्योंकि समाज कहलाने वाले लोग नहीं चाहते हैं। आखिर कब तक हम अपने इन प्रश्नों को ढोते रहेंगे। हम सब समाज के धार्मिक रीति–रिवाज, परंपरा से अवगत हैं, हमारे समाज में विवाह को एक अटूट पवित्र रिश्ता माना गया है। इससे बाहर कदम उठाते ही हम सवालों के घेरे में अपने आप को पाते हैं।

सुगंधा के संबंधों को लेकर मोहल्ले में सुगबुगाहट होने लगती है। मुहल्ले वाले अब हमेशा कान खड़े किए रहते हैं। रितिक उसका कौन है, क्या लगता है, दोनों के बीच क्या चल रहा है आदि–आदि सवाल सुगंधा से पूछे जाते हैं। सुगंधा अपने सहसंबंध को छुपाते हुए रितिक को कभी अपना दोस्त तो कभी मुँहबोला भाई तो कभी मंगेतर बताकर जैसे–तैसे इन सवालों से बचना चाहती है। फिर भी पड़ोसिन को दाल में कुछ काला नजर आता है। सुगंधा किराए पर घर लेकर रहती है, पर जैसे ही मकान मालिक को पता चलता है कि उसके साथ बिना विवाह किए एक लड़का भी रहता है तो उसे और किसी बहाने से घर खाली करने को कह दिया जाता है। वह बार–बार किराए का घर लेती और खाली करते हुए तंग हो जाती है। कोई उसे किराए पर घर देने को तैयार नहीं होता है। कारण बस इतना कि वह वैवाहिक संबंध से नहीं बंधी है। समाज उसे जीने नहीं देता। इतना ही नहीं हम देखते हैं कि सुगंधा की माँ भी उसे शादी करके साथ रहने के लिए दबाव डालती है।

''कोई बता रहा था कि तुम किसी लड़के के साथ रहने लगी हो। क्या ये सच है? माँ न पूछा

हाँ, लेकिन पूरा सच नहीं।

तुम उसे बहुत चाहती हो?

हाँ!

तो उससे शादी क्यों नहीं कर लेती?'

वह जरूरी नहीं है?'

क्या जरूरी नहीं है! माँ ने चौंककर पूछा।

शादी करना।

पागल तो नहीं हो गई? बिना शादी किए भी कोई किसी के साथ यूं खुलेआम रहता है?'

प्लीज माँ! फॉर गॉड सेक, मैं अपनी जिंदगी अपने ढंग से जीना चाहती हूँ। आपकी तरह! 'मैनें माँ को उनकी स्वतंत्रता की याद दिलाई।''

सुगंधा पूछती है कि विवाह के बंधन में बंधकर अनके वर्षों तक माँ को क्या मिला। दुख, दर्द और पीड़ा और अंत में अलगाव का रास्ता, तो वह वैवाहिक बंधन में क्यों पड़े। दुनिया के सारे नियम–कायदे विवाह धर्म, रीति, रिवाज, दुनिया ने ही तो बनाए है और दुनिया की भलाई के लिए लेकिन जिससे भलाई न हो उसे क्यों अपनाए, जिसमें हमें सुख मिलता हो उसे क्यों न जिया जाए।

'अलकनंदा' उपन्यास में नरेंद्र, अलकनंदा और मोहन के लिव इन रिलेशनशिप को कलुषित और अपवित्र मानता है। लेकिन अलकनंदा मोहन के साथ लिव इन रिलेशनशिप को अपवित्र नहीं मानती। उसका कहना है कि सेक्स एक प्राकृतिक इच्छा है और प्राकृतिक चीज अपवित्र कैसे हो सकता है। ''अकलुषित! पवित्र! कैसी पोंगापंथी बात करते हो, नरेन! मैं मोहन ... उसके साथ रहती हूँ तो क्या मैं, मेरा मतलब है मेरा मन–मस्तिष्क अपवित्र हो गया...क्या मेरा वजूद ही कलुषित–अपवित्र हो गया? ... मैं तो इसे अपवित्र नहीं मानती। सेक्स–इच्छा प्राकृतिक है, और जो प्राकृतिक है वह अपवित्र हो नहीं सकता।''

संतोष श्रीवास्तव की कहानी 'लौट आओ दीपशिखा' में दीपशिखा और गौतम के लिव इन रिलेशनशिप में रहने की जानकारी होने पर मां विचलित हो जाती है। मां को यह अधार्मिक आचरण पसंद नहीं है। दीपशिखा को सलाह देते हुए माँ कहती है, ''बस इतना करो। मंदिर जाकर शादी कर लो। कम से कम समाज थूकेगा तो नहीं हम पे... ।'' वंदना शुक्ला की कहानी 'बिन्ती बुआ' में जब मजबूत सिंह और बिन्ती साथ रहने लगते हैं तो बिन्ती के चाचा, भाई को पसंद नही आया। ''तुमने कह दिया और वो तुम्हारी हो गई... शादी–वादी सब फालतू की चीजें हैं क्या जो पुरखों ने बनाई हैं? समाज, परिवार भी है या नहीं तुम्हारा...और नहीं है तो हमारा तो है?... बिना व्याह के रहना इससे बड़ा पाप कोई नहीं इस दुनिया में... तुम दोनों को तो कोई शर्म–लिहाज बची नहीं... पर हमें तो इसी समाज में रहना है न।''

'अन्या से अनन्या' उपन्यास में प्रभा का डॉक्टर सर्राफ के साथ लिव इन को धार्मिक आचरण नहीं माना जाता है। प्रभा की सहेली कटाक्ष करती है, ''विवाहेत्तर संबंध को पाप कहा जाता है और तू अपना अपराध पूछती हैं।'' डॉक्टर साहब के दोस्त भी विवाह को ही मान्यता देते हुए प्रभा से कहते हैं, ''सिंदूर की पहचान तो रहती है। वे मिसेज कहलाती हैं, मिस नहीं।'' समाज अप्रत्यक्षतः प्रभा के वजूद पर प्रश्न चिह्न लगाते हुए कहता है, ''तुम कुछ नहीं हो। सुहाग के नूपुर तो तुम्हारे पैरों में नहीं है?''

निष्कर्ष — इसमें कोई दो राय नहीं है कि विवाह एक सामाजिक संस्था है। भारतीय संस्कृति में विवाह को जन्म—जन्माँतर का रिश्ता माना गया है। यह शारीरिक से ज्यादा आत्मिक संबंध है। शरद सिंह ने 'कस्बाई सिमोन' में इस जन्म—जन्माँतर और आत्मिक संबंध वाले विवाह की स्याह पक्ष और विकृत स्वरूप को दिखाया है। सुगंधा के माता—पिता का विवाह पूरे रीति—रिवाजों के साथ हुआ था। लेकिन उसके माता—पिता का वैवाहिक जीवन सुखद नहीं था। रोज—रोज लड़ाई—झगड़े होते। सुगंधा के पिता का विवाहेत्तर संबंध भी था। सुगंधा की मां रोज—रोज के लड़ाई—झगड़े से तंग आकर और अपने पति के अनैतिक आचरण से दुखी होकर तलाक लेना चाहती है। लेकिन रिश्तेदारों के हस्तक्षेप और समाज की दखल से उनका वैवाहिक संबंध नहीं टूट पाता है। सुगंधा की मां सुखद जीवन के लिए अपने पति से अलग रहने लगती है। शरद सिंह ने यह भी दिखाया है कि सुगंधा की मां ही दोषी ठहरायी जाती है। इसी तरह अपने एक अन्य पात्र पल्लवी मिश्रा की वैवाहिक हत्या को आत्महत्या दिखाया है। इसी तरह एक अन्य पात्र सदाशिव का अपनी पत्नी का वेश्या की तरह उपयोग करते हुए दिखाया है। शरद सिंह ने इन सब पात्रों के माध्यम से वैवाहिक संबंध पर प्रश्न चिन्ह लगाया है। वे पूछती हैं कि जब विवाह पूरे रीति—रिवाजों और कर्मकांडो के अनुपालन के साथ संपन्न होता है तो इसकी परिणति इस तरह क्यों होती है? जब पति पत्नी के बीच संबंध प्रेम पूर्ण नहीं है, दोनों के बीच रोज लड़ाई—झगड़े होते हैं तो समाज और रिश्तेदार ऐसे संबंधों को बनाए रखने पर जोर क्यों देते है? इसी तरह, शरद सिंह ने लिव इन रिलेशनशिप संबंधों के स्थायी नहीं होने को भी दिखाया है। सुगंधा और रितिक लिव इन रिलेशनशिप में रहते हैं पर इनका लिव इन रिलेशनशिप स्थायी नहीं रह पाता है। इसी तरह सुगंधा का ऋषभ और विशाल पटेल के साथ लिव इन रिलेशनशिप स्थायी नहीं रहता है। इस तरह, शरद सिंह ने इन प्रसंगों के माध्यम से विवाह और लिव इन रिलेशनशिप को एक ही तराजू पर रखा है और दोनों के सफल या असफल होने का आधार धार्मिक कर्मकांड का होना या उनका अभाव होने पर निर्भर नहीं करता है, बल्कि यह पूर्णतः आदमी और औरत की समझदारी और विवेक तथा एक दूसरे को कमियों के साथ स्वीकार करने पर निर्भर करता है। इसी तरह अलकनंदा का मोहन के साथ लिव इन रिलेशनशिप भी डावांडोल है। अलकनंदा मोहन के साथ लिव इन रिलेशनशिप में रहती है लेकिन वह मोहन में वह नायकत्व नही पाती जो उसके मन—मस्तिष्क में अंकित है। वस्तुतः आदमी और औरत के बीच संबंध का आधार धार्मिक नहीं है। धार्मिक कर्मकांड और मंत्रों के उच्चारण से स्त्री और पुरुष के बीच संबंध में प्रेम, साहचर्य उत्पन्न नहीं होता और उनके बीच संबंध सुखद हो इसकी कोई गारंटी नहीं है। इसी तरह लिव इन रिलेशनशिप में धार्मिक कर्मकांड और मंत्रों की अनुपस्थिति दोनों के बीच प्रेम, अपनापन, स्थायित्व के न होने का आधार नहीं है। दरअसल स्त्री और पुरूष के बीच प्रेमपूर्ण संबंध किसी धार्मिक कर्मकांड या अनुष्ठानों की मोहताज नहीं है। यह पूर्णतः आपसी समझदारी, सहयोग, प्रेमपूर्ण व्यवहार, एक दूसरे को कमियों के साथ स्वीकार करने की क्षमता पर निर्भर है।

संदर्भः

1.कस्बाई सिमोन, शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2012, आईएसबीएन 9788171382538, पृष्ठ 13

2.कस्बाई सिमोन, शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2012, आईएसबीएन 9788171382538, पृष्ठ 13

3.कस्बाई सिमोन, शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2012, आईएसबीएन 9788171382538, पृष्ठ 24

4.कस्बाई सिमोन, शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2012, आईएसबीएन 9788171382538, पृष्ठ 63

5.कस्बाई सिमोन, शरद सिंह, सामयिक प्रकाश , दिल्ली, संस्करण 2012, आईएसबीएन 9788171382538, पृष्ठ 49

6.कस्बाई सिमोन, शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2012, आईएसबीएन 9788171382538, पृष्ठ 53

7.कस्बाई सिमोन, शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2012, आईएसबीएन 9788171382538, पृष्ठ 102

8.कस्बाई सिमोन, शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2012, आईएसबीएन 9788171382538, पृष्ठ 93

9.कस्बाई सिमोन, शरद सिंह, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2012, आईएसबीएन 9788171382538, पृष्ठ 106—107

10.अलकनंदा, नंदकिशोर नौटियाल, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2012, आईएसबीएन नं 978—93—5072—261—9, पृष्ठ 215

11.इच्छाओं के समानांतर (लिव— इन रिश्तों की कहानियां), संपादन — स्वाति तिवारी, प्रकाशक — शिल्पयान, दिल्ली आईएसबीएन 978—93—81681—99—9, वर्ष 2004, पृष्ठ 125

12.अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ 84

13.अन्या से अनन्या, प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ 247

डॉ0 ममता

सहायक प्रोफेसर

डी.ए.वी. शताब्दी महाविद्यालय फरीदाबाद

सम्पर्क 9818747616

उर्मिला शिरीष की कहानी रंगमंच में व्यक्त सामाजिक चेतना

22

पल्लवी पंडा

सारांश

साहित्यकार उर्मिला शिरीष समकालीन महिला लेखिकाओं के मध्य एक प्रमुख नाम है । इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों को मुखर ढंग से प्रकाश में लाया है। समाज में परिवर्तन लाना है तो मनुष्य के अंदर चेतना का होना अनिवार्य है। चेतना के माध्यम से ही हमारे भीतर संवेदना का विकास हो पाएगा तथा जीवन के मूल्यों को हम सही तौर पर समझ पाएंगे। उर्मिला शिरीष ने अपनी कहानियों में नारी समस्या से लेकर ,परिवार में वृद्धो की स्थिति, वर्तमान व्यवस्था के अंतर्गत कृषकों की समस्या, युवा वर्ग की बेरोजगारी तथा वर्तमान समाज पर प्रभाव डालने वाला राजनीति आदि सभी पर अपनी लेखनी चलाई है। समाज में व्याप्त कुरीति, अंधविश्वास ,रूढ़िवादिता आदि पर जोरदार प्रहार किया है । समाज में परिवर्तन लाने के लिए सबसे बड़ा कदम हमेशा लेखक वर्ग ने उठाया है । उर्मिला शिरीष भी उसी परंपरा को आगे बढ़ते हुए अपने संवेदनशील मनोवृति के कारण आसपास के वातावरण से जिन चरित्रों को अपने कथा साहित्य में स्थान दिया है वे सभी परिस्थितियों में तथा सभी कालखंड में प्रासंगिक बनी रहेंगी। रंगमंच उर्मिला शिरीष द्वारा लिखा गया एक अत्यंत मार्मिक कहानी है जिसको पढ़कर पाठकों के मन में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि समाज में इस प्रकार का अनैतिक कार्य कोई कैसे कर सकता है। पुरुष सत्तात्मक समाज नारी को एक मनुष्य की तरह न समझ कर केवल एक भोग्या वस्तु मान लेता है और आवश्यक पड़ने पर उसके अस्तित्व को भी मिटा सकता है।

जब भी हम सामाजिक चेतना की बात करते हैं हमारे सामने दो शब्द आते हैं – समाज और चेतना । सबसे पहले हमें इन दोनों शब्दों को समझाना पड़ेगा।

डॉ० नगेन्द्र के अनुसार, ष्समाज का अभिप्राय सामुदायिक जीवन की ऐसी अनवरत एवं नियामक व्यवस्था से है जिसका निर्माण व्यक्ति पारस्परिक हित तथा सुरक्षा के निमित्त जाने अनजाने कर लेता है।"1

अतः मनुष्य समुदाय अपने तथा दूसरों के हित तथा सुरक्षा के लिए बनाता है । मनुष्य इस चराचर जगत में एक ऐसा प्राणी है जो समाज के बिना अधूरा है। कहा जा सकता है समाज के बिना वह जीवित नहीं रह सकता। अपने जीवन यापन के लिए तथा अपने सर्वांगीण उन्नति के लिए वह हमेशा समाज के ऊपर निर्भर रहता है और इसी समाज के अंग प्रत्यंग को लेकर साहित्य जगत गढ़ उठा है ।

चेतना शब्द हमारे अनुभव से जुड़ा हुआ है। हमारे परिवेश में हमें दो प्रकार के वस्तुएं दृष्टिगोचर होती हैं। एक है जड़ एवं दूसरा है चेतना। जड़ वस्तुएं निर्जीव होती है परंतु चेतन वस्तुएं अपने अनुभवों से जानी जाती है। चेतना अर्थात अपने आसपास हो रही घटनाओं के प्रति सजग रहना । चेतना तो जीवजंतु ,पशु–पक्षी, वृक्ष–लता आदि सभी में होती है। परंतु मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो उस चेतना को ग्रहण कर उसे संवेदना तथा शब्दों के माध्यम से प्रकाश में ला पता है । अर्चना जैन– ष्इस गुण धर्म द्वारा हमें आस–पास की घटनाओं का बोध प्राप्त होता है और हम विश्व को जान पाते हैं। अतः चेतना के लिए न केवल मस्तिष्क अपितु पदार्थ अथवा वस्तुओं का होना भी आवश्यक है जो मस्तिष्क पर प्रभाव डालते हैं।"2

समाज को सही दिशा की ओर आगे बढ़ाने के लिए मनुष्य के भीतर सामाजिक चेतना का होना अनिवार्य है। मनुष्य अपने बौद्धिक विकास के लिए तथा समस्याओं के समाधान हेतु सामाजिक चेतना एक आवश्यक बिंदु है। आदिम काल से चली आ रही रूढ़ियों तथा वर्तमान समाज में पनप रहे विसंगतियों को सुधारने के लिए साहित्यकार सदा अपना योगदान देता आ रहा है । सिद्ध साहित्य, जैन साहित्य तुलसी, कबीर सभी ने सामाजिक चेतना को जगाने के लिए धारदार शब्दों का प्रयोग किया है। तत्कालीन समस्याओं को वे लोग हमेशा सामने लाने की कोशिश करते रहे । समकालीन साहित्यकारों ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर साहित्य जगत तथा देश और समाज के प्रति सदा अपना दायित्व निभा रहे हैं ।

हरिकृष्ण रावत के अनुसार–ः व्यक्तियों के बीच अपने आपसी सम्बन्धों के प्रति जागरूकता का भाव सामाजिक चेतना को परिलक्षित करता है, अर्थात् जब व्यक्ति समान अनुभवों में अपने को भागीदार समझते हैं। तब वह स्थिति सामाजिक चेतना को प्रकट करती है।3

रंगमंच कहानी उर्मिला शिरीष द्वारा लिखी गयी अत्यंत सशक्त और मनुष्य के चेतना को प्रभावित करने बाली कहानी है। समाज में व्याप्त विसंगति, भ्रष्टाचार, न्याय व्यवस्था का खोखलापन आदि को उर्मिला जी ने उजागर किया है। उर्मिला जी ने हमेशा नारी पर हो रहे अत्याचार को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। हर दिन पत्र– पत्रिकाओं के माध्यम से तथा मीडिया के जरिए ऐसे अनेक खबर मिलते हैं जहाँ किसी औरत को जला दिया जाता है, किसी का बलात्कार हो जाता है। परंतु हम लोग इन सब खबरों के इतने आदी हो चुके हैं कि इनको देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। रंगमंच ऐसी ही एक

कहानी है जिसमें विमला नामक एक औरत को उसके पति द्वारा जला दिया जाता है जो कि दो बच्चों की माँ है। वह आदमी अपनी पहली बीवी को भी जलाकर मार दिया था और उसके भी दो बच्चे थे। आश्चर्य की बात है कि दोषी को दंड दिलाने की बजाए उसके परिवार लोग उसे बेकसूर प्रमाणित करने का हर संभव प्रयास करते रहे। विमला के साथ जो घटना घटी उसको बस एक दुर्घटना का रूप देने की कोशिश की जाती है । विमला के इलाज में जिस डॉक्टर ने हर संभव प्रयास किया परंतु उसे बचा नहीं पाया उसे भी घूस देकर झूठी गवाही देने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह कहानी उस डॉक्टर के नजरों से लिखा गया है। विमला के पति को बचाने के लिए रिश्तेदारो में एक आदमी था जिसका नाम प्रकाश था। वह डॉक्टर, वकील और विमला के परिवार में मध्यस्थता का काम कर रहा था। वह आदमी एकदम चालाक चतुर लोमड़ी जैसा था। उसको हर प्रकार का तिकड़म आता था जिसके माध्यम से दोषी को बचाया जा सके।

डॉक्टर ने उसका परिचय देते हुए कहा—

"पेशेण्ट अब भी आते जा रहे थे और उधर वो मेरा इन्तजार कर रहा था, लम्बा, दुबला—पतला युवक, जिसे उम्र ने असमय ही प्रौढ़, परिपक्व तथा वाचाल बना दिया था। आँखों के आसपास की कालिमा को देखकर लोमड़ी की याद हो आती थी।"4

प्रकाश को पता था कि किसी भी प्रकार अगर डॉक्टर को अदालत ला कर गवाही दिलवाया जाए तो आराम से विमला के पति को बचाया जा सकता है। उसने कहा—

"हमारे वकील का कहना है कि आप अदालत में अपना बयान बदल लेंगे तो मामला फिट हो जाएगा"5

विमला जब जलकर पहली बार अस्पताल पहुंची उसकी हालत अत्यंत दर्दनाक थी। आधी जली हुई उसकी खूबसूरत कोमल मांसल शरीर लपटों में झुलस गई थी। आक्रोश में आकर उसने सच उगल दिया था। तभी से सबके मन में भय और आशंका का माहौल था। सब लोग चाहते थे कि वह अपना बयान बदल दे किसी के लिए नहीं तो अपने बच्चों के लिए, दादी कहती है— ष्देखो बेटा, ठीक होकर तुम्हें जाना तो वहीं है। बच्चों को तो छोड़ोगी नहीं। उसे नहीं छुड़ाया तो कौन खिलाएगा?ष दादी समझा रही थी, ष्इनको देखो, इन्हें...ष बच्चों की तरफ इशारा करके कहती वो, ष... ये तुम्हारे कोख—जाये किसका मुँह देखेंगे? हाय! क्या किस्मत थी हमारी? तेरी जैसी बहू का सुख न मिला।"6

विमला जीना चाहती थी अपने बच्चों के लिए। परंतु उसको जिंदगी मिलना मतलब बाकी लोगों के लिए जेल का दरवाजा खुल जाना। सब लोग चाहते थे कि वह अपना बयान बदल दे। ताकि उसके पति को निर्दोष साबित किया जा सके। उसके प्रति सब बाहर से संवेदना दिखा रहे थे पर सब मन ही मन चाहते थे उसकी मृत्यु हो जाए। समाज में इस प्रकार संवेदनहीन मनुष्यों का अभाव नहीं है। जिन चरित्रों के माध्यम से लेखिका ने समाज की असल क्रुरता को सामने लाने का प्रयास किया है। उसको इस प्रकार समझाया गया कि अंत में उसने अपना बयान बदल दिया। अपने बच्चों के लिए अपने घर परिवार के लिए। परंतु उसके बाद सब जैसे अस्वस्थ हो गए। सब उसको निर्ममता के साथ अस्पताल में अकेले छोड़ कर उसकी मृत्यु के इंतजार में थे। यह कहानी समाज की वह सत्यता को उजागर कर रही है जिससे सभी लोग आँख चुराते हैं। वधू हत्या की खबरों से हमारे पत्र पत्रिका हमेशा भरे रहते हैं, फिर भी हम उसके खिलाफ आवाज नहीं उठा पाते। विमला की जीवन लीला समाप्त हो गयी। सब अभी अस्वस्थ थे। एक बड़ा काम अभी भी बचा हुआ था डॉक्टर साहब का बयान बदलवाना। प्रकाश उनको दस हजार रुपए घूस देने का प्रयास करता है। उनको मनाने की हर संभव प्रयास करता है। बच्चों को सामने लाकर उनका मन परिवर्तन करने की कोशिश करता है। जितनी भी तिकड़म साजिश उसे आती थी उन सब का प्रयोग उसने कर लिया था।

डॉक्टर साहब के सामने जब पहली बीवी की मृत्यु की बात आई तो प्रकाश ने कहा— ष्दुर्घटना थी साब। चालीस हजार रुपये खर्च किये थे, तब कहीं जाकर केस निबटा था।ष वह एकाएक गर्वोन्मत्त होकर बोला, जैसे परोक्ष रूप में चुनौती दे रहा हो कि इस तरह की घटनाओं से निबटना उसके लिए मामूली बात है, ष्हमारे वकील बहुत अच्छे हैं। होशियार। नामी—गिरामी। कभी कोई केस नहीं हारते। जीत की गारण्टी रहती है।7

इस प्रकार की बातों से यह पता चलता है कि प्रकाश जैसे आदमी किस तरह अपनी निर्लज्जता और धूर्तता का नंगा प्रदर्शन करते हैं। समाज में ऐसे व्यक्तियों की कमी नहीं है जो पैसों के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं प्रकाश अपने शब्दों के माध्यम से न्याय व्यवस्था का खोखलापन, भ्रष्टाचार को अति निर्ममता के साथ प्रकट करता है। विमला का पति बहुत ही आसानी से साठ हजार रुपए खर्च कर रिहा हो गया। कानून अंधा होता है उसे सबूत चाहिए अगर सबूत के साथ ही खेल लिया जाए तो दोषी को दंड मिलना असंभव हो जाता है। डॉक्टर बहुत ही आश्चर्यचकित रहे गए कि उनके सच्चे बयान के बाद भी वह व्यक्ति किस प्रकार छूट गया उर्मिला शिरीष ने प्रकाश के चरित्र के माध्यम से समाज की घिनौनी सच्चाई को सामने लाया है।

पितृ सत्तात्मक समाज में नारी को भोग्य वस्तु की तरह देखा जाता है। उसका सौदा होता है। उसकी आत्मा की हत्या किया जाता है । कभी—कभी नेता तथा अफसरों को खुश करने के लिए उनका इस्तेमाल होता है। प्रकाश के शब्दों के माध्यम से उर्मिला जी ने इसको भी सामने लाने की कोशिश की है।

प्रकाश ने डॉक्टर से कहा— "हम क्यों करवाएँगे साहब। करनेवाले करवाते हैं। जिनको अपनी लड़कियाँ बोझ पड़ी हैं या जिनकी शादी नहीं हो पाती है, जो भूखे गरीब—गुरबे हैं—वे तो मात्र आदमी के नाम पर तैयार हो जाते हैं, चाहे वह विधुर हो या चार बच्चों का बाप। साहब, आप लोग तो शहर में रहनेवाले अफसर हैं—आपको क्या पता कि गाँवों में कैसे हालात हैं। सौदा होता है लड़कियों का। बाकायदा लोग खरीदते—बेचते हैं। अफसरों तथा नेताओं को खुश करने के फार्मूले हैं—उनके लिए तो।8

उर्मिला शिरीष द्वारा लिखी गयी ज्यादातर कहानी संवादात्मक है। संवादों के माध्यम से वे सभी पात्रों के मनःस्थिति को उजागर करती है। जहाँ लोग अभिनय करते हैं उसे रंगमंच कहा जाता है और बाकी लोग दर्शक होते हैं। समाज में एक प्रकार हम सब भी दर्शक बन चुके हैं। समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास हमारे अंदर शायद खत्म हो चुका है। परंतु लेखिका ने इस ऊर्जा को जगाने का अथक प्रयास अपनी कहानियों के माध्यम से किया है।

निष्कर्ष

रंगमंच कहानी अपने नाम को सार्थकता प्रदान करता है। समाज में हर एक चरित्र खुद को रंगमंच में अभिनय करता हुआ नायक,नायिका अतवा खलनायक समझता है। पैसा देकर अपने पद—प्रतिष्ठा का इस्तेमाल कर खुद को हर संभव बचाने की कोशिश करता है। स्त्री लेखक होने के कारण उर्मिला शिरीष की ज्यादातर कहानी स्त्री संवेदना को उजागर करती हुई दिखाई देती है। उनके साथ हो रहे अन्याय,अत्याचार को उद्घाटित करती है। समाज के घिनौने यथार्थ को सामने लाने का भरसक प्रयास उनके लेखन में दृश्यमान होता है। इन कहानियों के माध्यम से प्रत्येक मनुष्य के अंदर की चेतना को जगाने का हर संभव प्रयास लेखिका ने किया है। क्योंकि समाज में परिवर्तन लाना समाज के ही लोगों का काम है। साहित्यकार मात्र एक धुरी है जो हमारी आंखों के सामने सत्य को लाकर हमारे मस्तिष्क तक यह बात पहुंचाने की कोशिश करता है।

संदर्भ सूची

1. डॉ० नगेन्द्र, साहित्य का समाज शास्त्र,दिल्ली पब्लिशिंग हाऊस, 1982, ,पृष्ठ सं 10
2. अर्चना जैन, प्रेमचन्द के निबन्ध साहित्य में सामाजिक चेतना, दिल्ली इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, 1979, ,पृष्ठ सं 16
3. हरिकृष्ण रावत, समाजशास्त्र विश्वकोश, जयपुर एवं नई दिल्ली रावत पब्लिकेशन्स, 2006, ,पृष्ठ सं 327
4. उर्मिला शिरीष, रंगमंच, पारुल प्रकाशन दिल्ली,2001,पृष्ठ सं 9
5. रंगमंच,पृष्ठ सं 9
6. रंगमंच,पृष्ठ सं 11
7. रंगमंच,पृष्ठ सं 14
8. रंगमंच,पृष्ठ सं 16

पल्लवी पंडा
शोधार्थी
रमादेवी महिला,
विश्वविद्यालय
भुवनेश्वर
मोबाईल नंबर—7978784669

पता— बरमुँड़ा
हाउसिंग बोर्ड कालोनी
बंशधर हाउस,एचआईजी—सी—107
भुवनेश्वर,ओड़िशा
751003

23

गणित शिक्षा में नवाचार और शिक्षक की भूमिका

मधुबाला

प्रस्तावनाः—

शिक्षा, समाज की एक पीढ़ी द्वारा आगामी पीढ़ी को ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज में संस्कृति ति की निरंतरता को बनाए रखती है। जैसे जैसे समय में बदलाव आता गया, शिक्षा के स्वरुप में भी आधारभूत परिवर्तन होता गया। समय के साथ साथ सीखने—सिखाने की प्रक्रिया और शिक्षा प्रणाली का स्वरूप भी भी बदलता रहा है। शिक्षा के इस बदलते स्वरूप में भारत ने हमेंशा से ही शिक्षा को उच्च महत्व दिया है। चाहे वो प्राचीन भारत में विकसित हुई बैंटिक शिक्षा प्रणाली हो या उसके बाद के कालखंड में स्थापित तक्षशिला और नालंदा विश्ववि विद्यालय या आधुनिक काल का विभिन्न सुविधाओं से परिपूर्ण स्मार्ट क्लासेस और हाई—टेक विश्व विद्यालय जिसने शिक्षा व्यवस्था को पूरी तरह से बदल दिया है। बहुत सारे आधुनिक उपकरण और शिक्षण अधिगम संसाधन ने शिक्षण अधिगम को बहुत आसान बना दिया है

प्रारम्भ से ही शिक्षा का मुख्य लक्ष्य युवा पीढ़ी का शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास करन इसके अलावा शिक्षा का एक और महत्वपूर्ण र्ण उद्देश्य व्यक्ति के भीतर विद्यमान गुणों को विकसित करना और उसे पूर्णतः प्रदान करना भी। प्राचीन भारत में शिक्षा का परम लक्ष्य विद्यार्थियों के अंदर अच्छे संस्कार पैदा करना तथा इस संसार या दूसरे संसार में जीवन के लिए बेहतर तैयारी करना था। प्राचीन काल में ऋषि मुनि अपने आश्रम में विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते थे

उनके गुरुकुल में आते थे, चाहे वह किसी राजा का पुत्र हो अथवा एक का, एक साथ आश्रम में रहकर भिक्षाटन और गुरु की सेवा करते हुए शिक्षा प्राप्त करते थे। गुरुकुल प्रणाली ने गुरु और शिष्य के बीच संबंध को बढ़ावा दिया और इसने एक अध्यापक केन्द्रित शिक्षा प्रणाली स्थापित की जिसमें छात्र को कठोर अनुशासन में रहना होता था और अपने शिक्षक के प्रति ति उसे कुछ दायित्वों के अधीन रहकर सीखना होता था। लेकिन जैसे जैसे समय बदलता गया वैसे वैसे शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले। फिर इसी समय के बदलते चक्र में गुस्कुल का स्थान आधुनिक स्कूल—कालेजों ने ले लिया, नित होते नए तकनीकी आविष्कारों ने लोगों के जीवन स्तर में काफी परिवर्तन लाया। इससे शिक्षा का क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा। पढ़ने—लिखने के संसाधनों का अभूतपूर्व विकास हुआ। स्कूल और कालेज जो ज्ञान का केंद्र थे, नित नये संसाधनों से संफन होने लगे। भव्य भवन, संपन्न पुस्तकालय, आधुनिक प्रयोगशालाएं, कुशल व समर्पित शिक्षक, ये सब शिक्षा के एक नए स्वरुप के उदाहरण बने।

आज ई—लर्निंग का जमाना है, जिसमें शैक्षिक गतिविधिया तथा सीखने की प्रक्रिया केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं है और इसलिए शिक्षा प्रणाली केवल औपचारिक स्कूल अथवा विश्व विद्यालय प्रांगण तक सीमित नहीं रही। शैक्षणिक प्रक्रिया अब केवल कक्षा आधारित पाठ्यक्रम के आदान—प्रदान से ही संचालित नहीं होती, बल्कि यह कार्य र्य इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के साथ—साथ, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) के बेहतर विकल्प जैसे कि कि सोशल मीडिया, यू—ट्यूब चेनल और ई—लर्निंग पोर्टल आदि की मदद से घर बैठे भी हो रहा है। नए ज्ञान के सृजन और अनुप्रयोग की तीव्र गति विशेषकर आईसीटी ने लोगो के जीवन को आसन बना दिया है। इस इकाई में हम गणितीय संदर्भ में शिक्षण—अधिगम की इसी प्रक्रिया के बदलते स्वरुप के बारे में जानेंगे।

उद्देश्य

1. गणित शिक्षण में आई.सी.टी. संसाधन की क्षमता और उपयोगिता स्पष्ट कराना बढ़ावा देना।
2. गणित के संदर्भ र्भ में विभिन्न प्रकार के सोशल मीडिया माध्यम का प्रयोग व उपयोगिता से अवगत कराना।
3. शिक्षण व प्रशिक्षण के लिए वर्तमान पाठ्यक्रम के संवर्द्धन के लिए सूचना व संचार प्रौद्योगिकी उपकरणों जैसे की कंप्यूटर इन्टरनेट विभिन्न मोबाइल एप्स का की भूमि मि का स्पष्ट कराना।
4. गणित की समावेशी कक्षा में शिक्षक की भूमिका स्पष्ट कराना।
5. सूचना व संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से दिव्यांग छात्र—छात्राओं के लिए प्रभावी शिक्षण वातावरण उपलब्ध कराना।
6. गणित की समावेशी कक्षा में शिक्षण वातावरण को प्रभावी बनाने में आई.सी.टी की भूमिका स्पष्ट कराना।
7. स्वःअध्ययन के संवर्द्धन के लिए सूबना व संचार प्रौद्योगिकी उपकरणों से जुड़ी कुशलता में कुशल बनाना।
8.स्वः अध्ययन को सुगम, सरल, रोचक, सफल व सार्वभौमिक बनाने हेतु सुझाव देना।
9. गणितीय सम्प्रेषण के उद्देश्य, तत्व, बाधक तत्व, कमियाँ पर प्रकाश डालना।
10. गणित विषयः गणित कक्षा में सम्प्रेषण कौशल का विकास कराना।

आई.सी.टी. और गणित शिक्षा :

सूचना और संचार की प्रौद्योगिकी, जिसे आम तौर पर आई. सी. टी. कहा जाता है, जिसके अंतर्गत में सभी साधन शामिल है जिनका प्रयोग सूचना एवं सम्प्रेषण का संचालन करने के लिए किया जाता है। इसके अंतर्गत दूरसंचार, प्रसारण मीडिया और सभी प्रकार के ऑडियो और वीडियो प्रक्रमण एवं प्रेषण शामिल है। इसकी सफलता के लिए इन्टरनेट सहित अलग–अलग उपकरणों की एक बड़ी श्रृंखला शामिल होती है जैसे कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल फोन, स्मार्ट र्टफोन, टैबलेट, प्रोजेक्टर, प्रिंटर, स्कैनर, डिजिटल कैमरे और इसी तरह के अन्य उपकरण। भविष्य में, ऐसी संभावना है कि कि अधिकांश कक्षाएं मोबाइल फोन और टैबलेट वा परंपरागत डेस्कटॉप वा लैपटॉप की मदद से आसानी से उपलब्ध होंगे और इस कारण इस उभरते हुए परिदृश्य के अनुसार अपनी जागरूकता बढ़ाने और सीखने के अवसर तलाशने के लिए सूचना और प्रौद्योगिकी का बेहतर इस्तेमाल कैसे किया जाये। इस बारे में जानने का प्रयास करेंगे, जिससे इन प्रौद्योगिकियों का बेहतर से बेहतर इस्तेमाल किया जा सके। इतना ही नहीं आज के दौर में पढ़ने–लिखने और मनचाही शिक्षा प्राप्त करने की भी सारी सुविधाएँ इस ग्लोबल विलेज में घर बैठे संभव हो गया है। कक्षा आधारित शिक्षण का स्थान अब ई–लर्निंग पोर्टल ने ले लिया है। हमारे पास कोई प्रश्न है, तो इसका उत्तर चंद सेकंडों में विभिन्न ई लर्निंग पोर्टल वा गूगल की मदद से प्राम किया जा सकता है। अपने मनपसंद कोर्स से करे? इंटरनेट पर हर प्रकार उपलब्ध है। जैसे–जैसे तकनीक उन्नत होती जा रही है, वैसे जैसे सुविधाएँ धीर–धौर आम लोगों को मिल रही हो मनमाफिक शिक्षा हासिल करने के लिए ई–लर्निंग अथवा ऑनलाइन पढाई का क्रेज धीर–धीर बढ़ रहा है. सुविधाएँ सीमित होने के कारण भले ही यह प्रणाली अभी आम पहुँच से कुछ दूर है, लेकिन इसकी पहल बहुत तेजी से बढ़ रही है। अब जाने–माने अनेक प्रतिष्ठित संस्थान कई तरह के ऑनलाइन कोर्स र्स चला रहे हैं जहाँ इन्टरनेट के द्वारा विभिन्न विषयों की पढ़ ाई होती है। वहीं समस्याओं का समाधान भी होता है। इन संस्थानों में इग्नू से लेकर जामिया मिलिया इस्लामिया और कई निजी शिक्षण संस्थान हैं, जिनके शैक्षिक पोर्टल शिक्षार्थियों को अपनी शिक्षा का लाभ पहुंचा रहे हैं

ऑनलाइन क्षेत्र की हलचल अपने देश में खासकर दूर–दराज के गाँवों और कस्बाई इलाकों में अभी परिधीर विस्तार पकड़ रही है। बहुत से लोग अभी इसके आदी नहीं हुए हैं। इंटरनेट का उपयोग अभी ज्यादातर कोई रिजल्ट देखने अथवा सूचना पाने या फिर ई–में ल इत्यादि करने के लिए कर लिया जाता है। सच पूछा जाये तो ये एक चानगी भर है, पूरा कि किस्सा तो अभी बाकी है

कंप्यूटर का एक छोटा रूप मोबाइल भी है। एक समय था जब मोबाईल आम आदमी की पहुंच से दूर था। अब यह हर आम और खास व्यक्ति क्ति क्ति की जेब में मौजूद है। एक तरफ इंटरनेट पर जहाँ नित नए स्कूल और कालेजों का उदय हो रहा है वहीं मोबाइल भी अब इससे अछूता नहीं रहा है। अच मोबाइल के द्वारा भी शिक्षा देने कि कि पहल हो रही है। गीक्षिक कंटेंट्स मोबाइल हैण्डसेटों के अनुरूप बनाये जा रहे हैं। टेक्नोलॉजी के बहते रफ्तार ने लोगों की सोच को मीलों पीछे छोड़ दिया है। यदि दि हमें आगे रहना है तो समय के इस बदलते स्वरूप को पहचानना होगा और अपने आप को इसके अनुरूप ढालने के लिए तैयार रहना होगा

गणित शिक्षण में आईसीटी का प्रयोगः

कंप्यूटर विद्यार्थियों को गणितीय समस्याओं का हल पता लगाने, विभिन्न प्रश्नों का परिणाम ढूंढने, परिणामों की व्याख्या करने, परिस्थितियों का विश्लेषण करने, और साथ ही तेज और विश्वसनीय प्रति क्रिया प्राम करने के लिए बेहतर और विश्वसनीय अवसर प्रदान करता है। आई.सी.टी. की उपलब्धता ने गणित शिक्षण और सीखने की प्रकृति को आसन बना दिया है। इन्टरनेट के साथ साथ साथ डिजिटल उपकरणों की एक श्रेणी मौजूद है जो विद्यार्थियों को समस्या का हल ढूंढने में बहुत मदद कर रहा है। सोडशीट्स और डेटाबेस का उपयोग करके किसी भी डेटा को एकत्र करने और उचित ओड़ तोड़ कर आकर्षक रूप में प्रदर्शित करने की अवसर उपलब्ध करता है। मल्टीमीडिया सॉफ्टवेयर प्रोग्राम अध्ययन की विशिष्ट इकाइयों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें छात्रों को सीखने के लिए गतिशीलत्ता, प्रदान की जा सकती है। आईसीटी का उचित उपयोग गणित शिक्षण और अन्य शिक्षा को आसान बनती है। इसके कई विशिष्ट रूप हैं जिनमें गणित शिक्षण के लिए आईसीटी का उपयोग किया जा सकता है, इसके अंतर्गत कैलकुलेटर, स्प्रेडशीट, डेटाबेस और ऑनलाइन इंटरेक्टि व संसाधन शामिल हैं। कक्षाओं के दौरान ज्ञान, कौशल और समक्ष को उपयुक्त बनाने हेतु स्प्रेडशीट, डाटाबेस, या विभिन्न ग्राफिकल सॉफ्टवेर की मदद गणित का बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने में मदद लिया जा सकता है। आज इन्टरनेट पर गणितीय अवधारणाओं की जानकारी बेहद ही रोचक ढंग से विभिन्न वेवसाइट पर उपलब्ध है जैसे http://www-mathisfun-com/; http://www-nctim-org/ आदि। http://www-educanonworld-com/;

जिनका प्रयोग कर, छात्र गणित की विभिन्न अवधारणा को आसानी से समझ सकते है। आई.सी.टी. के प्रयोग से गणितीय अवधारणाओं को वि वि जुअल प्रदान करने और सीखने की प्रक्रिया को ज्यादा से ज्याता आसन, रोचक एवं प्रभावशाली बनाया जा सकता है। आई.सी.टी, गणित के छात्रों को यह जानने में भी मदद करता है कि कि उन्हें क्या और कैसे सीखा जाये। यह गणितीय अवधारनाओ को अधिक मनोरंजक बनाकर विद्यार्थियों के आत्म विश्वास और प्रेरणा के रूप में बेहतर विकल्प के

तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके आलावा जब छात्र आई. सी.टी. का उपयोग करते हैं, तो विद्यार्थियों के व्यवहार और सीखने की गति विधियों में शामिल होने से वे अपने स्वयं के सीखने की अधिक जिम्मेदारी ग्रहण करते हैं। ये

आई.सी.टी. अक्सर विभिन्न सोशल मीडिया और वेबसाइटों की मदद से प्रश्नों को पूछने और उसका विश्वसनीय उत्तर तेजी से प्राप्त करने का विकल्प प्रदान करता है। इसमे छात्रों को अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

सोशल मीडिया गणित में चर्चा को प्रोत्साहित कर सकता है जो अलग–अलग तरीकों की तुलना और उन पर चर्चा कर सही निष्कर्ष ष तक पहुंचने में मदद मिलती है।

यू–ट्यूब एक ऐसा पोर्टल है जंहा पर गणित से जुड़ी तमाम तरह की वीडियो उपलब्ध है, जिसे देखा और साझा किया जा सकता है, यू–ट्यूब इंटरफेस को आसानी से उपयोग करने के लिए यू–ट्यूब ने यह संभव बनाया है कि कोई भी वीडियो पोस्ट करने के कुछ ही मिनटो में ले सकते है

इन विडियो को देख कर शिक्षण और सीखने के वि विभिन्न पहलु को आसानी से समझा जा सकता है। यू–ट्यूब विडियो जो की गणितीय अवधारणाओं के ऊपर निर्मित है का उपयोग करने से गणितीय तथ्यों, कौशल और अवधारणाओं को और अधिक प्रभावी ढंग से पढ़ाने में मदद मिलेगी। इनके प्रयोग से विद्यार्थियों के ज्ञान को बढ़ाने में मदद मिलेगी, उन्हें गणितीय कौशल का अभ्यास करने और उन्हें सुदुद करने का मौका मिलेगा, और उनके गणितीय समझ में सुधार होगा।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की सहायता से छात्र अम ई–पुस्तकें, परीक्षा के नमूने वाले प्रश्न पत्र, पिछले वर्षों के प्रश्न पत्र आदि दि देखने के साथ साथ अपने मेंटोर, गणित विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं, और साथियों से दुनिया के किसी भी कोने में बैठ कर आसानी से संपर्क र्क कर अपनी समस्याओं का समाधान पा सकते है।

स्वः अध्ययन को सुगम बनानाः

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। वह विकास का मूलाधार है। स्वः अध्ययन, अभ्यास का दसरा नाम है। अभ्यास गणित की आत्मा है। नए ज्ञान की प्राधि में स्वः अध्ययन की महत्पूर्ण भूमिका रही है। स्वः–अध्ययन विभिन्न तरह की नियम, सूत्र, सिद्धांत, प्रतीक, सूचना और जान को जानने और समझने जी प्रक्रिया है। स्वः अध्ययन अर्थात् पुस्तकों में रुचि रखने वाला व्यक्ति स्वयं को कभी भी एकाकी महसूस नहीं करता है। मुसीबत व परीक्षा की घड़ी में ज्ञान ही उसका विश्वसनीय मित्र होता हैं। इस प्रकार अध्ययन से प्राप्त ज्ञान अधिक हर्षोल्लास व रोमांय का अनुभव करता है। अध्ययन की अभिरुचि से ही मनुष्य रामानुजन, पेथोगोरस, अबुल कलाम, आर्यभट्ट कालिदास, मिल्टन व शेक्सपियर जैसे महान गणितज्ञ तथा लेखकों के महान कार्य का आनंद उठा सकता है। अध्ययन में रस प्राप्त करने वाला व्यक्ति देश–विदेश में होने वाली घटनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकता है। अच्छी पुस्तकों का अध्ययन मनुष्य को सही राह दिखाती है तथा उसे कुत्संगति से बचाती है। मनुष्य में अध्ययन की प्रवृत्ति उसे अकेलापन से दूर हटाती है। स्वः अध्ययन उपयोग एक नया कौशल या एक पूरी तरह से नई अवधारणा नहीं है। कि कि सी भी अवधारणा को सीखने के लिए इसका प्रयोग सदियों से किया जा रहा है। परन्तु जहाँ एक ओर शिक्षा के स्वरुप में बदलाव आया है, वहीं अध्ययन अध्यापन के स्वरुप में भी परिवर्तन आया है। वैज्ञानिक आविष्कारों से प्रत्येक क्षेत्र में युगान्तकारी परिवर्तन हुए है। शिक्षा का क्षेत्र भी इनसे अछूता नहीं रहा।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों की बढ़ती हुई संख्या और एक विस्तृत वैश्चीकरण के दौर में स्व–अध्ययन का स्वरूप बदला है। आज के दौर में अध्ययन सिर्फ कक्षा–कक्ष तक ही आधारित नहीं रहा। विज्ञान के बढ़ ते चरण ने शिक्षा की दशा व दिशा दोनों ही परिवर्तित ये है।

स्वः अध्ययन, शि शि क्षा का एक नवाचारी अध्ययन प्रक्रि क्रि या के रूप में उभरा है जो औपचारि रि क शिक्षा प्रणाली के दायरे में रहकर वा स्वतंत्र रूप से सीखने के अवसर प्रदान करता है या सीखने के अवसरों को औपचारिक शिक्षा पद्धति की सीमाओं के परे ले जाता है। स्वः अध्ययन, शिक्षा की वह प्रणाली है जि जि समें शिक्षक तथा शिक्षको स्थान–विशेष अथवा समय विशेष पर मौजूद होने की आवश्यकता नहीं होती। यह प्रणाली, अध्यापन तथा शिक्षण के तौर–तरीकों तथा समय निर्धारण के साथ–साथ औपचारिक कक्षा–कक्ष से स्वतंत्र है।

गणित में सम्प्रेषणः

समोषण का अर्थ है कि किसी विचार या सन्देश को एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रेषित करने वाले द्वारा भेजना तथा प्राप्त करने वाले द्वारा प्राप्त करना। संप्रेषण एक पक्षीय नान्हार न होकर द्विपक्षीय या बहुपक्षीय व्यव्हार होता है। अर्थात वंहा विचारों का एक तरफा हस्तांतरण नहीं होता अपितु यह एक सहयोगात्मक प्रक्रिया है। जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्तियों को अपने भावो विचारों को आदान–प्रदान करने का पूरा अवसर मिलता है। सगोषण के द्वारा शिक्षक व् शिक्षार्थी अपने शान, सूचनाओ, विचारी, धारणाओं, अनुभवों तथा भावनाओं का आदान प्रदान करते है। जिससे उनके अर्थ व उपयोग को भली भांति समझा जा सके। गणित की कक्षा में सम्प्रेषण से अभिप्राय है कि शिक्षक और छात्र की पारस्परिक अंतः क्रिया के द्वारा छात्रों के समक्ष और ज्ञान में वृद्धि हो। अर्थात सम्प्रेषण तभी सफल होगा जब दोनों सहयोगात्मक प्रकिया में हिंसा लें। यह एक ऐसा माध्यम है जिसमें एक व्यक्ति दुसरे को इस प्रकार प्रभावित कर सके ताकि कि निर्धारित उद्देश्य की प्राप्ति हो सके। सम्प्रेषण एक ऐसा माध्यम है जिसमे विचारों का आदान–प्रदान होता है।

जिसमें दोनों सहयोगियों में परस्पर लाभ होता है। हर रोज सम्प्रेषण में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा के विपरीत, गणित की भाषा सटीक और संक्षिम है। गणित में प्रत्येक शब्द और वाक्यांश का एक निश्चित अर्थ है जो यह आश्वस्त करने के लिए समझना चाहिए कि छात्र पूरी तरह से गणितीय अवधारणा को समझता है। इसलि लिए, गणित में इस्तेमाल होने वाले प्रमुख शब्दों और शब्दों को जानने के लिए बह आवश्यक है कि कि गणित में सम्प्रेषण का प्रभावशाली हो। समप्रेषण छात्रों और साथ ही शिक्षकों को समस्या समझने और समाधान खोजने में मदद करता है, सम्प्रेषण नियोजन की नींव के रूप में कार्य करता है। सीखने के परिणाम प्राप्त करने के लिए सभी आवश्यक सूचनाओं का आदान प्रदान शिक्षार्थियों के साथ शिक्षकों के बीच भी सा किया जाना चाहिए।

गणित में सम्प्रेषण का विकास करनाः

सम्प्रेषण शिक्षा में सर्वोपरि है चाहे वह छात्र से शिक्षक, सात्र से छात्र, शिक्षक को शिक्षक, माता—पिता से शिक्षक, शिक्षक से शिक्षक व माता—पिता से प्रशासक वा इसके विपरीता सम्प्रेषण अगर प्रभावी होगा तो छात्र और शिक्षक दोनों को इसका लाभ मिलेगा। सम्प्रेषण अधिगम को आसान और सुगम्य बनाता है, छात्रों को लक्ष्य प्राप्त करने में मदद करता है, विस्तृत अधिगम के लिए अवसर बढ़ाता है, छात्र और शिक्षक के बीच संबंध को मजबूत करता है, और एक समय और सकारात्मक अनुभव प्रदान करता है।

1. कक्षा प्रदर्शन— वे शिक्षक जो छात्र सम्प्रेषण और कक्षा भागीदारी को महत्व देते हैं, वे समग्र कक्षा के प्रदर्शन में सुधार को ध्यान देंगे। एक शिक्षक एक व्याख्यान की प्रभावशीलता का पता छात्र प्रतिक्रिया से लगा सकता है। सवाल पूछकर, एक शिक्षक यह निर्धारित कर सकता है कि कि क्या छात्र प्रदान की गई जानकारी को बरकरार रख पाए थे। अगर कक्षा में चुप्पी या को प्रतिक्रिया की कमी यह बताती है की छात्रों को व्याख्यान समझाने में परेशानी हो रही है सिद्धांतों के नाम उनके प्रयोग और उससे जुड़ी जानकारी को छात्रों तक पहुंचाना। गणित के बारे में टिप्पणियां करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए सीखने का माहौल तैयार किया जाना बाहिए कि छात्रों को अपने समस्याभी के ऊपर खुलकर बात करने की कोशिश कर सके

2.आई.सी.टी. के उपयोग— मोबाइल, व्हाट्सअप, ब्लॉग, फेसबुक, ईमेंल के माध्यम से शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों के साथ जुडें, विभिन्न वेबसाइटों पर प्रासंगिक जानकारी और संसाधनों के बारे में छात्रो के बीच चर्चा करें। शिक्षकों, अभिभावकों, छात्रों से जुड़ ने और संपाद करने के लिए सभी स्तरों पर सोशल मीडिया का उपयोग करें।

3. अनुपस्थि स्थित छात्रों तक पहुंच ऑनलाइन संसाधन, कक्षाओं के वीडियो रिकोर्डिंग, वीडियो कॉन्फ्रेंसिग, और अधिक घर या अस्पताल से जुड़े छात्रों को कक्षा का हिस्सा बना सकते हैं और उनसे जुड़ें रह सकते हैं। इसके अलावा, ये संसाधन माता—पिता और स्कूलों जुड़ ने में मदद कर सकते हैं। सकते हैं। टेक्नोलॉजी शिक्षकों को विषयों पर शोध, संसाधन ढूंढने और एक दूसरे से सीखने और साझा करने के लिए अन्य शिक्षकों से जुड़ ने में मदद कर सकती है।

जैसे प्रदर्शन, दुश्य सामग्री, और ऑडियो सामग्री का उपयोग करें

4. समस्या पर चर्चा गणितीय कार्यों यों के दौरान छात्र की समस्या हल करने के प्रयासों में सहायता की जा सकती है।

5. मुख्य बिंदुओं पर प्रतिबिंब एक पाठ के दौरान, सीमित अंग्रेजी दक्षता वाले छात्र कक्षा चर्चा का ट्रैक खो सकते हैं। इसलि लिए, यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक वाक्यों पर चर्चा को सारांशित करे और पाठ के मुख्य बिंदुओं को उजागर करे। ऐसा करने के एक सहायक साधन आरेख और सूचियों के उपयोग के माध्यम से है। छात्रों को अपने स्वयं के शब्दों, मौखिक या लिखित में, सबक में प्रस्तुत मुख्य विचारों को समझाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। एक छात्र, जो अंग्रेजों में स्पष्टीक्राण नहीं दे सकता है, उसे अपनी मूल भाषा का उपयोग करने की अनुमत्ति दी जानी चाहिए। दूसरा छात्र अंग्रेजी में स्पष्टीकरण का अनुवाद कर सकता है ताकि कि सभी समझ सकें।

6. गतिविधि आधारित कक्षा गणित में संचार विकसित करने में सहायता के लिए, विशिष्ट कक्षा की गति विधियों का उपयोग किया जा सकता है। छात्रों को गतिविधि पर प्रतिक्रिया करने का मौका दिया जाना चाहिए। गतिविधि प्रकृति में सुखद होना चाहिए यदि दि ऐसा है तो छात्र खुद को बेहतर अभिव्यक्त करने में सक्षम होंगे क्योंकि कि उन्हें अधिक सुविधा होगी। अन्य शिक्षको को उनकी भूमिका को एक गहरी स्तर पर सीखने में मदद करने में से एक के रूप में देखते हैं। नए विचारों और अवधारणाओं को समझने के लिए ताकि कि वे एक कार्यस्थल में उन्हें लागू कर सकें। किसी भी तरह से, यदि वे अपने छात्रों के साथ अच्छी तरह से संवाद करते हैं तो वे शिक्षक बेहतर काम करेंगे। संघार को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक की भूमि का नवीनीकरण होना आवश्यक है।

निष्कर्षः—

1. गणित शिक्षण में आई सी.टी. संसाधन की क्षमता और उपयोगिता स्पष्ट कराना बढ़ावा देना।

   कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल फोन, स्मार्ट फोन, टैबलेट, प्रोजेक्टर, प्रिंटर, स्कैनर, डिजिटल कैमरे और इसी तरह के अन्य उपकरण। भविष्य में, ऐसी संभावना है कि कि अधिकांश कक्षाएं मोबाइल फोन और टैबलेट या परंपरागत डेस्कटॉप वा लैपटॉप की मदद से आसानी से उपलब्ध होंगे और इस कारण इस उभरते हुए परिदृश्य के अनुसार अपनी जागरूकता बढ़ाने और सीखने के अवसर

तलाशने के लिए सूचना और प्रौद्योगिकी का बेहतर इस्तेमाल गणित शिक्षण

2.गणित के संदर्भ र्भ में विभिन्न प्रकार के सोशल मीडिया माध्यम का प्रयोग व उपयोगिता से अवगत कराना।

3. शिक्षण व प्रशिक्षण के लिए वर्तमान पाठ्यक्रम के संवर्द्धन के लिए सूचना व संचार प्रौद्योगिकी उपकरणों जैसे की कंप्यूटर इन्टरनेट विभिन्न मोबाइल एप्स का की भूमि का स्पष्ट कराना।

5. सूचना व संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से दिव्यांग छात्र–छात्राओं के लिए प्रभावी शिक्षण वातावरण उपलब्ध कराना।

6. गणित की समावेशी कला में शिक्षण वातावरण को प्रभानी बनाने में आई.सी.टी की भूमि मि का स्पष्ट कराना।

7. स्व अध्ययन के संवर्द्धन के लिए सूचना व संचार प्रौद्योगिकी उपकरणों से जुड़ी कुशलता में कुशल बनाना।

8. स्वः अध्ययन को सुगम, सरल, रोमक, सफल व सार्व र्वभौमिक बनाने हेतु सुझाव देना।

9. गणितीय सम्प्रेषण के उद्देश्य तत्य, बाधक तत्व, कमियों पर प्रकाश डालना।

10. गणित विषयः गणित कक्षा में सम्प्रेषण कौशल का विकास कराना।

संदर्भ र्भ सूची :–

1. http://www-techlearning-com/blogentry/8716
2. http://www-ncbi-nlm-nih-gov/pmc/articles/PMC1705977/
3. http://www-techlearning-com/blogentry/8716
   http://www-educationgov gy/web/indexphp/teachers/ tips & for & teaching/ itern / 1570 & importance & of &communicating & in & the & classroom

मधुबाला
असिस्टेंट
प्रोफेसर–गणित (विद्या
संबल)
राजकिय
महाविद्यायालय– विराटनगर
जयपुर (राजस्थान)

जयशंकर प्रसाद की कहानियों के नारी चरित्र प्रसाद के कथा साहित्य का परिपार्श्व

24

डॉ0 लता कुमारी

सारांश

जयशंकर प्रसाद का पहला कहानी संग्रह 'छाया' सन 1913 में प्रकाशित हुआ था. इस संग्रह में उनकी 5 कहानियां थीं. ये सभी कहानियां जाहिर है कि 1913 के पहले लिखी गई थीं. यानी तब जब प्रसाद जी की उम्र 20–21 साल की थी. आगामी 25 वर्षों में उनके चार कथा–संग्रह और प्रकाशित हुए. 1936 में मृत्यु से एक वर्ष पूर्व उनका अंतिम कहानी संग्रह 'इंद्रजाल' प्रकाशित हुआ. 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'आंधी', 'इंद्रजाल' इन पांच सग्रहों में उनकी लिखी 70 कहानियां छपीं. यह ध्यान देने की बात है कि ये कहानियां उन्होंने नाटक, काव्य, उपन्यास आदि के समांतर ही लिखीं। उनका कथा–संसार हालांकि छोटा लगता है, पर उतना छोटा भी नहीं है. इन कहानियों में विषयों का वैविध्य है। भारत का ग्रामीण जीवन, सामाजिक विडंबनाएं, ऐतिहासिक चरित्र और घटनाक्रम, प्रेम और पकृति, मानव–संबंध आदि इन कहानियों की विषयवस्तु हैं। हिंदी कहानियों का विकास उस काल तक अपनी आरंभिक अवस्था में ही था। प्रेमचंद का कथा–लेखन प्रसाद के युग के समांतर ही है। यह कहा जा सकता है कि अनेक पूर्ववर्ती कथाकारों की महत्वपूर्ण कहानियों के बाद वे प्रसाद और प्रेमचंद ही थे, जिन्होंने हिंदी के आधुनिक कथा–साहित्य की नींव रखी। चूंकि प्रसाद ने नाटक और काव्य में जो युगांतरकारी कार्य किया इस कारण बहुत बार उनकी कहानियों का महत्व लगभग अनदेखा सा रह गया। इसके बावजूद आज भी उनकी कुछ कहानियां 'पुरस्कार', 'ममता', 'आकाशदीप', 'आंधी' आदि हिंदी कथा–साहित्य के मील का पत्थर मानी जाती हैं। परंतु इन अतिचर्चित कहानियों के इतर भी उनका संपूर्ण कथा–साहित्य विशिष्ट है। उनके कथा साहित्य में हिंदी कहानी के भावी विकास के समस्त सूत्र विद्यमान मिलते हैं। प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन और किसानों की व्यथा के अलावा अनेक ऐतिहासिक व मनोवैज्ञानिक कहानियां लिखीं। परंतु प्रसाद की कहानियों में मानवीय संबंध और मनोविज्ञान के वे समस्त जटिल पहलू बीज रूप में पहली बार प्रकट हुए, जिनका हिंदी कहानी के स्वरूप को गठित करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा। स्त्री–पुरुष संबंध और प्रेम के विभिन्न स्वरूपों का जितना गहरा चित्रण प्रसाद ने किया, वह हिंदी कहानी में अप्रतिम होने के साथ साथ अभूतपूर्व भी था। इसके अलावा जहां वे भारत के प्राचीन इतिहास से मानवीय तत्वों को खोज कर कथा में विन्यस्त कर रहे थे, वहीं भारत के गांवों और बदलते शहरों की जिंदगी की वह तस्वीर भी उन्होंने उतारी जो बीसवीं सदी के आरंभिक भारत को समझने में उपयोगी है। उनकी इन कहानियों ने हिंदी कथा संसार को उसके आरंभिक दिनों में ही अतुलनीय गहराई दे दी।

प्रसाद का कथा वैशिष्ट्य

प्रसाद की कहानियां कई स्तरों पर चलती हैं। समाज, इतिहास, मनोविज्ञान, राष्ट्रप्रेम, जीवन की करुणा और विडंबना, समय और नियति, प्रेम और विछोह उनकी कहानियों के वे तल हैं जहां से मानवता के विविध रूपों को अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है। 'पुरस्कार' कहानी में प्रेम और राष्ट्रभक्ति का द्वंद्व शिद्दत से उभरा है, 'आकाशदीप' में पितृहंता के प्रति प्रतिशोध और प्रेम के द्वंद्व का गहन चित्रण हुआ है। 'चूड़ीवाली' कहानी में नियति की विडंबना और मानवीय संबंधों की जटिलता व्यक्त हुई है। 'नूरी' कहानी में इतिहास के नेपथ्य में स्त्री के भावजगत का मर्मस्पर्शी चित्रण है। 'अशोक', 'गुलाम', 'जहांनारा', 'खंडहर की लिपि', 'ममता' जैसी कहानियों में इतिहास की पृष्ठभूमि में जहां एक ओर समय की विडंबना व्यक्त हुई है वहीं दूसरी ओर मानवीय जीवन के विविध पक्षों को अत्यंत मर्मस्पर्शी और यथार्थपरक रूप में उकेरा गया है।

प्रसाद की कहानियों के बहुस्तरीय होने का कारण यह है कि उनका संपूर्ण रचना संसार ही बहुस्तरीय है। वे सिर्फ यथार्थ के लेखक नहीं है, न ही इतिहास के, न मात्र समकाल के। उनके लिए प्रेम, करुणा, विडंबना, नियति आदि समस्त भाव मनुष्य के जीवन को जिस जटिल ढंग से रचते हैं, उसको लिखना ही रचनाशीलता थी। इसलिए वे कभी भी एकांगी नहीं हुए, नाटक, काव्य, उपन्यास, कहानी सभी के लेखन में प्रसाद की रचनात्मक प्रवृत्ति स्पष्टतः झलकती है। यही उनके कथा–साहित्य का भी वैशिष्ट्य है। उनकी कहानियां ने सिर्फ ऐतिहासिक हैं, न सिर्फ यथार्थवादी, न सिर्फ मनोवैज्ञानिक हैं, न सिर्फ प्रेमपरक। वे इन सभी स्तरों पर एक साथ रचना करते हैं। उनकी ऐतिहासिक कहानियां भी इसी कारण काल का अतिक्रमण कर सामयिक बन जाती हैं और समकालीन पात्रों को लेकर लिखी गई कहानियां भी मानवता की चिरंतन गाथा की तरह लगती हैं।

प्रसाद की नारी दृष्टि

प्रसाद की कहानियों के नारी चरित्र उनकी उस दृष्टि से ही सृजित हुए हैं, जो उनके समस्त साहित्य में व्याप्त है। इस दृष्टि का निर्माण 19 वीं सदी के भारतीय नवजागरण की प्रेरणाओं से हुआ था। एक नए भारत का स्वप्न और उसमें एक नए मनुष्य का स्वप्न उनकी रचनाओं में गुंथा हुआ है। उनके नाटकों, उपन्यासों और कविताओं में स्त्री की एक सशक्त छवि उभरी है। नारी संबंधी उनके दृष्टिकोण की स्पष्ट

अभिव्यक्ति उनके नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' की नायिका के संवादों में हुई है। वे प्राचीन इतिहास से नारी पात्र ले रहे हों या सामयिक जीवन से, उनके नारी पात्रों में आधुनिक मन और आधुनिक दृष्टिकोण व्यक्त होता है। उनकी पराजित नायिकाएं भी स्त्री के मन की गहनता और तेजस्विता का आख्यान सुनाती हैं। 'पुरस्कार' की नायिका हो या 'चूड़ीवाली' की नायिका, वे स्त्री के स्वाभिमान और कर्मठता से समन्वित हैं। प्रसाद उन स्त्री पात्रों की रचना कर रहे थे, जो स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे देश और उसके भावी नवनिर्माण की केंद्रीय धुरी थीं। वे स्त्री के स्वावलंबन, कर्मठता, स्वाभिमान, देशप्रेम, समानता, प्रखरता, करुणा और ओज के महान रचयिता थे। प्रसाद का स्त्री संबंधी दृष्टिकोण अपने समय के लेखकों से बिलकुल अलग धरातल पर खड़ा था। वह एक सामंती समाज के आधुनिक भावबोध में संक्रमण की बेला में जीवन से उठ रही संवेदना के आधार पर गढ़ा गया था। इसे प्रसाद के संवेदनशील मन और अध्यवसाय ने एक विलक्षण ऊंचाई प्रदान कर दी थी। उनके महाकाव्य कामायनी में श्रद्धा और इड़ा जैसे सृजनशील, मेधावी और स्वाभिमानी स्त्री पात्र हैं तो वहीं कहनियों में मधुलिका, चंपा, नूरी और ममता जैसी स्त्रियां हैं।

प्रसाद की कहानियों में स्त्री

जयशंकर प्रसाद ने अपनी कहानियों में बीसवीं सदी के भारत की भाव–तरंगों से बनी स्त्री को रचा है। यह कर्मक्षेत्र की स्त्री है। निस्संदेह ये स्त्रियां प्रेम करती हैं, और भावनामयी हैं, परंतु कर्तव्य और सुख, विलास और जीवन लक्ष्य, प्रेम और स्वाभिमान का द्वंद्व उनके अस्तित्व को एक बिल्कुल ही अनूठा आयाम दे देता है।

यदि उनके नारी चरित्रों की मुख्य विशेषताओं को सूचीबद्ध किया जाए तो वह इस प्रकार होगी –

1. स्वाभिमानी और स्वतंत्र
2. कर्मठ और सत्यान्वेषी
3. साहसी और समर्थ
4. प्रेम और करुणामयी
5. अधिकारों के प्रति सजग
6. बुद्धिमान और प्रखर

मुक्तिबोध ने अपनी प्रख्यात पुस्तक 'कामायनी एक पुनर्विचार' में लिखा है, '...प्रसाद जी ने अपने नाटकों तथा कहानियों में कर्मक्षेत्र के अत्यंत भव्य, वीर तथा संकल्पनिष्ठ चरित्रों को खड़ा किया, आत्मगरिमामय व्यक्तित्वों को उभारा...' सच तो यह है कि प्रसाद जी की कहानियों के चरित्रांकन में उपरोक्त गुण जितनी गहरी रेखाओं से नारी चरित्रों में प्रकट हुए हैं, उतनी गहनता से पुरुष चरित्रों में नहीं. प्रसाद मानो इस प्रेरणा से अपनी नारी चरित्रों का अंकन कर रहे थे, कि वे नए भारत की नई मानवता के निर्माण का अनिवार्य तत्व बन जाएं. कुछ ही दशक पहले तक हिंदी खड़ी बोली ने साहित्यिक रूप प्राप्त किया था। हिंदी में कहानी की कोई गहरी बड़ी परंपरा थी नहीं। ऐसी स्थिति में प्रसाद अपनी कहानियों में इतने प्रगल्भ, इतने अप्रतिम स्त्री चरित्र कैसे खड़े कर पाए? इसका एक उत्तर तो उनके निजी जीवन की व्याख्या से मिल सकता है। दूसरा कारण था उनका गहरा अध्ययन और भारत में हो रहे परिवर्तनों को व्यापक वैश्विक संदर्भ में देख सकने की उनकी क्षमता। यह क्षमता उनकी संवेदना से पैदा हुई थी, न कि मात्र बौद्धिकता से। संक्षेप में यह कि बौद्धिकता और संवेदना का अनूठा सम्मिलन ही उनके रचनाकार व्यक्तित्व की वह मूल शक्ति था जिसने उनकी कहानियों के अनूठे नारी चरित्रों को रचा। मुक्तिबोध ने उनके व्यक्तित्व और रचनाशीलता के अंतर्संबंध की ठीक ही व्याख्या की है – 'प्रसाद जी का मूल व्यक्तित्व और उस व्यक्तित्व की शक्तियां गत्यात्मक हैं, वे कुछ करना, पाना, घटित करना और स्थापित करना चाहती हैं। प्रसाद जी की आत्मा जीवन के विविध क्षेत्रों में, जीवन की विविध स्थितियों में भटकती रहती है – प्यासी प्यासी। इतनी भटकन, इतना व्यापक पर्यटन, इतनी विस्तृत, विविध और प्रदीर्घ यात्र– हिंदी में किसी और लेखक ने नहीं किया। प्रसाद जी एक साथ कवि, दार्शनिक, जीवन चिंतक, नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार, निबंध लेखक, अनुसंधानकर्ता तथा विद्वान थे। अतीत और वर्तमान के, उत्कर्ष और अधःपतन के, अत्यंत आत्मीय क्षणों और ऐतिहासिक पलों के, बाह्य जीवन–स्थितियों तथा आंतरिक मनःस्थितियों के जो चित्र और चित्रों का वैविध्य उन्होंने उपस्थित किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। यदि प्रसाद जी अनुभव–संपन्न, अनुभूति प्रवण व्यक्ति थे ते दूसरी ओर वे बड़े तजुर्बेकर आदमी थे। उनकी चिंतन प्रधान बुद्धि वर्तमान सामाजिक और ऐतिहासिक वास्तविकताओं में समान रूप से गतिमान थी। वे यदि, एक ओर गहन रूप से आत्मचेतस थे तो, निस्संदेह दूसरी ओर विश्व–चेतस भी। ...संक्षेप में, प्रसाद जी का मन अंतर्जीवन के प्रति तथा बाह्य जीवन के प्रति समान रूप से संवेदनशील था, और उनका मन अंतर्जीवन तथा बाह्य जीवन–जगत की स्वानुभूत समस्याओं को लेकर भटकता फिरता था.' प्रसाद जी के इसी मन ने मधुलिका, ममता, चंपा और विलसिनी जैसी स्त्रियों का अंतरंग अपने कथा–संसार में सिरजा था।

'पुरस्कार' कहानी की नायिका की मधुलिका और आकाशदीप कहानी की नायिका चंपा को प्रसाद के कथा–संसार के प्रतिनिधि नारी–चरित्रों के रूप में देखा जा सकता है। ये दोनों ही नायिकाएं सक्रिय जीवन–बोध से भरी युवतियां हैं। उनके ह्रदय प्रेम और संवेदना से भरे हुए हैं। वे अपने जीवन में आए अपनी पसंद के पुरुषों से प्यार करती हैं। परंतु एक अपने राष्ट्रप्रेम और कर्तव्य के चलते और दूसरी अपने उसूल और न्यायबोध के चलते न सिर्फ अपने प्रेमियों से विलग हो जाती हैं, अपितु प्यार होते हुए भी उन प्रेमियों के मृत्युदंड का कारण

बनती हैं और स्वयं भी मृत्यु का ही वरण उन्हें करना पड़ता है। वे प्रचलित मानदंडों का उल्लंघन करती हैं। उनका निर्णय उनके जीवन को ध्वस्त कर देता है। परंतु नैतिकता के उच्चतर मानदंडों पर वे अपने के सिद्ध कर देती हैं। प्रसाद की कहानियों में प्रेम को मूल्यों के उच्चतर और उदात्त धरातल पर जीने वाले नारी चरित्र उनके निजी मूल्य–बोध से उपजे हैं। इनका आधार प्रेम और वेदना है। वही प्रेम और वेदना जो कवि के 'आंसू' काव्य में सघन हो कर उमड़ी थी। आलोचक शंभुनाथ के शब्दों में, 'प्रसाद के साहित्य में प्रेम और वेदना का केंद्रीय महत्व है। इनके भीतर से ही मनुष्य जीवन का उदत्त सौंदर्यबोध व्यक्त हुआ है। प्रेम मनुष्य के व्यक्तिवाद से मुक्त करता है, उसे व्यापक सौंदर्यबोध देत है। और उसका पुनर्निमाण करता है।'

प्रसाद की अनेक कहानियों में नारी–चरित्रों का जीवन अपने आदर्शों के कारण विध्वस्त हो जाता है। वे आत्मघात कर लेती हैं, मृत्युदंड का वरण करती हैं, संन्यस्त हो जाती हैं। इसका कारण पलायनवाद नहीं है। बल्कि कथाकार की उन्हें उच्चतर स्तर पर प्रतिष्ठित करने की भावना है। जिस समाज में प्रसाद थे, उसमें स्त्रियों के लिए बहुत विकल्प नहीं थे। यही कारण है कि उनके नारी पात्रों की परिणति कर्मक्षेत्र में सक्रियता से अधिक उत्सर्ग में होती है। आलोचक मधुरेश ने उनके इस पहलू को इस तरह व्यक्त किया है, 'रसिया बलमः में प्रेम की असफलता पर बलवंत और राजकुमारी दोनों आत्मघात करके अपने उत्कट प्रेम का परिचय देते हैं। 'मदन मृणालिनी' में मदन अपनी प्रेयसी मृणालिनी को प्राप्त करने के लिए सारे प्रयास करता है और जब भ्रमवश उसे प्रताड़ित और लांछित करके निकाल दिया जाता है तो भी वह उनके बुरे दिनों में उनके लिए अपना सर्वस्व दान करके शांतभाव से संन्यासी बनकर निकल जाता है। अंतिम समय में उसका पत्र पाकर जब मृणालिनी अपने भाई किशोर के साथ समुद्र के किनारे पहुंचती है, तब तक उसका पोत खुलकर समुद्र में काफी दूर जा चुका होता है.... 'किशोर और मृणालिनी ने देखा कि गेरुए रंग का कपड़ा पहने हुए एक व्यक्ति दोनों हाथ जोड़े हुए जहाज पर खड़ा है और जहाज शीघ्रता के साथ समुद्र के बीच में चला जा रहा है।' जो अगाध समुद्र अब उन दोनों के बीच पसरा पड़ा है, उसे ही जीवन का सत्य मानकर स्वीकारने के अतिरिक्त अब और कोई उपाय नहीं है।'

प्रसाद की कहानियों में स्त्री का भविष्य स्वप्न

प्रसाद की कहनियों में स्त्री का एक भविष्य–स्वप्न है। वे बीसवीं सदी के आरंभिक तीन दशकों में कथा–लेखन कर रहे थे। तब तक भारत में स्त्री शिक्षा की बहुत अच्छी स्थिति नहीं थी। समाज में भी स्त्रियों की स्थिति काफी चिंतनीय थी। ऐसी युग में सशक्त नारी चरित्रों की अवधारणा कर उन्होंने भावी स्त्री का एक प्रतिरूप रचा था। निश्चय ही वह अपने समय का यथार्थ नहीं थी। परंतु उसमें भविष्य के संकेत स्पष्ट थे। यह बात अलग है कि उस युग में इस बात को उतना चिन्हित नहीं किया जा सका था। जैसा कि 'बीसवीं सदी की हिंदी कथायात्रा' में संपादक कमलेश्वर ने अपनी भूमिका में दर्ज किया है – 'प्रेमचंद के प्रथम कहानी संकलन सप्त सरोज (1917) से चार वर्ष पूर्व प्रसाद जी का संकलन 'छाया' (1913) प्रकाशित हो चुका था। कलावादियों ने इसका स्वागत किया था, परंतु यथार्थवादियों ने 'छाया' की काल्पनिक कहानियों के निरर्थक कृतित्व मना था।' बेशक, यह कल्पना थी, जिसे प्रसाद ने अपनी स्वप्नचित्रों जैसी कहानियों में रचा था। पर यह कल्पना निरर्थक नहीं थी। इसे मनोविज्ञान और मानव चरित्र का सुदृढ़ आधार प्राप्त था और यह भविष्यदर्शी कल्पना थी। प्रसाद की कहानियों के नारी चरित्र इसी कारण आज भी न सिर्फ आकर्षक लगते हैं, अपितु वे मुग्ध भी करते हैं। उनके भीतर भविष्य की नारी की आहट थी। यह प्रसाद का युगांतरकारी महत्व है कि अत्यंत श्रेष्ठ नाटकों और काव्य के साथ साथ वे ऐसी कालजयी कहानियां भी लिख सके, जिनका महत्व कालांतर में अधिक उजागर हुआ और उनके रची स्त्री पात्रों ने भविष्य की नारी के प्रतिरूप की गरिमा पाई।

संदर्भ

1. मुक्तिबोध समग्र, खंड – 5 संपादक– नेमिचंद्र जैन, 'कामायनी एक पुनर्विचार', प्रकाशक– राजकमल प्रकाशन, संस्करण –2019 पृष्ठ–228
2. मुक्तिबोध समग्र, खंड – 5 संपादक– नेमिचंद्र जैन, 'कामायनी एक पुनर्विचार', प्रकाशक– राजकमल प्रकाशन, संस्करण –2019 पृष्ठ–348
3. राष्ट्रीयं मुक्ति आंदोलन और प्रसाद, संपादक–शंभुनाथ, प्रकाशक–अंतरा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2019, भूमिका–शंभुनाथ, पृष्ठ–10
4. राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन और प्रसद, संपादक–शंभुनाथ में 'राष्ट्रीय आंदोलन और प्रसाद की कहानियं' लेखक–मधुरेश, प्रकाशक–अंतरा प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2019, पृष्ठ–210
5. बीसवीं सदी की हिंदी कथायात्रा, भाग–1 संपादक–कमलेश्वर, प्रकाशक–साहित्य अकादमी, संस्करण– 2010, पृष्ठ–10

डॉ0 लता कुमारी

मारवाड़ी, महाविद्यालय

(पुरुष प्रभाग) लोक रोड़, हिन्दी पीढ़ी,

रांची (झारखण्ड) 834001

मौ0 9430114373

भारतीय लोकनाट्य : कलात्मक एवं सांस्कृतिक वैविध्य

25

डॉ0 अंकिता उपाध्याय

सारांश –

भारतीय नाट्य परंपरा में 'लोक' का विशेष महत्व आरंभ से ही रहा है। यह लोक, जिसे प्रायः पश्चिम के 'फोक' के शाब्दिक अर्थ के रूप में देखा जाता है, वैसा नहीं है। लोक की भारतीय अवधारणा काफी व्यापक है। 'फोक' नगरीय नागरिकता से विच्छिन्न जन को कहा जाता है, जिसका तात्पर्य तथाकथित सुसंस्कृत मेधा और कलात्मक बोध से रहित होना है, मगर भारतीय लोक 'फोक' के उस अर्थ में सीमित नहीं है। इस लोक की संस्कृति का अपना समाजशास्त्र है जिसमें लोकनाट्यों का मंच विधान, संगीत, नृत्य, काव्य आदि सब कुछ निहित है। **नेमिचंद्र जैन के अनुसार**, ''संसार की रंग–संस्कृतियों में भारतीय नाट्य–परंपरा की विशिष्टता आज निर्विवाद है, उसकी प्राचीनता भी और उसकी अनोखी कल्पनाशीलता एवं अनुपम सौंदर्य दृष्टि भी। हमारे यहाँ रंगमंच की जड़े बहुत पुरानी और गहरी हैं, बल्कि कहा जा सकता है कि आदिम या पौराणिक युगों से ही किसी–न–किसी तरह का रंगमूलक कार्यकलाप भारतीय जीवन का अनिवार्य अंग रहा है।''[1] लोकनाट्य परंपरा का संबंध इस लोक से है। यहाँ पारंपरिक लोकनाट्य रूप संरक्षित और सक्रिय होती है। इसके अलावा इनमें देशकाल और संसाधनों के अनुरूप प्रयोगशीलता भी दिखाई देती है। इनका संबंध लोक संवेदना और कला से हुआ करता है। भारतीय जीवन में क्षेत्रीय भाषाई वैविध्य के अनुसार ये बहुरूपी और विविध है किंतु भारतीय नाट्य के मूलभूत स्वरूप से इनका संबंध बहुत लचीला किंतु अभिन्न है।

बीज शब्द –

भारतीय लोकनाट्य, फोक, रंगमंच, रंगशिल्प, संस्कृति, वैविध्य, पूर्वरंग, लोक एवं सामंती अभिरूचि।

'नाट्य' की परिकल्पना मानव सभ्यता के विकास से पहले विभिन्न प्रकार के शारीरिक क्रियाकलापों, दैहिक एवं ध्वनि संकेतों के माध्यम से व्यक्त अभिव्यक्ति में ही की गयी लेकिन यह विशिष्ट अभिनय का रूप धारणा कर रंगमंच पर कब उपास्थित हुआ, इसके बारे में स्पष्ट उल्लेख हमें नहीं मिलता। डॉ0 वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी के शब्दों में – ''लोकनाट्यों का ज्ञात उभार दसवीं से तेरहवीं शताब्दी के बीच दिखाई देता है। यह समय एक प्रकार से संस्कृत नाटकों के पराभव का भी है। कुछ विद्वान लोकनाट्यों के विकास को संस्कृत नाटकों के पराभव से जोड़ते हैं किन्तु यह मत औचित्यपूर्ण नहीं है। संस्कृत नाटक प्रायः राजाश्रय में रचे और खेले जाते थे। दसवीं शताब्दी के आस–पास की राजनैतिक उथल–पुथल के चलते ये राजाश्रय कमजोर हुए तथा इसका प्रभाव इनके संरक्षण में पलने वाले नाटकों एवं साहित्य के अन्य रूपों पर भी पड़ा। वस्तुतः इस समय संस्कृत भाषा भी क्षीण पड़ रही थी तथा समाज पर उसकी पकड़ कमजोर पड़ रही थी जबकि लोकभाषाएं दृढ़ता के साथ विकसित हो रही थी और जनसामान्य के आचार–व्यवहार का माध्यम थी।''[2]

इसी समय साहित्यिक रचनाएं भी लोकभाषाओं में रची जा रही थी, विद्यापति, अमीर खुसरो आदि तमाम कवियों एवं रचनाकारों की रचनाओं में अपभ्रंश आदि भाषाओं का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास हो रहा था। यह ठीक है कि दसवीं से तेरहवीं शताब्दी के बीच संस्कृत नाटकों के पराभव का दौर था लेकिन लोक नाटकों ने उनकी रिक्तियों का स्थान लिया हो ऐसी कोई बात नहीं थी। हबीब तनवीर के शब्दों में '' सूझबूझ वाले लोग जानते हैं कि लोक पहले आया और शास्त्रीय नाटक बाद में आये, फिर उन्होंने प्रभावित किया लोक नाटक को। इस तरह एक दूसरे पर प्रभाव डालते हुए इन नाटकों का चक्रिल विकास हुआ है।''[3] लोकनाट्य लोकजीवन में सतत् प्रवाहित तथा कथागायन अभिनय के माध्यम से निरंतर जीवित थीं। नाट्यशास्त्र से लेकर संस्कृत नाटकों तक लोकनाट्यों का दौर भी सामानान्तर रूप से जारी रहा लेकिन संस्कृत नाटकों के प्रभाव के पश्चात् इसके (लोकनाट्य) सतत् प्रवाही रूप में एक बड़ा बदलाव नजर आया। संस्कृत नाटकों के पराभव के बाद लोकनाट्य समाज में पहले की अपेक्षा ज्यादा आकर्षण का केन्द्र बन गया तथा इसने विशिष्ट जनों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। इसमें सबसे महत्वपूर्ण बदलाव जो आया वह यह कि इसने पूर्वरंगों (नाट्शास्त्र एवं संस्कृत नाटकों) से कुछ तथ्यों को ग्रहीत कर अपने में इस कदर समाहित कर लिया कि वह, उसका अभिन्न अंग प्रतीत होने लगा। हालांकि ये लोकनाट्य कई बार परम्परा से प्रभाव ग्रहण करने के सन्दर्भ में अनेक रूढ़ियों का उनके मूल अभिप्राय से अनजान रहते हुए भी उपयोग कर लेते हैं।

नाट्यशास्त्र में 'इन्द्रध्वज महोत्सव' नाट्य प्रयोग का वर्णन किया गया है, जिसमें दैत्यों और दानवों के द्वारा उक्त प्रदर्शन में विघ्न

उत्पन्न करने के प्रसंग में देवराज इन्द्र द्वारा विघ्नोपचार जर्जर नामक एक दिव्यास्त्र प्रदान करने का उल्लेख मिलता है। कालान्तर में यह जर्जर आनुष्ठानिक रूप से सम्पन्न होने वाले अनेक लोकनाट्यों में विघ्ननिवारक के रूप में प्रयुक्त होने लगा। आज भी असम, बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और दक्षिण भारत समेत सम्पूर्ण भारत में प्रचलित अनेक लोकनाट्यों की प्रस्तुति के पूर्व सम्पन्न किया जाता है। यह जर्जर संभवतः एक पताका के रूप में होता है जो इन्द्र के उसी दिव्यास्त्र का प्रतीक माना जाता है। इतना ही नहीं इन तमाम लोकनाट्यों में पूर्वरंग, प्रसिद्ध आख्यान आधारित नाट्यवस्तु, नृत्य–संगीत की प्रधानता, विदूषक के उपयोग तथा रंगशिल्प के स्तर पर एक तरह की आंतरिक एकता दिखाई पड़ती है, ये मूलतः भारतीय रंगपरम्परा से अंतर्सम्बंध को दर्शाते हैं।

इस प्रकार से देखा जाए तो प्रायः सभी लोकनाट्य किसी न किसी प्रकार से नाट्यशास्त्र में उद्धृत पूर्वरंग विधि का पालन करते नजर आते हैं। नान्दीपाठ, द्विजदेव वन्दना, राजाओं के प्रजापालक रूप के साथ–साथ राष्ट्र की उन्नति, देवों की अनुकूलता आदि का जो विधान भरत के यहाँ मिलता है, यह नाट्य प्रयोगों के समारम्भ से जुड़ा हुआ है. इसी कारण इसे पूर्वरंग कहते हैं। नाट्यशास्त्र के अन्तर्गत पूर्वरंग के विभागों का भी उल्लेख मिलता है जिसमें अवतरण प्रत्याहार आश्रावणा आरम्भ वक्त्रपाणि, परिघट्टना, संघोटना, मार्गसरिता, ज्येष्ट, मध्यम एवं कनिष्ठ आसारित महत्वपूर्ण है। इनका संबंध नाट्य में वाद्यों का निर्धारित स्थान पर रखने, गान के लिए आलाप लेने, सुर मिलाने तथा गायकों द्वारा अपना स्थान ग्रहण करने आदि से है। इसके अलावा देवादि की बन्दना या कीर्तिपाठ आदि का उल्लेख भी मिलता है। नाट्यशास्त्र के उपर्युक्त अनुदेशों का सर्वाधिक पालन लोकनाट्यों में ही दिखाई देता है। 'यक्षगान' में भागवत (सूत्रधार) द्वारा अपनी मंडली के साथ बन्दना गीत गाना, नारियल फोड़ना और आरती उतारना आदि प्रयुक्ति रंगमंच चौकी और चौक दो चरणों में विभाजित पूर्वरंग विधान है। चौकी, जहां अभिनेता आदि अपनी रूप सज्जा करते हैं और भागवत (यक्षगान का अग्रणी व्यक्ति), गणेश आदि देवताओं की वन्दना उसी वौकी में करता है। डॉ0 वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी ने लिखा है – ''के0 शिवराम कारंत ने यक्षमान के कलाकारों के रंगमंच पर प्रतिष्ठापित होने के साथ प्रारम्भ होने वाले 'सभा लक्षण' का यक्षगान का पूर्वरंग कहा है। सभा लक्षण के अन्तर्गत देवतादि की वन्दना और यक्षगान में खेली जाने वाली कथा की सूचना होती है।''[4] असम का एक महत्वपूर्ण लोकनाट्य 'अंकियानाट' के नाम से प्रसिद्ध है। 'अंकियानाट' का नाट्य विधान काफी हद तक नाट्यशास्त्र सम्मत है और इसके पूर्वरंग को 'धेमाली' कहा जाता है।

महाराष्ट्र में प्रचलित लोकनाट्यों तमाशा, गोधल आदि के पूर्वरंग को 'गण गायन' के रूप में जाना जाता है। तमाशा तो लावणी गायन की परम्परा से विकसित हुआ है. जिसके अंतर्गत तुर्रे वाले शिव–ब्रह्म के उपासक और शक्ति के उपासक 'कलंगीवाले' गणगायन की क्रिया संपन्न करने के पश्चात् अपने–अपने देवों की वन्दना करते हैं। मध्य प्रदेश के माच आदि लोकनाट्यों में भी पूर्वरंग विधान उपस्थित है। माच की प्रस्तुति कुछ इस प्रकार है – इसमें कलाकारों के मंच पर आने से पूर्व नाट्य मंच को मन्त्र शक्ति से बांधने अर्थात् निर्विघ्न करने का काम माच मंडली द्वारा किया जाता है। बस्तर के लोकनाट्य 'भतरा नाट' में गणेश वन्दना और सरस्वती वन्दना के रूप में पूर्वरंग का प्रचलन है। छत्तीसगढ़ी नाट्य शैली 'नाचा' का पूर्वरंग भी इसी प्रकार की क्रिया विधान है। इसके अंतर्गत भी गणेश वंदना, भजन गायन, नृत्य आदि क्रियाएं संपन्न होती हैं।

गुजराती लोकनाट्य 'भवाई' के अंतर्गत रंगमंच पर शक्ति की स्थापना करके दीप जलाने की क्रियाएं भी पूर्वरंग से ही आया है। इसमें नाटक मंडली के समस्त कलाकार शक्ति की पूजा करते हैं. फिर गणेश जी की वन्दना कर उन्हें प्रसन्न करते हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में फैले भिन्न–भिन्न प्रांतों के जिन अनेक लोकनाट्यों की चर्चा की गयी, उनमें एक विशेष प्रकार की एकरूपता परिलक्षित होती है। उनकी अन्तर्वस्तु और रूप रचना काफी हद तक एक जैसे प्रतीत होते हैं। रामलीला, रासलीला, यक्षगान, दशावतार, अंकियानाठ आदि धार्मिक लोकनाट्य रूपों के अतिरिक्त भवाई, तमाशा, नौटंकी, भाण आदि लौकिक नाट्य रूपों में कमोबेश अंतर के साथ यह एक सी दिखाई देती हैं। सभी लोकनाट्यों में रंगमंडली के प्रधानकर्ता के रूप में सूत्रधार की व्यवस्था है। अलग–अलग नाट्य प्रकारों में सूत्रधारों के अलग–अलग नाम पाये जाते हैं। भवाई में यह 'रंगला' है तो नौटंकी में इसे 'रंगा' के नाम से जाना जाता है। यक्षगान में सूत्रधार को भागवत कहते हैं। ये (सूत्रधार) नाट्य निर्देशन की भूमिका में होते हैं और सभी लोकनाट्यों में इन्हीं के द्वारा पूर्वरंग विधि संपन्न करायी जाती है। 'भरत वाक्य' का उपयोग भी सभी लोकनाट्य अपनी सर्वमंगलकारी परिणति के लिए करते हैं। रामलीला, रासलीला आदि में 'भरत वाक्य' के स्थान पर आरती की जाती है। भवाई में, अंत में आशीर्वाद मूलक गीत गायी जाती है। अंकिया नाट में 'मुक्ति मंगल' का गान किया जाता है।

इस प्रकार शैली और शिल्प के आधार पर प्रायः सभी लोकनाट्यों का स्वरूप एक है साथ ही इनमें अधिक गतिशीलता, सर्जनात्मकता और कल्पनाशीलता भी होती है। मध्यकाल में, संस्कृत

नाटकों के पराभव के बाद लोकनाट्यों ने नया मोड़ लिया और इनमें संस्कृत नाटकों के ऐतिहासिक, पौराणिक कथाओं का प्रभाव भी पड़ा। 'कुटियाट्टम', 'जात्रा', 'भवाई' या 'यक्षगान' के अलावा 'माच', 'नाचा' तथा 'नौटंकी' जैसे तमाम लोकनाट्यों ने ऐसे ही ऐतिहासिक, पौराणिक कथाओं को अपने नाट्य विषय का आधार बनाया। 'स्वप्नवासवदत्तम', 'मृच्छकटिकम' आदि जैसे संस्कृत नाटकों के प्रसिद्ध आख्यान अत्यधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय है। संस्कृत नाटकों के गद्य–पद्य शैली का प्रभाव भी लोकनाट्यों पर पड़ा है। फर्क सिर्फ इतना है कि संस्कृत नाटकों के चरित्रों की जो क्लासिकल जटिलता है, उसको उस रूप में न स्वीकार कर ये लोकनाट्य उन्हें अपने लोकजीवन के सादगीपूर्ण कार्यव्यापार में ढाल लेते हैं। नाचा या भतरा नाट्यों में अक्सर राजाओं की रानियों भी पानी भरते और रोपाई का काम करते दिखायी जाती है। इस तरह के प्रयोगों से इनमें किसी प्रकार की जटिलता नहीं आती यह विलक्षण प्रयोग है और इनमें सुख दुःख और संघर्ष आदि बड़ी सादगी से व्यक्त होते हैं।

समग्र भारतीय संस्कृति की मूल संकल्पनाओं में समानता की प्रमुख वजह भारतीय जन के आचार, व्यवहार, भाषा संस्कार व रचनाशीलता का निर्माण करने वाले आधार है, जिसके कारण देश काल के अनुरूप परिवर्तनों के बावजूद उनमें परस्पर समानताओं के अनेक रूप देखने को मिल जाते हैं। इसके बावजूद ये लोकनाट्य विधाएँ कुछ जातीय निजता के कारण परस्पर भिन्नता या कलात्मक वैविध्य का निर्माण विकसित करती हैं। भौगोलिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से भारत के अंचलीय नाटकों का अध्ययन करने पर इसे उनकी अनेक विशेषताओं का पता लगता है। उत्तर पश्चिम क्षेत्रों के लोकनाट्य अन्य क्षेत्रीय नाटकों से भिन्न है, इसी प्रकार पूर्वी एवं दक्षिणी क्षेत्रों के तमाम लोकनाट्यों में भिन्नता के विविध आयामो को देखा जाता है। इस वैविध्यता के पीछे कुछ प्रमुख वजहें हैं। एक तो इनके विकास का समय, सबसे महत्वपूर्ण कारण हैं विभिन्न प्रदेशों के लोकनाट्यों के उद्भव या आरम्भ का समय चाहे जो रहा हो किन्तु इनका उभार उत्तर मध्य काल में ही हुआ है। दक्षिण के कुटियट्टम का उद्भव दसवीं ग्यारहवी शताब्दी में होता है। यह सबसे प्राचीन लोकनाट्य रूप है। इसके अलावा दक्षिण के ही यक्षगान भामकलापम भागवतमेल आदि नाट्यरूपों का आरंभ पन्द्रहवीं सोलहवीं शताब्दी के मध्य तथा दूसरी ओर पूर्व में प्रचलित अंकियानाट, जात्रा आदि लोकनाट्यों का भी समय पन्द्रहवीं शताब्दी में ही माना जाता है। भवाई का उदभव सत्रहवीं शताब्दी में तो तमाशा, माच और नौटंकी आदि 18वी शताब्दी के आस–पास पुनर्गठित नाट्य विधाएँ हैं। इस प्रकार अलग–अलग काल में उभरते इन लोक नाट्यों में तत्कालीन समय और सामाजिक परिवेश तथा क्षेत्रीय विशेषताओं का समावेशन होता जाता है. जो इन्हें एक दूसरे से जातीय स्तर पर भिन्न बनाती है। इसके अतिरिक्त कुछ लोकनाट्य विभिन्न प्रांतों में शासन कर रहे राजाओं के राजाश्रय में तो नहीं कही जा सकती लेकिन उनके शासनकाल में अवश्य पली–बढ़ीं। मध्यकाल में संस्कृत नाटकों के पराभव के बाद लोकनाट्यों का उभार चरम पर रहा इसलिए अपने समय वो राजाओं की वेशभूषा, साज–सज्जा और सामंती व्यवस्था की झलक इनमें स्वाभाविक रूप से दिखाई पड़ती है। देवीलाल सामर ने उत्तर पश्चिमी क्षेत्र के लोकनाट्यों के विषय में कहा है ''वे अपनी वेशभूषा. प्रस्तुतीकरण शैली, गायन, वादन, नर्तन आदि में विजातीय नाटकों का सा आभास देते हैं। उनमें प्रयुक्त होने वाली पौराणिक प्रसंग पौराणिकता से काफी परे रहते हैं। उनके नाटक के राम मुगलिया शैली की अंगरखी एवं पगड़ी धारण करते हैं तथा सीता भारी भरकम लँहगे में मुगल कलम में चित्रित नारी का सा आभास देती है।''[5] यानी मुगल काल में खेली जाने वाली लोकनाट्य रामलीला में राम और सीता पौराणिक राम–सीता न होकर अपने समय के राजा रानी के समान वेशभूषा धारण करते दिखाई देते हैं। यह तत्कालीन राजनीतिक सामाजिक प्रभाव के कारण संभव हुआ है।

राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रों में खेली जाने वाली 'राजा हरिश्चन्द्र' में हरिश्चन्द्र को मुगलिया शैली की पगड़ी बांधे हुए पाया जाता है साथ ही चूड़ीदार पजामे पर शेरवानी और कमरबंद आदि के साथ मध्यकालीन सरदार उमराव की भांति छटा बिखेरते नजर आता है। इन खेलों के गायन पदों में जनपदीय भाषा के अन्तर्गत उर्दू फारसी शब्दों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में मिलता है। राजस्थान के चिड़ावी शैली में प्रचलित कुछ अन्य नाट्यों, जगदेव कंकाली, ममल महेन्द्र, राजा हरिश्चन्द्र आदि को राणा परिवार से संबंधित मुस्लिम कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, जो नाटक का आरम्भ, गणपति–शारदा की पूजा अपने पोर पैगम्बर की स्तुति कहकर करते हैं। राजस्थानी 'रासधारी' खेल जो राम के जीवन पर आधारित है के समस्त कलाकार मुगल–शाही ठाट–बाट में आते हैं तथा राम के पौराणिक छवि का अंकन न कर उनके लोकपरक जीवन को अंकित करने में ही अपनी विशेषता समझते हैं। भाषा के स्तर पर अरबी–फारसी का खूब प्रयोग करते दिखाई पड़ते हैं। जैसलमेरी – बीकानेरी रम्मतों में उर्दू जनपदीय भाषा में प्रचलित है इसके अतिरिक्त पहनावा, हावभाव, भाषा एवं प्रस्तुतीकरण में भी ये समस्त लोकनाट्य क्षेत्रीय संस्कृति का परिचय देते हैं– जैसे कश्मीर का भांड जश्न इसके अलावा हरियाणी सांगों में पौराणिक प्रसंगों की स्त्रियां भी सलवार पजामें एवं कुर्ती का प्रयोग

करती दिखती हैं।

उत्तर प्रदेश की नौटंकियों पर मुगलिया प्रभाव के कारण इसके गानों का प्रदर्शन उर्दू गजलियती ढंग से होता है। नौटंकी के प्रसिद्ध खेलों में एक ओर जहां विशुद्ध मुस्लिम संस्कृति का दर्शन कराने वाले स्याहपोश, लैला मजनू, शिरी फरहाद, हीर रांझा का मंचन होता है वही दूसरी और भक्ति आंदोलन से जुड़ी हिन्दू संस्कृति से सराबोर रामलीला व रासलीला है। इन दोनों ही प्रकार के नाटकों का अभिनय करने वाले कलाकारों पर संस्कृतियों का मेल स्पष्ट रूप से दिखाई पडती है। पूर्वी भारत के अंकियानाट और जात्रा अष्टछाप की भक्ति परंपरा के साथ जुड़े होने के कारण मुस्लिम प्रभाव के अंश से काफी बचे रहे हैं। रासलीला के राधाकृष्ण भी ज्यादातर अष्टछाप कवियों द्वारा वर्णित चरित नायकों की हुबहू अनुकृति प्रतीत होते हैं। बंगाल की 'जात्रा' में राधाकृष्ण के चित्रण में गीत गोविन्द परंपरा का पालन किया जाता है। असमिया अंकियानाट के सभी पात्र प्रायः तिलक छापे लगाकर मुकुट किरीट पहने कीर्तनी ढंग से गा–बजाकर भक्त जनों का मन मोह लेते हैं।

लोकनाट्यों के आने के क्रम में दक्षिण की तरफ बढ़ते हुए आंध्र प्रदेश के कुचिपुड़ी, भागवत–मेला, कर्नाटक के यक्षभान तथा केरल के कुटियाट्टम आदि के दर्शन होते हैं। दक्षिण भारत के लोकनाट्यों में भी विजातीय संस्कृति का प्रभाव देखने को प्रायः नहीं मिलता है, इनमें पात्र, भीमकाय पोशाक पहने, भारी–भरकम शीश मुकुट लगाये तथा मुखविन्यास भी भयावना एवं विस्मयकारी मुखौटे से सज्जित पाये जाते हैं। ये बड़े–बड़े ढोल, झांझ, मजीरें बजाकर दर्शकों का उत्साहवर्धन करते, बड़ी–बड़ी छलांगें लगाकर नाचते गाते हैं तथा भीमकाय दीप प्रज्वलित कर अपने प्रस्तुतीकरण में पौराणिक एवं पुरातन हिन्दू संस्कृति का परिचय देते हैं। इस दृष्टि से ये शास्त्रीय नाटकों की परिपाटी का पालन करते नजर आते हैं। उत्तर भारतीय लोकनाट्य तत्वों में शास्त्रीयता का लगभग अभाव पाया जाता है, जबकि केरल के कुटियाट्टम, कर्नाटक के यक्षगान एवं आंध्रप्रदेश के कुचिपुडी तथा भागवत–मेलों में अंगभंगिमाओं, मुखाकृतियों, मुद्राओं एवं रस सिद्धांतों के परिपालन में इसका प्रयोग प्रचुर मात्रा में होता है। इसके पात्र पारम्परिक गुरूओं से प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं. जबकि भवाई, ब्रज की रासलीला आदि कुछ व्यावसायिक लोकनाट्यों को छोड़ दें तो उत्तर–भारतीय लोकनाट्यों को किसी विशेष पूर्वाभ्यास की आवश्यकता नहीं होती। किसी जाति विशेष के नाट्यपात्र होने एवं व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के कारण गुजरात एवं राजस्थान के 'भवाई' पात्रों को सिर के बल चलने, देह तोड़ने आदि की चमत्कार पूर्ण प्रदर्शन करने के लिए अपने बड़े बूढ़ों से विशेष तालीम लेने की परम्परा रही है। इसी तरह से ब्रज की रासलीला में रासधारियों के कड़े प्रतिबंधों के कारण उनके पात्रों को बचपन से ही कड़े अनुशासन में बंधकर शुद्ध पदोच्चारण एवं शास्त्रोक्त नृत्यगान का अभ्यास करना पड़ता है। ऐसा इसलिए करना पड़ता है, क्योंकि ब्रज की रासलीला वल्लभ सम्प्रदाय के पुष्टिमार्ग से जुड़ा है। इसलिए भक्त कवियों के कीर्तन पद्धति का पालन करना उनके लिए आवश्यक होता है। भक्त कवियों द्वारा वर्णित भगवान की विविध लीलाओं का सांग रूप में वर्णन करना मात्र उद्देश्य है, पारम्परिक शास्त्रीय शैली में नाट्य प्रस्तुती नहीं। अतः इनमें कहीं भी रसनिरूपण, आंगिक मुद्रा–प्रदर्शन एवं अन्य शास्त्रीय तत्वों का प्रतिपादन नहीं दिखाई पड़ता। ये न तो उत्तर भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की तरह विदेशी प्रभाव से मुक्त है और न ही दक्षिण भारतीय नाट्य शैलियों की भाँति नाट्यशास्त्र से प्रेरित दिखाई पड़ते हैं। ब्रज की रासलीला अपने सांगोपांग में विशुद्ध रूप से लोकनाट्य होने का परिचय देते हैं।

युगानुरूप सामाजिक–राजनीतिक संस्कृतियों के गहरे प्रभाव के कारण लोकनाट्यों में कई विकृतियां भी उत्पन्न हुई, जो परंपरा से प्रचलित नहीं थी। उदाहरणस्वरूप, राजस्थान के कुचामणी लोकनाट्य में एक नक्काड़े का नाच चल पड़ा है, यह पारंपरिक क्रिया नहीं है। इसमें नक्काड़े के बोल पर नृत्यकार उन्हें अपने अंग में निकालता हुआ विविध अंगभंगिमाओं का प्रदर्शन करता है और मूकाभिनय के रूप में साँप सपेरे का जो नृत्य चल पड़ा है, वह सब परंपरा से भिन्न प्रक्रियाएँ हैं। मालवा के 'माच' में भी सामूहिक नृत्य की परंपरा नहीं थी इसी तरह से राजस्थान के 'तुर्रागकली' में फरमाइशी नृत्य चल पड़े हैं, मथुरा की रामलीलाओं में चौपाइयों के आधार को छोड़कर मजलिसी नाचगान का प्रचलन व्याप्त हो गया है. ये सब कल्पित व परंपरा के विरूद्ध तथा असंस्कारिक हैं। इन नाट्यकृतियों में पहले केवल गीतों की संवादात्मक पद्धति व्याप्त थी, लेकिन अब गीतात्मक संवादों के साथ–साथ नाच को भी इसके अभिन्न अंग के रूप में शामिल कर लिया गया है। उत्तर प्रदेश के नौटंकियों की सबसे बडी खूबी उनके संवाद शैली के कारण थी, किन्तु उसमें भी नाच को प्रश्रय दे दिया गया है तथा नाच का समस्त जिम्मा स्त्री पात्रों को दिया गया है, पुरुष पात्र केवल संवादी पद बोलते हैं। अतः उत्तर भारतीय लोकनाट्यों में जो ये नृत्य प्रसंग घुस पड़े हैं, वे लोकनाट्य परंपरा के अनुकूल नहीं है।

निष्कर्ष :–

इन सभी विशेषताओं को कायम रखते हुए देश की विविध लोकनाट्य विधाएँ अपने विशिष्ट गुणों के कारण विशेष रूप से प्रसिद्ध है। जहाँ नौटंकी खेल अपने प्रेमाख्यानों के लिए, ब्रज की रासलीलाएँ

भक्तिपरकता के लिए, बंगाल की जात्रा तथा असम का अंकियानाट अपनी कीर्तननुमा प्रस्तुतीकरण के लिए प्रख्यात हैं वहीं कर्नाटक के यक्षगान वीरतापूर्ण प्रसंग, राजस्थान का गंवरी नाट्य अपनी कुटकड़ियाँ शैली, गुजरात का भवाई हाजिरजवाबी वाली अभिनय शैली के कारण अत्यंत लोकप्रिय है।

सन्दर्भ सूची :

1. नेमिचंद्र जैन, रंग परम्परा : भारतीय नाट्य में निरन्तरता और बदलाव, पृ0 12
2. डॉ0 वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, भारतीय लोकनाट्य, पृ0 28
3. संगीता गुन्देचा, नाट्यदर्शन : समकालीन श्रेष्ठ रंगनिर्देशकों कावालम नारायण पणिक्कर हबीब तनवीर रतन थियम से संवाद, पृ0 67
4. डॉ0 वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, भारतीय लोकनाट्य, पृ0 30
5. देवीलाल सामर, 'लोकनाट्य के विविध रूप' 'रंग'–प्रसंग, अंक–जुलाई–दिसंबर, 1999 पृ0 137

डॉ0 अंकिता उपाध्याय

पी.एच.डी, हिंदी विभाग,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

26 संख्या पद्धति का इतिहास एवं गणितज्ञों का योगदानः–

मधुबाला

1. प्रस्तावना

प्रारंभिक काल से ही गणित बहुत ही महत्वपूर्ण विषय माना जाता रहा है। गणित की महत्ता को बताते हुए वेदांग ज्योतिष ने कहा है कि जिस प्रकार मयूरों की शिखाएं और सर्पों की मणियां शरीर में सर्वोपरी स्थान रखती हैं ठीक उसी प्रकार से गणित भी सभी विज्ञानों में सर्वोच्च स्थान पर है। आज का युग विज्ञान का युग है, जिसे हम अनुसंधान का युग भी कह सकते हैं। आज विश्व में जो भी विकास हुआ है वह गणित के ज्ञान के बिना असंभव था। आधुनिक युग में जो भी नवीन विचारधाराओं का जन्म हुआ है, उसे हम गणित की प्रगति का प्रतीक मानते हैं। अंकन पद्धति या संख्या पद्धति गणित की शुरुवात या आरम्भ होने के रूप में देखि जा सकती है। मानव के जीवन आरम्भ होने की अनेकों धारणाएं हैं। लेकिन यह सत्य है कि कि मानव को अपने जीवन यापन में संख्या ज्ञान की आवश्यकता प्रारम्भ से ही रही होगी।

2.उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

1. संख्या पद्धति के इतिहास का वर्णन कर सकेंगे।
2. गणीतीय संकेतन को जान पाएंगे।
3. गणित के विकास में महान गणितज्ञों के योगदान को जान पाएंगे।

3 संख्या पद्धति का इतिहास :–

संख्या सूझ मनुष्य की आन्तरिक शक्ति समझी जा सकती है। कोई वस्तु कि कितनी है, यह जानने का प्रयास ही संख्या पद्धति के ज्ञान को ग्रहण करने का प्रयास है। अतः यह कहा जा सकता है कि अंकन पद्धति का आरम्भ उतना ही प्राचीन है जितना सभ्यता का अपना आरम्भ। प्राचीन समय में विभिन्न समस्याएं जन्मी और प्रत्येक सभ्यता का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि कि हर सभ्यता में संख्या पद्धति का विकास हुआ। प्राचीन समय में मनुष्यों ने गणना के विभिन्न ढंगों का प्रयोग किया।

प्राचीन काल में मनुष्य रस्सी में गांठ बांधकर या पेड़ पर कटावदार चिन्ह बनाकर गिनती की शुरुआत करता था, जिसने कालांतर में संख्या का रूप ले लिया और और बाद में विभिन्न सभ्यताओं ने अपनी अपनी संख्या पद्धति का विकास किया। 300 ईशा पूर्व र्व तक भारतीय गणितज्ञों ने क खोज किया परन्तु इसमें शून्य का उल्लेख नहीं था। शून्य के खोज के उपरांत स्थायी प्रणाली की खोज का श्रेय भारत को ही जाता है जिसे बाद में अरब गणितज्ञ ने प्रचार वर्तमान अंक पद्धति को हिन्दू अरबी अंक पद्धति कहा जाता है। 1220 में अंको की कहानी(लिबरेअबाची) पुस्तक द्वारा फिबोनाची ने पश्चिमी देशों में 0–9 अंको वाली दाशमिक प्रणाली से अवगत कराया। प्रत्येक सभ्यता एवं देशों में संख्या पद्धति विभिन्न प्रकार से आरम्भ हुई तथा विकसित हुई संख्या सूझ मनुष्य की आन्तरिक शक्ति समझी जा सकती है। कोई वस्तु कितनी है, यह जानने का प्रयास ही संख्या पद्धति के ज्ञान को ग्रहण करने का प्रयास है। अतः यह कहा जा सकता है कि अंकन पद्धति का आरम्भ उतना ही प्राचीन है जितना सभ्यता का अपना आरम्भ। प्राचीन समय में विभिन्न समस्याएं जन्मी, और प्रत्येक सभ्यता का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि कि हर सभ्यता में संख्या पद्धति का विकास हुआ। प्राचीन समय में मनुष्यों ने गणना के विभिन्न ढंगों का प्रयोग किया।

शताब्दियों के विकास के बाद इसने एक सम्पूर्ण पद्धति का रूप ग्रहण कर लिया है जो कि आज के गणित की बुनियाद भी है। सर्वप्रथम संख्या ज्ञान अर्जित करने के लिए सबसे पहले मनुष्य ने हर सभ्यता में लकीरों का प्रयोग किया। यह लकीरें जमीन पर, पत्थरों पर, दीवारों पर एवं वृक्षों पर खींची गई। फि फिर तिनकों का पत्थरों का, मिट्टी की डलियों का, कंकरों आदि चीजों का सहारा लिया गया। फिर उँगलियों का सहारा लिया गया। इस तरह से संख्या पद्धति के ज्ञान को अर्जित करने की शुरुआत हुई। प्रारम्भ में नंबर की जगह लकीरों का इस्तेमाल किया गया जिसमें एक लकीर का मान एक यूनिट माना जाता था। बाद में संख्याओं को पत्थर और लकड़ियों पर लकीरें खींचकर दिया जाता था जो कि हर देश में समान होती थी । जैसे–1 हड्डी के टुकड़े पर । लकीर कि कि सी एक जानवर, आदमी या किसी चीज को दर्शाती थी। इसके पश्चात चिन्हों का प्रयोग किया गया तथा भाषाओं के वर्षों का भी प्रयोग किया जाने लगा। और अंत में अंकों का प्रयोग किया जाने लगा। चीनी सभ्यता में चिन्हों का प्रयोग किया गया। यूनानियों और हेबरियों ने वर्णमाला के अक्षरों का प्रयोग किया उदाहरणार्थ – अल्फा अर्थात एक, बीटा अर्थात दो और दहाई के लिए प (अयोटा) का प्रयोग किया। रोमन सभ्यता महान सभ्यताओं में से एक है। रोमन भाषा की वर्णमाला आज भी यूरोप की अधिकतर भाषाओं की लिपि है। अंग्रेजी भाषा की लिपि भी रोमन है। आज भी हम रोमन भाषा का प्रयोग करते हैं। रोमन संख्याएँ आज भी प्रचलन में हैं सभी प्राचीन सभ्यताओं में गणित एवं संख्या ज्ञान था। परन्तु इन संख्याओं को प्रस्तुत करने का तरीका सभी का अलग–अलग था। क्योंकी सभी सभ्यताओं की अपनी भाषा थी और संख्या लेखन में भाषा का योगदान होता ही है।

बेबीलोन सभ्यता भी प्राचीन सभ्यताओं में से एक है। उन्होंने इकाई के लिए दहाई के लिए और सैंकड़ के लिए प्रतिरूपों का प्रयोग किया। रोमन अंकगणित लकीरों एवं उँगलियों का प्रयोग दर्शाता है।

वर्णमाला रोमन संख्या पद्धति का अभिन्न अंग है। जैसे– रोमन भाषा में I को I, 2 को 11, 3 को III, 4 को IV, और 5 को आदि से प्रदर्शित करते हैं। यहाँ बड़ी संख्या को लिखना कठिन है।

4 गणितीय संकेतन –

गणितीय संकेतन की सहायता से गणित के तर्क के संक्षिप्त रूप में लिखे जा सकते हैं। और यह गणितीय चिंतन में सहायक है। गणितीय संकेतन की सहायता से जटिल सम्बन्धों को सरलता से समझा जा सकता है। मध्ययुगीन शताब्दियों में संकेतन के यथेष्ट विकास के अभाव में गणित की प्रकृति अवरुद्ध हो गई थी 16 वीं शताब्दी के अंत में प्रारंभिक बीजगणित का शुद्ध सांकेतिक रूप में विकास होने के पश्चात ही 17 वीं शताब्दी में गणित की कुछ विशिष्ट शाखाओं की उन्नति ति हो सकी। प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों में विभिन्न संकेत एवं संश्लेषण मिलते हैं। किन्तु समय के साथ उन सब में परिवर्तन हुए और वे अनेक रूपान्तर के पश्चात वर्तमान रूप में आए। व्यावहारिक संकेतन की उन्नति बहुत धीरे–धीर हुई और वे ही संकेत प्रयुक्त होते रह सके जो संक्षिप्त थे, गणितीय सिद्धांतों के प्रयोगानुकूल पाए गए और सरलता से मुद्रित किए जा सके। कभी कभी किसी संकेत का दीर्घकालीन प्रचलन भी उसके ग्रहण किए जाने का कारण हुआ है, यद्यपि उसके स्थान पर अधिक उपयोगी संकेत का प्रचार हो चुका था, जैसे– करणी चिन्ह का, जो अधिक लचीले भिन्नात्मक घातांक के होते हुए अब भी उपयोग किया जाता है ये वे चिन्ह अथवा संकेत हैं जो किसी गणितीय क्रिया अथवा सम्बन्ध को व्यक्त करने में किसी गणितीय राशि की प्रकृति अथवा सम्बन्ध को व्यक्त करने में, किसी गणितीय राशि की प्रकृति अथवा गुण को दर्शार्शाने, अथवा गणित में प्रायः प्रयुक्त होने वाले वाक्यांश विशिष्ट संख्या या गणितीय राशि को निर्दिष्ट करने के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं। जैसे–अब में का चिन्ह निर्दिष्ट करता है कि अ में ब जोडना है अब में असमता का चिन्ह (<) अ का ब से छोटा होने का संबंध दर्शाता है फ संकेत यह सचित करता है कि फलन फ(य) एकरूप वर्धमान फलन है। व्यवहारिक संकेतन की उन्नति ति बहुत धीरे–धीरे हुई और वे ही संकेत प्रयुक्त होते रह सके जो संक्षिप्त थे, गणितीय सिद्धांतों के प्रयोगानुकूल पाए गए और सरलता से मुद्रित किए जा सके। कभी कभी कि किसी संकेत का दीर्घकालीन प्रचलन भी उसके ग्रहण किए जाने का कारण हुआ है, यद्यपि उसके स्थान पर अधिक उपयोगी संकेत का प्रचार हो चुका था, जैसे– करणी चिन्ह का, जो अधिक लचीले भिन्नात्मक यातांक के होते हुए अब भी उपयोग किया जाता है।

प्रारंभिक बीजगणित के धन (+) तथा ऋण (–) चिन्ह सबसे पूर्व वर्व सन् 1489 में मुद्रित हुए थे, और गुणन तथा भाग के चिन्ह सबसे पहले क्रमशः सन् 1631 और 1659 में प्रकाशित हुए थे। समता का चिन्ह रॉबर्ट रिकार्ड (Robert Ricarde) ने सन् 1557 में प्रचलित किया था। वर्तमान में गणित में बहुत से उपयोगी संकेताकों का प्रयोग किया जाता है।

महान गणितज्ञों का योगदान –

1 आर्यभट्ट–

आर्यभट (476–550) इनका जन्म 476 ई. में कुसुमपुर नामक स्थान में हुआ। इनके जन्म के बारे में बहुत ज्यादा जानकारी नहीं है। आर्यभट्ट प्राचीन भारत के एक महान ज्योतिष विद् और गणितज्ञ थे। इन्होंने आर्यभटीय ग्रंथ की रचना की जिसमें ज्योतिषशास्त्र के अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन है। आर्यभट्ट प्राचीन समय के सबसे महान खगोलशास्त्रीयों और गणितज्ञों में से एक थे। विज्ञान और गणित के क्षेत्र में उनके कार्य आज भी वैज्ञानिकों को प्रेरणा देते हैं। आर्यभट्ट उन पहले व्यक्तियों में से थे जिन्होंने बीजगणित (एलजेबरा) का प्रयोग किया। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना 'आर्यभटिया' (गणित की पुस्तक) को कविता के रूप में लिखा। यह प्राचीन भारत की बहुचर्चित पुस्तकों में से एक है। इस पुस्तक में दी गयी ज्यादातर जानकारी खगोलशास्त्र और गोलीय त्रिकोणमिति से संबंध रखती है। 'आर्यभटिया' में अंकगणित, बीजगणित और त्रिकोणमिति के 33 नियम भी दिए गए हैं। मध्यकाल में 'निकोलस कॉपरनिकस' ने यह सिद्धांत प्रतिपादित किया था पर इस वास्तविकता से बहुत कम लोग ही परिचित होंगे कि कि 'कॉपरनिकस' से लगभग । हजार साल पहले ही आर्यभट्ट ने यह खोज कर ली थी कि पृथ्वी गोल है और उसकी परिधि अनुमानतः 24835 मील है। सूर्य और चन्द्र ग्रहण के हिन्दू धर्म र्म की मान्यता को आर्यभट्ट ने गलत सिद्ध किया। इस महान वैज्ञानिक और गणितज्ञ को यह भी ज्ञात था कि कि चन्द्रमा और दूसरे ग्रह सूर्य की किरणों से प्रकाशमान होते हैं। आर्यभट्ट ने अपने सूत्रों से यह सिद्ध किया कि एक वर्ष में 366 दिन नहीं वरन 365.2951 दिन होते हैं।

आर्यभट्ट के कार्यों की जानकारी उनके द्वारा रचित ग्रंथों से मिलती है। इस महान गणितज्ञ ने आर्यभटीय, दशगीतिका, तंत्र और आर्यभट्ट सिद्धांत जैसे ग्रंथों की रचना की थी। विद्वानों में 'आर्यभट्ट सिद्धांत' के बारे में बहुत मतभेद है। ऐसा माना जाता है कि कि 'आर्यभट्ट सिद्धांत' का सातवीं शदी में व्यापक उपयोग होता था। सम्प्रति में इस ग्रन्थ के केवल 34 श्लोक ही उपलब्ध हैं और इतना उपयोगी ग्रंथ लुप्त कैसे हो गया इस विषय में भी विद्वानों के पास कोई निश्चित जानकारी नहीं है।

उन्होंने आर्यभटीय नामक महत्वपूर्ण र्ण ज्योतिष ग्रन्थ लिखा, जिसमें वर्गमूल, घनमूल, समान्तर श्रेणी तथा विभिन्न प्रकार के समीकरणों का वर्णन है। उन्होंने अपने आर्यभटीय नामक ग्रन्थ में कुल 3 पृष्ठों के समा सकने वाले 33 श्लोकों में गणित विषयक सिद्धान्त तथा 5 पृष्ठों में 75 श्लोकों में खगोल–विज्ञान विषयक सिद्धान्त तथा इसके लिये यन्त्रों का भी निरूपण किया, आर्यभट ने अपने इस छोटे से ग्रन्थ में अपने से पूर्ववर्ती तथा पश्चाद्वर्ती देश के तथा विदेश के सिद्धान्तों के लिये भी क्रान्तिकारी अवधारणाएँ उपस्थित की। आर्यभटीय ग्रन्थ में कुल मिलाकर 121 श्लोक पाए गए जो चार खण्डों में विभाजित है

1. गीत पदिका
2. गणित पाद
3. कालि क्रियापाद
4. गोलपाद

गोलपाद इन खण्डों में सबसे छोटा ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में आर्य र्यभट्ट ने एक अनोखी रीतिका निर्माण किया। इसमें आर्यभट्ट ने संख्याओं को संक्षिप्त में लिखा और पूरे खण्ड को मात्र 11 श्लोकों में समेट दिया। तीसरे एवं आगे आने वाले श्लोकों में क्षेत्रफल निकालने के नियम दिए हुए है। इनमें से प्रमुख हैं।

–गोले का क्षेत्रफल

–त्रिभुज का क्षेत्रफल

–शंकु का घनफल त्रिकोणमिति और उस पर आधारित नियमवृत

–चर्तुर्भुज और त्रिभुज खींचने की रीति दीपक की दूरी तथा ऊँचाई जानने की रीति।

–परिधि तथा व्यास में सम्बन्ध क्षेत्रफल

2. भास्कराचार्य

इनका जन्म 1114 ई. में विदर नामक स्थान में हुआ विदर नगर आंध्रप्रदेश राज्य में पड़ता है। भास्कराचार्य के पिता महेश्वर भट्ट भी स्वयं वेदों तथा शास्त्रों के पंडित थे उन्होंने भी कई ग्रंथों की रचना की। डॉ. स्पोटवुड ने रॉयल सोसाइटी के जनरल में लिखा है, भास्कराचार्य र्य की विवेचन सूक्षमता उच्च कोटि की है, यह हमें स्वीकार करना होगा। भास्कराचार्य ने जिन गणित ज्योतिष सिद्धांतों की रचना की है और जिस दर्जे से की है, उसकी तुलना हम आधुनिक गणित ज्योतिष शास्त्र से कर सकते हैं।

इनके द्वारा रचित मुख्य ग्रन्थ सिद्धान्त शिरोमणि है जिसमें लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित तथा गोलाध्याय नामक चार भाग हैं। ये चार भाग क्रमशः अंकगणित, बीजगणित, ग्रहों की गति ति से सम्बन्धित गणित तथा गोले से सम्बन्धित हैं।

आधुनिक युग में धरती की गुरुत्वाकर्षण शक्ति (पदार्थों को अपनी ओर खींचने की शक्ति) की खोज का श्रेय न्यूटन को दिया जाता है। कितु बहुत कम लोग जानते हैं कि कि गुरुत्वाकर्षण का रहस्य न्यूटन से भी कई सदियों पहले भास्कराचार्य ने उजागर कर दिया था। भास्कराचार्य ने अपने 'सिद्धांतशिरोमणि' ग्रंथ में पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के बारे में लिखा है कि 'पृथ्वी आकाशीय पदार्थों को विशिष्ट शक्ति से अपनी ओर खींचती है। इस कारण आकाशीय पिण्ड पृथ्वी पर गिरते हैं। उन्होने करण कौतूहल, गोलाध्याय रसगुण, सूर्य सिद्धान्त एवं समय सिद्धान्त शिरोमणि नामक ग्रन्थों की भी रचना की थी। ये अपने समय के सुप्रसिद्ध गणितज्ञ थे। कथित रूप से यह उज्जैन की वेधशाला के अध्यक्ष भी थे। उन्हें मध्यकालीन भारत का सर्वश्रेष्ठ –गणितज्ञ माना जाता है।

–गणित के क्षेत्र में योगदान

–ज्योतिष गणित के महान विद्वान थे।

–पाईं (1) का मान 3.1255 माना।

–उन्होंने अनंत का विचार भी दिया।

–उनके अनुसार कि कि सी भिन्न में यदि हर शून्य है तो वह भिन्न अनंत कहलाएगी।

–एक घात एवं द्विघात समीकरणों को हल करने के तरीके भी दिए।

–उन्होंने कई आकृतियों के क्षेत्रफल तथा घनफल निकालने के सूत्र दिए जैसे

–गोले का क्षेत्रफल = $4\pi r^2$

–वृत्त का क्षेत्रफल r

3 श्रीनिवास रामानुजन इयंगर

एक महान भारतीय गणितज्ञ थे। इन्हें आधुनिक काल के महानतम गणित विचारकों में गिना जाता है। इन्हें गणित में कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं मिला, फिर भी इन्होंने विश्लेषण एवं संख्या सिद्धांत के क्षेत्रों में गहन योगदान दिए। रामानुजन का जन्म 22 दिसम्बर 1887 को भारत के दक्षिणी भूभाग में स्थित कोयंबटूर के ईरोड नाम के गांव में हुआ था। वह पारंपरिक ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे। इनकी की माता का नाम कोमलताम्मल और इनके पिता का नाम श्रीनिवास अय्यंगर था। इनका बचपन मुख्यतः कुंभकोणम में बीता था जो कि कि अपने प्राचीन मंदिरों के लिए जाना जाता है। बचपन में रामानुजन का बौद्धिक विकास सामान्य बालकों जैसा नहीं था। यह तीन वर्ष की आयु तक बोलना भी नहीं सीख पाए थे। जब इतनी बड़ी आयु तक जब रामानुजन ने बोलना आरंभ नहीं कि कि या तो सबको चिंता हुई कि कि कहीं यह गूंगे तो नहीं हैं। बाद के वर्षों में जब उन्होंने विद्यालय में प्रवेश लिया तो भी पारंपरिक शिक्षा में इनका कभी भी मन नहीं लगा। रामानुजन ने दस वर्षों की आयु में प्राइमरी परीक्षा में पूरे जिले में सबसे अधिक अंक प्राप्त किया और आगे की शिक्षा के लिए टाउन हाईस्कूल पहुंचे। रामानुजन को प्रश्न पूछना बहुत पसंद था। उनके प्रश्न अध्यापकों को कभी–कभी बहुत अटपटे लगते थे।

जैसे – कि संसार में पहला पुरुष कौन था? पृथ्वी और बादलों के बीच की दूरी कितनी होती है? विद्यालय में इनकी प्रतिभा ने दूसरे वि विद्यार्थियों और शिक्षकों पर छाप छोड़ ना आरंभ कर दिया। इन्होंने स्कूल के समय में ही कालेज के स्तर के गणित को पढ़ लिया था। हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद इन्हें गणित और अंग्रेजी में अच्छे अंक लाने के कारण सुब्रमण्यम छात्रवृत्ति मिली और आगे कालेज की शिक्षा के लिए प्रवेश भी मिला। वर्ष र्ष 1908 में इनके माता पिता ने इनका विवाह जानकी नामक कन्या से कर दिया। विवाह हो जाने के बाद अब इनके लिए सब कुछ भूल कर गणित में डूबना संभव नहीं था। अतः वे नौकरी की तलाश में मद्रास आए। बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण होने की वजह से इन्हें नौकरी नहीं मिली और उनका स्वास्थ्य भी बुरी तरह गिर गया। अब डॉक्टर की सलाह पर इन्हें वापस अपने घर

कुंभकोणम लौटना पड़ा। बीमारी से ठीक होने के बाद वे वापस मद्रास आए और फिर से नौकरी की तलाश शुरू कर दी। ये जब भी किसी से मिलते थे तो उसे अपना एक रजिस्टर दिखाते थे। इस रजिस्टर में इनके द्वारा गणित में किए गए सारे कार्य र्य होते थे। इसी समय किसी के कहने पर रामानुजन वहां के डिप्टी कलेक्टर श्री वी. रामास्वामी अय्यर से मिले। अय्यर गणित के बहुत बड़े विद्वान थे। यहां पर श्री अय्यर ने रामानुजन की प्रतिभा को पहचाना और जिलाधिकारी श्री रामचंद्र राव से कह कर इनके लिए 25 रूपये मासिक छात्रवृत्ति का प्रबंध भी कर दिया। इस वृत्ति पर रामानुजन ने मद्रास में एक साल रहते हुए अपना प्रथम शोधपत्र प्रकाशित किया। शोध पत्र का शीर्षक था बरनौर संख्याओं के कुछ गुण और यह शोध पत्र जर्नल ऑफ इंडियन मैथेमेटिकल सोसाइटी में प्रकाशित हुआ था। यहां एक साल पूरा होने पर इन्होने मद्रास पोर्ट ट्रस्ट में क्लर्क की नौकरी की। सौभाग्य से इस नौकरी में काम का बोझ कुछ ज्यादा नहीं था और यहां इन्हें अपने गणित के लिए पर्याप्त समय मिलता था।

इस समय भारतीय और पश्चिमी रहन सहन में एक बड़ी दूरी थी और इस वजह से सामान्यतः भारतीयों को अंग्रेज वैज्ञानिकों के सामने अपने बातों को प्रस्तुत करने में काफी संकोच होता था। इधर स्थिति कुछ ऐसी थी कि कि बिना कि कि सी अंग्रेज गणितज्ञ की सहायता लिए शोध कार्य र्य को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता था। इस समय रामानुजन के पुराने शुभचितक इनके काम आए और इन लोगों ने रामानुजन द्वारा कि कि ए गए कार्यों को लंदन के प्रसिद्ध गणितज्ञों के पास भेजा। पर यहां इन्हें कुछ विशेष सहायता नहीं मिली लेकिन एक लाभ यह हुआ कि कि लोग रामानुजन को थोड़ बहुत जानने लगे थे। इसी समय रामानुजन ने अपने संख्या सिद्धांत के कुछ सूत्र प्रोफेसर शेष अय्यर को दिखाए तो उनका ध्यान लंदन के ही प्रोफेसर हाडों की तरफ गया। प्रोफेसर हार्डी डीं उस समय के विश्व के प्रसिद्ध गणितज्ञों में से एक थे। और अपने सख्त स्वभाव और अनुशासन प्रियता के कारण जाने जाते थे। प्रोफेसर हार्डी डीं के शोधकार्य को पढ़ ने के बाद रामानुजन ने बताया कि कि उन्होने प्रोफेसर हार्डी के अनुत्तरित प्रश्न का उत्तर खोज निकाला है। अब रामानुजन का प्रोफेसर हाडी से पत्रव्यवहार आरंभ हुआ। अब यहां से रामानुजन के जीवन में एक नए युग का सूत्रपात हुआ जिसमें प्रोफेसर हाड़ों की बहुत बड़ी भूमिका थी। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो जिस तरह से एक जौहरी हीरे की पहचान करता है और उसे तराश कर चमका देता है, रामानुजन के जीवन में वैसा ही कुछ स्थान प्रोफेसर हाडों का है। प्रोफेसर हाडीं आजीवन रामानुजन की प्रतिभा और जीवन दर्शन के प्रशंसक रहे। रामानुजन और प्रोफेसर हार्डी डीं की यह मित्रता दोनो ही के लिए लाभप्रद सिद्ध हुई। एक तरह से देखा जाए तो दोनो ने एक दूसरे के लिए पूरक का काम कि कि या। प्रोफेसर हार्डी डीं ने उस समय के विभिन्न प्रतिभाशाली व्यक्तियों को 100 के पैमाने पर आंका था। अधिकांश गणितज्ञों को उन्होने 100 में 35 अंक दिए और कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को 60 अंक दिए। लेकिन उन्होंने रामानुजन को 100 में पूरे 100 अंक दिए थे।रामानुजन ने इंग्लैण्ड जाने के पहले गणित के करीब 3000 से भी अधिक नये सूत्रों को अपनी नोटबुक में लिखा था। रामानुजन ने लंदन की धरती पर कदम रखा। वहां प्रोफेसर हाडर्डी डीं ने उनके लिए पहले से व्वस्था की हुई थी अतः इन्हें कोई विशेष परेशानी नहीं हुई। इसके बाद वहां रामानुजन को रॉयल सोसाइटी का फेलो नामित किया गया। ऐसे समय में जब भारत गुलामी में जी रहा था तब एक अश्वेत व्यक्ति को रॉयल सोसाइटी की सदस्यता मिलना एक बहुत बड़ी बात थी। रॉयल सोसाइटी के पूरे इतिहास में इनसे कम आयु का कोई सदस्य आज तक नहीं हुआ है। पूरे भारत में उनके शुभचितकों ने उत्सव मनाया और सभाएं कीं। रॉयल सोसाइटी की सदस्यता के बाद यह ट्रिनीटी कॉलेज की फेलोशिप पाने वाले पहले भारतीय भी बने। अब ऐसा लग रहा था कि कि सब कुछ बहुत अच्छी जगह पर जा रहा है। लेकिन रामानुजन का स्वास्थ्य गिरता जा रहा था और अंत में डॉक्टरों की सलाह पर उन्हें वापस भारत लौटना पड़ा। भारत आने पर इन्हें मद्रास विश्वविद्यालय में प्राध्यापक की नौकरी मिल गई। और रामानुजन अध्यापन और शोधक में पुनः रम गए।

रामानुजन संख्याए :–

रामानुजन संख्या उस प्राकृतिक संख्या को कहते हैं जिसे दो अलग–अलग प्रकार से दो संख्याओं के घनों के योग द्वारा निरूपित किया जा सकता है। 910=112–1729

4. यूक्लिड

(Euclid) यूक्लिड कभी–कभी एलेग्जेंड्रिया के यूक्लिड या फिर मेगारा के यूक्लिड के नाम से भी जाने जाते है, वे एक ग्रीक गणितज्ञ थे और साथ ही वे "ज्यामिति (ज्योमेट्री) के जनक" भी कहलाते है। टॉलेमी प्रथम के साम्राज्य में एलेग्जेंड्रिया में वे काफी सक्रीय थे। गणित के इतिहास में उन्होंने काफी प्रभावशाली कार्य किया है। 19 वी शताब्दी से 20 वी शताब्दी तक वे अपने द्वारा लिखित किताब से ही गणित का अभ्यास करते थे और उस समय में उनके द्वारा प्रकाशित किताब काफी प्रसिद्ध थी। यूक्लिड ने ज्यामिति के बहुत से अवयवो की खोज की थी जिसे आज हम यूक्लिड डियन ज्यामिति के नाम से भी जानते है, जि जि नमे सूक्तियो की छोटी आकृति ति का उपयोग कि किया जाता था। इसके साथ ही यूक्लिड ने दृष्टि कोण, शांक्व वर्ग, गोलीय ज्यामिति, नंबर सि सिद्धांत और सावधानियो पर भी अपने लेख और किताबें लिखी है। उसे "ज्यामि मि ति ति का जनक" कहा जाता है। उसकी एलि मेण्ट्स (Elements) नामक पुस्तक गणित के इतिहास में सफलतम पुस्तक है। इस पुस्तक में कुछ गिने–चुने स्वयंसिसिद्धों (axioms) के आधार पर ज्यामिति के बहुत से सिद्धान्त निष्पादित (deduce) कि किये गये हैं। इनके नाम पर ही इस तरह की ज्यामिति का नाम यूक्लिड ज्यामिति पड़ा। हजारों वर्षों बाद भी गणितीय प्रमेयों को सिद्ध करने की यूक्लिड की विधि सम्पूर्ण र्ण गणित का रीढ़ बनी हुई।

यूक्लिड का सबसे बड़ा ग्रंथ श्एलीमेंट्सश (Elements) है,

जो १३ भागों में है। इससे पहले भी बहुत से गणितज्ञों ने ज्यामितियाँ लिखी थीं, परंतु उन सब के बाद जो ज्यामिति यूक्लिड ने लिखी उसकी आज तक कोई नहीं कर सका है और न संसार में आजतक कोई ऐसी पुस्तक लिखी गई जिसने किमी विज्ञान के क्षेत्र में बिना बदले हुए लगभग २,००० वर्षों र्षों तक अपना प्रभुत्व जमाए रखा हो औ मूल में १६वीं शताब्दी के अंत तक पढ़ाई जाती रही हो। यूक्लिड ने नई उत्पत्तियाँ दी। उत्पत्ति क्रम भी बदल दिए, जिससे पुरानी उत्पत्तियाँ सब बेकार हो गई। यह मानना ही पड़ेगा कि कि पुस्तक की अभि कल्पना उसकी अपनी थी। उसने उस समय तक के सभी अनुसंधानों को अपनी पुस्तक में दे दि दि या था। उसने सभी तथ्यों को बड़े तार्किक ढंग से ऐसे क्रम में लिखा कि कि प्रत्येक नया प्रमेय उसके पहले प्रमेयों के तथ्यों पर आधारित था। ऐसा करते करते यूक्लिड ऐसे तथ्यों पर पहुँचे जिनके लिये प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने ऐसे तथ्यों को स्वयंसि सिद्ध कहा। ऐसे स्वयंसिद्धों की संख्या कहीं छह, या कहीं बारह है। अंतिम स्वयंसिद्ध इस प्रकार है। यदि दि एक रेखा दो रेखाओं को काटे और एक ओर अंतःकोणें का योग दो समकोण से कम है। बहुत दिनों तक तो इस स्वयंसिद्ध के विषय में किसी को आलोचना करने का साहस नहीं हुआ, परंतु लोग इसको स्वयंसि सिद्ध मानने में आपत्ति करते रहे। यहाँ तक कि कि बहुत अन्वेषण हुए। १६वीं शताब्दी में ही लोग इस निष्कर्ष पर पहुँच पाए कि उपर्युक्त स्वयंसिद्ध सत्य नहीं है, जिससे उन्होंने अयूक्लिडीय ज्यामिति का आविष्कार किया।

5 पाइथागोरस–

पाइथागोरस यूनान के प्राचीन दार्शनिक और गणितज्ञ थे. उनके दार्शनिक विचारों के आधार पर जो विचार–प्रवाह चला उसे पाइथागोरस मत कहा जाता है. पचास वर्ष की आयु में वे इटली के क्रोटोना नामक स्थान पर आ बसे. उस समय उनके तथा उनके अनुयायियों के विचार सर्वथा नवीन थे. इसीलिए लोग उनका विरोध करते थे और उनकी सभाओं पर आक्रमण करते थे. उनकी मृत्यु के बाद कही जाकर 'पाइथागोरियन' सिध्दांतों का विकास हुआ जिन्होंने उन्हें ख्याति के उच्च शिखर पर पहुंचा दिया. पाइथागोरस यूनान के प्राचीन दार्शनिक और गणितज्ञ थे. उनके दार्शनिक विचारों के आधार पर विचार–प्रवाह चला उसे 'पाइथागोरस' मत कहा जाता है. पाइथागोरस प्रमेय (या, बौधायन प्रमेय) यूक्लिडीय ज्यामिति में कि कि सी समकोण त्रिभुज के तीनों भुजाओं के बीच एक सम्बन्ध बताने वाला प्रमेय है। इस प्रमेय को आमतौर पर एक समीकरण के रूप में निम्नलिखित तरीके से अभिव्यक्त किया जाता है–

$$a^2 + b^2 = c^2$$

c जहाँ समकोण त्रिभुज के कर्ण की लंबाई है तथा और अन्य दो भुजाओं की लम्बाई है। पाइथागोरस यूनान के गणितज्ञ थे। परम्परानुसार उन्हें ही इस प्रमेय की खोज का श्रेय दिया जाता है, हालांकि कि यह माना जाने लगा है कि कि इस प्रमेय की जानकारी उनसे पूर्व तिथि की है। भारत के प्राचीन ग्रंथ बौधायन शुल्बसूत्र में यह प्रमेय दिया हुआ है। काफी प्रमाण है कि कि बेबीलोन के गणितज्ञ भी इस सिद्धांत को जानते थे। इसे बौधायन पाइथागोरस प्रमेय भी कहते हैं।

पाइथोगोरस और उनके शिष्य मानते थे कि कि सब कुछ गणित से सम्बंधित है और संख्याओं में ही अंततः वास्तविकता है और गणित के माध्यम से हर चीज के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती है तथा हर चीज को एक ताल बद्ध प्रतिरूप या चक्र के रूप में मापा जा सकता है। लम्बलीकस के अनुसार, पाइथोगोरस ने कहा कि कि संख्या ही वि वि चारों और रूपों का शासक है और देवताओं और राक्षसों का कारण है।

सारांश–

प्रारंभिक काल से ही गणित बहुत ही महत्वपूर्ण र्ण विषय माना जाता रहा है। प्रस्तुत इकाई में हमने संख्याओं के विकास के विषय में जाना तथा शताब्दियों के विकास के बाद इसने एक सम्पूर्ण पद्धति का रूप ग्रहण कर लिया है, जो कि कि आज के गणित की बुनियाद भी है। सर्वप्रथम संख्या ज्ञान अर्जित करने के लिए सबसे पहले मनुष्य ने हर सभ्यता में लकीरों का प्रयोग किया। इसके पश्चात चिन्हों का प्रयोग कि कि या गया तथा भाषाओं के वर्षों र्षों का भी प्रयोग किया जाने लगा और अंत में अंकों का प्रयोग किया जाने लगा। गणित विकास का आधार है पाइथागोरस, आर्यभट्ट, श्रीनिवास रामानुजम, यूक्लि क्लिड तथा भास्कराचार्य आदि अनेकों महान गणितज्ञ हुए हैं, जिन्होंने गणित के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

1. संदर्भ सूची :–

1. गोस्वामी, मनोज कुमार (2011)ः गणित शिक्षण, नई दिल्ली, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस।
2. यशपाल (2012)ः गणित शिक्षण, नई दिल्ली, जगदम्बा पब्लिशिंग कम्पनी।
3. भटनागर, ए, बी, (2008)ः गणित शिक्षण, मेरठ, आर लाल बुक डिपो।
4. बिश्नोई, उन्नति (2016)ः गणित शिक्षण, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
5. मंगल, सी, के ((2009) रू गणित शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
6. www.google.गणीतीय संकेतन ।
7. www.google.संख्या पद्धति।

मधुबाला

असिस्टेंट प्रोफेसर–गणित (विद्या संबल)राजकिय महाविद्यालय– विराटनगर जयपुर (राजस्थान)

27

विकसित भारत 2047ः एक संकल्प और चुनौतियां

डॉ0 गिरिराज सिंह

सारांश —

भारत ने 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त की और तब से लेकर अब तक विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। वर्ष 2047 में भारत अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएगा। इस अवसर पर षविकसित भारतष का सपना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रस्तुत किया गया है। यह दृष्टिकोण भारत को एक समृद्ध, सशक्त, और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में देखता है। यद्यपि भारत ने कई क्षेत्रों में आशातीत प्रगति की है, लेकिन 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की राह में कई चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। यह शोध पत्र उन्हीं प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण करता है जो भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने से रोक सकती हैं यदि उनका समय पर समाधान न किया जाए ।

आर्थिक असमानता

भारत ने पिछले कुछ दशकों में आर्थिक विकास के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। सूचना प्रौद्योगिकी, सेवा क्षेत्र, निर्माण और विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में तेज़ी से वृद्धि हुई है, जिससे देश की सकल घरेलू उत्पाद (ळक्च्) में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। परंतु इस आर्थिक प्रगति का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाया है। यही आर्थिक असमानता भारत के सामने एक बड़ी चुनौती के रूप में उभर कर आई है।ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच आय, जीवन—स्तर और बुनियादी सुविधाओं में भारी अंतर देखा जाता है। शहरी क्षेत्रों में जहाँ रोजगार के अवसर, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ अधिक उपलब्ध हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अब भी बुनियादी जरूरतों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, विभिन्न राज्यों के बीच भी आर्थिक असमानता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। दक्षिण और पश्चिम भारत के राज्य जहाँ औद्योगिक और सेवा क्षेत्र में आगे हैं, वहीं उत्तर और पूर्वी राज्यों को अब भी कई विकासात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।सामाजिक वर्गों के संदर्भ में भी आर्थिक अवसरों की असमानता बनी हुई है। अनुसूचित जाति, जनजाति और अन्य पिछड़े वर्गों को मुख्यधारा की आर्थिक गतिविधियों में अब भी अपेक्षित भागीदारी नहीं मिल पाई है। ऐसे में समावेशी विकास की आवश्यकता और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है। विकसित भारत की कल्पना तभी साकार हो सकती है जब विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। इसके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास और सामाजिक सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। साथ ही, नीति निर्धारण में हाशिए पर खड़े वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित करना भी अनिवार्य है। केवल तभी भारत वास्तव में षविकसित राष्ट बनने की दिशा में ठोस कदम बढ़ा सकेगा द्य

शिक्षा व्यवस्था और समस्याएँ

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का मूल आधार होती है। भारत में भले ही शिक्षा की पहुँच बढ़ी हो, लेकिन इसकी गुणवत्ता अभी भी गंभीर चिंता का विषय है। विशेष रूप से सरकारी स्कूलों में ढांचागत कमियाँ जैसे साफ—सफाई, बिजली, पुस्तकालय और विज्ञान प्रयोगशालाओं की अनुपलब्धता विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को बाधित करती हैं। यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन (न्क्प्ैम्+) की रिपोर्ट 2021—22 के अनुसार, भारत के लगभग 22ः सरकारी स्कूलों में इंटरनेट की सुविधा नहीं है, और 35ः स्कूलों में कंप्यूटर उपलब्ध नहीं हैं ।शिक्षकों की अनुपस्थिति और अपर्याप्त प्रशिक्षण शिक्षा की गुणवत्ता को और प्रभावित करते हैं। प्रथम फाउंडेशन की 2023 की ।ैम्त रिपोर्ट दर्शाती है कि ग्रामीण क्षेत्रों में कक्षा 5 के केवल 42ः छात्र ही कक्षा 2 का पाठ ठीक से पढ़ पाते हैं, और केवल 20ः छात्र ही साधारण गणितीय सवाल हल कर सकते हैं। पाठ्यक्रम की अप्रासंगिकता और कौशल आधारित शिक्षा की कमी भी एक बड़ी समस्या है। व्यावसायिक शिक्षा का योगदान भारत में कुल माध्यमिक शिक्षा का केवल 5ः है, जबकि विकसित देशों में यह आंकड़ा 40ः से ऊपर है। यह अंतर भारत के युवाओं को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में पीछे कर देता है।डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में हालाँकि पहल हुई है, लेकिन डिजिटल डिवाइड एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। 2021 की छैै रिपोर्ट के अनुसार, ग्रामीण भारत में केवल 4ः घरों में कंप्यूटर और 15ः घरों में इंटरनेट कनेक्शन है। यदि भारत को षविश्वगुरुष बनने की दिशा में अग्रसर होना है, तो शिक्षा प्रणाली को समावेशी, गुणवत्तापूर्ण और रोजगारोन्मुख बनाना अनिवार्य है।

स्वास्थ्य सेवाओं की असमान पहुँच एक समस्या

भारत ने पिछले कुछ दशकों में स्वास्थ्य क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, जैसे कि जीवन प्रत्याशा में वृद्धि, शिशु मृत्यु दर में गिरावट, और टीकाकरण अभियानों की सफलता। फिर भी, यह प्रगति असमान रूप से वितरित है। ग्रामीण क्षेत्रों, आदिवासी इलाकों, और सीमावर्ती क्षेत्रों में आज भी स्वास्थ्य सेवाओं की भारी कमी देखने को मिलती है।राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (छथ्भ्ै—5) के अनुसार, भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में केवल 37ः महिलाओं को प्रसव के समय प्रशिक्षित

चिकित्सकीय सहायता मिल पाती है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह आँकड़ा 73ः है। इसी प्रकार, प्रति 10,000 लोगों पर डॉक्टरों की उपलब्धता शहरी क्षेत्रों में लगभग 13 है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह संख्या केवल 3.2 तक सीमित है।स्वास्थ्य सेवाओं की यह असमानता केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक रूप से भी स्पष्ट है। गरीब, दलित, और आदिवासी समुदायों को गुणवत्तापूर्ण इलाज के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है, जिससे इलाज में देरी और स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।2047 तक भारत को एक ऐसा स्वास्थ्य तंत्र विकसित करना होगा जो ष्सभी के लिए स्वास्थ्यष् के सिद्धांत पर आधारित हो। इसके लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैंः

1. डिजिटल हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर को सुदृढ़ करना ताकि दूरदराज के क्षेत्रों में टेलीमेडिसिन के माध्यम से सेवाएँ पहुँचे।
2. स्वास्थ्य बजट को जीडीपी के कम से कम 3ः तक बढ़ाना (वर्तमान में यह लगभग 1.28ः है)।
3. जननी सुरक्षा योजना, आयुष्मान भारत जैसे कार्यक्रमों के बेहतर कार्यान्वयन और पारदर्शिता सुनिश्चित करना।

2047 का भारत तभी स्वस्थ और समृद्ध होगा जब हर नागरिक, चाहे वह किसी भी क्षेत्र या वर्ग से हो, को समान और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ सुलभ होंगी।

बेरोजगारी और कौशल विकास की समस्या

भारत आज विश्व की सबसे युवा आबादी वाला देश है, जहाँ लगभग 65ः जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है। इस युवा जनसंख्या को ष्डेमोग्राफिक डिविडेंडष् कहा जाता है। परंतु यह तभी लाभदायक सिद्ध हो सकता है जब इस वर्ग को रोजगार के उचित अवसर और आवश्यक कौशल उपलब्ध कराए जाएँ। वर्तमान में भारत एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहाँ एक ओर तकनीकी प्रगति हो रही है, वहीं दूसरी ओर बेरोजगारी दर लगातार बढ़ती जा रही है।

बेरोजगारी दर की बात करें तो CMIE (Centre for Monitoring Indian Economy) के अनुसार जनवरी 2024 में भारत की राष्ट्रीय बेरोजगारी दर 8.3ः रही, जिसमें शहरी क्षेत्रों में यह दर 10.1ः तक पहुँच गई। विशेष रूप से 15—29 वर्ष की उम्र के युवाओं में बेरोजगारी दर 22ः से अधिक है। यह चिंता का विषय है क्योंकि यही वर्ग भविष्य की आर्थिक रीढ़ माना जाता है।

तकनीकी बदलावों के चलते अब पारंपरिक नौकरियाँ तेजी से समाप्त हो रही हैं और उनकी जगह उच्च तकनीकी दक्षता वाली नौकरियाँ ले रही हैं।ॅवतसक म्बवदवउपब थ्वतनउ की रिपोर्ट के अनुसार 2027 तक 23ः नौकरियाँ ऑटोमेशन और ।प् के कारण प्रभावित होंगी, जिससे मौजूदा कार्यबल को तमोपससपदह और नचोपससपदह की जरूरत होगी।

सरकार ने इस दिशा में कई पहल की हैं, जैसे प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (च्डज्ञटल),ै।पससस प्दकपं, न्क्ल।डप्ज्। आदि। 2023 तक लगभग 1.4 करोड़ युवाओं को च्डज्ञटल के तहत प्रशिक्षित किया गया, लेकिन केवल 40ः युवाओं को ही रोजगार मिल सका, जो दर्शाता है कि प्रशिक्षण की गुणवत्ता और उद्योग की मांग में तालमेल की कमी है।

समाधान के रूप में शिक्षा प्रणाली में सुधार, उद्योगों और प्रशिक्षण संस्थानों के बीच साझेदारी, स्थानीय जरूरतों के अनुसार कौशल प्रशिक्षण, और स्वरोजगार को बढ़ावा देना ज़रूरी है। साथ ही, डिजिटल साक्षरता, महिला सशक्तिकरण, और ग्रामीण क्षेत्रों में कौशल केंद्रों की स्थापना पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

यदि भारत समय रहते इस दिशा में ठोस कदम उठाता है, तो न केवल युवाओं को सम्मानजनक रोजगार मिलेगा, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था भी तेज़ी से आगे बढ़ेगी।

पर्यावरणीय संकट और जलवायु परिवर्तन

आज विश्व के सामने सबसे बड़ी चुनौती जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकट है। भारत, जो तेजी से विकासशील राष्ट्र है, को औद्योगीकरण, शहरीकरण और बुनियादी ढाँचे के विकास की अत्यधिक आवश्यकता है। लेकिन यह विकास यदि पर्यावरणीय संतुलन को नष्ट कर रहा है, तो यह दीर्घकालीन रूप से विनाशकारी सिद्ध हो सकता है। सतत विकास की नीतियाँ अपनाना आज की आवश्यकता है।

भारत विश्व में तीसरा सबसे बड़ा ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जक देश है। वर्ष 2022 में भारत ने लगभग 2.7 गीगाटन CO उत्सर्जन किया, जो वैश्विक उत्सर्जन का लगभग 7ः था। इसके कारण जलवायु परिवर्तन के प्रभाव स्पष्ट रूप से देखे जा रहे हैं कृ जैसे तापमान में वृद्धि, असमय वर्षा, सूखा, बाढ़ और समुद्री जल स्तर का बढ़ना। वनों की कटाई भी एक प्रमुख चिंता का विषय है। थ्वतमेजै नतअमल वि् पदकपं की रिपोर्ट (2021) के अनुसार, भारत में 21.7ः भू—भाग वन क्षेत्र है, लेकिन कई राज्यों में यह प्रतिशत घटता जा रहा है। साथ ही, जल संकट भी गहराता जा रहा है कृ नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, भारत की 40ः जनसंख्या 2030 तक पीने योग्य जल की गंभीर कमी का सामना कर सकती है।वायु प्रदूषण भी शहरी भारत में एक गंभीर समस्या बन चुका है।ॅभ्व् के अनुसार, विश्व के 20 सबसे प्रदूषित शहरों में से 13 शहर भारत में हैं। यह न केवल पर्यावरण के लिए, बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए भी एक बड़ा खतरा है।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए भारत को नवीकरणीय ऊर्जा, जल संरक्षण, हरित प्रौद्योगिकी और सार्वजनिक भागीदारी जैसे उपायों को प्राथमिकता देनी होगी, जिससे विकास और पर्यावरण दोनों का संतुलन बना रहे। भारत जैसे विकासशील देश के लिए औद्योगिक विकास, शहरीकरण और बुनियादी ढाँचे का विस्तार अत्यंत आवश्यक है, परंतु यह विकास पर्यावरणीय संतुलन को नष्ट कर रहा है। वर्तमान

में, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जल संकट और वायु प्रदूषण जैसी समस्याएँ गंभीर रूप ले चुकी हैं, जिनका सीधा प्रभाव नागरिकों के जीवन पर पड़ रहा है। दिल्ली इसका प्रमुख उदाहरण है। यहाँ वायु गुणवत्ता सूचकांक (।फप्) अक्सर 400 से ऊपर चला जाता है, जो ष्गंभीरष् श्रेणी में आता है। 2023 में सर्दियों के दौरान दिल्ली का ।फप् 450+ तक पहुँच गया था, जिससे स्कूल बंद करने पड़े और सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट उत्पन्न हुआ। हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड जैसे पर्वतीय राज्यों में ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। चंद्राणी ग्लेशियर और गंगोत्री ग्लेशियर के पीछे हटने की दर हर साल 15–20 मीटर तक दर्ज की गई है। इससे नदियों के जल प्रवाह में अस्थिरता आ रही है और बाढ़ की घटनाएँ बढ़ रही हैं।चेन्नई जल संकट का एक बड़ा उदाहरण बन चुका है। वर्ष 2019 में शहर के चारों मुख्य जलाशय पूरी तरह सूख गए थे, जिससे 1 करोड़ से अधिक लोग पानी की किल्लत से जूझे।वनों की कटाई के उदाहरण में, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में वर्ष 2017दृ21 के बीच 1,000 वर्ग किलोमीटर से अधिक वन क्षेत्र कम हुआ। इसका सीधा असर जैव विविधता और स्थानीय मौसम पर पड़ा है।

इन सभी संकटों से निपटने के लिए भारत को सतत विकास की ओर अग्रसर होना होगा। उदाहरणस्वरूप, गुजरात का चारंका सोलर पार्क, जो 590 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पन्न करता है, एक सफल हरित पहल है। इसी तरह, स्वच्छ भारत मिशन, जल जीवन मिशन जैसी योजनाओं को और प्रभावी बनाना होगा ताकि पर्यावरण और विकास में संतुलन बना रहे।

भ्रष्टाचार और शासन की पारदर्शिता

भ्रष्टाचार भारत की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रगति में एक गंभीर बाधा बना हुआ है। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के ब्वततनचजपवद च्मतबमचजपवदे प्दकमग 2023 के अनुसार, भारत 180 देशों में 93वें स्थान पर है, जो दर्शाता है कि देश में भ्रष्टाचार अब भी एक व्यापक समस्या है। यह समस्या विशेष रूप से सरकारी सेवाओं, नौकरशाही और नीतियों के क्रियान्वयन में अधिक देखी जाती है।भ्रष्टाचार के कारण सरकारी योजनाओं का लाभ वास्तविक लाभार्थियों तक नहीं पहुँच पाता, जिससे नागरिकों का शासन पर विश्वास कम होता है। साथ ही, संसाधनों का दुरुपयोग और जवाबदेही की कमी आर्थिक विकास की गति को प्रभावित करते हैं।इस चुनौती का समाधान सुशासन, पारदर्शिता और तकनीकी नवाचारों में निहित है। ई–गवर्नेंस के माध्यम से प्रशासनिक प्रक्रियाओं को डिजिटल बनाया जा रहा है, जिससे भ्रष्टाचार के अवसर घटते हैं। त्ज्प् (सूचना का अधिकार) जैसे कानूनों ने नागरिकों को सशक्त किया है और प्रशासनिक पारदर्शिता को बढ़ावा दिया है।भविष्य में, जवाबदेही सुनिश्चित करने वाली नीतियाँ, स्वचालित प्रणाली और नागरिकों की भागीदारी ही एक पारदर्शी और भ्रष्टाचारमुक्त भारत की नींव रख सकती हैं।

तकनीकी असमानता व साइबर सुरक्षा

भारत ने डिजिटल इंडिया के तहत पिछले कुछ वर्षों में अद्वितीय प्रगति की है, लेकिन तकनीकी असमानता और साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में कई चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। 2023 के आँकड़ों के अनुसार, भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 700 मिलियन से अधिक हो चुकी है, जो वैश्विक स्तर पर एक बड़ी उपलब्धि है। हालांकि, यह आंकड़ा अभी भी देश की कुल आबादी का केवल 50–60ः ही कवर करता है, जिसका मतलब है कि कई ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में इंटरनेट और अन्य डिजिटल सेवाओं की पहुँच सीमित है।इस तकनीकी असमानता के डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स का उपयोग केवल शहरी और उच्च–आय वर्ग तक ही सीमित रहता है। इसके परिणामस्वरूप, भारत में ष्डिजिटल डिवाइडष् की समस्या बनी हुई है, जो सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को और बढ़ाती है।साइबर सुरक्षा के संदर्भ में भी चुनौतियाँ बढ़ रही हैं। 2022 में, भारत ने लगभग 2.2 मिलियन साइबर हमलों का सामना किया, और 2023 में यह संख्या और बढ़ने की संभावना है। डेटा सुरक्षा के उल्लंघन, जैसे कि व्यक्तिगत जानकारी का लीक होना और वित्तीय धोखाधड़ी, साइबर अपराधों में वृद्धि का कारण बने हैं। इन समस्याओं से निपटने के लिए भारत सरकार ने ष्छंजपवदंस ब्लइमत ैमबनतपजल ैजतंजमहल 2020ष् जैसे कदम उठाए हैं, जो साइबर अपराधों को नियंत्रित करने और डिजिटल सुरक्षा को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। विकसित भारत के निर्माण के लिए, समावेशी और सुरक्षित डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर पर ध्यान देना आवश्यक है। इसमें न केवल तकनीकी नवाचार की आवश्यकता है, बल्कि इसके साथ ही साइबर सुरक्षा को भी प्राथमिकता दी जानी चाहिए, ताकि डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स का इस्तेमाल सभी वर्गों के लिए सुरक्षित और सुलभ हो सके।

सामाजिक समरसता और सांप्रदायिक सौहार्दः

विकसित राष्ट्र बनने के लिए सामाजिक समरसता और एकता अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सामाजिक समरसता का मतलब है विभिन्न जातियों, धर्मों, और संस्कृतियों के बीच सौहार्दपूर्ण और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व। भारत जैसी विविधता से भरी हुई राष्ट्र में सामाजिक एकता को बनाए रखना और बढ़ावा देना एक चुनौती हो सकती है, लेकिन यह राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक है।भारत में जातीय, धार्मिक और भाषाई भेदभाव आम हैं, और ये समाज में तनाव पैदा कर सकते हैं। भारतीय समाज में धार्मिक विविधता की मिसाल दी जाती है, जहां हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, और अन्य समुदायों के लोग रहते हैं। इसके बावजूद, समाज में सांप्रदायिक हिंसा और असहिष्णुता की घटनाएँ भी सामने आती हैं। 2019 में भारत में सांप्रदायिक हिंसा के कारण लगभग 2,500 लोग प्रभावित हुए थे, और यह स्थिति देश की आंतरिक स्थिरता को खतरे में डालती है।इसलिए,

भारत को ऐसी नीतियाँ अपनानी होंगी जो सामाजिक समरसता को बढ़ावा दें। राष्ट्रीय एकता परिषद और समान नागरिक संहिता जैसी पहलें इसी दिशा में उठाए गए कदम हैं। इसके अतिरिक्त, आदर्श ग्राम योजना और राष्ट्रीय एकता दिवस जैसी योजनाएं भी समाज में सामूहिक भावना और सहिष्णुता को बढ़ावा देती हैं।सामाजिक समरसता को सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा प्रणाली में सुधार, सांप्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रम, और कानूनों का कड़ाई से पालन करना जरूरी है। केवल इस तरह से हम भारत में विविधता में एकता को मजबूत कर सकते हैं, जिससे देश का विकास संभव हो सके।

महिलाओं की भागीदारी और लैंगिक समानता

महिलाओं की भागीदारी और लैंगिक समानता का मुद्दा आज भी भारतीय समाज में अत्यधिक प्रासंगिक है। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की असमानता और उनके अधिकारों की अनदेखी कई दशकों से चली आ रही है। भारत में महिलाओं की शिक्षा, रोजगार, और राजनीतिक भागीदारी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधारों की आवश्यकता है, ताकि समग्र विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा सके।

भारत में महिलाओं की शिक्षा की स्थिति में समय के साथ सुधार हुआ है, लेकिन अभी भी कई बाधाएँ हैं। 2021 की जनगणना के अनुसार, भारत में महिला साक्षरता दर 70.3ः है, जबकि पुरुषों की साक्षरता दर 84.7ः है। इस अंतर को समाप्त करने के लिए अधिक प्रयासों की आवश्यकता है। शिक्षा महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम प्रदान करती है। जब महिलाएं शिक्षा प्राप्त करती हैं, तो वे केवल अपने परिवारों के लिए ही नहीं, बल्कि समाज के लिए भी सकारात्मक योगदान दे सकती हैं

भारत में महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी अपेक्षाकृत कम है। विश्व बैंक के अनुसार, भारत में महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर 2019 में 20.3ः थी, जो कि पुरुषों की दर से काफी कम है। इसके पीछे कई कारण हैं, जैसे पारंपरिक समाजिक धारणाएँ, शिक्षा की कमी, और सुरक्षा संबंधी मुद्दे। हालांकि, सरकार और विभिन्न संगठनों ने महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं, जैसे ष्महिला समृद्धि योजनाष और ष्प्रधानमंत्री कौशल विकास योजनाष। इन योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को अधिक सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। वर्तमान में भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी कम है। लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 14ः के आस–पास है, जबकि राज्य विधानसभाओं में यह आंकड़ा 9ः से भी कम है। हालांकि, हाल के वर्षों में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ाने के लिए कई कदम उठाए गए हैं, जैसे पंचायत और नगर निगमों में महिलाओं के लिए आरक्षण। 1993 में 33ः महिलाओं के लिए पंचायतों में आरक्षण लागू किया गया था, जिससे उनके राजनीतिक सशक्तिकरण में वृद्धि हुई है महिलाओं की रक्षा और उनके अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार ने कई कानून बनाए हैं। धारा 498।(पति या ससुरालियों द्वारा उत्पीड़न के खिलाफ) और ष्लैंगिक उत्पीड़न के खिलाफ कानूनष (2013 में) जैसे कानून महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करते हैं। हालांकि, इन कानूनों का सही तरीके से पालन और क्रियान्वयन एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि कुछ स्थानों पर महिलाओं को न्याय मिलना अभी भी मुश्किल होता है।

भारत सरकार और विभिन्न गैर–सरकारी संगठनों ने लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं और अभियान चलाए हैं। ष्बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओष अभियान इसका एक उदाहरण है, जिसका उद्देश्य बेटियों की शिक्षा और उनके खिलाफ हिंसा को रोकना है। इसके अलावा, स्वच्छ भारत अभियानष में महिलाओं को सार्वजनिक स्वच्छता की जिम्मेदारी दी गई है, जिससे उन्हें न केवल सशक्त बनाया गया, बल्कि उनके स्वास्थ्य के लिए भी यह एक सकारात्मक कदम था।

शहरीकरण और आधारभूत संरचना की चुनौतियाँ

शहरीकरण और आधारभूत संरचना की चुनौतियाँ भारतीय समाज के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन चुकी हैं। भारत में तीव्र शहरीकरण हो रहा है, और इसका मुख्य कारण देश में बढ़ती जनसंख्या, रोजगार के अवसर, और बेहतर जीवन स्तर की तलाश है। लेकिन इस विकास के साथ शहरों की आधारभूत संरचना का दबाव भी बढ़ रहा है। निम्नलिखित प्रमुख समस्याएँ शहरीकरण के साथ उत्पन्न हो रही हैंः

1. भारतीय शहरों में बढ़ती आबादी के साथ यातायात की समस्याएँ भी गंभीर हो गई हैं। सड़कें संकरी हैं, और सार्वजनिक परिवहन प्रणाली अपर्याप्त है। ट्रैफिक जाम, प्रदूषण, और समय की बर्बादी सामान्य हो गई है।
2. शहरों में कचरे का ढेर और उचित कचरा निस्तारण की कमी है। स्वच्छता अभियान के बावजूद, शहरों में खुले में कचरा और प्रदूषण की समस्या बनी हुई है, जो न केवल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है बल्कि पर्यावरण को भी नुकसान पहुँचाती है।
3. शहरों में जल आपूर्ति के नेटवर्क में अक्सर समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। जल की कमी, अशुद्ध जल, और जल निकासी व्यवस्था की कमी की वजह से कई शहरी इलाकों में पानी की गुणवत्ता और उपलब्धता एक बड़ी चुनौती बन चुकी है।
4. शहरीकरण के साथ–साथ आवास की मांग भी बढ़ी है। शहरी क्षेत्रों में किफायती आवास की कमी है, जिससे स्लम क्षेत्रों का निर्माण हो रहा है। इन क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं की कमी और अव्यवस्थित निर्माण की समस्याएँ हैं।
5. स्मार्ट सिटी परियोजनाएँ इस समस्या का समाधान करने का एक

प्रयास हैं, जिनका उद्देश्य शहरी जीवन को अधिक सुविधाजनक, सुरक्षित और स्मार्ट बनाना है। हालांकि, इन परियोजनाओं को लागू करने में कई चुनौतियाँ हैं, जैसे कि बजट की कमी, स्थानीय सरकारों की क्षमता, और नागरिकों के बीच जागरूकता का अभाव। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए सरकार और नागरिकों दोनों को मिलकर काम करना होगा। स्मार्ट सिटी परियोजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करना, पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना और शहरी योजनाओं में सुधार करना आवश्यक है।

निष्कर्ष

भारत के लिए 2047 का वर्ष महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह देश की स्वतंत्रता के 100 वर्षों का प्रतीक होगा। इस समय भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में देखे जाने का सपना बहुत ही व्यापक है। यह सपना केवल आर्थिक समृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक पुनर्जागरण का आह्वान भी है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कुछ प्रमुख चुनौतियों का समाधान समय रहते करना आवश्यक होगा। सबसे पहली और बड़ी चुनौती आर्थिक असमानता है। भारत में सामाजिक और आर्थिक असमानता लगातार बढ़ रही है, जिससे समृद्धि का लाभ सभी वर्गों तक नहीं पहुँच पा रहा है। सरकारी नीतियाँ और योजनाएँ इस असमानता को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, लेकिन इसके लिए निजी क्षेत्र और नागरिक समाज का भी योगदान आवश्यक है। दूसरी चुनौती शिक्षा और कौशल विकास की है। भारत में शिक्षा प्रणाली को सुधारने की आवश्यकता है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सफलता प्राप्त कर सकें। साथ ही, तकनीकी कौशल और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने की दिशा में कदम उठाना होगा, ताकि युवाओं को रोजगार के अवसर मिल सकें।तीसरी बड़ी चुनौती स्वास्थ्य क्षेत्र की है। भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता और उपलब्धता में बड़ा अंतर है। सरकारी और निजी क्षेत्र को मिलकर इस अंतर को पाटने के लिए काम करना होगा। स्वास्थ्य सेवाओं का सुधार, स्वच्छता अभियान और स्वास्थ्य जागरूकता की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे।

इसके अलावा, सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण भी अहम मुद्दे हैं। बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटना भारत के लिए एक बड़ी चुनौती है। इस दिशा में सख्त पर्यावरणीय नियमों और नीतियों की आवश्यकता है। साथ ही, स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को अपनाना और हरित विकास को बढ़ावा देना भी जरूरी होगा।विकसित भारत 2047 का सपना तभी साकार हो सकता है जब सरकार, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज और आम नागरिकों को मिलकर कार्य करना होगा। यह केवल एक आर्थिक लक्ष्य नहीं, बल्कि एक सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक पुनर्जागरण का भी आह्वान है। समाज में समानता, न्याय और समृद्धि की भावना का संवर्धन करना होगा, ताकि हर भारतीय को बेहतर जीवन जीने का अवसर मिल सके। इस संकल्प को साकार करने के लिए हमें आज से ही ठोस कदम उठाने होंगे। यह एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है, लेकिन यदि हम सभी मिलकर कार्य करें, तो 2047 में भारत एक सशक्त और विकसित राष्ट्र के रूप में खड़ा हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारत सरकार (2022)। विकसित भारत / 2047 दस्तावेज। नीति आयोग।
2. विश्व बैंक रिपोर्ट (2023)। India Development Update।
3. योजना आयोग (2013)। भारत की सामाजिक असमानता पर रिपोर्ट।
4. सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (CMIE) डेटा।
5. इंडिया स्किल्स रिपोर्ट (2023)।Wheebo• & CII।
6. Ministry of Environment] Forest and Climate Change (MoEFCC) रिपोर्ट्स।
7. Transparency International & India Corruption Report 2022।
8. UNESCO Report on Education in India (2021)।
9. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की वार्षिक रिपोर्ट (2022–23)।
10. National Crime Records Bureau (NCRB) रिपोर्ट्स।

डॉ गिरिराज सिंह

अस‍ि.प्रोफेसर राजनीति विज्ञान

महायोगी गुरु गोरखनाथ राजकीय

महाविद्यालय बिथ्यानी यमकेश्वर पौड़ी उत्तराखंड

ज्यामिति का परिचय एवं प्रमुख शाखाएं :–

28

मधुबाला

प्रस्तावना :–

Geometry शब्द दो ग्रीक शब्दों Geo (पृथ्वी) और Metron (माप) से बना है। ज्यामिति शब्द में ज्या का अर्थ पृथ्वी और मिति का अर्थ माप है। जमीन मापने की जरूरत पड़ ने पर ज्यामिति का जन्म हुआ है। मानव सभ्यता के क्रमविकास के साथ ज्यामिति की भी अभिवृद्धि होती आई है। वैदिक युग में भारतीय ऋषि यज्ञकुंड और पूजा–मंडप के निर्माण आदि कार्यों में विकसित ज्यामिति के ज्ञान का प्रयोग करते थे। प्राय ई.पू. 800 से ई.पू. 500 के बीच भारत में रचित 'शुल्व सूत्र' एक ज्यामि मि ति ति –शास्त्र है। शुल्व अर्थात् रस्सी की मदद से माप के विभिन्न सूत्रों को लेकर यह शास्त्र समृद्ध हुआ है। महेंजोदाडो, हड़प्पा सभ्यता के खडंहरों और मौशरीय सभ्यता में ज्यामितीय नक्शे का व्यापक प्रयोग होने का प्रमाण मिलता है। प्रारंभिक स्थितियों में ज्यामिति के सिद्धांतों और सूत्रों का निर्धारण परीक्षण–निरीक्षण द्वारा होता था । अनुमान किया जाता है कि पीक गणितज्ञ थालेस ने (ई.पू. 640–546) पहले ज्यामिति में तर्क र्क शास्त्र का प्रयोग करके पहले से ज्ञात सूत्रों और सिद्धांतों की सत्यता का प्रमाण देने का प्रयास प्रारंभ किया था। बाद में उनके शिष्य पिथागोरस (ई.पू. 580–500) और उनके बाद शुकरात (ई.पू. (384–322) आदि चौक विद्वानों ने इस धारा को आगे बढ़ाया था। लेकिन ई. पू. चौथी सदी में आलेकजंड्रिया (पौस) के गणितज्ञ यूक्लीड (Euclid) अपने प्रसिध pap Elements में दर्शाया कि कि ज्यामितीय सिद्धांत प्रत्येक एक–एक स्वतंत्र तथ्य नहीं हैं, थोड़े ही तथ्यों को स्वीकार करने से शेष सभी ज्यामितीय सिद्धांतों को इन स्वीकृत तथ्यों के परिणाम के रूप में तर्क र्क द्वारा प्रतिपादित किया जा सकेगा। पहले से स्वीकृत सिद्धातों की सहायता से तर्क र्क द्वारा नए सिद्धांतों में पहुंचना संभव हुआ–इसलिए यूक्लीड यथार्थ रूप से ज्यामिति के जनक माने जाते हैं। उनके नाम के अनुसार विद्यालय हे जो ज्यामिति पढ़ाई जाती है, उसे युक्लाडीय ज्यामिति (Euclidian geometry) कहा जाता है। परवर्ती समय में भारतीय गणितज्ञों में भास्कर (जन्म सन् 114 ई) आर्यभट्ट (जन्म सन् 580ई.) आदि ने ज्यामिति शास्त्र को समृद्ध किया था। परिचयः ज्यामिति या रेखागणित (Geometry) गणित की तीन विशाल शाखाओं में से एक है। इसमें बिन्दुओं, रेखाओं, तलों और ठोस चीजों के गुणस्वभाव, मापन और उनके अन्तरिक्ष में सापेक्षिक स्थिति का अध्ययन कि किया जाता है। ज्यामिति, ज्ञान की सबसे प्राचीन शाखाओं में से एक है। ज्यामिति गणित की वह शाखा है जिसमें बिंदुओं, रेखाओं, वक्रों, समतलों इत्यादि का अध्ययन होता है। भूमि के नाप सम्बन्धी कार्यों से इस विज्ञान की उत्पत्ति हुई, इसलिये इस गणित को भूमिति भी कहते हैं। आरम्भ में यह अध्ययन रेखाओं तथा रेखाओं से घिरे क्षेत्रों के गुणों तक ही सीमित रहा, जिसके कारण ज्यामिति का नाम रेखागणित भी है गणित में, ज्यामितीय आकृतियाँ वे आकृतियाँ होती हैं जो हमारे दैनिक जीवन में दिखाई देने वाली वस्तुओं के आकार को दर्शाती हैं। ज्यामिति में, आकृति याँ वस्तुओं के वे रूप होते हैं जिनमें

सीमा रेखाएँ, कोण और सतहें होती हैं। 2डी आकृतियाँ और 3डी आकृतियाँ विभिन्न प्रकार की होती हैं। आकृतियों को उनकी नियमितता या एकरूपता के आधार पर भी वर्गीकृत किया जाता है। एक नियमित आकार आमतौर पर सममित होता है जैसे कि एक वर्ग, वृत्त, आदि। अनियमित आकार असममित होते हैं। उन्हें फ्रीफॉर्म र्म आकार या कार्बर्बनिक आकार भी कहा जाता है । उदाहरण के लिए, एक पेड़ का आकार अनियमित या कार्बर्बनि होती हैं समतल ज्यामिति में, द्वि –आयामी आकृतियाँ समतल आकृतियाँ और बंद आकृतियाँ होती हैं जैसे वृत्त, वर्ग, आयत, समचतुर्भु आदि। ठोस ज्यामिति में, त्रि–आयामी आतयाँ घन, घनाभ, शंकु, गोला और बेलन होती हैं। हम अपने दैनि क जीवन में भी इन सभी आकृतियों को देख सकते हैं। उदाहरण के लिए कि ताबें (घनाभ आकार), चश्मा (बेलनाकार आकार), ट्रैफिक शंकु (शंक्वाकार आकार) इत्यादि । आकृतियाँ कुछ और नहीं बल्कि सरल ज्यामितीय आकृतियाँ हैं जिनकी एक विशिष्ट सीमा होती है, तथा आंतरिक और बाहरी सतही क्षेत्र होता है। ज्यामिति में, हम विभिन्न आकृतियों और उनके गुणों को सीख सकते हैं। ज्यामितीय आकृति याँ वे आकृतियाँ हैं जो विभिन्न वस्तुओं के रूपों का प्रति निधित्व करती हैं। कुछ आकृतियाँ द्वि –आयामी होती हैं, जबकि कुछ त्रि –आयामी आकृतियाँ होती हैं। द्वि –आयामी आकृतियाँ केवल x–अक्ष और y–अक्ष पर स्थित होती हैं, लेकिन 3d आकृतियाँ x, y और z अक्ष पर स्थित होती हैं। z–अक्ष वस्तु की ऊँचाई दर्शाता है। इनमें से किसी भी आकृति को बनाने या डिजाइन करने के लिए एक रेखा या रेखाखंड या वक्र से शुरुआत करें। इन रेखाओं की संख्या और व्यवस्था के आधार पर, हमें विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ और आकृतियाँ मिलती हैं जैसे कि एक त्रिभुज, एक आकृति जहाँ तीन रेखाखंड जुडे हुए हैं, एक पंचकोण (पाँच–रेखाखंड) और इसी तरह। लेकिन हर आकृति एक पूर्ण आकृति नहीं होती। प्रक्षेपीय ज्यामिति (Projective Geometry)15वीं शताब्दी तक ज्यामिति में प्रायः नाप संबंधी गुणों का ही अध्ययन होता

था, परंतु उसके बाद ऐसे गुणों का भी अध्ययन हुआ जो नाप पर निर्भर नहीं करते। जैसे यदि दो त्रिभुजों के शीर्षबिंदु एक तीन बिदुगामी रेखा पर हों तो संगत भुजाएँ एक रेखा पर मिलेंगी। इस साध्य ने गणितज्ञों का ध्यान एक अन्य प्रकार की ज्यामिति की ओर आकृष्ट किया जिसे प्रक्षेपीय ज्यामिति कहते हैं। यदि हम कि सी दृश्य के चित्र पर ध्यान दें तो अनुभव करते हैं कि उसे देखकर दृश्य का पूरा ज्ञान हो जाता है। परंतु चित्र में वृत्त नहीं रहता, न सभी समांतर रेखाएँ समांतर रहती है, न समकोण समकोण ही, बल्कि कभी समकोण न्यून कोण दिखाई देता है, कभी अधिक कोण फिर भी दृश्य में कुछ ऐसे गुण है कि आकृतियों के बदलने पर भी चित्र से उनका पूरा ज्ञान होता है। ये गुण निश्चर कहलाते हैं। ऐसे ही गुणों का प्रक्षेपीय ज्यामिति में अध्ययन होता है। मान लें, एक बिंदु और एक चतुर्भुज क ख ग घ दिया हुआ है। यदि बिंदु ब से चतुर्भुज के प्रत्येक बिंदु को मि लानेवाली रेखाएँ खींची जायँ और उन्हें बढा दें और फिर एक समतल से इन रेखाओं को काटें तो इस तल पर एक चित्र बनेगा। वह इस चतुर्भुज का प्रक्षेप तथा यह प्रयोग बिंदु ब के सापेक्ष रूपांतरण कहलाएगा। इसी प्रकार दूसरा बिंदु लेकर उसके सापेक्ष इस प्रक्षेप का भी प्रक्षेप निकाल सकते हैं। जो गुण नहीं बदलते उन्हें प्रक्षेप द्वारा कि सी सरल बहुभुज में बदलकर अध्ययन करते हैं। ये गुण मूल बहुभुज के लिये भी ठीक होंगे। साथ ही कई रूपांतरण मिलकर एक रूपांतरण प्रयोग के समान होते हैं। इन प्रयोगों का भी अध्ययन इस ज्यामिति का अंग है।

प्रति लोमीय ज्यामिति (Inversive Gemoetry)यदि कि सी गोले या वृत्त का केंद्र क हो तथा त्रिज्या त्र हो और यदि किसी बिंदु ब की केंद्र क से दूरी र हो और यदि रश दूरी पर रेखा क ब में बश दूसरा बिंदु हो, जहाँ र1 त्र2 तो ब के किसी बिदुपथ के संगत बश का भी पथ होगा। बश का पथ ब के पथ का प्रति लोमन (inversion) कहलाता है। प्रत्येक क्षेत्र प्रति लोमन का अध्ययन ही इस शाखा का ध्येय है। अ–यूक्लिडीय ज्यामिति (Non&Euclidean Geometry) गोलीय ज्यामिति , अ–युक्लिडीय ज्यामिति का एक यूक्लिड का 5वाँ स्वयंसिद्ध तथ्य ऊपर दिया जा चुका है। इसे स्वयंसिद्ध मानने के लिये गणितज्ञ कभी तैयार नहीं हुए, बल्कि उन्होंने इसे सिद्ध करने के बड़े बड़े यत्न कि एय परंतु काई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। अनुसंधान के फलस्वरूप गणित का बहुत विकास हुआ और एक ऐसी ज्यामिति का आविष्कार हुआ जिसने ज्यामिति में पूर्ण क्रांति उत्पन्न कर दी। यूक्लिड ने समतल पर ही सब विवेचन कि ए, परंतु अब हर प्रकार के तलों पर अलग अलग वि वेचनाएँ होती हैं। इसका विवेचन कठिन है, अतः इसके लिये पाठक इस विषय की विशेष पुस्तकों का अवलोकन करें। निर्देशांक ज्यामिति :–17वींशताब्दी के मध्य में फ्रांसीसी गणितज्ञ डेकार्ट (Descart मे) ने ज्यामिति में बीजगणित का प्रयोग कर इसे बहुत शक्तिशाली बना दिया। उसने पहले दो काटती हुई रेखाएँ लीं, जिन्हें अक्ष कहते हैं। कि सी बिंदु की इन रेखाओं के समांतर नापी हुई दूरी दो संख्याओं से उसका स्थान निश्चय किया। ये रेखाएँ बिदु के निर्देशांक कहलाती हैं। इन निर्देशांकों की सहायता से प्रत्येक ज्यामितिय तथ्य को बीजगणितीय समीकरण द्वारा प्रदर्शित कि या जा सकता है। इस ज्यामिति का कई दिशाओं में विकास हुआ। पहली दशा में तो ज्यामिति का व्यापक रूप सामने आया, जैसे एक घात का समीकरण एक सरल रेखा प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार दो घात का समीकरण एक शांकव (conic) प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार तीन, चार और उच्चतर घातों के समीकरणों का अध्ययन होने लगा और उनके संगत वक्रों के गुणों का विवेचन पहले से बहुत सरल हो गया। तल के वक्रों तक ही नहीं, अवकाश (space) के वक्रों का भी अध्ययन संभव हो गया। इसके लिये एक बिंदुगामी तीन समतलों से किसी बिंदु की दूरियों (x, y) न उसका स्थान निश्चित करते हैं और प्रत्येक बिदुपथ को य, र, ल (x, y) में एक समीकरण द्वारा प्रदर्शित करते हैं। इन समीकरणों के विवेचन से तलों ओर वक्रों के गुणों का अध्ययन सरलता से होता है। दूसरी दिशा में रचना संबंधी प्रश्नों का हल तथा क्रियाएँ बहुत सरल हो गईं। ये क्रियाएँ केवल कुछ समीकरणों के हल पर ही निर्भर हैं, जिसमें बहुत व्यापक प्रश्न सरलता से हल हो जाते हैं जैसे यदि रेखा (ax+ by + c = o) किसी वक्र (Ax2 + By2 + 2Hxy + 2Gx + 2F y + c = o) को काटती है, तो इन दोनों समीकरणों के हल उनके कटान बिंदुओं का स्थान निश्चित करेंगे। यदि इन समीकरणों के मूल वास्तविक हैं, तो रेखा वक्र को काटती है। यदि बराबर हैं तो रेखा वक्र को स्पर्श करती है। यदि काल्पनिक हैं तो रेखा वक्र को नहीं काटती, परंतु हम यह कह सकते हैं कि रेखा वक्र को सदैव दो बिदुओं पर काटेगी, चाहे बिंदु वास्तविक या संपाती हों, अथवा काल्पनिक हों। इसी प्रकार से तथ्य बड़े व्यापक रूप में दिए जा सकते हैं, जो साधारण ज्यामिति में संभव नहीं था। तीसरी दिशा में निर्देशांक ज्यामिति ने विमिति (dimension) को व्यापक किया। दो संख्याएँ य, र (x, y) दो विमितियों (dimensions) में तथा तीन संख्याएँ (य, र, ल) (x, y) तीन विमितियों में किसी बिंदु का स्थान निश्चित करती हैं। अब गणितज्ञों के सामने यह प्रश्न उठा कि चार संख्याएँ (x, y, z) या पाँच संख्याएँ (x, y, z, t, w) क्या प्रदर्शित करेंगी। गणितज्ञों ने तो अमूर्त रूप से अपने मस्तिष्क में बड़ी आसानी से सोच लिया कि चार संख्याएँ चार विमितियों में और पाँच संख्याएँ पाँच विमितियों में किसी बिंदु का स्थान निश्चित करेंगी। इस प्रकार उन्होंने समितियों का विचार भी अच्छी तरह सोच लिया। उन्हें इससे कोई मतलब नहीं कि पार्थिव जगत् में उसका कोई उदाहरण है या नहीं। आइंसटाइन ने अवश्य इस वि चार का अपने सापेक्ष सिद्धांत में उपयोग किया और विमिति के विचार का स्पष्टीकरण किया। अब इस उच्च विमिति के विचार का अप्रयुक्त गणित में कुछ कठिन समस्याओं को हल करने में उपयोग करते हैं। जैसे किसी चल तरल पदार्थ र्थ के भिन्न भिन्न कणों का स्थान, सात संख्याओं से प्रदर्शित करते हैं। वे हैं (, इ, ब), उसका प्रारंभि क स्थान, तथा तीन वेग, जो (x, y) अक्ष के समांतर हों, तथा समय, यह सात

विमिति का प्रश्न समझकर हल हो सकता है। चौथी दिशा में निर्देशांक ज्यामिति ने संख्याओं का व्यापकीकरण किया और काल्पनिक संख्याओं का आविर्भाव हुआ। कल्पनिक बिंदु तथा काल्पनिक वक्र इत्यादि विचारों ने ज्यामिति को बहुत महत्वशाली बना दिया, जिससे व्यापकीकरण में और अधिक सहायता मिली, जैसे अनंत पर दो काल्पनिक बिंदुओं से जानेवाला शांकब वृत्त होता है, इत्यादि । इसके अतिरिक्त ज्यामिति का विवेचन भिन्न भिन्न प्रकार के निर्देशांकों की सहायता से होने लगा, जैसे समघातीय निर्देशांक, त्रिकोणीय निर्देशांक, स्पर्शीय निर्देशांक इत्यादि अवकल ज्यामिति :– निर्देशांकों के प्रयोग के लगभग 50 वर्ष र्ष बाद ही कलन (calculus) का प्रयोग भी ज्यामिति में होने लगा। इस प्रयोग ने ज्यामिति में नई नई विचारधाराएँ उत्पन्न कीं। इन्हें ही अवकल ज्यामिति कहते हैं। वर्णनात्मक ज्यामिति :–ठोसों, तलों, रेखाओं और उनके प्रतिच्छेदों के परिमाण, आकार और स्थिति की दृष्टि से, यथार्थ र्थ रेखण को वर्णनात्मक ज्यामिति (Descriptive Geometry) कहते हैं। फ्रांसीसी गणितज्ञ और भौतिकविद्, गैसपर्ड र्डमॉज (Gaspard Monge), ने १८वीं शताब्दी के अंत में इस व्यावहारिक ज्यामिति का आविष्कार किया। सभी वास्तुनिर्माण और यांत्रि की मानचित्र का यह सैद्धांतिक आधार है और इसका उपयोग मशीनों, इमारतों, पुलों तथा जहाजों के नक्शे खींचने में, छाया के निरूपण में तथा गोलीय त्रिभुजों के आलेखीय हल में किया जाता है। इसके माध्यम से अभि कल्पी अपने विचार इस विद्या में निपुण राज और मिस्त्री को समझाता है। इसी लिये वर्णनात्मक ज्यामिति को इंजीनियर की सार्वदेशिक भाषा कहा गया है। बीजीय ज्यामिति :–यह ज्यामि ति की एक शाखा है जो बहुभिनरूपी बहुपद के शून्यों का अध्ययन करती है। इसमें रैखिक और बहुपद बीजीय समीकरण शामिल हैं जिनका उपयोग शून्यों के सेट को हल करने के लिए किया जाता है। इस प्रकार के अनुप्रयोग में क्रि प्टोग्राफी, स्ट्रिंग सिद्धांत आदि शामिल हैं। असतत ज्यामिति :–इसका संबंध सरल ज्यामितीय वस्तुओं, जैसे बिंदु, रेखाएँ, त्रिभुज, वृत्त आदि की सापेक्ष स्थिति से है विभेदक ज्यामिति :–इसमें समस्या समाधान के लिए बीजगणित और कलन की तकनीकों का उपयोग किया गया है। विभिन्न समस्याओं में भौति की में सामान्य सापेक्षता आदि शामिल हैं। यूक्लिडियन ज्यामिति :–बिंदु, रेखाएँ, समतल, कोण, सर्वां गसमता, समानता, ठोस आकृतियों सहित स्वयंसिद्धों और प्रमेयों पर आधारित समतल और ठोस आकृतियों का अध्ययन। कंप्यूटर विज्ञान, आधुनिक गणित समस्या समाधान, क्रि स्टलोग्राफी आदि में इसके अनुप्रयोगों की एक वि स्तृत श्रृंखला है। उत्तल ज्यामिति :– इसमें वास्तविक विश्लेषण की तकनीकों का उपयोग करके यूक्लिडियन अंतरिक्ष में उत्तल आकृतियाँ शामिल हैं। इसका उपयोग संख्या सिद्धांत में अनुकूलन और कार्यात्मक विश्लेषण में किया जाता है। टोपोलॉजी :– यह निरंतर मानचित्र के तहत अंतरिक्ष के गुणों से संबंधित है। इसके अनुप्रयोग में कॉम्पैक्टनेस, पूर्णता, निरंतरता, फिल्टर, फंक्शन स्पेस, ग्रिल, क्लस्टर और बंच, हाइपरस्पेस टोपोलॉजी, प्रारंभिक और अंतिम संरचना, मीट्रिक स्पेस, नेट, समीपस्थ निरंतरता, निकटता स्पेस, पृथक्करण स्वयंसिद्ध और समान स्पेस पर विचार शामिल है। सारांश ज्यामिति गणित की एक शाखा है जो अंतरिक्ष में आकार, आकार स्थिति और आकृतियों के संबंध का अध्ययन करती है। यह रेखाओं, कोणों, सतहों, और ठोस आकृतियों के गुणों और उनके बीच के संबंधों से संबंधित है.इसमें बिंदु रेखा, तल और ठोस वस्तुओं के गुण, माप और उनकी सापेक्ष स्थिति शामिल हैं. ज्यामिति ज्ञान की सबसे प्राचीन शाखाओं में से एक है यह सर्वेक्षण, निर्माण, खगोल विज्ञान और विभिन्न शिल्पों में उपयोगी है ज्यामिति में दूरी, कोण, क्षेत्रफल, आयतन और आकृतियों की सापेक्ष स्थिति जैसे अवधारणाएँ शामिल है ज्यामिति का अध्ययन तार्किक सोच कौशल और समस्या समाधान कौशल विकसित करने में मदद करता है ज्यामिति को दो मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता हैः समतल ज्यामिति (दो–आयामी आकृति यों का अध्ययन) और ठोस ज्यामिति (तीन–आयामी आकृतियों का अध्ययन), समतल ज्यामिति : इसमें रेखाएं, कोण, त्रिभुज, चतुर्भुज, वृत्त आदि शामिल हैं.ठोस ज्यामिति : इसमें घन, घनाभ, बेलन, शंकु, गोले आदि शामिल हैं। ज्यामिति में कई महत्वपूर्ण प्रमेय और सिद्धांत भी शामिल हैं, जैसे कि पाइथागोरस प्रमेय, ज्यामितीय प्रगति और समरूपता के सिद्धांत.

संदर्भ सूचीः

1. लेसों सुर ला थिओरी जेनेराल दे सुरफास, 4 खंड (पेरिस, 1887–96);
2. जे० ए० बेनेट : डेस्क्रिप्टिव ज्यॉमेट्री (१६६१);
3. सी० ई० डगलस ऐंड ए० एल० होगरू डेस्क्रि व ज्यॉमेट्री (१६६२)
4. Geometry in Ancient and Medieval India (गूगल पुस्तक लेखिका – T-A- Sarasvati Amma)
5. ज्यामिति की कहानी (गूगल पुस्तकय लेखक –गुणाकर मुळे)
6. इस्लामिक ज्योमेट्री मृत कड़ियाँ
   यूक्लिड की ज्यामिति का परिचय
7. NCERT https://ncert-nic-in › textbook › pdf › ihmh105-

मधुबाला

अिसिस्टेंट प्रोफेसर–गणित (विद्या संबल)

राजकिय महाविद्यालय– विराटनगर, जयपुर (राजस्थान)

नागार्जुन के काव्य में व्यंग्य

29

डॉ0 सुनीता रानी

सारांश

कबीर और निराला के बाद नागार्जुन का नाम हिन्दी काव्य में व्यंग्यकार के रूप में आता है। उनका कटाक्ष कटु और तीक्ष्ण है और साथ ही उनकी तीव्र दृष्टि से भी कोई वर्ग अछूता नहीं है। कवि नागार्जुन का हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं में योगदान है। एक साहित्यकार के रूप में उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। कहानी उपन्यास, निबंध, आलोचना, कविता, अनुवाद, बाल– उपयोगी साहित्य आदि विधाओं में उन्होंने उत्कृष्ट साहित्य का सृजन किया है। लेकिन उन्हें विशेष प्रसिद्धि एक कवि और उपन्यासकार के मे ही प्राप्त हुई है। उनका संपूर्ण साहित्य प्रगतिशील चेतना से ओत–प्रोत है। कविता हो या कथा–साहित्य, निबंध हो या आलोचना सभी विधाओं में उनका चुभता हुआ व्यंग्य पाठकों के मन मस्तिष्क को भेद जाता है। जनवादी कवि नागार्जुन का समस्त काव्य विद्रोही चेतना से आलोकित है। उनकी कविता का प्रमुख स्वर ही विद्रोह है।

प्रस्तावना

नागार्जुन की व्यंग्य कविताओं में कबीर की वाणी भारतेंदु की करुणा और निराला के प्रखर कथन का अनूठा मिश्रण हैं। रचनाकार की सामाजिक चेतना जितनी प्रखर होगी, उसका व्यंग्य भी उतना ही तीक्ष्ण एवं प्रभावशाली होगा। व्यंग्य नागार्जुन के काव्य का सबसे बड़ा प्रखर गुण है। इनकी बोल चाल की भाषा में भी व्यंग्य ही छिपा रहता है । व्यंग्य कविताओं में कवि को अधिक सफलता मिली है। यही कारण है कि आधुनिक हिन्दी कविता में नागार्जुन का व्यंग्य अधिक प्रभावपूर्ण सिद्ध हुआ है ।

नागार्जुन का काव्य–संग्रह 'युगधारा' है। अपने समय का यह उत्कृष्ट काव्य–संग्रह है। युगधारा ' में 'प्रेत का बयान' जैसी व्यंग्यपूर्ण रचना प्रकाशित हुई है साथ ही साथ इस संकलन में 'एक ओर शपथ', तर्पण' भिक्षुणी' जैसी चरित्र प्रधान कविताएँ भी प्रकाशित हुई है। नागार्जुन की शपथ ' कविता में कवि ने गाँधी जी की हत्या के संदर्भ में अपनी देशभक्ति, पूर्ण सजग राष्ट्रीयता को ही अंकित किया है।

जिस बर्बर ने
कल किया तुम्हारा खून पिता,
वह नहीं मराठा हिन्दू है।
वह प्रहरी है स्तिर स्वार्थों का
वह मानवता का महान शत्रु ।[1]

नागार्जुन ने हास्य–व्यंग्य की तो कविताएं लिखी है किन्तु कटु व्यंग्य पूर्ण कविताएं भी इनकी कम महत्वपूर्ण नही है ।

कटुव्यंग्य की सबसे बड़ी जीत उसका सत्य है। निराला के बाद हिन्दी कविता में इस तरह के कटुव्यंग्य का यथार्थ है, एवं मार्मिक चित्रण हमें नागार्जुन की कविताओं में मिलता है। 'तुम रह जाते दस साल और शीर्षक कविता में नागार्जुन जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु पर कटु व्यंग्य किया है। इस कविता में कवि ने नेहरू की राजनीति पर दृष्टिपात किया है –

झुकती स्वराज्य की डाल और
तुम रह जाते दस साल और
गलती समता की दाल और
तुम रह जाते दस साल और[2]

नागार्जुन की अकाल और उसके बाद कविता में देखा जा सकता है कि सम्पूर्ण मानव जगत, मानवेत्तर जगत, यहाँ तक कि जड़ तत्व भी अकाल व भुखमरी के कारण परेशान है, डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार नागार्जुन की ये कविता परिस्थितियों और घटनाओं पर चोट करके मानवीय संवेदनाओं को उद्घाटित करती है। ''[3]

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,
कई दिनों तक कानी कुतिया, सोई उनके पास ।
कई दिनों तक लगी–भीत पर, छिपकलियों की गश्त,
कई दिनों तक चूहों की भी, हालत रही शिकस्त ।[4]

'सतरंगे पंखों वाली' काव्य संग्रह में अनेक कविताएं ऐसी भी है जो व्यंग्य से परिपूर्ण है। 'जयति नखरंजनी' में वर्तमान आधुनिक महिला के फैशनपरस्ती पर व्यंग्य किया है। आधुनिक काल की यह फैशनेबल महिलाएँ मतदान करते समय हाथ काला न हो इसलिए बिना मतदान के ही वापस आती है। कवि ने ठीक ही कहा है–

फिर कौन लगवाए काला निशान ।
कौन ले बैलेट पेपर,
मतदान कौन करें।
क्षण भर ठीठक कर नई दिल्ली की तीनों परियाँ
मूड गई सहसा वापस,

स्टार्ट हुई कार, लोग लगे हंसने।[5]

नागार्जुन की यह कविता हास्य व्यंग्य प्रधान है । प्यासी पथराई आँखे' नागार्जुन का ऐसा काव्य संग्रह है, जिसमे अधिकतर कविताएं व्यंग्य से परिपूर्ण है। कवि दिखावे की आधुनिकता का कड़ा विरोध करता है, यही कारण है कि इस काव्य–संग्रह में कवि ने तथाकथित आधुनिकता, कृत्रिम प्रसाधनों का प्रयोग, आधुनिक सभ्यता पर कटु व्यंग्य किया है, साथ ही साथ व्यवस्था के खोखलेपन को कवि ने बड़ी मार्मिकता से व्यक्त किया है ।

नागार्जुन ने भारत की आर्थिक स्थिति पर भी गम्भीर रूप से सोचा और लिखा है। वे देश की आर्थिक विपन्नता एवं समस्या को देखकर दुखी है। आर्थिक विपन्नता किसी भी देश के लिए निन्दनीय है। जब तक देश में आर्थिक समस्या का समाधान एवं निदान नहीं होगा तब तक समाज एवं देश का विकास सम्भव नहीं है। खाली नहीं, और खाली' शीर्षक कविता मे भी नागार्जुन ने देश की आर्थिक स्थिति एवं दरिद्रता का यथार्थ वर्णन किया है–

खाली नहीं चेयर, खाली नहीं सीट
खाली नहीं फुटपाथ, खाली नहीं स्ट्रीट
खाली नहीं ट्राम, खाली नहीं ब्रेन
खाली नहीं है हाथ, खाली नहीं पेट
खाली है थाली, खाली है प्लेट।[6]

इस प्रकार हम देखते हैं कि नागार्जुन जनता के दुःख दर्द के सच्चे हिमायती के रूप में हमारे सामने है जनता को दुःख पहुंचाने वाले किसी भी शोषक, धूर्त, नौकरशाह, धर्म, राजनीति आदि को उन्होंने नहीं छोड़ा है ।

निष्कर्ष :

चुटीने व्यंग्यों के माध्यम से नागार्जुन अपनी बातों को बड़ी सफलता से व्यक्त करते हैं। उनके व्यंग्य का लक्ष्य व्यक्ति विशेष न होकर तत्कालीन स्थितियाँ है। सामाजिक असामनता, धार्मिक रूढ़ियाँ , फैशन–परस्ती, राजनीति भ्रष्टाचार में सब कुछ नागार्जुन की व्यंग्य की नोक पर आये है। वे जनता के आन्दोलन में स्वयं कूद कर पूरी प्रतिबद्धता के साथ अपनी हिस्सेदारी निभाते है। उनको न तो सत्ताधारियों से भय लगता है और न ही व्यवस्था के ठेकेदारों से। आधुनिक हिन्दी साहित्य में श्रेष्ठ व्यंग्य की परम्परा स्थापित करने वाले, जनसाधारण के सच्चे हितैषी नागार्जुन का काव्य हिन्दी जगत अमूल्य धरोहर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नागार्जुन, युगधारा, पृष्ठ 44
2. नागार्जुन, चुनी हुई रचनाएं, पृष्ठ 122–123
3. डॉ. रामविलास शर्मा, "नयी कविता व अस्तित्ववाद" राजकमल प्रकाशन नई दिली – 1978, पृष्ठ संख्या 39–40
4. नागार्जुन, सतरंगे पंखो वाली, पृष्ठ 173
5. नागार्जुन, चुनी हुई रचनाएँ, पृष्ठ 122–123
6. नागार्जुन, सतरंगे पंखो वाली, पृष्ठ 41

डॉ सुनीता रानी
सहायक प्रध्यापिका
हिन्दी विभाग
आई. बी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय

पत्र व्यवहार का पता
डॉ सुनीता रानी
आई. बी. पी.जी. महाविद्यालय
जी.टी. रोड, पानीपत – 132103
मोबाइल नं – 9996000086

30

आलोचक रोहिणी अग्रवाल के साहित्य चिंतन में भारतीय एवं पाश्चात्य संदर्भ : स्त्री आंदोलन

डॉ0 अनिल कुमार, रश्मि

शोध सार

प्रस्तुत शोध लेख का सार जिसमें सबसे पहले स्त्री आंदोलन के अर्थ व परिभाषा को बताते हुए उन्नीसवी सदी में आरंभ स्त्री आंदोलन में अनेक समाज सुधार को द्वारा किए गए स्त्री की स्थिति सुधारो का वर्णन है। जहां सामाजिक प्रथाओं के संदर्भ में ज्योतिबा फुले से लेकर स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे सुधारको के द्वारा सामाजिक प्रथाओं के विरुद्ध आवाज उठाई गई। इन समाज सुधारको के साथ–साथ चलने वाले स्त्री समाज सुधारक जिनमे स्त्री शिक्षा पर सर्वप्रथम कदम उठाने वाली सावित्रीबाई फुले से लेकर आधुनिक समय में कमला देवी जैसे स्त्री आंदोलनकारी ने स्त्री अधिकारों के लिए किए गए आंदोलन का वर्णन है। इसके पश्चात स्त्री आंदोलन के दो महत्वपूर्ण मुद्दों जिनके बारे में प्रमुख स्त्रीवादी आलोचक 'रोहिणी अग्रवाल' ने भारतीय संदर्भ में स्त्री आंदोलन व्यापार क्षेत्र संदर्भ में स्त्री आंदोलन व पाश्चात्य संदर्भ में स्त्री आंदोलन मे स्त्री के अधिकारो संबंधी महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डाला है।

आरंभ से ही भारत स्त्री आंदोलन के संक्षिप्त इतिहास की और अग्रसर रहा है उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में नवजागरण उदय के साथ स्त्री संबंधी प्रश्नों को गंभीरता से उठाए जाने लगा अनेक सामाजिक कुरीतियों जिसमें सती प्रथा, बालविवाह, कुलीन विवाह एवं बहु विवाह जैसी प्रथा का खुलकर विरोध किया गया। इन सामाजिक कुरीतियों के विरोध में राजा राम मोहन राय, विद्यासागर, महर्षी कर्वे, ज्योतिबा फुले व स्वामी दयानंद सरस्वती ने आवाज उठाई। साथ ही स्त्री शिक्षा की पहल करने वाली सावित्रीबाई फुले और बाद में सरोजिनी नायडू, हंस मेहता, राजकुमारी अमृत कौर, कमला देवी जिन की आवाज को विदेशी प्रशासन तथा नेताओं द्वारा अनसुना करना कठिन हो गया था। जिन्होंने स्त्री संस्थानों में "अखिल भारतीय महिला परिषद (1927) की स्थापना तथा राजकुमारी अमृत कौर हंस मेहता एवं लक्ष्मी मेनन द्वारा (1946) में 'इंडियन वूमेन चार्ट ऑफ ड्यूटीज एंड राइट्स' स्त्रियों की ओर से बुनियादी नियमों का प्रारूप तैयार किया जाना था।" इस नियम के द्वारा स्त्री अधिकारों से संबंधित कुछ मांगे भारतीय संविधान में शामिल करवाने की मांग की संविधान की धारा 15 के अंतर्गत लिंग, जाति, धर्म के आधार पर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में बिना किसी मतभेद के सामान्य अधिकार धारा 16 के अंतर्गत लिंग, जाति, धर्म के आधार पर सरकारी नौकरियों में कोई भेदभाव नहीं किया जाएगा, धारा 326 के अंतर्गत सभी को व्यस्क मताधिकार मिले। इसके अलावा 1971 के अधिनियम में गर्भपात जैसी स्थितियों के मूल एक चार्ट का यह भी अंश था कि अपने परिवार एवं स्वास्थ्य की आर्थिक स्थिति को दृष्टिगत करते हुए स्त्री को अपने परिवार का आकार निश्चित करने का अधिकार मिले। स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन में भी स्त्रियों ने अहम भूमिका निभाई वहीं पाश्चात्य संदर्भ में स्त्री आंदोलन का प्रारंभिक स्थिति अमेरिका व ब्रिटेन के औद्योगिक क्रांति से आरंभ हुई। जिसके परिणाम स्वरुप स्त्रियां अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई जहां उदारवादी स्त्री आंदोलन, उन्मूलन वादी स्त्री आंदोलन, समाजवादी स्त्री आंदोलन व मनोविश्लेषणवादी स्त्री आंदोलन थे। जिनके जरिए पाश्चात्य साहित्यकारों ने स्त्री की लैंगिक असमानता का विरोध करते हुए स्त्री पुरुष के सामान्य अधिकारों की चर्चा की। इन आंदोलनों के परिणाम स्वरुप स्त्री परंपराओं से मुक्त हुई लेकिन स्त्री संघर्ष और स्वप्न केवल उसके स्वतंत्रता उसके विचार व उसके इच्छा को जीने भर की ही चाहा नहीं है। क्योंकि आज भी परिवार व समाज इस बात पर विचार नहीं करता कि क्या आज भी स्त्री अकेले रात में सफर करने में भयभीत रहती है? क्या 21 सी सदी में पांव रखने के बावजूद भी यह सब होना चाहिए ? लोगों का यह मानना है कि स्त्री पूर्ण रूप से आजाद है उन्हें अब किसी की जरूरत नहीं है, पर यह बात बेईमानी से लगती है जब हम स्त्रियों के जीवन में कुछ अनु छुए पहलुओं की जांच पड़ताल करते हैं तो देखते हैं कि स्त्री किस तरह से हर मोड़ पर विडंबना में फंसी हुई है। स्वतंत्रता से लेकर अब तक भले ही स्त्रियां अपनी अस्मिता को लेकर जागरूक हो गई है। लेकिन उन्हें आज भी उन्हें यौन हिंसा और लिंगानुपात जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

भारतीय संदर्भ में स्त्री आंदोलन :–

भारत में स्त्री आंदोलन की प्रारंभिक शुरुआत बंगाल व महाराष्ट्र में समाज सुधार आंदोलन से हुई। "बंगाल में स्त्रियों को शिक्षित करने के महत्व पर सबसे पहले सार्वजनिक बहस राजा राममोहन राय द्वारा 1915 में स्थापित 'आत्मीय सभा' में रखी गई और इस वर्ष भारतीय भाषा बंगाली में सभी प्रथम पर हमला बोलते हुए एक लेख भी लिखा गया।" उन्नीसवीं सदी में सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाने वाले ज्योतिबा फुले जिन्होंने दलितों व स्त्रियों के मताधिकार, शिक्षा व रोजगार के लिए लंबा संघर्ष किया। उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले (1831–1897)जिन्होंने स्त्री शिक्षा के जरिए स्त्रियों की स्थिति को

(RNI-UPBIL/2011/38102, ISSN-2231-5837)
JOURNAL IMPACT FACTOR NO. 8.01

सुधारने का प्रयास किया। वहीं महाराष्ट्र में सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में प्रमुख स्त्री आंदोलन कार्यों को करने वाली पंडिता रमाबाई, आनंदीबाई, ताराबाई व राजा राममोहन राय ने 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की जिन्होंने सती प्रथा का विरोध किया जो स्त्री से जीने का अधिकार छीनती है। सती प्रथा के सम्मान, बाल विवाह प्रथा थी जो स्त्री को शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक रूप से कमजोर बनाते हैं। इसके विरोध में 'ईश्वरचंद्र विद्यासागर' ने 1929 में एक प्रस्ताव पास करवाया जिसके अनुसार लड़कियों के विवाह के न्यूनतम आयु 14 वर्ष व लड़कों की आयु 18 वर्ष कर दी गई वही 'स्वामी दयानंद सरस्वती','स्वामी विवेकानंद' व 'महर्षि करवे' ने विधवा पुनर्विवाह, स्त्रियों का पारिवारिक संपत्ति में पुरुषों के सम्मान अधिकारों की मांग की। यही से स्त्री आंदोलन की लहर आरंभ होने लगी थी। हालांकि इन आंदोलनों के पृष्ठभूमि अनेक समाज सुधार को की प्रेरणा से तैयार हुई थी उनका मानना था कि "जब तक स्त्री स्वयं अपने हितों की रक्षा के लिए आगे नहीं आएगी तब तक समाज में नारी जागृति की बात को व्यापक समर्थन नहीं मिल सकता और न ही राष्ट्र स्त्रियों के सहयोग को पाने की आशा कर सकता है। नेशनल कांफ्रेंस 1887 के संस्थापक 'केशव चंद्र सेन' की पुत्री व महाराज कुच बिहार की पत्नी सुनीति देवी, देवेंद्र नाथ टैगोर की पुत्री स्वर्ण कुमारी देवी जिन्होंने 1882 में कोलकाता में 'महिला थियोसोफिकल सोसायटी समिति' की स्थापना की ओर 1886 में कोलकाता में 'सखी समिति' की नीव रखी। दरअसल भारतीय नवजागरण आंदोलन में स्त्रियों के समाज सुधार को के रूप में राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक क्षेत्र में स्त्री अधिकारों की मांग की इन महिला संगठन में 1882 में 'स्वर्णकुमारी देवी' द्वारा स्थापित ''महिला थियोसोफिकल सोसायटी','सखी समिति' (1886),गुजरात का गुजराती स्त्री मंडल (1903), सुनीति देवी व सरलराय द्वारा गठित महिला (1905) महाराष्ट्र में नेशनल सोशल कॉन्फ्रेंस द्वारा (1904)में गठित भारतीय महिला परिषद व पंडिता रमाबाई रानाडे द्वारा स्थापित सेवा सदन आदि महत्वपूर्ण महिलाएं संस्था थी। जिसके परिणाम शुरू "1930 में पहली बार स्वतंत्रता संग्राम के प्रत्यक्ष रूप में भाग लिया तो ब्रिटिश सरकार ने 1919 में भारतीय विधानसभा में निर्णय करने का अधिकार दिया इस प्रकार सर्वप्रथम 1929 में लगभग सभी प्रांतीय विधानसभा में स्त्रियों का अधिकार दिया लेकिन मताधिकार के इस प्रावधान में कुछ करते थे कि स्त्रियों का स्नातक हुए 7 वर्ष हो गए तो उनके नाम पर कुछ संपत्ति हो। इस प्रावधान के परिणाम स्वरुप निम्न व मध्य वर्ग की स्त्रियां मताधिकार से वंचित रही। फिर भी कुछ हद तक स्त्रियों के मताधिकार को स्वीकार करते हुए 1949 में भारतीय संविधान में सम्मिलित किया गया, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में स्त्रियों के अधिकार को रेखांकित करते हुए कहा कि "विधवा स्त्री को पिता की संपत्ति में आधा हिस्सा पुत्र के बराबर मिलना चाहिए, बहूप्रथा पर रोक लगाई जाए, अंतरजातीय विवाह को कानून मान्यता दी जाए, तलाक की स्वीकृति कानून के अनुसार की जाए।" वही 1948 में हिंदू कोड बिल के प्रारूप को पेश करने वाले 'भीमराव अंबेडकर' के साथ जिनमे 17 सदस्यों में से तीन महिलाएं रेणुकाराय जी, दुर्गाबाई व अम्मू स्वामीनाथन की थी। लेकिन समिति के सदस्यों व संसद के अधिकतर सदस्यों द्वारा इस बिल का विरोध किया गया। इसके पश्चात स्त्री नेताओं ने परिषद की पत्रिका 'रोशनी' (1941) के जरिए आम जनता में इस बिल का प्रचार किया गया तथा 1952 के चुनाव पश्चात प्रधानमंत्री नेहरू जी ने हिंदू कोड बिल पास करने के लिए सहमत हुए और अंत में 1954–56 में स्त्री को विवाह, तलाक व पैतृक संपत्ति के समान अधिकारों को माना गया, लेकिन फिर भी इसी संदर्भ में हम देखे तो हाल ही में महिला आरक्षण विधेयक 2023 जो लोकसभा राज्य विधानसभा में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सीटों का आरक्षित करता है जिनमें ओबीसी की महिलाओं के लिए कोई भी प्रावधान नहीं है इसके अलावा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विपरीत भारतीय संविधान लोकसभा में राज्य विधानसभा में ओबीसी के लिए राजनीतिक आरक्षण का कोई भी प्रावधान नहीं किया गया है जहां हमें स्त्री असमानता का प्रारूप दिखाई देता है।

उन्नीसवीं शताब्दी के समाज सुधारको के महत्व को भी नकारा नहीं जा सकता है। जिन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त जड़ताओ को तोड़ने का प्रयास किया है। इसके संदर्भ में प्रमुख स्त्रीवादी आलोचक 'रोहिणी अग्रवाल' ने लिखा है कि "इस आंदोलन के कारण मिलने वाले राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक अधिकारों ने बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में मध्य वर्गीय एवं शिक्षित स्त्री में आत्मविश्वास जागृति की जो लहर भरी है वह धीरे–धीरे ग्रामीण व निम्न वर्ग की स्त्री तक पहुंच रही है। इस प्रकार से नवजागरण आंदोलन के दौर में अनेक समाज सुधारक सक्रिय रहे इसमें कोई संदेह नहीं है जहां यह चेतना महसूस की जाने लगी कि "समाज के सर्वाधिक विकास में स्त्री शोषण व अशिक्षा एक बहुत बड़ी बाधा है और उसे सामाजिक अत्याचारों से मुक्त कराये बिना समाज का संपूर्ण विकास संभव नहीं है।

अतः राधा कुमार के शब्दों में कहे तो "उन्नीसवीं सदी को स्त्रियों की शताब्दी कहना ज्यादा बेहतर होगा क्योंकि इस सदी में सारी दुनिया में उनकी अच्छाई –बुराई, प्रकृति क्षमता एवं उर्वरा गरमा–गरम बहस के विषय थे।"

स्वतंत्रता के बाद स्त्री आंदोलन :–

भारतीय नवजागरण की कोख से जन्मे स्वतंत्रता स्त्री आंदोलन जो दमन, उत्पीड़न और विषमता के विरुद्ध कमर कस कर खड़ा है। स्त्रियों के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आंदोलन में भागीदारी को तीन बिंदुओं को रेखांकित करते हुए स्त्रीवादी आलोचक 'रोहिणी अग्रवाल' ने लिखा है कि "एक जमीनी सच्चाई से जुड़े मुद्दों को लेकर आदिवासी किसान एवं कामगार महिलाओं के आंदोलन दूसरे

पर्सनल लॉ को चुनौती देती अल्पसंख्यक वर्ग के स्त्री आंदोलन य तीसरे राष्ट्रीयता के सवाल पर उठे आंदोलन।" पहले चरण के जमीनी मुद्दों को लेकर आदिवासी किसान एवं कामगार स्त्रियों के आंदोलन जिनमें तेभागा आंदोलन, तेलगाना आंदोलन, श्री का कुलम आंदोलन, बोधगया आंदोलन, चिपको आंदोलन, दंडकारण्य में क्रांतिकारी आदिवासी स्त्री आंदोलन, विप्लव महिला संगम, बलात्कार– घरेलू –हिंसा दहेज प्रथा, कन्याभ्रूण हत्या व सती प्रथा के खिलाफ आंदोलन को लिया जा सकता है। दूसरे चरण में पर्सनल लॉ को चुनौती देते हुए महाराष्ट्र के 1968 से 1978 में हुए मुस्लिम महिलाओं के आंदोलन प्रमुख थे।पिछले कुछ वर्षों में स्त्रियां समानता के अधिकारों के लिए लड़ रही थी। जहां 1968 में भारत के इतिहास में पहली बार मुस्लिम स्त्रियों का एक जुलूस महाराष्ट्र में निकलते हुए मुख्यमंत्री के पास गई और उन्होंने मांग की हिंदू महिलाओं को जो कानूनी अधिकार दिए गए हैं वह उन्हें भी दिए जाएं। इनमें मुख्य रूप से दो मांगे थे।"एक, सौत बंदी यानी मुस्लिम मर्द भी एक विवाह करें, दूसरी एक तरफ जुबानी तलाक पर रोक लगाई जाए।" पर मुस्लिम स्त्रियों के मन में तभी इस चिंगारी को हवा देने वाले 'हमीद दलवाई' केवल उसे सुंलगा ही सके रोशनी फैलाने का कार्य न कर सकें। दस वर्ष पश्चात नक्शा बदल गया। 3 मई 1978 को मुंबई, पुणे, अमरावती, कोल्हापुर व अहमदाबाद नगर आदि कई जगह पर मुस्लिम स्त्रियों की सभा हुई। इस सभा के जरिए मुस्लिम स्त्रियों ने पर्सनल लॉ को चुनौती देते हुए कहा कि "जुबानी तलाक बंद करें तलाकशुदा औरतों को आमरण भत्ता दिया जाए हिंद के समान नागरिक कानून जल्दी बनाओं नौकरियों में तलाकशुदा औरतों को प्राथमिकता देकर उन्हें संरक्षण प्रदान करें।" 1988 में शाहबानो का केस आया शाहबाज ने 75 वर्ष के उम्र के पति को छोड़कर मेंटेनेंस की मांग को लेकर कोर्ट में केस किया। शाहबानो इस कदम से पूरे भारत में तहलका मच गया सभी धर्म के पुजारी,मौलवी व मुल्लाह के कान खड़े हो गए कि "इस्लाम खतरे में है जिसके जरिए उन्होंने पूरे देश में बड़े बड़े मार्च निकाले कट्टरपथियों के इस हूजूम को देखकर शाहबानो को भी खतरा हो गया।"

वास्तव में देखा जाए तो "आज से 1300 वर्ष पूर्व मुस्लिम महिलाओं को कुरान के अनुसार संपत्ति में अधिकार, परिवार में उसकी अलग कानूनी स्थिति, शादी के बाद भी अपने अलग अस्तित्व का स्पष्ट उल्लेख है, पर भारत में कट्टरपथियों के सामने भारत सरकार झुक गई और 1986 में 'मुस्लिम पर्सनल लॉ' में संशोधन कर दिया, जिसके अनुसार औरतों को तलाक के बाद मेंटेनेंस नहीं मिलेगा।" इन सभी संघर्षों के बावजूद भी भारतीय मुसलमान में तलाक की प्रक्रिया इतनी सरल होने व तलाक के बाद विवाह की प्रक्रिया इतनी कठोर होने के कारण आज भी मुस्लिम स्त्रियां अदालतो के चक्कर काटती है। वहीं, तीसरे चरण में राष्ट्रीयता सवाल पर उठे आंदोलन पर सक्रिय थे जिन में कश्मीरी औरतों ने कश्मीर की राष्ट्रीय पहचान के मुद्दों में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई "हक हमारा आजादी लड़ कर लेंगे आजादी, इस पर भी लेंगे आजादी, उस पर भी लेंगे आजादी।" यहां तक की 'बयान' नामक पुस्तिका भी निकली जिसने उत्तर पूर्वी भारत के सात राज्यों में अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मिजोरम,नागालैंड, त्रिपुरा व मणिपुर में स्त्रियों के आंदोलन के महत्वपूर्ण भूमिका रही।

पाश्चात्य संदर्भ में स्त्री आंदोलन :–

अमेरिका में ब्रिटेन में 1750 के औद्योगिक क्रांति के साथ वहां की कृषि क्रांति अर्थव्यवस्था उद्योग अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गई। इस अर्थव्यवस्था का प्रभाव ब्रिटेन के अलावा अन्य देशों पर भी हुआ जिसने आर्थिक क्षेत्र का स्वरूप बदल कर रख दिया। अर्थोंपाजन का कार्य एकमात्र पुरुषों के कंधों पर आ गया और स्त्री का कार्य क्षेत्र घर के चार दिवारी तक सीमित रह गया। परिणाम स्वरुप स्त्री पुरुष पर आश्रित रहने लगी। इसके साथ ही मध्य वर्ग व उच्च वर्ग की स्त्रियों को अनेक विशेषण में बांध दिया गया कि स्त्री का पत्नी और मां की भूमिका में रहना ही उसके जीवन का प्रमुख लक्ष्य है फिर भी लोकतंत्र शासन प्रणाली में अनेक आंदोलन चल रहे थे जहां स्त्रियां भी वेश्यावृत्ति की समाप्ति, दास प्रथा की समाप्तिव अनाथ बच्चों के कल्याण कार्यों से जुड़ गई।इन स्थितियों को देखकर स्त्री को स्वयं की दा सों जैसी स्थिति के बारे में सोचने का प्रयत्न करने लगी। जिसके परिणाम स्वरूप स्त्री आंदोलन की बात तेजी से उठी।

फलस्वरूप 1848 में सीनेका फॉल्स ने न्यूयॉर्क में 300 स्त्री–पुरुष की सभा में स्त्री अधिकार समझौते की बात रख कर समस्त प्रयासों के जरिए स्त्री आंदोलन का रूप दिया गया। उनकी मान्यता थी कि "जब तक नारी आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर स्वयं अपने विषय में निर्णय नहीं लेगी तब तक वह समाज में पुरुषों के समान स्थान प्राप्त नहीं कर पाएगी।" वही तत्कालीन समाज के जरिए स्त्री को जागरूक बनाने का प्रयास किया गया। "जहां स्त्रियों को आधुनिक शिक्षा की सुविधा द ताकि वह बच्चों को अच्छे संस्कार और उज्ज्वल भविष्य देकर समाज का निर्माण कर सके।" इसी प्रकार से औद्योगिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में शिक्षा के तीनों घटकों ने मिलकर ब्रिटेन व अमेरिका में स्त्री में नव चेतना का विकास किया जो स्त्री आंदोलन की शुरुआती लहर बनी। यदि इसी संदर्भ में हम महत्वपूर्ण तीन विचारधारा की बात करें तो उदारवादी स्त्री आंदोलन (लिबरल फेमिनिज्म) आरंभिक विचारधारा थी। उदारवादी संप्रदाय के प्रमुख विचारक 'सिमोन द बउवा' (1949) ;'जे एस मिल' (1869) व 'बैटरी फ्राइडन' (1963) थी। जे एस मिल की स्त्रियों को लेकर मान्यता थी कि ‘ जैविक विषमता के बावजूद स्त्री व पुरुष के नैतिक एवं बौद्धिक क्षमता बराबर है अतः आदर्श व्यक्तित्व की प्राप्ति हेतु पुरुष में स्त्रियोंचित गुण तथा स्त्रियों में पुरुषोचित गुण का विकास किया जाना चाहिए यदि ऐसा नहीं हो पाएगा

तो दोनों के विकास के समान अवसर उपलब्ध करवाने चाहिए इसी मान्यता के कारण उन्होंने स्त्रियों के वोट का अधिकार, शिक्षा में नौकरी के अधिकार का भी समर्थन किया। इसके साथ ही 'सिमोन दा बउवा' ने अपनी पुस्तक 'द सेकंड सेक्स' 1949 में यह कहती है कि "सामाजिक पूर्वाग्रह बंजारा काल से अब तक कुछ ऐसे ही रहे हैं कि जीव विज्ञान, समाज दर्शन, ऐतिहासिक भौतिकवाद की दृष्टि से स्त्री पर अपनी संपत्ति देने के उपरांत ही स्त्री स्थिति का सही आकलन प्रस्तुत करती हैं और कहती है कि अपनी नीति को पलटना अब खुद स्त्री के हाथ में है।"

'उग्र उन्मूलन' स्त्री आंदोलन (रेडिकल फेमिनिज्म) 1968 के सामने आया इनका मानना था कि "साधारण सुधारो से कुछ होने वाला नहीं है पुरुषों के साथ साम दाम दंड भेद आजमाने जाने से स्त्रियों का दमन नहीं रुक सकता लड़ाई पुरुषों से नहीं पितृसत्तात्मक समाज से होनी चाहिए।" इस आंदोलन में स्त्री शोषण के कारकों पर गंभीरता से विचार करते हुए 'शूलमीथ फायरस्टोन' अपनी पुस्तक का 'डायलेक्टिक आव सेक्स' में स्त्री शोषण का प्रमुख कारण प्रजनन शक्ति को मानते हैं। साथ ही विवाह व मातृत्व का विरोध करते हैं उनका यह मानना था कि "प्रजनन क्षमता स्त्री के विकास में बाधक नहीं है वरन स्त्री की प्रजनन क्षमता पर पुरुषों का नियंत्रण उसके विकास में बाधक है। अतः स्त्रियों को स्वतंत्रता दी जानी चाहिए ताकि गर्भपात व गर्भधारण सारे निर्णय स्वयं करे।" इस आंदोलन में स्त्री अधिकारों में सुधारो की बात करने के बाद भी इसकी दुर्बलता की तरफ ध्यान केंद्रित हुए प्रमुख स्त्रीवादी आलोचक 'रोहिणी अग्रवाल' लिखते हैं कि "इसने पितृसत्तात्मक व्यवस्था में निहित पृथक वाद के समांतर स्त्री पृथक वाद की रचना की है जो स्त्री पुरुष के बीच दूरियां बढ़ती है, संवाद स्थापित कर पितृसत्तात्मक व्यवस्था के स्वरूप विकल्प तलाश संभव नहीं बनती है।"

इसके अलावा 'समाजशास्त्रीय स्त्री' आंदोलन व 'मनोविश्लेषण स्त्री' आंदोलन के प्रमुख विचारक 'फ्रेडरिक एंजेल्स', मार्क्स, सिगमंड फ्रायड, इरिगरे, जूलिया क्रिस्तोवा व लाका ने आर्थिक क्षेत्र व भाषा के क्षेत्र में स्त्री मुद्दों को उठाया। जहां फ्रेडरिक एंगेल्स ने एक प्रसिद्ध ग्रंथ 'The origin of the family private, property and the state' में लिखा था कि स्त्री शोषण वहां से शुरू होता है जहां से व्यक्तिक संपत्ति का प्रावधान है क्योंकि "पितृसत्तात्मक समाज के मूल में पूंजीवादी और हर वर्ग, समुदाय की स्त्रियों का अभ्युदय होना है तो सिर्फ एक विशेष वर्ग की चुनी हुई स्त्रियों का नहीं इसलिए पूंजीवादी व्यवस्था को ही ध्वस्त करना होगा। समाजवादी व्यवस्था में किसी– किसी पर आर्थिक परावलम्बन होगा।"

'मनोविश्लेषणात्मक स्त्री' आंदोलन में स्त्री मानस के विश्लेषण पर स्त्री अस्मिता व चेतन मन की स्थाई गठन पर आधारित है। इस बात की चर्चा करते हुए 'सिगमंड फ्रायड' ने कहा है कि "शिशन का बोध होते ही पुरुष मे प्राक एडीपीय व्यवस्था के अत्यधिक मातृमोह से सायास मुक्त होने की कठिन प्रक्रिया शुरू हो जाती है। जो उसमें सामाजिक अनुशासन प्रियता व निर्णात्मकता से भर देती है। स्त्रियों को इस प्रक्रिया से गुजरा नहीं पड़ता इसलिए वह कम अनुशासित, कम सामाजिकय कोमल व कमजोर रह जाती हैं।" किस प्रकार से स्त्री आंदोलन के संघर्षकर्ताओं व सुधारको ने स्त्री अस्मिता पर बल दिया और स्त्री स्थिति पर गंभीरता से विचार किया। फिर भी स्त्री आंदोलन में कुछ कमियां रही। जिसकी चर्चा करते हुए प्रमुख आलोचकों ने 'रोहिणी अग्रवाल' लिखती हैं कि "यह आंदोलन औसत भारतीय नारी का प्रतिनिधित्तव नहीं कर पाया, क्योंकि उपलब्धियों के नाम पर इन आंदोलनों ने जो कुछ सहजा, उसमें ग्रामीण स्त्रियां अछूती रही। शिक्षा सुविधा संपत्ति के अधिकार, विधवा पुनर्विवाह व विवाह विच्छेद। यह सब उपलब्धियां आज भी ग्रामीण स्त्रियों तक सार्थक रूप से नहीं पहुंच पा रही हैं दूसरे, इन स्त्री आंदोलन ने ग्रामीण स्त्रियों तक जाकर उन्हें जागृत करने का प्रयास भी नहीं किया।"

निष्कर्षः

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं तो स्त्री आंदोलन ने स्त्री की सामाजिक राजनीतिक आर्थिक क्षेत्र में भागीदारी पर बोल दिया है। स्त्री आंदोलन का कार्य संघर्ष समाज की जड़ताओ से थाय जो स्त्री को दोयम दर्जे में रेखांकित करती हैं क्योंकि स्त्री आंदोलन की लड़ाई व्यक्ति से नहीं समाज की कट्टरता से है स्त्री आंदोलन के संघर्ष रूप की परिचर्चा करते हुए प्रमुख लेखिका 'अनामिका' लिखती है कि "स्त्री आंदोलन के समर्थक स्त्रियां पुरुष नहीं बनना चाहती। यह स्त्रियां अपनी विशिष्टता, दैहिक, मानसिक और भाषिक संरचना पर गर्व नहीं करता। जो प्राकृतिक विशेषताएं हैं शर्मनाक वे नहीं, शर्मनाक आरोपित सामाजिक मानदंड है जो दोहरी और जिन पर पुनर्विचार होना चाहिए ताकि विकास के अवसर सब को सम्मान मिल सके।" क्योंकि स्त्रीवादी विमर्श स्त्री आंदोलन के जरिए पुरुष वर्चस्व का ध्वस्त नहीं बल्कि स्त्री पुरुष को मानवीय इकाई के रूप में रेखांकित करने की मांग करता है।

संदर्भ ग्रंथः

1 रोहिणी अग्रवाल, हिंदी उपन्यास का स्त्री पाठ, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण 2017, पृष्ठ 94

2 राधा कुमार, स्त्री संघर्ष का इतिहास, अनुवादक एवं संपादक राम शंकर सिंह, दिव्या दृष्टि वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2006, पृष्ठ 26

3 रोहिणी अग्रवाल, हिंदी उपन्यास में कामकाजी महिला, दिनमान प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1992, पृष्ठ 38

4 वही, पृष्ठ 43,45

5 वही, पृष्ठ 45

6 वही, पृष्ठ 49

7 महर्षि दयानंद सरस्वती, सत्यार्थ प्रकाश, आर्ट साहित्य प्रचार ट्रस्ट,

दिल्ली 2016, पृष्ठ 68

8 राधा कुमार, स्त्री संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन नई, दिल्ली 2017, पृष्ठ 23

9 रोहिणी अग्रवाल, साहित्यकार साहित्य भंडार, चाह चंद इलाहाबाद,2015 , पृष्ठ 19

10 कुसुम त्रिपाठी, औरत इतिहास रचा है तुमने, प्रकाशक कल्याणी शिक्षा, परिषद 33 20 21 जटवाड़ा दरियागंज नई दिल्ली, 110002 संस्करण 2021, पृष्ठ 112

11 वही, पृष्ठ 112

12 वही, पृष्ठ 113

13 वही, पृष्ठ 113

14 वही, पृष्ठ 158

15 रोहिणी अग्रवाल, हिंदी उपन्यास में कामकाजी महिला, दिनमान प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1992, पृष्ठ 27

16 वही, पृष्ठ 28

17 रोहिणी अग्रवाल, साहित्यकार भंडार चाह चंद इलाहाबाद, संस्करण 2015, पृष्ठ 16

18 अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, सारांश प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड पहला संस्करण 1999, पृष्ठ 44

19 वही, पृष्ठ 44

20 रोहिणी अग्रवाल, साहित्य की जमीन और स्त्री मन के उच्छवास, वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2014, पृष्ठ 23

21 वही, पृष्ठ 23

22 अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, सारांश प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड पहला संस्करण 1999, पृष्ठ 47

23 रोहिणी अग्रवाल, हिंदी उपन्यास में कामकाजी महिला, दिनमान प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1992, पृष्ठ 48

24 अनामिका, स्त्रीत्व का मानचित्र, सारांश प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड पहला संस्करण 1999, पृष्ठ 10

डॉ0 अनिल कुमार
हिंदी विभाग
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय,
रोहतक, हरियाणा।
anil22panwar@gmail.com

रश्मि (शोधार्थी)
हिंदी विभाग
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय,
रोहतक, हरियाणा।
rashmirashmi 9050@gmail.com

डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक के कहानी संग्रह 'मेरे संकल्प में मानवीय मूल्य'

31

सुनीता

सारांश

डॉ० निशंक ने अपने कथा साहित्य में पर्वतीय जनजीवन को सजीव रूप से चित्रित किया है। वास्तविकता यह है कि आजादी के साठ साल बीत जाने पर भी हमारे पर्वतीय राज्यों, आदिवासी क्षेत्रों तथा अभी तक इन इलाकों में रहने वाले करोड़ों लोग किस कठिनाईयों में जी रहे हैं इसकी ओर शासन सत्ता का ध्यान बहुत ही कम गया है या फिर गया ही नहीं हैं। इन्हीं संघर्षों से उभरे जमीनी लेखक डॉ. निशंक लोकतंत्र के सजग प्रहरी के रूप में शासन सत्ता से जुड़े रहे हैं। निशंक की कहानियां साहित्य और समाज के सम्बन्ध को पुष्ट करती हैं ओर समाज के हित में साहित्य की तरफ से जरूरी सवाल भी उठाती हैं। उन्होंने दलितों और वंचितों की पीड़ा को निकट से देखा और महसूस किया है। डॉ. निशंक की अनेक कहानियों के केंद्र में गांव है और वह गांव भी प्रायरू पहाड़ के हैं। जहां पर्वतीय जीवन के यथार्थ को अपने कथा साहित्य का आधार बनाने वाले डॉ. निशंक ने पर्वत पुत्रों की त्रासदी को जहां यथार्थ रूप में चित्रित किया है, वहीं उन्होंने पर्वतीय महिलाओं की जीवन तथा परिश्रम की गाथाओं को भी चित्रित किया है। साथ ही ये कहानियां उनके जीवन के लम्बे संघर्ष की साक्षी हैं और इनमें वही अनुभव अभिव्यक्त हुए हैं जो उन्होंने देखे भोगे हैं और जिनसे वे गुजरे हैं। डॉ. निशंक की कहानियों में अनुभव की प्रमाणिकता को ही रेखांकित करता अंग्रेजी के मशहूर लेखक रस्किन बॉन्ड का यह मंतव्य भी उल्लेखनीय है। निशंक ने अपना अधिकांश जीवन जनसाधारण के बीच गुजारा है उन्हें उनके सुख–दुख और उनकी समस्याओं की जानकारी है। जिन पहाड़ी में उनका जीवन गुजरा है और जिनसे उन्हें गहरा लगाव है, उन्हीं पहाड़ों की पृष्ठभूमि पर केंद्रित इन कहानियों में उनकी यही जानकारी फलीभूत हुई हैं। सीधी और सरल शैली में लिखी गई उनकी ये कहानियां अंग्रेजी में बखूबी अनूदित हुई।[1]

बीज शब्द : त्रासदी, शासन सत्ता, संवेदना

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के कहानी संग्रह 'मेरे संकल्प' में मानवीय मूल्य : आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य और समाज के संबंधों को लेकर अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में लिखा है कि – जब कि प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ–साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। आदि से अंत तक इन्हीं चित्तवृत्तियों की परंपरा को परखते हुए साहित्य परंपरा के साथ उनका सामंजस्य दिखाना ही साहित्य का इतिहास कहलाता है।[2]

पारिवारिक और सामाजिक परिवर्तन को प्रखर करती हुई निशंक की कहानियां अपने समय के सारभूत सत्य को उद्भाषित करती हैं। 'मेरे संकल्प' कहानी संग्रह की कहानियां आपसी पारिवारिक, प्रेम, स्त्री जागृति, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक परिस्थितियों का लेखा–जोखा प्रस्तुत करती हैं। जैसे की कहा गया है कि साहित्यकार सदैव ही अपने युग की प्रवृत्तियों से प्रभावित होता है। समाज में घटित घटनाओं को ही वह अपने साहित्य का विषय बनाता है। निशंक जी का पर्वतीय क्षेत्र से लगाव होने के कारण उनके साहित्य में पर्वतीय क्षेत्रों की कठिनाईयों का वर्णन मिलता है।

डॉ० रमेश पोखरियाल निशंक ने कहानी संग्रह मेरे संकल्प में पारिवारिक प्रेम को उद्घाटित किया है। उनकी दृष्टि इतनी व्यापक थी कि उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग व पहलू से जुड़ी समस्याओं को समाज के समक्ष रखा।

'मेरे संकल्प' कहानी संग्रह में संकलित कहानी 'भाग्य की लकीर' के द्वारा उन्होंने पिता (नन्दन सिंह) व पुत्र (मनवेन्द्र) के आपसी प्रेम का वर्णन किया है। कहानी में दर्शाया गया है कि पिता के कैंसर जैसे असाध्य रोग से पीड़ित होने की खबर से उसके पुत्र के पांव तले की जमीन खिसक गई थी। कहानी में एक–दूसरे के प्रति समर्पित भावना को दिखाया गया है।पिता की मरणासन्न देह को देखकर मनवेन्द्र उस पलंग पर बैठे–बैठे कहीं अतीत की स्मृतियों में डूब गया।

जब वह तीन साल का था, तो मां का साया सिर से उठ गया। लोगों ने पिता जी पर तरह–तरह के दबाव डाले कि अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है। शादी कर लो। तुम्हारी घर गृहस्थी भी संभल जाएगी।[3] कहानी में दर्शाया गया है कि पुत्र के जीवन–निर्माण के लिए पिता ने किस तरह सुखों की आहुति दे दी।

'परीक्षा' कहानी में शिक्षा के मूलय पर प्रकाश डाला गया है। किस प्रकार शिक्षा मानव जीवन की दिशा एवं धाराओं को बदल देती है। मानव सृष्टि की वह सर्वोत्तम कृति है जिसकी तुलना संसार के किसी भी जीव जन्तु, प्राणी से नही की जा सकती। कहानी में दर्शाया गया है कि प्रदीप पूरे इलाके का होनहार विद्यार्थी था। कहानी में बंसतू की कमजोर आर्थिक स्थिति को दिखाया गया है। किस प्रकार वह पुत्र (प्रदीप) के उज्जवल भविष्य के स्वपन संजोता है, लेकिन बीमारी के कारण वह इन्हें पूर्ण करने में असमर्थ हैं। परीक्षा कहानी में भुवन लाला को निःस्वार्थ समाज सेवी के रूप में दर्शाया गया है। भुवन लाल बसंतू

को लाचार भरी निगाहों को देखकर कहता है।

'बसंतू ! चिंता न कर, तेरा बेटा आज से मेरा बेटा है। मैं इसको उच्च शिक्षा के लिए इलाहाबाद भेजूंगा और तेरा व तेरे बेटे का संकल्प पूरा करके दिखाऊँगा। मुझ पर विश्वास रख बसंतू। यह सुन बसंतू की आँखें डबडबा गई और वह रूंधे हुए कंठ से बोला, लाला जी आप तो मेरे परमेश्वर निकले, मैं आपका यह अहसान कभी नहीं भूल पाऊंगा।'[4]

कहानी के अंत में प्रदीप के आई. ए. एस. बन जाने पर भुवन लाला सोचता रहा कि 'काश' आज बसंतू लाल जिंदा होता, तो उसे सीना ठोककर बताता कि देख बसन्तू ! मैंने अपना संकल्प पूरा कर दिया है।

वर्तमान समय में कहानी, राजनीति से काफी हद तक प्रभावित हैं। आज कहानी में पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक स्तरों पर फैली व्यापक अर्थहीनता को लेकर इतना कटु और आक्रामक स्वर उभरता जा रहा है।

'कहां हुई भूल' कहानी में पुत्र (आदित्य) के राजनीतिक मोह को दिखाया गया है। नेतृत्व करने के मोह में उसने पिता (नारायण) की पुरी जिंदगी की ईमानदारी को समाप्त कर दिया। इस प्रकार जीवन के बदलते मान–मूल्यों के संदर्भ में हमारी हिन्दी कहानी से युग सत्य को किस तरह व्यक्त किया है। मूल्यों को किस तरह आत्मसात किया है यह विचारणीय हैं इसके लिए कथाकारों के मन में कम से कम वे समस्याएं अवश्य उठनी चाहिए, जो आने वाले कल का आभास दे सकें।

संसार में सदैव नेकी का फल नेकी ओर बदी का फल बदी नहीं होता बल्कि इसके विपरीत भी हुआ करता है। कहां हुई भूल कहानी में नारायण सिंह नामक पात्र के माध्यम से दर्शया गया है कि कितनी मुसीबतों का सामना करके वह अपने जीवन को पटरी पर लेकर आया था। कहानी के माध्यम से नारायण सिंह की आर्थिक परेशानियों को प्रकट किया गया है।

माँ ! उसने मेरी कमीज फाड़ी, उसको तो किसी ने कुछ नहीं कहा और सब मुझे ही क्यों डांट रहे हैं?

बेटा, वे बड़े लोग हैं। तेरे पिता और भाई उनके खेतों में मजदूरी करते हैं, हल चलाते हैं, कभी विपत्ति पड़े, तो दो पैसा उधार भी मिल जाता है। हम उनकी बराबरी नहीं कर सकते। मां ने विवशता प्रकट करते हुए नारायण को सीने से लगा लिया।

'कहां हुई भूल' कहानी में राजनीतिक क्षेत्र में आने के बाद नारायण की स्वच्छ छवि प्रकट की गई हैं। उन्होंने परिवार के सदस्यों को राजनीति से दूर ही रखा, ताकि उनके चरित्र पर भाई–भतीजावाद का आरोप न लग सके। लेकिन कहानी में नारायण सिंह को साफ छवि व उनके पुत्र के व्यवहार में निरंकुशता दिखाई गई है.

कुछ देर बाद घर का नौकर जो अभी बाजार से लौटा था, कमला के पास आया और कहने लगा, मेम साहब ! धर्मवीर को किसी ने गोली मार दी और घटनास्थल पर ही उनकी मृत्यु हो गई। लोग कह रहे हैं कि धर्मवीर जी का खून भैया जी ने किया। उसने घबराते हुए ही बात पुरी की।

डॉ० निशंक की ऐसी कई कहानियां हैं जो जाने अनजाने प्रेमचंद के आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से प्रेरित– अनुप्राणित दिखाई देती है। उनकी संकलप कहानी में बिल्कुल यही आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है जो कथा नायिका कुंती के लिए सुखद आश्चर्य बन जाता है, जब सामाजिक कार्यों और तज्जन्यता ने शराब जैसी सामाजिक बुराई को समाप्त करवा दिया।

'मेरे संकल्प' कथा संग्रह में संकलित 'संकल्प' कहानी में कुंती अपने साथ हुए अत्याचार से चुप नहीं बैठती। वह कसमसा रही है अपने को सामने लाने के लिए या कहें कि अपने को प्रभावशाली रूप में सामने लाने लिए वह अपने आसपास के परिवेश को जानना चाहती हैं, समझना चाहती हैं। इतिहास के लम्बे समय में नारियों की स्थिति में कई उतार–चढ़ाव आए इस लम्बे इतिहास का निचोड़ यही रहा है कि अधिकांश समय में नारियों की स्थिति अन्धकारमय रही। वह शोषण का शिकार रही और उनकी स्थिति पुरुष के मुकाबले बदत्तर रही पर वह चुप नहीं रही। कहानी में स्त्री पात्र कुंती के माध्यम से दृढ़ आत्म विश्वास एवं इच्छा शक्ति का उदाहरण समाज के सम्मुख प्रदर्शित किया है।

कहानी में जब मनबर को पुलिस पकड़ कर ले गई, तो उसने सरेआम कुंती को जलील करना चाहा, लेकिन कुंती के दृढ़ आत्म विश्वास एवं इच्छा शक्ति के सामने उसकी एक न चली। उसकी हरकतों को देखकर कुंती कह उठी, तुझे तो भगवान भी कभी माफ नहीं करेगा। तूने सारे इलाके के लोगों को जहर बांट कर कई हंसते–खेलते घरों को उजाड़ दिया पापी !

तुझे नर्क में भी जगह नसीब न होगी।

कुंती के मन का जैसे गुबार फूट चुका था।

कहानी में दिखाया गया है कि मनबर ने गांव में कुंती के खिलाफ अनर्गल दुष्प्रचार करना शुरू कर दिया। कुंती जैसी महिला की भावनाओं को ठेस पहुंचाने एवं उसे हतोत्साहित करने के लिए उन्होंने उसी रास्ते को चुना, जो सदियों से महिलाओं के विरुद्ध पुरुष प्रधान समाज अपनाता रहा है, किन्तु कुंती साहसी युवती के रूप में कहानी में दिखाई गई है।

गांवों में 'नशा उन्मूलन' के संकल्प की चमक कुंती के चेहरे पर दमक रही थी। वर्तमान समय में कहानी, राजनीति से काफी हद तक प्रभावित है। आज कहानी में पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक स्तरों पर फैली व्यापक अर्थहीनता को लेकर इतना कटु और आक्रामक स्वर उभरता जा रहा है, यह मात्र संयोग ही नहीं हैं, यह केवल अपनी–अपनी व्यवस्था राजनीतिक मूल्यों के लिए लड़ाई है। इस

व्यवस्था से किसी भी साधारण आदमी का कोई मतलब नहीं हैं और इसी व्यवस्था के खिलाफ इन लेखकों की लड़ाई का अर्थ हैं स्वयं गहरी व्यवस्था जुड़ कर राजनेता लेखक नेता बन जाना और इसकी नींव खोदकर अपने लिए एक नयी व्यवस्था का निर्माण करना, जिसमें केवल यहीं ठंडी सांस ले सकें। नहीं तो फिर ये गोष्ठियां और निहायत पारिवारिक चित्रों के साथ व्यवस्थित पत्रों में छपकर अपने मुखौटे दिखाना क्या अर्थ रखता है। इससे किसी साधारण आदमी का दूर होगा, कौन से मानवीय मूल्य पोषक होंगे। मात्र इस तरह की कहानियां लिखकर क्या कोई क्रांति या उथल–पुथल नहीं ला सकते। बल्कि व्यापक लड़ाई से अपने आपको काटकर व्यक्तिगत सपनों को सच करने के पीछे यह इनकी लड़ाई व्यापक अवश्य है। इन्हीं सामाजिक मूल्यों के यथार्थ को कहानीकार डॉ. निशंक ने अपने कथा साहित्य का आधार बनाया है। कथा संग्रह मेरे संकल्प में संकलित छलावा कहानी में मवलेश नामक पात्र के माध्यम से राजनीति का घिनौना रूप प्रकट किया गया है। किस प्रकार अखलेश गांव के लोगों की ईमानदारी व सच्चाई के साथ खिलवाड़ करता है।

विधानसभा चुनावों में भी अखलेश का जादू युवाओं के सिर चढ़कर बोल रहा था। उसने पैसा और शराब पानी की तरह बहाकर लोकतंत्र की आत्मा को भी छिन्न–भिन्न कर दिया। आखिरकार शराब और रुपया नैतिक मूल्यों व ईमानदार प्रत्याशियों पर भारी पड़ गया और बड़ेथी का चकड़ैत मवलेश प्रसाद चुनाव जीतकर विधायक बन गया। लेकिन जैसा कि स्पष्ट हैं उनकी कहानियों के पहाड़ी गांवों में चित्रित जीवन एक पर्यटक की भांति देखे हुए जीवन का चित्रण मात्र नहीं हैं बल्कि यह उनका अपना भोगा हुआ जीवन का यथार्थ ही है जो उनकी कहानियों में पहाड़ी ग्राम्य जीवन के चित्रण के रूप में सामने आता है। तभी तो जिस 'आदमखोरश कहानी की शुरूआत प्रकृति के खूबसूरत चित्रण के साथ होती हैं, उसके अंत तक आते–आते लेखक कहानी के एक पात्र माध्यम से मानों स्वयं बोल रहा है।

'आखिर एक जंगली जानवर की भूख की हवस के लिए गांव की प्रतिभाएं ऐसे ही स्वाहा हो जाएंगी? आज जगत सिंह के बेटे को उठा ले गया, कल न जाने किस की शामत हो? यह सवाल भी लोगों को बेचैन कर रहा था। वैसे अब लोगों को उम्मीद कम थी कि किशोर अब तक जिंदा होगा। सुबह होते ही लोग फिर जंगल की ओर गये, तो गांव से आधा किलोमीटर दूर चौंरी के गधेरे में एक झाड़ी पर किशोर का क्षत–विक्षत शव मिल गया।[6]

आखिर वही हुआ, जिसकी आशंका थी, गांव में मातम छा गया।

मूलभूत सुविधाओं से वंचित उत्तराखंड वासियों के संघर्ष की मार्मिक कहानी है यह। उत्तराखंड के सुदूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्र में आज भी लोग भय की काली छाया से उबर नहीं पा रहे हैं।

जीवन के आरोह अवरोह के क्रम का, प्रतिकूल अनुकूल परिस्थितियों का, नकारात्मक ओर सकारात्मक मानवीय मानसिकता का, तनाव अलगाव से उपजे संत्राश का, निराशा, कुंठा जैसे विसंगतियों का और अन्य बहुत सी सामाजिक समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण डॉ० निशंक के कथा संग्रह 'मेरे संकलप' में मिलता है।

इनके अनुसार समाज सामाजिक संबंधों की एक अमूर्त व्यवस्था है, इसी व्यवस्था में एकवर्ग विशेष के अंतर्गत लोगों के रहने सहने, उनकी संस्कृति, उनके जीवन मूल्य उनकी आस्था–निजता उनकी सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक अपेक्षाएं, महत्त्वकांक्षाएं आशंकाएं सभी उसमें सम्मिलित होती हैं।

कथा संग्रह में संकलित कहानी आश्रय के द्वारा डॉ. निशंक ने समाज में अनाथों की स्थिति पर विचार किया है। कहानी का आरंभ मार्मिक ढंग से हुआ है।

इस दुनिया में न जाने कितने परिवार होंगे, जिन्हें रात को रहने के लिए छत एवं खाने के लिए रोटी नसीब नहीं हो पाती। सड़कों, चौराहों व पगडंडियों पर कटोरा लेकर भीख माँगते बच्चों को देखकर आखिर किसी का दिल क्यों नहीं पसीजता ? सीना क्यों नहीं फटता ? आखिर इन मासूमों का क्या दोष ? जो भगवान इन्हें इतनी बड़ी सजा दे रहा है?[7]

रूपेश मन ही मन सोचता है।

आश्रय कहानी में दर्शाया है, कोई कैसे कुछ ही घंटों पूर्व जन्में नवजात शिशु को महिला अस्पताल के पिछवाड़े में छोड़कर चला जाता है। समाज की निंदनीय घटना को कहानी के माध्यम से दिखाया गया है।

गरीब व समाज द्वारा ठुकरायें बच्चों और महिलाओं को आश्रय देने वाले रूपेश को झूठे आरोपों में फंसाकर उसके खिलाफ षडयंत्र किया जाता है। मेयर के हाथों बिका पुलिस प्रशासन रूपेश को गिरफ्तार कर लेता

कहानी के अंत में रूपेश जेल से छूट जाता है। रूपेश को 'एक महानायक की रिहाई' जैसे अलंकरणों से नवाजकर आश्रम में चल रही अनेक कल्याणकारी गतिविधियों को अपनी लीड खबर बनाया। लोगों के प्यार व सम्मान से अभिभूत रूपेश समझ चुका था कि जन–बल के आगे धन–बल न कहीं टिक सका है और न ही कहीं टिक पायेगा। 'कीमत' कहानी का आरंभ बहुत मार्मिक ढंग से होता हैः–

अरे कोई इसको रूलाने की कोशिश तो करो। देखो तो ! कैसे पत्थर हो गई है। अगर इसे कुछ हो गया तो इसके बच्चों का क्या होगा ?[8]

बिमला काकी ये कहते हुए कमली के बगल में बैठ गई

उपर्युक्त कहानी में यौवन अवस्था में ही कमली के विधवा हो जाना व पैसे की कमी के कारण आर्थिक विवशता को दर्शाया गया है।

उपसंहार

कथा संग्रह मेरे संकल्प में सामाजिक मूल्यों को एक विशिष्ट दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया गया है। अधिकांश कहानियों में समाज और व्यवस्था के प्रति तीव्र प्रतिक्रिया मिलती हैं। हम इन्हें सम्बन्धों के बदलाव की नहीं, मानवीय मूल्यों के अन्तर्विरोधों की कहानियां कह सकते हैं। इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कटघरा चाहे समाज का हो, सम्बन्धों का हो अथवा व्यवस्था का, डॉ. निशंक के पात्र उसमें हताश, निर्जीव या मुंह लटकाये शिथिल नहीं पड़े हुए हैं, अपितु उस कटघरे के खिलाफ एक अनवरत संघर्ष में जुटे हुए हैं। तथापि यह सत्य है कि डॉ. निशंक की रचनाएँ एक ऐसे दस्तावेज के रूप में हैं, जिसका समग्र अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि उन्होंने जीवन को सिर्फ देखा नहीं, बल्कि उसे भोगा भी हैं।तथापि यह सत्य है कि कहानीकार तत्कालीन युग और समाज के मूल्यों को अपनाता है, किन्तु वह नवीन मूल्यों की सृष्टि के माध्यम से समाज को गति भी प्रदान करता है, प्रत्येक युग के जीवन–दर्शन और मूल्यों में अन्तर भी सम्भव है। समाज का इस्ट मूल्यों की स्थापना करना है, मूल्य परिवर्तनशील है।

वस्तुतः मूल्य संस्कृति के अंग हैं और स्वयं संस्कृति भी परम मूल्य है। निशंक की कहानियों में संस्कृति की सुरक्षा के साथ – साथ समकालीन युग के व्याप्त मूल्यों के अनुशीलन का यथादृशक्ति प्रयास किया है। उपर्युक्त कथा संग्रह की कहानियों में डॉ० निशंक ने उत्तराखंड के पहाड़ी जीवन की कठिनाईयों का वर्णन किया है। समाज में व्याप्त पारिवारिक सम्बन्ध, प्रेम की भावना, सामाजिक सेवा की भावना, स्त्री जाति का अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना, आर्थिक विवशता आदि सामाजिक मूल्यों का वर्णन अपने कथा संग्रह मेरे संकल्प में दर्शाया है।

अंत में कहा जा सकता है कि विवेचन के बाद डॉ. निशंक की कहानियां कसौटी पर खरी उतरती हैं। उन्होंने अपनी कहानियों को लंबी और उबाऊ होने से बचाया है और उनकी कहानियों को पढ़ना आम पाठक के लिए भी एक आनंदप्रद अनुभव है।

संदर्भ सूची :

1. Dr. Ramesh Pokhriyal Nishank, The Crowd Bears Witness (A collection of Short Stories), Bishen Singh Mahender Pal Singh, Dehradun, 2008 Printed
2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, शहिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत् 2035, संशेधित और प्रवर्धित 18वां पुनर्मुदगण
3. डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', मेरे संकल्प, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 9
4. डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', मेरे संकल्प, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 20
5. डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', मेरे संकल्प, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 53
6. डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', मेरे संकल्प, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 65
7. डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', मेरे संकल्प, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 68
8. डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', मेरे संकल्प, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ. 41

सुनीता

सहायक आचार्य

राजकीय महिला महाविद्यालय, हिसार

दूरभाष न0 : 8813082856

सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया : एक महान योद्धा और कुशल नेतृत्वशील व्यक्तित्व

32

डॉ0 अजय कुमार

सारांश

सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया का व्यक्तित्व ओर विचार, संस्कारों व पारिवारिक वातावरण, भारतीय दर्शन के गूढ़ अध्ययन तथा युग–प्रवर्तक महापुरुशों के प्रेरणास्पद आदर्शों से प्रभावित व निर्धारित हुए थे। सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया का जन्म 3 मई 1718 को लाहौर के समीप स्थित आहलु गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम बदर सिंह कलाल तथा माता का नाम जीवन कौर था।

सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया बाल्यकाल से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी रहे। चारित्रिक दृढ़ता, देशभक्ति और आदर्शों के लिए कश्ट सहने के तत्परता जस्सा सिंह को संस्कार से मिली थी। सरदार जस्सा सिंह पंजाब के विख्यात सिक्ख समुदाय से थे। जिसमें निश्ठावान और सार्वजानिक जीवन के लिए समर्पित लोगों की स्थापित पंरपरा थी।

सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया का बचपन जिस पारिवारिक वातावरण में व्यतीत हुआ उसमें पवित्रता, विद्वता और धार्मिक निश्ठा पूरी तरह व्याप्त थे। भारतीय धर्म और दर्शन में गहरी अर्न्तदृश्टि जस्सा सिंह को विरासत में मिली और बचपन में पारिवारिक जीवन के कठोर और धर्मनिश्ठ अनुशासन में वह भली–भांति पुश्पित पल्लवित हुई। जब वे मात्र पांच वर्श के थे तब उनके पिता का देहांत हो गया था। उनकी माता जीवन कौर उन्हें अपने भाई सरदार बाघ सिंह जी के सहयोग से गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज की आदरणीया धर्मपत्नी माता सुंदरी जी का आशीर्वाद दिलाने के लिए दिल्ली ले गई। माता सुंदरी जी ने बालक जस्सा सिंह को विद्यार्जन एवम् अस्त्र–शस्त्र में प्रवीणता के गुर सिखाएं। श्रद्धालु सिक्ख की भांति जस्सा सिंह ने संगीत का ज्ञानार्जन भी किया तथा वे नित्यप्रति गुरु ग्रंथ साहिब और आसा की बार का पाठ मधुर वाणी से करने लगे। परिस्थिति अनुरुप उन्होंने गुरुमुखी के साथ अरबी तथा फारसी भाशाओं का भी ज्ञान प्राप्त किया। माता सुंदरी जी के पास रहने से उन्हें सिक्ख ग्रंथ के प्रमुख व्यक्तियों के संर्पक में आने तथा पंथ के सिद्धांतों को गहराई से समझने का अवसर मिला। तदुपरांत 17 वर्श की आयु में उनके मामा सरदार बाघसिंह ने उन्हें दत्तक पुत्र की भांति अपने पास पंजाब ले गए। उस समय माता सुंदरी ने उन्हें विदाई स्वरुप भेंट में अपने कर–कमलों से वस्त्र, ढाल, तलवार, धनुश तथा बाणों से भरा तरकश प्रदान कर आशीर्वाद दिया।

सरदार बाघ सिंह अहलुवालिया ने उन्हें अपना दत्तक पुत्र बना लिया। समकालीन माहौल में मुगल शासक हिन्दू प्रजा, विशेशतः सिक्खों पर अमानुशिक अत्याचार कर रहे थे तो दूसरी तरफ विदेशी आक्रान्ता बार–बार आकर लूटमार कर रहे थे। सिक्ख वीर जिन सेनानायकों के नेतृत्व में देश और धर्म की रक्षा कर रहे थे उनके सर्वोच्च सेनापति नवाब कपूरसिंह फैजुलपुरिया थे। सरदार जस्सा सिंह जी के मामा और माताजी ने उन्हें नवाब कपूर सिंह की सेवा में छोड़ दिया। नवाब कपूर सिंह जी ने जस्सा सिंह जी को अमृत छका कर दीक्षा दी। नवाब कपूर सिंह के नेतृत्व में सिक्खों के अनेक युद्ध लड़े जिसमें सरदार जस्सा सिंह ने अनवरत अपनी शूरवीरता एवं साहस का प्रदर्शन दिया।

नादिरशाह दुर्रानी ने जनवरी 1739 में भारत पर आक्रमण बोल दिया। लाहौर को लूटने के बाद 9 मार्च 1739 को वह दिल्ली पहुँचा जहाँ भारतीयों के पवित्र त्यौहार होली के दिन 11 मार्च 1939 को कत्ले आम का हुक्म दिया। उसने मौहम्मद शाह को राजसिंहासन पर आसीन किया। वहाँ से लौटते हुए उसने सियालकोट को लूटा। सन् 1740 में सरदार कपूर सिंह और जस्सा सिंह अहलुवालिया की टुकड़ियों ने उस पर बार–बार आक्रमण करके आगे बढ़ने से रोकने का अविचल प्रयास किया। तथा साथ ही लूटे गए सामान को भी अपने कब्जे में ले लिया।

सन् 1747 में अमृतसर पर सलाबत खां का शासन था। उसने पवित्र सरोवर में स्नान करने पर पाबन्दी लगाई हुई थी। सिक्खों ने अमृतसर पर आक्रमण किया। सरदार जस्सा सिंह अहलुवालिया ने सलावत खां को और सरदार कपूर सिंह ने सलावत खां के भतीजे बजावत खां को मार गिराया। सिक्खों ने 20 मार्च 1749 को अपने पवित्र तीर्थ स्थान अमृतसर में बैसाखी का पावन पर्व भी मनाया। उस पवित्र अवसर पर नवाब कपूर सिंह जी ने सिक्ख संगत से अनुरोध किया कि उन्हें दल खालसा अर्थात् सिक्खों के सर्वोच्च सैनिक संगठन के सर्वोच्च सेनापति के पद से मुक्त करके सरदार जस्सा सिंह जी अहलुवालिया को दल खालसा का सर्वोच्च सेनापति बना दिया जाए। तदनुसार सरदार जस्सा सिंह जी को दल खालसा के सर्वोच्च सेनापति के रूप में नियुक्त किया गया।

सन् 1749 में उन्होंने मुल्तान के गवर्नर निवाज खान को मार कर दीवान कूडामल की सहायता की। नवाब कूपर सिंह की सभी 12 मिसलों के सर्वोच्च नेता थे। सन् 1753 उनका देहान्त होने पर सरदार जस्सा सिंह जी अहलुवालिया को सिक्ख मिसलों के सर्वोच्च सेनापति

के साथ–साथ सर्वोच्च नेता के रूप में भी घोशित किया गया। उन्हें सुल्तान–उल–कौम नवाब सरदार जस्सा सिंह अहलुवालिया के नाम से सर्वत्र सम्मान मिला। उन्होंने निरंतर 30 वर्शों तक अपने शौर्य, पराक्रम एवं दूरदर्शिता का परिचय दिया तथा सर्वोच्च नायक रहकर देश और धर्म की रक्षा की।

अप्रैल 1761 में अहमदशाह अब्दाली ने दिल्ली एवं उसके आसपास के इलाके में लूटमार की। सन् 1762 में मलेरकोटला के समीप सरदार जस्सा सिंह अहलुवालिया ने नेतृत्व में सिक्खों तथा अब्दाली की सेनाओं के बीच भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में सरदार जस्सा सिंह अहलुवालिया ने अपने शरीर पर 22 घाव के बाद भी वीरता का परिचय दिया। तथा अहमदशाह अब्दाली के चंगुल से बन्दी हिन्दू महिलाओं और बच्चों को मुक्त कराने के लिए सदैव याद रखा जाएगा। उस समय अहमद शाह अब्दाली लगभग 2200 महिलाओं को बन्दी बनाकर अपने साथ अफगानिस्तान ले जा रहा था। इस बात से प्रसन्न होकर उन्हें 'बन्दी छोड़' (मुक्ति दिलाने वाले) के नाम से प्रसिद्धि मिली।

सरदार जस्सा सिंह न केवल एक महान योद्धा थे अपितु सिक्खों के आध्यात्मिक नेता भी थे। अब्दाली ने अमृतसर को रौंदकर दरबार साहिब की नींवो तक ध्वस्त कर दिया। सरदार जस्सा सिंह ने दरबार साहिब (वर्तमान स्वर्ण मन्दिर) का पुनर्निर्माण करवाया उनके पवित्र सरोवर का जीर्णोद्वार करवाया। इसके लिए उन्होंने स्वयं नौ लाख रुपए दान में दिए। उनके इस महान कार्य से प्रसन्न होकर उन्हें 'गुरु की चादर' (सिक्ख धर्म रक्षक) की विख्याति प्राप्त हुई।

14 जनवरी, 1764 को अब्दाली के साथ भयंकर युद्ध किया। इस युद्ध में सरहिन्द के गवर्नर जाइन खान सरदार जस्सा सिंह की बन्दूक की गोली से मारा गया।

10 अप्रैल, 1765 को बैसाखी के दिन सिक्खों ने 'गुरमत' (सर्वसम्मत प्रस्ताव) द्वारा निर्णय किया कि वे लाहौर पर पंथ का झण्डा फहराएंगे। 17 अप्रैल, 1765 को लाहौर पर कब्जा कर लिया। मार्च 1783 में सिक्ख सेनाओं ने दिल्ली के लाल किले पर भी अपना झण्डा फहराया।

निष्कर्षः

सरदार जस्सा सिंह कभी राजशाही शौक व पद के लालची नहीं थे। न ही अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने व्यास नदी के तट पर फतेहाबाद में एक सैनिक चौकी स्थापित करके उसे अपना केन्द्र बनाया। इसके बाद में कपूरथला को अपना मुख्यालय बनाया। 1783 में सरदार जस्सा सिंह अहलुवालिया की मृत्यु हो गई। महान पराक्रमी, शूरवीर योद्धा का भारतीय इतिहास में नाम स्वर्णिम अक्षरों में लिखा गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. संधु, जसप्रीत कौर–सिक्ख एथोज़ः एटींथ सेंचूरी परस्पेक्टीव विजन एंड वेंचर पटियाला, प्रथम प्रकाशन, 2000.
2. छाबड़ा, जी.एस– एडवांस स्टडी इन दि हिस्ट्री ऑफ दी पंजाब, वाल्यूम 1, न्यू एकेडमी पब्लिशिंग हाउस, जलंधर1971.
3. सिंह गंडा, सिंह तेजा– ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ द सिक्ख वाल्यूम 1 (1469–1765), ओरियंट लॉगमेंस, बोम्बे, 1950.
4. सिक्ख, एन.के– राइज़ ऑफ द सिक्ख पॉवर ए. मुखर्जी एंड कंपनी, कोलकाता, 1960.
5. साहनी रुचीराम–स्ट्रगल फॉर रिफोर्मस इन सिक्ख श्रीनेश, एस.जी.पी.सी. अमृतसर 1964.
6. आहलूवालिया सभा– सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया संक्षिप्त जीवन वृतांत करनाल, 2016.

डॉ0 अजय कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
(राजनीतिक विज्ञान विभाग)
गुरु नानक खालसा कॉलेज, करनाल
(हरियाणा)

Contribution of Education in Human and Civil Rights

33

Dr. Luxmi Mishra

Abstract:

Every person has his own rights. These rights are necessary for all the people and are available to all the citizens through the Constitution.

India is a democratic country. Here all the citizens live freely and without any discrimination. Every person has many responsibilities towards his country and being a citizen of the country, he also gets rights. Rights and responsibilities are complementary to each other. Both sides go together like sides of a coin. When human beings have got rights for their rights, then they also have some responsibilities towards the country.

Civil rights are those rights that a human gets for being a citizen of that country or nation. Being acitizen means that you are a resident of any state or city in the country.

Human rights are those rights that a person gets by birth as a human being.

Key Words:

Human Rights, Civil Rights, Fundamental Rights, Human Rights Court, Education Rights.

Introduction:

Human rights refers to the rights that every human being gets due to being human, in fact, by exercising human rights, human beings are able to develop their personality completely by fulfilling their physical, social and other useful needs. | The rules which are received from the society, state and country for the progress of man are called rights. Human rights are equally available to men, women, children and old people.

Human rights are related to the life of every person, his liberty and his dignity. Through the Indian Constitution, human rights are available to every person without any discrimination. The age of a person, his native place of origin, his language and his religion, etc. have no effect on human rights. Human rights are always equal for all. Therefore it is the duty of human beings to fulfil their obligations towards the country. Both human rights and civil rights are very important for human beings. If human rights and civil rights are not there, then the condition of man will be in the same way as it is very important for human beings to breathe, in the same way, it is very important to have human rights. National Human Rights Day is celebrated in India every year on 10 December to protect human rights.

Human Rights:

By getting human rights, a person gets mental and physical satisfaction. And from the point of view of society, he gets the opportunity to live a life of freedom. International laws work to protect human rights.

It is a matter of pride for every creature to be born in human form.

It is his right as a human being to live his whole life with dignity and freedom. Some rights are provided by nature as soon as they are born and some rights are obtained through society, country and government.

Human rights are classified into the following categories -

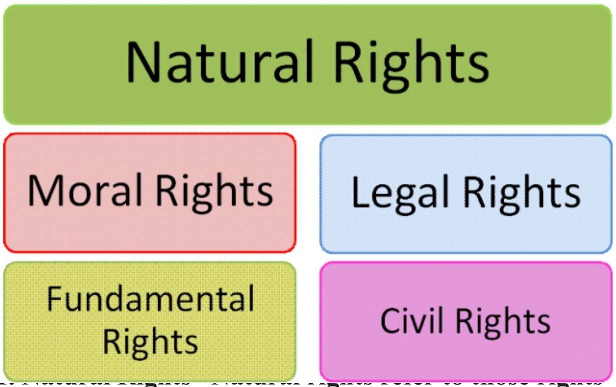

that a human being gets automatically after birth. These rights are also independent of the government and law. Through natural rights, a human being gets the right to freedom, equality, and security.

Human beings get some rights from nature only after their birth. Being acquired by nature, these rights are equal to human nature. For example- The right of human beings to survive, the right to travel freely.

Natural rights are of the following types:

a) The right to life

b) The right to liberty

c) The right to acquire and hold property

d) The right to equality

2. **Moral Rights-** The root of moral rights is the conscience of the family and society. Moral rights are those rights that are directly related to the moral behaviour of human beings. Moral rights are not protected by the country and the state.Moral right is recognized by the society.This right is dependent on individual will. Moral rights are based on fundamental truths.

Moral rights do not refer to the system of governance, but they refer to morality, justice, and human rights. Moral rights are related to social good and justice.

3. **Legal Rights –** Legal rights are those rights, that are looked after by the state through law, and violation of these rules is an offense punishable by the state. Legal rights are enforced through the courts. With the development of social life, legal rights have increased. Legal rights are protected in many ways in India. Through the Constitution, decisions taken by the Supreme Court and High Court, etc.There are three types of legal rights-

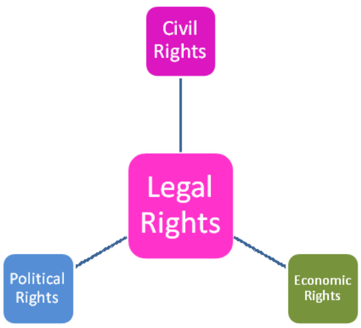

4. Civil Rights: Civil rights and political rights are those rights that every person gets by being a citizen of the state. Through these rights, a person can take part in the administration of the country both directly and indirectly. Both civil and political rights are of utmost importance in a democratic organization. Civil Rights refer to the protection of individual power and the right to be enjoyed in particular. These rights have been provided to all citizens through law.The citizen has the right that he can choose any government by using his vote. Voter ID card only shows that we are citizens of the country and which village or city we are living in. Voting is the main right of the individual. The government has fixed the age at 18 years. Not having the right to vote at the age of 18 years.

The citizen also has the right that he can demand a good system, health- related service, legal system, and justice and can get them as a citizen of the country.

5. Fundamental Rights: Earlier there were 7 Fundamental Rights in the Indian Constitution. The Constitution was amended in 1976, and by amending the 44th Constitution, the property right was removed from the classification of Fundamental Rights. Therefore in modern times there are total six fundamental rights. There are now six fundamental rights in the Indian Constitution. which is of the following type

Right to Equality (Articles 14 to 18)

Right to Freedom (Articles 19 to 22)

Right against exploitation (Articles 23 to 24)

Right to Freedom of Religion (Articles 25 to 28)

Cultural and Educational Rights (Articles 29 to 30)

Right to constitutional remedies (Articles 32)

Human beings have great importance in democracy. The scope of freedom is clear from the description of Fundamental Rights in the Indian Constitution. These rights are used to develop the personality of man.Right to education is most important for human beings.Education has an important place in modern times. It is only through the medium that man gets wisdom and knowledge. He himself is able to decide between true and false. Education is very important for all. All children have equal right

to education; there is no discrimination in it. This right is also found in some international conventions as a human right. Under the Right to Education Act 2009, an act of compulsory and free education was made for the children of 6-14 years in the country of India.Right to free and compulsory education for every child of 6-14 yearsmentioned as a fundamental right.

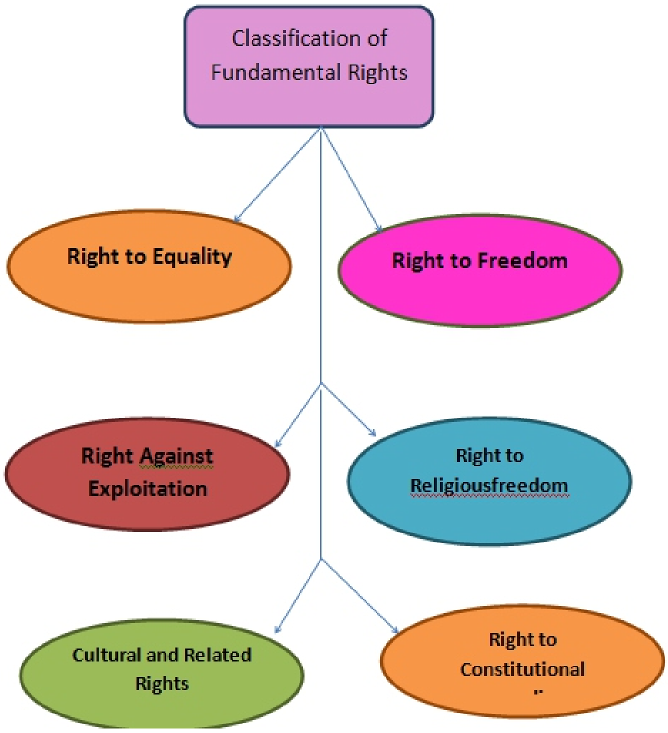

6. Right to Education: The Right to Education Act was passed in the Indian Parliament on 4 August 2009. Under this Act, a rule was passed to provide free and compulsory education to both boys and girls.

Under Article 21A of our Constitution, free and compulsory education has been implemented for children between the ages of six and fourteen. The objective of the Right to Education Act is to provide free and compulsory education to every child from class one to class eight without any fees. Through this rule, boys and girls get the right to education, which is a fundamental right for them.

Main laws:Provision of compulsory and free education:

Both boys and girls between the ages of 6 and 14 should receive compulsory and free education. No fee or any expense of any kind will be taken from any child in government schools and government-aided schools.

25% Reservation in Private Schools:25% of seats in private schools are reserved for poor children. Poor children have the right to these 25% seats.So that they also get the right to quality education.

Provision of Education for Children with Special Needs:It is necessary to have provision for education for children with special needs. It is the right to education that special children should also get quality education.

Conclusion: Human Rights Day is celebrated every year on 10th December. The Universal Declaration of Human Rights was declared by the United Nations General Assembly on 10 December 1948. The human rights situation in India has become complex in a way as India's vast size, diverse, secular, and democratic republic.

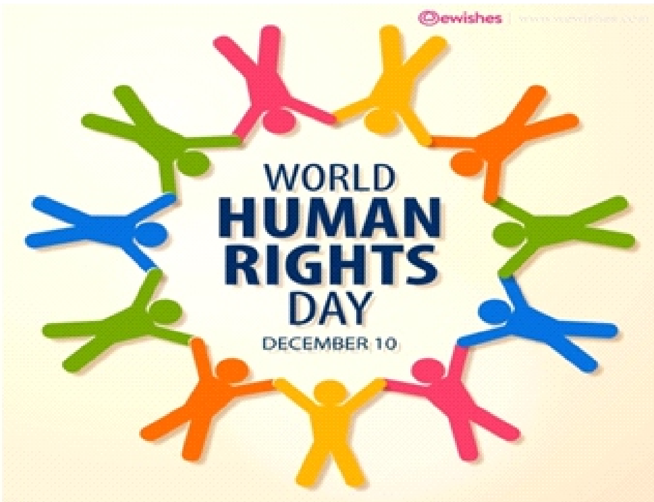

The Indian Constitution has provided fundamental rights to everyone, including freedom of culture, religion, and dress, etc. Because in our country of India, people of different castes, religions, and cultures, and customs live together. No one's fundamental rights are violated, but all those people have human rights and fundamental rights. Indian people have complete freedom that they can adopt their religion and their culture.Through human rights, the citizen gets fundamental rights and freedoms. The Right to Education Act ensures that no child between the ages of 6 and 14 is deprived of education,

irrespective of his caste or religion. The aim of this Act is to provide quality education to all children so that they can earn a living and take their nation and society to greater heights.

Through these rights enshrined in the Indian Constitution, citizens get protection and they can speak for their rights, and get their rights. But the citizens who misuse these rights and violate these rules are also punished through the law.

References:

- Jain, B, P (2012)mulya paryavaran tatha manav adhikaron ki shiksha, Agarwal publication, Agra.
- Pandey,R(2012) manav adhikar aur mulya shikshan , Agarwal publication, Agra.
- Mishra,K,(2013)manav adhikar aur mulya shikshan , Agarwal publication, Agra.
- Narendra,S,I, Lehari K A(2017)Human Rights and Value Education,Twentyfirst Century Publications Patiala.
- Ruhela,p,S(2012)Teacher and Education in Emarging Indian Society, Agarwal publication, Agra.
- https://www.scotbuzz.org/2017/05/maulik-adhikar-ke-prakar.html
- https://en.wikipedia.org/wiki/Right_to_education#:~:text=The%20right%20to%20education%20is%20reflected%20in%20article,at%20least%20in%20the%20elementary%20and%20fundamental%20stages.
- https://www.drishtiias.com/daily-updates/daily-news-analysis/human-rights-day-2
- https://education.rajasthan.gov.in/

Dr.Luxmi Mishra
Department of Education
Assistant Professor
IFTM University,
Moradabad(UP) 244001
9837769309 / 9027273494
lmishraiftmu0918@gmail.com

34

An Impact of Higher Education Institutions in boosting Entrepreneurship Ecosystem

Hansa Verma, Dr. Sarina Asif

Abstract:

Higher Education Institutions (HEIs) form an Ecosystem where Entrepreneurship Education is hosted. Industry-Academia interaction being an essential part of this ecosystem acts as an important function of these institutions. After the introduction of the New Education Policy (NEP)-2020 in India, Higher Education Institutions have become more responsible to redefine their role in the country's economic development. Higher Education Institutions(HEIs) being the custodians of knowledge in the society can contribute a meaningful entrepreneurship to the nation as the risk of failure of the potential entrepreneurs can be reduced if it is well taught to the students about pitfalls and risks to avoid while starting a new business venture. The purpose of this paper is to study the impact of Higher Education Institutions (HEIs) on Entrepreneurial Development(ED) in India. This study is a review paper on the area taken for research wherein Systematic Literature Review (SLR) has been selected as a method for selecting scholarly articles in the area of Entrepreneurship Development and Higher Education Institutions (HEIs) during last six years which were published in Scopus Indexed Journals, wherein total 29514 studies have been identified from which 383 have been screened including book chapters, conference papers and articles, but 20 articles were found to be eligible for the purpose of review. The findings of the study state that in boosting entrepreneurial ecosystem in the country, entrepreneurial spirit among its people which is affected by various factors play a significant role. Higher Education Institutions (HEIs) along with an innovation and incubation culture built in itself act as mediator in boosting such spirit among the students at early stages of their carrier development.

Keywords:

Higher Education Institutions (HEIs), Ecosystem, Entrepreneurship Education, New Education Policy (NEP)-2020, Entrepreneurial Development(ED), Systematic Literature Review (SLR)

Introduction:

In a developing country like India, Entrepreneurism and entrepreneurship are the lifeblood of an economy where it lies in its cultural ethos. (V.Desai, 2009). India is fourth of 51 countries for the quality of its entrepreneurship ecosystem according to the new Global Entrepreneurship Monitor (GEM) National Entrepreneurship Context Index (NECI).

The initiatives by the government, in supporting new businesses like 'Make in India' and Atal Innovation Mission' and the change in popular culture evident by T.V. shows like 'Shark Tank India' which shows the interest and celebration of Entrepreneurship in the people, are the reflection of improved quality of such growth.

Higher Education Institutions (HEIs) form an Ecosystem where Entrepreneurship Education is hosted. If a conductive educational framework is constructed by these institutions, it can lead to Entrepreneurship Development.(Mukesh & Pillai, 2020). The purpose of understanding the need for industry –academia interaction, is one of the essential elements of Higher Education Institutions (HEIs). (Patil et al., 2023).

Systematic Literature Review (SLR):

Systematic Literature Review (SLR) is a process of dealing with published articles following a systematic methodology to synthesize the data on a particular topic. (Tranfield et al.2003). It provides a best way to explore the existing knowledge available on a specific topic by a transparent methodology.

Systematic Literature Review (SLR) can be defined as:

“An SLR is a review of an existing body of literature that follows a transparent and reproducible methodology in searching, assessing its quality and synthesizing it, with a high level of objectivity” Kraus et al. (2020) .

For individual review articles in management, the SLR gained popularity and nearly completely replaced traditional reviews (Jones and Gatrell 2014). Transparency in

benefits of an SLR.(Tranfield et al. 2003).

With the help of SLR and the keyword 'Entrepreneurial Development' total 578 studies were found on Scopus database, out of which by screening the studies taking into consideration: years from 2018-2023, subject areas, keywords, articles, book chapters, conference papers, and language as English total 130 articles were taken into account. Total no. of publications searched on “Higher Education Institutions” (HEIs) as a keyword were 28936 , out of which 253 studies were screened by taking into consideration period from 2018-2023, research work done in India and language as English. 20 eligible articles were studied for review on both Entrepreneurship Development and Higher Education Institutions (HEIs) after excluding the remaining, finding them ineligible for the purpose of review. The figures shown below in the study represents the analysis done on Scopus database before selecting the eligible articles for review. It can be seen in the figure no.1the top Journals in which these studies were published during this period.

Figure no.1 Publications on 'Entrepreneurial Development' in different Journals

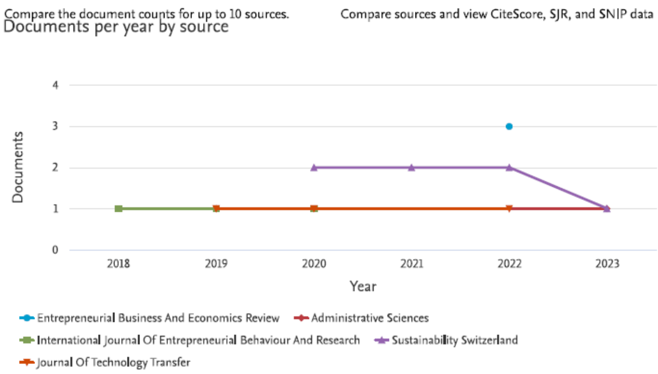

Source: Scopus Database

In figure no.2 where it represents the documents published by year, it can be seen that most of the studies were published in the year 2020 on this particular area. In the year 2020 because of the pandemic most of the countries were facing problems of starting or running new business whereas this was also the time they became more aware of the new business opportunities. (GEM Report 2021-22).

Figure no.2 Pulications on 'Entrepreneurial Development' year-wise

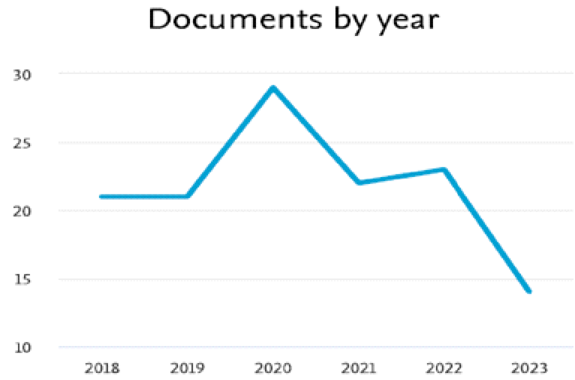

Source : Scopus Database

Figure no. 3 represents that most of the publications were conducted in the area of Business Management followed by social sciences and other disciplines as it is regarded as core element of Business Management.There is also an immediate desire to create and support efficient local entrepreneurial education systems in growing economies like India. Despite the fact that entrepreneurship is a course that emphasizes practice, it is vitally important to reinforce it with current theoretical knowledge. In order to provide an integrated learning platform for business management students, a framework for developing entrepreneurship as a core course is also required due to the synergies between entrepreneurship as a subject of study and other essential business management courses, such as marketing. It becomes essential in these situations to create a course with the goal of exposing this platform at the foundational levels. Basu (2014)

Figure No.3 Publications on 'Entrepreneurial

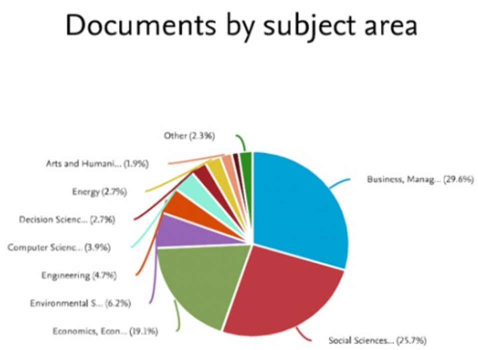

Source: SCOPUS Database

most country among others in which research is conducted in the area of Entrepreneurial Development, whereas the position of India is at no.5 considering top 10 countries.

Figure no.4 Regional distribution of Publications on 'Entrepreneurial Development'

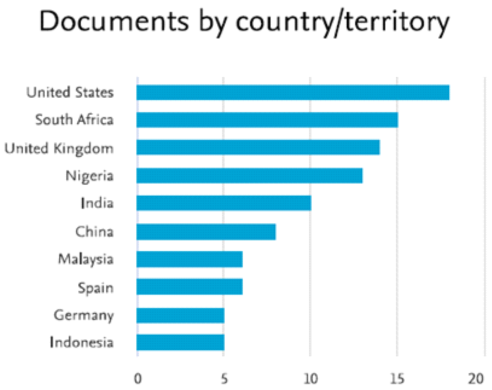

Source: Scopus Database

Total no. of publications found on "Higher Education Institutions" (HEIs) as a keyword were 28936 on Scopus data base, out of which 253 studies were screened by taking into consideration period from 2018-2023, research done in India and language as English. Figure no. 5 shows that there were 70.8% of the articles published during this period on HEIs in India.

Figure no. 5 Documents by Source on ' Higher Education Institutions (HEIs)'

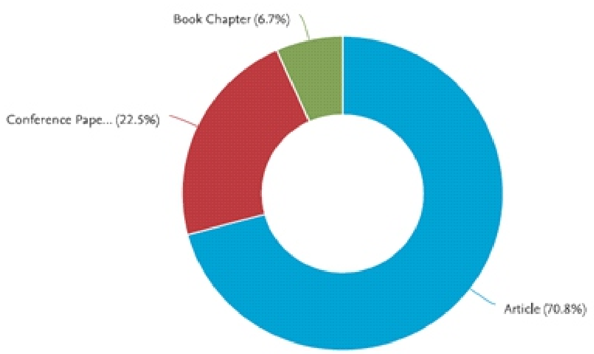

Source: Scopus Database

Most of the research were conducted in the year 2022 on HEIs in India which is represented by figure no. 6.

Figure no.6: Publications per Year 'Higher Education Institutions (HEIs)'

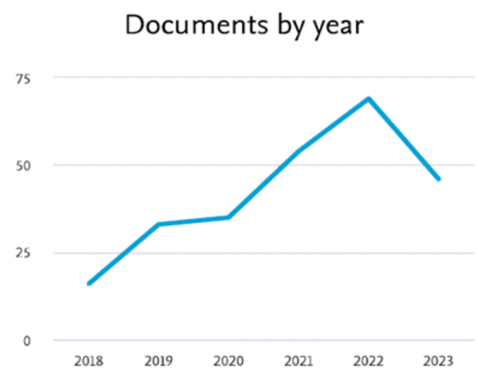

This ... cing entrepreneurial development (ED) and highlights the role of Higher Education Institutions (HEIs) in shaping entrepreneurship ecosystems. The review discusses the systemic approach to fostering entrepreneurship, the impact of individual traits, education, and institutional support on entrepreneurial behavior, and how these factors collectively contribute to a sustainable entrepreneurial ecosystem.

Entrepreneurial Ecosystem and Institutional Framework

The review emphasizes the importance of a systemic approach to entrepreneurial development. Aliabadi et al. (2019) and Kumar & Borbora (2019) argue that the sustainability of an entrepreneurial ecosystem relies heavily on the political, cultural, social-capital dimensions, and the institutional framework. A supportive institutional framework that includes a solid legal system, access to credit, a secure environment, and strong education systems is essential to foster entrepreneurship. It is apparent that without the necessary institutional support, entrepreneurship may not thrive, as individuals may not see it as a viable path.

This section underscores that the institutional ecosystem—comprising government policies, cultural acceptance, and availability of resources—plays a pivotal role in creating an environment conducive to entrepreneurial growth. Institutions, therefore, need to work in tandem to provide the resources, mentorship, and policies that enable entrepreneurs to succeed.

Triggers for Entrepreneurial Intentions

The review discusses the triggers that drive individuals to engage in entrepreneurial activities, as outlined by Kuvshinikov et al. (2023). These triggers are categorized into personal happiness and occupational discontent. The review

suggests that these triggers have significant implications for the initial stages of entrepreneurship. The individuals who are motivated by a sense of dissatisfaction with their current occupations or a desire for personal happiness are more likely to take the leap into entrepreneurship. Understanding these triggers is crucial for understanding entrepreneurial behavior and intentions.

Caliendo & Stier (2023) further emphasize that entrepreneurs' motivations—whether they stem from opportunity-driven or ambition-driven aspirations—affect the innovation and long-term success of their businesses. Thus, the reasons behind an individual's decision to start a business shape how they manage and grow their enterprise, highlighting the importance of aligning entrepreneurial motivations with strategic business decisions.

Personality Traits and Higher Education Institutions' Role

Personality traits play a significant role in shaping entrepreneurial behavior. Tian (2019) points out that individuals with traits such as risk tolerance, extroversion, emotional stability, and diligence are more likely to engage in entrepreneurial ventures. The review indicates that fostering such traits in students through entrepreneurship education and training programs could encourage the development of a more entrepreneurial mindset.

Furthermore, the mediating role of Higher Education Institutions (HEIs) is highlighted as critical in developing entrepreneurial intentions. Song et al. (2023) assert that HEIs, through entrepreneurship education, can influence students' attitudes, self-efficacy, and perceived control over their entrepreneurial decisions. By providing a solid foundation in entrepreneurship, HEIs have the potential to shape students into skilled entrepreneurs, equipped to face challenges in the real world.

Entrepreneurial Development Programs (EDPs)

The review stresses the importance of implementing Entrepreneurship Development Programs (EDPs) at all levels of education. Razak et al. (2018) highlight that such programs, designed to enhance entrepreneurial resilience and competitiveness, are crucial for equipping future entrepreneurs with the skills necessary to thrive on a global scale. The comprehensive approach to EDPs is suggested, covering various educational stages and targeting both government and private sector support to create a robust entrepreneurial ecosystem.

Entrepreneurship Education and the Role of HEIs

The role of HEIs in fostering entrepreneurship is multi-dimensional. Azqueta & Naval (2019) argue that entrepreneurship education should focus not only on socio-economic and professional aspects but also on intellectual, social, and moral development. This holistic approach to education ensures that future entrepreneurs are well-rounded and equipped to make ethical, socially responsible decisions while contributing to societal development.

Patil et al. (2023b) discuss the challenges faced by the Indian higher education system, including its expanding scope and the need to enhance institutional capacity. The review emphasizes that HEIs in India, and similar systems, must embrace innovation, focus on quality improvement, and engage actively with stakeholders to boost their capacity to foster entrepreneurship.

Technological Integration and Innovation

The review also touches upon the technological transformation within HEIs, particularly the rise of e-learning. Gupta et al. (2021) and Gill et al. (2022) explore the role of mobile learning and digital platforms in promoting entrepreneurial skills among students. The pandemic-induced shift towards online education has made learning more accessible, enabling students to acquire entrepreneurial skills in both formal and informal settings.

Moreover, the role of educators is redefined in this context. Faculty must now support students not only in acquiring technical skills but also in developing transformative qualities such as emotional stability, critical thinking, and problem-solving abilities. This broader skill set is crucial for nurturing future entrepreneurs who can adapt to changing global and technological landscapes.

Institutional Quality and Governance

A significant focus is placed on the quality of HEIs, including administrative structures, teaching, and the prevention of corruption. Mulay & Khanna (2020) and Chaudhary et al. (2019) emphasize that the internal quality of HEIs must be constantly monitored and improved to ensure the

effectiveness of entrepreneurial education and institutional credibility.

Furthermore, Sharma & Sharma (2021) argue that HEIs need to find innovative financial solutions to maintain their operations, as traditional funding sources have become limited. Developing sustainable financial models, through partnerships and innovation, will ensure that HEIs remain competitive and continue to contribute meaningfully to the entrepreneurial ecosystem.

Conclusion and Implications for Policy and Practice

In summary, the literature review highlights the crucial role that HEIs, institutional support, and personal factors play in entrepreneurial development. For a thriving entrepreneurial ecosystem to emerge, both institutional frameworks and individual motivations must align. HEIs must not only provide knowledge and skills but also foster an environment that encourages risk-taking, innovation, and critical thinking. By doing so, they can shape the next generation of entrepreneurs who are equipped to contribute to economic development and global competitiveness.

In terms of policy, the review advocates for increased collaboration between the government, private sector, and educational institutions to support entrepreneurial initiatives. Continuous improvement in institutional quality, financial models, and curriculum is also essential to ensure the sustainability of entrepreneurship education and its broader impact on society.

References:

- Aliabadi, V., Ataei, P., Gholamrezai, S., & Aazami, M. (2019). Components of sustainability of entrepreneurial ecosystems in knowledge-intensive enterprises: the application of fuzzy analytic hierarchy process. *Small EnterpriseResearch*, *26*(3),288–306.https://doi.org/ 10.1080/13215906.2019. 1671215\
- Azqueta, A., & Naval, C. (2019). Entrepreneurship education: a proposal for human development. *Revista Española de Pedagogía*, *77*(274).
- Basu, R. (2014). Entrepreneurship education in India: a critical assessment and a proposed framework. *Technology Innovation Management Review*, *4*(8), 5–10. https://doi.org/10.22215/timreview/817
- Caliendo, M., Kritikos, A. S., & Stier, C. (2023). The influence of start-up motivation on entrepreneurial performance. *Small Business Economics*, 1-21.
- Chaudhary, N. S., Phoolka, S., Sengar, R., & Pande, S. (2019). Whistleblowing in Indian higher education sector: a qualitative study. *International Journal of Learning and Change*, *11*(2), 145. https:// doi.org/10.1504/ijlc.2019. 101662
- Desai, V. (2009). *Dynamics of entrepreneurial development and management* (pp. 119-134). Himalaya Publishing House.
- Gill, S. K., & Singh, G. (2020). Developing inclusive and quality learning environments in HEIs. *International Journal of Educational Management*, *34*(5), 823–836. https://doi.org/10.1108/ijem-03-2019-0106
- Gill, S. K., Dhir, A., Singh, G., & Vrontis, D. (2022). Transformative Quality in Higher Education Institutions (HEIs): Conceptualisation, scale development and validation. *Journal of Business Research*, *138*, 275–286. https://doi.org/10.1016/j.jbusres.2021.09.029
- Global Entrepreneurship Monitor. (2021/2022). Global Report. *Opportunity amid Disruption*https:// www.gemconsortium. org/file/ open? fileId=50900\
- Global Entrepreneurship Monitor. (2022/2023). Global Report. *Adapting to a "New Normal"* https://www.gemconsortium.org/file/open?fileId=51147
- Gupta, Y., Khan, F., & Agarwal, S. (2021). Exploring Factors Influencing Mobile Learning in Higher Education – A Systematic Review. *International Journal of Interactive Mobile Technologies*, *15*(12), 140. https://doi.org/10.3991 /ijim.v15i12.22503
- Jones, O., & Gatrell, C. (2014). The future of writing and reviewing for IJMR. *International Journal of Management Reviews*, *16*(3), 249-264.
- Kraus, S., Breier, M., & Dasí-Rodríguez, S. (2020). The art of crafting a systematic literature review in entrepreneurship research. *International Entrepreneurship and Management Journal*, *16*(3), 1023–1042. https://doi.org/10.1007/s11365-020-00635-4
- Kumar, G., & Borbora, S. (2019). Institutional environment differences and their application for entrepreneurship

development in India. *Journal of Entrepreneurship in Emerging Economies*, *11*(2), 177–199. https://doi.org/10.1108/jeee-11-2017-0081

- Kuvshinikov, P. J., & Kuvshinikov, J. T. (2023). Forecasting entrepreneurial motivations and actions: development and validation of the entrepreneurial trigger scale. *Journal of Small Business and Enterprise Development*.
- Lai, W., Chang, Y., & Wang, X. (2023). Research on the Management of Student Entrepreneurship Development in Higher Education. *Journal of Higher Education Theory & Practice*, *23*(6).
- Mulay, R. V., & Khanna, V. T. (2020). An empirical study on quality improvement in higher education institutions with reference to selected processes. *The Quality Management Journal*, *28*(1), 41–56. https://doi.org/10.1080/10686967.2020.1848367
- Patil, K. K., Szymański, J., Zurek-Mortka, M., & Sathiyanarayanan, M. (2023b). I5 Framework: Institutions-Industries-Interactions Innovations-Incubators for Strengthening Start-up Ecosystem in Higher education Institutions. *International Journal of Emerging Technologies in Learning (Ijet)*, *18*(08), 148–163. https://doi.org/10.3991/ijet.v18i08.36647
- Ragauskaitė, A., & Zaleckienė, J. (2018). Innovative methods and approaches towards the development of the students' entrepreneurial competencies. *Research for rural development*, *2*, 259-266.
- Razak, N. S. N. A., Buang, N. A., & Kosnin, H. (2018). The Influence of Entrepreneurship Education towards the Entrepreneurial Intention in 21st Century Learning. *The Journal of Social Sciences Research*, *SPI6*, 502–507. https://doi.org/10.32861/jssr.spi6.502.507
- Razak, N. S. N. A., Buang, N. A., & Kosnin, H. (2018). The Influence of Entrepreneurship Education towards the Entrepreneurial Intention in 21st Century Learning. *The Journal of Social Sciences Research*, *SPI6*, 502–507. https://doi.org/10.32861/jssr.spi6.502.507
- Shams, S. M. R., Vrontis, D., Chaudhuri, R., Chavan, G., & Czinkota, M. R. (2020). Stakeholder engagement for innovation management and entrepreneurial development: A meta-analysis. *Journal of Business Research*, *119*, 67–86. https://doi.org/10.1016/j.jbusres.2020.08.036
- Sharma, M. K., & Sharma, R. (2021). Innovation Framework for excellence in Higher Education Institutions. *Global Journal of Flexible Systems Management*, *22*(2), 141–155. https://doi.org/10.1007/s40171-021-00265-x
- Song, S. I., Thominathan, S., & Khalid, N. A. (2021). Entrepreneurial intention of UITM students and the mediating role of entrepreneurship education. *Asian Journal of University Education*, *17*(2), 236. https://doi.org/10.24191/ajue.v17i2.13405
- Tian, X. (2019). The effect of personality traits on entrepreneurial development in Western China. *Emerging Markets Finance and Trade*, *57*(5), 1284–1299. https://doi.org/10.1080/1540496x.2019.1684256
- Tranfield, D., Denyer, D., & Smart, P. (2003). Towards a methodology for developing evidence informed management knowledge by means of systematic review. *British journal of management*, *14*(3), 207-222.

Hansa Verma[1]
Research Scholar
K.R.Mangalam University, Gurgaon.
Correspondence Address: C-62, Surya Vihar,
Near Sec-9 Petrol Pump, Gurgaon-122001.
Mobile No. 9910701325
Dr. Sarina Asif[2]
Assistant Professor
K.R.Mangalam University, Gurgaon.

AN OVERVIEW OF WELFARE SCHEMES PROMOTING WOMEN'S EMPOWERMENT IN INDIA

35

Dr. Neha Sharma, Dr. Pooja Gupta

ABSTRACT

Women's Empowerment has become a crucial topic in the development ofan economy. Empowerment of women refers toenhancingtheir social, cultural, political and economic status. It involves creating an environment where women are free from physical pressure, mental abuse, exploitation and prejudice that they are often in the most vulnerable group in society. Women Empowerment can be understood as making women strong and capable of making their own decisions regarding their welfare and well-being in the society. Encouraging women to participate in economic and political life across all sectors is essential for building a stronger economy, achieving internationally agreed development goals, and improving the overall well-being of women, men, families, and communities. The Government of India has been taking various steps to emphasize the importance of women in the nation's economic growth. The main objective of the government is to promote women entrepreneurship to motivate and guide women in participating in economic activities. This study aims to analyze the need for women's empowerment in India and highlights the methods and policies related to it. Women's empowerment is a vital aspect of expanding women's abilities to access resources and make strategic life choices. The study is based on secondary sources and is purely theoretical. Information regarding women empowerment schemes in India, along with various contents, has been collected from books, journals, and internet sources related to the topic.

KEYWORDS

Women Empowerment, Basic Rights, Welfare Scheme, Socio Economic Status, Scheme Implementation.

INTRODUCTION

India, the world's second largest country, is a land abundant in both natural and man-made resources. The true potential of these resources can only be realized when individuals are empowered through wisdom, health and education. This makes human resources, the greatest asset of our nation, with women playing a pivotal role in this dynamic. Famed for the saying "Unity in Diversity", India is a vibrant tapestry woven from numerous religious beliefs and cultural backgrounds. Women are reversed across all societies and religions, and the tradition of worshiping numerous female and honor bestowed upon them in various roles- as mothers, sisters, wives, daughters and friends. Yet, it is crucial to recognize that respecting and honoring women alone will not drive the development and progress our country aspires to achieve. In this 21st century, Women's Empowerment stands as one of the most pressing challenges we face. Women are not just contributors to our economy, they are key architects of its future. Embracing their potential and ensuring their active participation is essential for fostering sustainable growth and a stronger society.

Empowerment can be understood as a means of creating a social environment where individuals can make decisions and choices, either individually or collectively, to facilitate social transformation. Women Empowerment extends beyond Indian Society, women in developed nations are also receiving equal treatment. Empowering women can significantly contribute to the development and growth of all the family members according to their needs. It serves as a solution to various issues related to humanity, the economy and the environment. Historically, women have become increasingly aware of their health, education, careers, jobs and responsibilities towards their families and society. They are taking initiatives in various areas and showcasing their talents across different fields. The Government of India has launched numerous initiatives, programs and policies to empower women in the country.

MEANING OF WOMEN EMPOWERMENT

Women Empowerment defines to promote a sense of self-worth, enabling women to make theirown choices andadvocate for social change for themselves and others. Women empowerment refers to the development of spiritual, political, social, educational, gender or economic strength of individual and communities of women. When women give same opportunities as compared to men, the all round development and harmonious growth of a nation would be possible. Women Empowerment in India depends on different variables such as geographical location (urban/ rural), educational status, social status and age. There are many policies and initiatives taken by government on national, state and local levels in many sectors, including health, education, economic opportunities and political participation. Empowered women develop their own identities, enabling

limitations in term of possessions, skills, education, social status and the ability to mobilize. These factors significantly affect their decision making power and often lead to increased dependence on men. Therefore, the empowerment of women is a crucial process for improving their economic, social and political status in both rural and urban sectors. The empowerment of women include creating awareness and consciousness about the rights of women, opportunities and capabilities of women, importance of gender equality , skill development, ability to plan and implement, ability to manage, ability to carry out activities, ability to deal with people in global world etc. Empowerment refers the process by which women's power of self-realization is promoted and motivated. Empowerment includes the action of raising the status of women through education, raising awareness, literacy and training.

OBJECTIVES OF THE STUDY

The objectives of the study are:

i. To highlight the steps taken by the government for women's empowerment in India.
ii. To analyze the factors that influence the empowerment of Women.
iii. To examine the government schemes aimed at promoting women's empowerment, development, progress, and equality through constitutional provisions.
iv. To review the policies, programs and projects of the central government focused on the development and empowerment of women.
v. To assess the significance of women's empowerment in India.

AIM AND SCOPE OF THE STUDY

This study seeks to critically examine the status of women in India and highlight the urgent need for women's empowerment. It underscores the vital importance of raising awareness, fostering influence, enhancing knowledge, and promoting development and progress. Additionally, it emphasizes the significance of government initiatives in advancing women's equality, making a compelling case for transformative change in society.

RESEARCH METHODOLOGY

This study employs a comprehensive descriptive and analytical approach. The secondary data has been meticulously gathered from a diverse range of credible sources, including renowned journals, authoritative books, reputable internet sources, influential research papers, and insightful articles and magazines. This rich collection of information enhances the depth and reliability of the findings.

WOMEN EMPOWERMENT SCHEMES INITIATED BY GOVERNMENT

- **BetiBachaoBetiPadhao Scheme:** This is a government sponsored initiative aimed at saving and educating girl children. The primary objective of this scheme is to raise awareness and enhance the efficiency of welfare services targeted at women. It celebrate the girl child and promotes her education. This initiative is the result of collaborative effort among the Ministry of Women and Child Development, the ministry of Health and Family Welfare and the Ministry of Human Resource Development. Prime Minister Modi launched the program on January 22, 2015, in Panipat, Haryana, coinciding with the International Day of the Girl Child. The scheme has several key objectives: it seeks to prevent gender-biased sex-selective elimination, ensure the survival and protection of the girl child, and provide compulsory education for girls.

- **One Stop Centre for Women:**The Ministry has approved the establishment of One Stop Centres to support women affected by violence in both private and public spaces, as well as within families and communities, and at the workplace. This scheme offered a variety range of services, including medical facilities, police assistance, legal aid, case management, psychological counseling, and temporary support for women affected by domestic violence. One Stop Centres are being set up in each State and Union Territory (UT). The main objective of this scheme is to provide comprehensive support and assistance to women who have experienced violence, consolidating all necessary services under one roof. It offers immediate access to both emergency and non-emergency services, including medical, legal, psychological, and counseling support, all aimed at combating any form of violence against women.

- **Rajiv Gandhi National Creche Scheme for children:**This scheme is sponsored by the Ministry of Women and Child Development, Government of India. As employment opportunities for women continue to rise and the need to support themselves in the economy grows, more women are entering into the employment oppurtunities. With the decline of the joint family system and an increasing number of nuclear families, working women require assistance for the care and nurturing of their children while they

not only for working mothers but also for women from low-income families who need support and relief in childcare. Therefore, it is crucial for women to have a safe and secure environment for their children in their absence. A crèche is a facility that allows parents to leave their children while they are at work. The main objectives of this scheme are to provide daycare facilities and to support the physical, cognitive, social, and emotional development of children. Additionally, it aims to improve the nutritional and health status of the children.

- **Shree Shakti Package for Women Entrepreneurs:**There is a strong emphasis on promoting women entrepreneurship in India. One scheme promoted by the State Bank of India (SBI) is Stree Shakti Package for Women Entrepreneurs. This scheme offered a loan facilities for women to run their own business. Women professionals like Doctors, Beauticians, Architects and Chartered Accountants can avail loan under the Stree Shakti Package.

- **Support to training and Employment Programme:**This scheme is sponsored by the Ministry of Women and Child Development of the Government of India. This scheme provides training to poor and marginalized women in traditional trades, primarily in the informal sector. The objective of the STEP (Support to Training and Employment Programme) is to improve skills and employment opportunities for women through various action-oriented initiatives. The program encourages skill development for both self-employment and wage employment, as skills and knowledge are crucial for the economic growth and social development of a country. The main goals of this scheme are to equip women with employable skills, empower them to become self-employed, enhance the competencies and knowledge of disadvantaged women, and provide them with sustainable employment opportunities.

- **The Indira Gandhi MatritvaSahyogYojana:**This scheme is sponsored by the Ministry of Women and Child Development, Government of India, and is designed for pregnant and lactating women aged 19 years and older for their first two live births. Its aim is to create a supportive environment by providing conditional cash transfers to improve health and nutrition, as well as to promote healthy behaviors related to health and nutrition. The program offers wage compensation to women for income lost during childbirth and childcare, and it provides access to facilities for safe delivery, as well as guidance on good nutrition and feeding practices. The main objective of the scheme is to promote appropriate care practices and the utilization of institutional services during pregnancy, safe delivery, and lactation. It also encourages women to adopt nutritional practices and child feeding methods, including early and exclusive breastfeeding for the first six months.

- **ShadiShagunYojna:**The scheme was launched on August 6, 2017, by the Prime Minister of India. It is aimed at encouraging graduate Muslim girls from minority groups to pursue higher education before marriage, regardless of the field of study they are in.

- **Scheme for Working Women Hostel, Day Care Centre and Medical Aid:**Many women are leaving their homes in search of employment opportunities in urban and rural industrial areas. One of the primary challenges they face is the lack of safety and suitable accommodation. To address this issue, the Government of India has initiated a scheme aimed at providing safe and conveniently located housing for working women who need to live away from their families due to professional commitments. The main goal of this scheme is to motivate the women regarding employment opportunities for the availability of safe accommodation for working women, along with daycare facilities for their children in both urban and rural areas.

- **Mahila Police Volunteers:** The Mahila Police Volunteers initiative was launched by the Ministry of Women and Child Development, in collaboration with the Ministry of Home Affairs, across all states and Union Territories. The primary goal of this central government-sponsored scheme is to strengthen the relationship between police authorities and local communities, enhancing police outreach on crime-related issues. The program aims to create a safer, more women-friendly environment and encourage

women to join the police force.

- **Mahila E-Haat:** The Ministry of Women and Child Development launched Mahila E-Haat, a bilingual portal, on March 7, 2016. This initiative provides a direct online marketing platform that leverages technology to support women entrepreneurs, self-help groups (SHGs), and non-governmental organizations (NGOs) in showcasing their products and services. It aims to meet the aspirations and needs of women across India. Digital media is a crucial factor for business efficiency, and it should be accessible to a majority of Indian women entrepreneurs. Women entrepreneurs, SHGs, and NGOs from all states are featuring their offerings across 18 categories, including Clothing, Bags, Fashion Accessories, Jewelry, Home Décor, Baskets, Carpets, Educational Aids, Industrial Products, Natural Products, and Miscellaneous items.

IMPORTANCE OF WOMEN EMPOWERMENT

- **Sustainable Development:** Without women empowerment, sustainable development is impossible. Consequently, it is asserted that equality is both a human right issue and a precondition for, and indicator of sustainable development.

- **Social Development:** Women is the most important part of our society. With the development of women skills and capabilities, society will move on the direction of growth. The education of girls is equivalent to the education of a nation. With the development of women education, they can change their society and develop their nation.

- **Domestic Violence and Sexual Harassment:** It is important that women can understand their rights and duties and fight against the inacceptable behavior in order to fight against it. This is why education is compulsory for all the girls and women for fight against violence and sexual harassment.

- **Gender Equality:** Empowering Women is essential for achieving gender equality, which is a fundamental human right. It indicates that women and men have equal rights, opportunities and resources, allowing them to participate equally in all aspects of life.

- **Economic Growth:** Women's Empowerment is also important for economic growth and development. When women have equal access to education, employment and other opportunities, they can contribute their best to the economy and society as a whole.

- **Health and Well Being:** Women's Empowerment is important for improving mental health and well-being. When women have access to education and healthcare, they can better care for themselves and their families.

FACTORS INFLUENCING THE EMPOWERMENT OF WOMEN

The Government of India has implemented numerous initiatives to support women, but discrimination and marginalization persist at various levels of society, including social, political, economic, and educational spheres. Women across India are often found to be economically disadvantaged, with only a small percentage engaged in services and other activities. To achieve true equality, women need equal economic power to stand alongside men. Furthermore, there are alarming cases of kidnapping, dowry harassment, and rape that threaten the safety and dignity of women. As a result, comprehensive protection and empowerment measures are essential to secure their identity and rights. Additionally, it has been observed that women's literacy rates are lower than men's, and they face significant challenges, such as workplace harassment.

Empowering Women is not just a matter of justices, it is crucial for the progress of society as a whole. When women are given equal opportunities, the benefits extend far beyond individual lives, communities flourish, economies thrive and social structures become more resilient. Empowered women actively participate in decision making processes, driving innovation and change while ensuring that their voices are heard and valued. True women's empowerment hinges on women actively embracing the journey of self-empowerment. To achieve this, we must confront critical issues: alleviating feminized poverty, ensuring access to education for all women, preventing and eradicating violence against women, and establishing the essential resources needed for empowerment. Empowered women not only deserve to live with respect and dignity, but they also play a vital role as equal partners in development. We must foster an environment that is unequivocally free from violence and discrimination, allowing women to thrive and contribute meaningfully to society. Together, we can create a future where women's empowerment is not just an ideal but a reality.

CONCLUSION

The government has implemented various schemes aimed at empowering women in Indian society. However, beyond these schemes and laws, it is crucial to engage in social discussions, debates, and promote awareness to address the challenges faced. It is essential that these programs reach every corner of our society so that our developing country can progress towards becoming a developed and prosperous nation. The government has also taken significant steps towards child development and

enhancing women's empowerment. Women need a safe and supportive environment where they can make their own decisions regarding their lives, families, communities, and the country. To transform our nation into a fully developed one, women's empowerment is a vital component of achieving overall development. Numerous initiatives have been introduced by the government and public organizations to support women's leadership in the public sector. Women's leadership in this sector is a key factor for national development.

REFERENCES

- Dominic, Beena&Jothi, C. Amrita. (2012) – Education- A tool of Women Empowerment: Historical study based on Kerala society, International Journal of Scientific and Research Publications, Volume 2, Issue 4, April 2012, pp. 1-4
- Empowerment and Poverty Reduction: A Sourcebook (2002).
- Agnihotri, Rashmi Rani &Malipatil (2018) – A Study on Women Welfare Programmes in India, International Journal Of Research, Vol. 08, Issue 01, pp. 18684-18688
- Sarker, Tanusree (2017): Women Development and Government Schemes With Special Reference to Ksyl, IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS) Volume 17, Issue 1 (Nov. - Dec. – 2013), PP. 37-41.
- http://www.indiacelebrating.com/speech/woman-empowerment-speech/
- http://www.newincept.com/central-government-schemes-for-woman-empowerment.html
- https://www.editedbook.in/pdf/women-empowerment-book-by-dr-tazyn-rahman.pdf
- Bhat, R.A. (2015). Role of Education in the Empowerment of Women in India, Journal of Education and Practice, 6(10),188-191.
- Sarah, M. (2005) Assessing woman's empowerment: towards a conceptual framework, Journal of International Development, 17(2), 234-257. DOI:10.1002/jid.1212.ISSN 1099-1328.

Dr. Neha Sharma
Assistant Professor
School of Education & Humanities
IFTM University, Moradabad, U.P
Mob. No. – 9149010805

Dr. Pooja Gupta
Assistant Professor
School of Education & Humanities
IFTM University, Moradabad, U.P
Mob. No. – 8791445557
Email Id – poojaagarwal0979@gmail.com

36

The Survival of Creative Disciplines in the age of Artificial Intelligence(AI)

Dr. Ruchi Arora, Dr. Sonam Arora

Abstract

Artificial intelligence technologies have transformed various creative disciplines which leads to complicated investigations about literary development. AI technology produces meaningful texts with various writing styles thus making it challenging to distinguish between human-generated and machine-generated content. Modern technological developments test established ideas about who creates literature and what determines originality because they threaten to erase the unique character of work authored by humans.

AI-generated writing does not possess fundamental attributes which create the authentic human literary experience through emotions and direct life experiences with deep comprehension of human victories and challenges. The literary field functions as a cultural reflection tool because it delivers distinct understandings about historical and social times via both individual and communal views. Vast data processing combined with style replication abilities do not translate into a genuine manifestation of human grief and love and the basic elements of joy and the mechanisms of memory.

Paradoxically, AI also offers new opportunities for writers and readers. AI provides authors two main applications: experimentation through innovation and automation of processes to create new artistic forms and imaginative content. The publishing industry uses artificial intelligence for efficient editorial tasks and improved connectivity to worldwide literary markets as well as endangered text protection.

The main obstacle arises from reconciling technology progress with maintaining the authentic character of literature. Literature will transform itself as an art form because of AI but it will not disappear entirely because it will find ways to stay significant through its transformation. The creative nature of human beings will never lose its significance because human creativity functions with distinctive flaws and personal character traits. Through its natural qualities literature will survive to preserve human experiences during a future dominated by machine-based technology.

Keywords: Integration, Homogenization, Emotional Intelligence

Introduction

The quick developments in artificial intelligence (AI) modify creative realms while significantly changing how people make and receive written work. AI-driven tools establish a vital role within the modern literary industry to create poetry and novels in addition to their editing and translation functions. These developing technologies test established beliefs about writing origination and creative development and authorship concepts. Did the exact methodical nature of machine copy create unique significance for human-authored literature?

Knowledge about the future of literature as artificial intelligence continues to transform the field currently represents the essential topic for discussions about AI interventions in arts. AI causes concern to several people who think it could reduce the genuine nature of literary art and eventually surpass human authors in writing abilities. People modify the tool's capabilities by recognizing its beneficial features for both innovation and team-based collaboration. The paper investigates how literature relates with AI technology by analyzing both the potential hazards and chances which emerge from their joint existence. The technology will not result in literature's disappearance but instead will inspire both new combinations between artificial intelligence and storytelling practices and fresh ideas about human writer involvement. Literature's core values should remain protected as it learns to extend its reach through new technologies which enable its survival in modern digital environments.

Objectives:

1. To analyze the impact of artificial intelligence on the production and consumption of literature, focusing on how AI-generated content influences traditional writing practices and reader engagement.

2. **To examine the challenges posed by AI in terms of authorship, originality, and authenticity**, and how these issues affect the value and perception of human creativity in literature.
3. **To propose strategies for preserving the core essence of human-centered literature**, ensuring its survival and relevance in a rapidly evolving digital and technological landscape.

Research Design

The investigation utilizes qualitative secondary research methods to study how literature survives during the era of artificial intelligence (AI). Secondary research studies previously collected data by examining academic papers and industry reports together with books while mainly using credible online sources. Researchers adopt this method when they need to understand the wide-ranging effects of AI on literary creations through the combination of various different academic viewpoints.

The study adopts the following process:

1. **Literature Review**

A thorough examination of academic articles together with research papers and published books concerning AI and its influence on literature is conducted. This research will analyze the subject areas which include the ways AI functions as an author and its influence on creative processes alongside its effects on future literature creation.

2. **Case Studies**

Research includes analyzing specific exemplars demonstrating AI utility in creative writing together with their practical utilization in literature development. AI technology produces particular novels in addition to poetry collections and human-AI collaboration becomes a key component in contemporary writing.

Literature Review

Academic discussions about AI integration within creative areas including literature have become very widespread because of its fast innovation in literary writing. The review combines essential viewpoints that evaluate both the limitations and advantages which Artificial Intelligence brings to literature. The research investigates worldwide progress and real-world cases together with Indian perspectives to outline the complete evolution of artificial intelligence within literary practices.

AI and Literary Production: A Global Perspective

The global application of AI in literature is expanding because research in natural language processing (NLP) transformed machines into capable content generators able to produce coherent text with various styles. The GPT series from OpenAI together with Google's BERT explains the capability to create poetry and produce short stories and entire novels.

AI and Literature in India

The adoption of artificial intelligence to affect literature in India is starting to grow more rapidly after its initial slow development. The diverse historical literary background with multilingual and cultural differences in India creates specific conditions for artificial intelligence to explore literary advancements. Artificial Intelligence plays an expanding role in multiple language sector activities including preserving native tongues and language translation as well as innovative storytelling techniques.

The Project Madurai serves as a notable project that utilizes artificial intelligence to digitalize and protect works from Tamil literature. The project emphasizes how technological systems assist in cultural heritage protection although authors did not rely completely on artificial intelligence.

India reached a notable achievement through the development of AI-generated poetry collections in native languages. Teamwork between researchers of artificial intelligence and poets has yielded products which merge human creative skills with content generated through machines. These artificial creations still face questions about their genuine value because no one can determine if they accurately convey Indian literary traditions because of their limited cultural authenticity.

Challenges and Ethical Concerns

What seems to be a major ethical issue arises because AI appears in Indian and international literature. The debates revolve primarily around three topics that include authorship disputes and copyright issues as well as establishing the authenticity of AI-generated materials. We need to establish methods for assigning authorship rights to literary works whose significant parts are produced by machines. AI-based literary content overwhelming the market will affect the natural creative output of humans.

Opportunities for the Future

AI and literature have an auspicious outlook ahead regardless of present obstacles. Authors throughout the world start using AI technology to advance storytelling as their collaborative partner. The technology of AI presents India with an effective platform for linguistic innovation which creates opportunities for cross-cultural communication and literature accessibility democratization. Hybrid literature combining human-generated creative content with machine-generated output enables researchers to create experimental approaches toward establishing different narrative structures.

Importance of Literature in the Age of AI

Literature holds an essential position during the information age of artificial intelligence (AI). Literature takes on a central position in culture because it functions as an emotional tool to unite past and present generations through preserving individual identities while enabling empathy development. Literature extends beyond storytelling with critical importance because it enables people to understand human experiences better and supports thinking skills development within the rapidly progressing technological society of today.

1. Preservation of Human Experience

Through its pages literature demonstrates the core of human existence by revealing our feelings combined with our achievements and life battles while showing individual or group experiences. The generating ability of AI does not replace the fundamental lived reality which authentic human stories require for their existence. Human-generated literature stands permanently unique because it ensures historical documentation of personal history and cultural legacy along with human beings' universal experience.

2. Building Empathy and Emotional Intelligence

Through stories readers gain empathy skills because literature transports them into multiple life experiences. The growing statistical nature of modern times meets its match through literature which helps people maintain emotional comprehension alongside better understanding of personal experiences. Artificial intelligence finds it difficult to produce meaningful human-type connections in its content creation processes.

3. Critical Thinking and Imagination

Reading literature makes readers confront their minds by questioning prevailing codes of conduct while exploring multiple life possibilities. The process of reading develops abstract thinking and creative imagination which helps people deal with the unknown elements of the AI technological era. Reading literature enables people to develop their analytic talents and enhance their creative abilities because our world today is increasingly controlled by automated systems and computing algorithms.

Future of Literature in the Age of AI

The literature domain in the era of Artificial Intelligence exists as an intricate system that presents dual beneficial and threatening elements. The rising presence of AI in literary creation causes doubts about originality as well as creative processes and human writing authority. AI will trigger transformational changes in literature rather than finished its existence by becoming a tool for story development and creative storytelling methods.

1. Hybrid Storytelling

Literature will experience success through combined efforts between artificial intelligence systems working together with human authors to create hybrid content. Writers receive AI assistance to create conceptual ideas then produce story plans and explore writing templates without AI taking over their storytelling decisions.

2. Democratization of Writing

AI's innovative tools create opportunities for extended groups of people to access writing services. New writers who do not have conventional writing background can use AI tools to check grammar and style and receive plot ideas thus making the authorship process more available to the public.

3. Preservation and Revitalization of Languages

The multilingual nature of India makes AI an effective

tool to protect endangered languages because it can create text material and perform translations into lesser-used dialects. The preservation of linguistic heritage and the formation of new possibilities in cross-cultural literary exchange would be ensured by this method.

Conclusion

Modern artificial intelligence technology simultaneously creates possibilities as well as obstacles for literature to survive. The growth of artificial intelligence transforms basic authorship concepts of creativity while producing essential concerns about authentic writing while preserving cultural heritage and shaping human-authored storytelling in the future. The capabilities of AI to impersonate human writing exactly do not extend to duplicating the authentic emotional expression together with personal experiences and cultural characteristics which inform literary works.

Human creativity will find its future in technology-based enhancements which will not seek to replace human creativity altogether. Literature withstands across time since it shows human reality and serves as a connection tool between people and safeguards cultural practices. The coming changes will not eradicate literature instead they will cause it to evolve thus creating new ways to inspire interaction among generations.

Bibliography

- Boucher, G. (2020). Computing technology based on artificial intelligence uses algorithms to form the structure of our modern world as we know it. Cambridge University Press.
- Eliot, C. (2019). The future of storytelling: Human creativity in the age of AI. Oxford University Press.
- Groves, P. (2018). Authorship and authenticity: Literature in the digital age. Routledge.
- Joshi, S. (2021). The implementation of AI for heritage preservation across India takes a linguistic method to achieve its targets. Journal of Indian Studies, 15(3), 45–67.
- Kim, D. (2017). This paper explores the revolutionary impact of creative AI would have on human literature. Journal of Literary Studies, 34(4), 112–129.
- OpenAI. (2022). AI's function in creative writing creates new prospects combined with complex difficulties. Retrieved from www.openai.com

Dr. Ruchi Arora
Associate Professor
DAV Centenary College, Faridabad

Dr. Sonam Arora
Assistant Professor
DAV Centenary College, Faridabad

37

"The impact of Digital Innovation on the Accessibility of Mutual Funds in a Globalized Economy"

Dr.Anju Gupta, Ms. Sonia Gupta

Abstract

The availability of mutual funds in a globalized market has changed dramatically due to the quick development of digital innovation. This study examines the ways in which robo-advisors, blockchain, fintech platforms and artificial intelligence (AI) have transformed mutual fund investment through increased market participation, cost savings and convenience. Due to the democratization of investing options brought about by digital platforms, both institutional and individual investors can now easily access global equities mutual funds. Furthermore, cross-border fund flows have been made easier by globalisation giving investors the opportunity to diversify their holdings outside of their home markets. But issues like market volatility, cybersecurity threats and regulatory complexity continue to be major worries. According to the findings regulatory frameworks need to change to protect investors in a financial environment that is becoming more interconnected, even while digital innovation has increased accessibility and efficiency. The impact of globalisation and digital innovation on the development of the contemporary equity mutual fund market is examined in this paper. The advantages and disadvantages of technology-driven investment techniques are critically examined and the future of accessibility to digital mutual funds is evaluated. Financial markets have become more accessible due to digital change but international regulatory frameworks are still desperately needed to handle new issues and safeguard investors. This paper evaluates the future implications of developing technologies in the mutual fund sector and summaries the body of research on the digital transformation of investing in mutual funds. This report offers insights into how technology is changing the role of investing in mutual funds and what that means for investors, financial institutions and regulators by examining recent developments and trends.

Keywords: Mutual Funds, cyber security, globalization, robo-advisors and block-chain

Introduction

When it comes to financial decision-making, robo-advisory services are becoming more popular. Almost everything in our fast-paced, digital world is moving towards automation including digital transactions, online shopping, online taxi services, net-banking platforms, and more (Singh and Kaur, 2017). By considering their individual financial objectives, risk tolerance, financial circumstances and robo-advisors help investors make investing decisions. Artificial intelligence and mathematical algorithms are expected to be used by robo-advisors to deliver services that are on par with or even superior to those of human advisors.(Nguyen, T. P. L.2023). The financial services industry's future is being shaped by financial technologies or FinTech. The financial services sector is now more productive, efficient and able to propel the economy forward due to growing digitization(Kishore Kumar Das, S. A.,2020). The fields of economics and finance, or EcoFin for short, have grown more dynamic and intertwined in recent decades because to developments in data science and general artificial intelligence (AIDS) (Ajay Agrawal et al., 2019). In order to handle the several sectors and difficulties for smart EcoFin and FinTech, AI could play special, indispensable, and important roles (Yves Hilpisch, 2020).Dynamic price fluctuations and their chaotic behaviour have made price prediction more difficult, and the stock market's highly non-linear, dynamic, and complex domain knowledge has made it harder for investors to make timely investment decisions.(Esfahanipour and Aghamiri 2010; KKnill et al. 2012). The growth of the internet and online trading platforms has attracted millions of small individual investors to the stock market, which has grown to be a significant global investment activity (Tsai and Wang, 2009). They define digital innovation as "the use of digital technology during the process of innovating" and claim that the ensuing innovation has fundamentally altered the structure and creation of services and products, opening up new avenues for value creation and appropriation.

"The creation of (and consequent change in) market offerings, business processes, or models that result from the use of digital technology" is how the authors define digital innovation, which they refer to as a socio-technical phenomenon. In other words, new ideas and their development, diffusion, or assimilation are inherently influenced by digital technology and related digitising processes (p. 224). (ET.AL, Axel Hund, 2019).

Stimulating economic growth is a more important function of the financial sector in emerging countries. One of the main elements of economic development is the growth of a nation's financial system. The progress of a country's many economic entities is referred to as its economic development. (2019, Mr. Aniket Khatri)

Before 1991, India's financial and economic situation was not particularly promising. poor GDP, high unemployment, high inflation, poor savings, high interest rates, low foreign exchange reserves, and other issues plagued the Indian economy during the period. Following India's 1991 request for financial aid from the IMF, the country was subject to a number of requirements before the aid was approved.

Under pressure from the IMF, India agreed to these limits, which served as the impetus for the LPG process, a set of economic reforms. The outcome of the 1991 LPG procedure is now more obvious. India's economy is currently one of the fastest expanding in the world. Economic progress is financed by the financial market. People's savings are converted into investments through the financial market. The financial markets in India are becoming increasingly institutionalised. The role of mutual funds, local institutions, and foreign investors has increased. Bank rates are now lower than the rate of inflation.

Consequently, it is not a good idea to keep a lot of money in a bank because, in actual terms, money loses value with time. Investing the funds in the stock market is one of the choices. However, the average investor lacks the knowledge and skills necessary to comprehend the intricacies of share price movement in the stock market. Mutual funds can help them out in this situation. Mutual funds were created to address these kinds of problems. Mutual funds will play a bigger part in Indian markets as well. As a result, mutual funds will be preferred by regular investors.

Mutual funds are expected to be one of the main tools for saving and building wealth in the years to come, according to a survey. (Mishra & Rao, 2007). Currently, the mutual fund industry in India is still in its infancy. In Belgium, mutual funds were first introduced in 1822. France and Great Britain followed suit shortly after. The Unit Trust of India was founded in 1963 as a result of the combined efforts of the Reserve Bank of India and the Government of India, marking the beginning of the mutual fund industry in India.

A mutual fund is a sort of collective investment vehicle that buys stocks, bonds, government securities and money market instruments by pooling the capital of multiple people(Krishna,Y.R..et. al,2017). Professionl manage the Asset Under Management (AUM) of the mutual fund.

Expert financial advisors compile comprehensive data regarding a client's situation, objectives, and risk tolerance. The adviser will next determine and suggest various financial product portfolios that are appropriate for the client based on this information. Robo-adviser services, on the other hand, offer financial advice with little assistance from humans.

The ways in which robo-advisors, blockchain, fintech platforms and artificial intelligence (AI) have transformed mutual fund investment

1. Machine Learning and Predictive Analytics

Data-Driven Investment Strategies using Machine Learning and Predictive Analytics: AI forecasts mutual fund performance by analysing past market trends using predictive models (Scardovi, 2017).

Sentiment Analysis: To evaluate investor sentiment and market trends, artificial intelligence (AI) technologies trawl news sources, social media, and financial data (Nylén & Holmström, 2015).

Anomaly detection: Proactive investment methods are made possible by machine learning's ability to spot underperforming assets and market inefficiencies (Hund et al., 2021).

2.Automated Portfolio Management

Algorithmic Asset Allocation in Automated Portfolio Management: AI-based systems distribute investments according to market conditions, financial objectives, and risk tolerance (Di Vaio et al., 2021).

Dynamic Rebalancing: AI keeps an eye on portfolios and adjusts them in response to market swings, maximising profits

and lowering risks (Khin & Ho, 2019).

3. **Personalisation and Robo-Advisory**

Personalised Investment Suggestions: Using AI, robo-advisors create investment plans according to user demographics, risk tolerance, and preferences (Chawla, 2014).

Automated Financial Planning: AI-driven advisors offer financial advice according to future objectives and expenditure patterns (Bhale et al., 2020).

3.Improving Financial Literacy and Inclusion:

AI Chatbots for Investor Education: By filling in knowledge gaps, robo-advisors assist investors in comprehending financial concepts (Palesta & Paramita, 2023).

Fintech for Financial Inclusion: AI-powered systems give underbanked people better access to mutual funds (Mutamimah et al., 2023).

Impact of digital transformation on mutual fund

In a globalised economy, digital transformation has greatly increased mutual fund accessibility by utilising technology to improve convenience, lower costs, and boost investor participation. Some of the main effects include:

Cost Efficiency : Automation and online transactions lower operating costs, resulting in lower expense ratios and making investments more affordable for retail investors

Wider Reach & Inclusivity: Digital platforms and mobile apps allow investors from various regions to access mutual funds, breaking geographical barriers and promoting financial inclusion.

Personalised Investment Solutions: Robo-advisors and AI-driven financial tools offer customised investment recommendations based on risk profiles, making mutual fund investing more user-friendly.

Enhanced Transparency: Real-time data, AI-driven analytics, and blockchain-based solutions improve fund performance tracking, risk assessment, and investor confidence.

Regulatory & Security Enhancements: Digital transformation makes it easier to comply with international financial regulations and improves cybersecurity, ensuring safer investment environments.

Risks Associated with Financial Technology (FinTech) Use:

Cyber security Issues

FinTech platforms are particularly vulnerable to assaults that jeopardise investor information and financial assets, such as data breaches, hacking, phishing, and malware.

Theft of Identity and Fraud

Online financial services and digital transactions raise the possibility of fraud, including Ponzi schemes, illegal transactions, and identity theft.

Challenges with Regulation and Compliance

FinTech frequently develops more quickly than regulatory frameworks, which exposes users to unregulated financial products, creates compliance gaps, and may pose legal hazards.

System Outages and Technical Issues

Transaction failures, fund lockouts, and money losses can result from technical issues, server crashes, and software flaws.

AI Bias and Market Manipulation

Algorithmic biases in AI-driven financial instruments could result in unfair loan judgements, poor investing decisions, or market manipulation by skilled traders.

An excessive dependence on digital platforms

Those who lack internet access or are not tech-savvy may become financially excluded as a result of an increased reliance on digital investing platforms.

Risks of Decentralised Finance (DeFi)

DeFi presents dangers such smart contract weaknesses, lack of investor protection, and regulatory ambiguity even while it provides greater financial inclusion.

Conclusion

Investment Behaviour and Financial Literacy

Investment decisions are greatly influenced by financial literacy, with better informed investors making wiser selections (Palesta & Paramita; Dr. J. Murthy et al.).Due to a lack of financial knowledge, many people—women in particular—cannot make sound financial decisions even when they have a source of income (Agrawal & Kumar).Younger investors and IT workers exhibit greater financial literacy, which affects their risk tolerance and investing choices (Dr. J. Murthy et al.).

Technology and Financial Inclusion's Role

According to Mutamimah et al. and Krishna Kumar Dubey et al., financial inclusion improves accessibility by mediating the relationship between mutual fund decisions, fintech, and financial literacy. Fintech does not directly affect investing

decisions, but it does improve accessibility, reduce costs, and streamline transactions (Palesta & Paramita; Mutamimah et al.).Investor education is lacking, as evidenced by the low level of awareness regarding systematic investment plans(SIPs) (Bhale et al.)

Investor Preferences and Demographic Information

While wealth and gender have little bearing on investment decisions, age, marital status, and personal networks do (Chawla; Bhale et al.).High-income groups are more likely to invest in mutual funds, whereas younger investors place a higher value on tax advantages and minimal fees (Chawla; Agrawal & Kumar).

Performance and Durability of Mutual Funds

According to Grinblatt and Titman and Babbar and Sehgal, mutual funds exhibit performance persistence, with successful funds likely to continue to do so. Due to diseconomies of scale, smaller funds have greater risk-adjusted returns, and more investors are drawn to older funds with solid performance histories (Babbar & Sehgal).Compared to US funds, emerging market (EM) funds have more persistence and more chances for active managers to produce abnormal returns (Huij & Post).

Strategies for Investing and Risk-Return Analysis

Contrary to accepted ideas of finance, investors frequently aim for large returns at low risk (Chawla).When investing in mutual funds, short- to medium-term strategies yield higher returns than long-term strategies (Dr. J. Murthy et al.).The "hot-hands effect" (Grinblatt & Titman; Huij & Post) is supported by the fact that top-ranked funds regularly produce abnormal returns, demonstrating the presence of fund management expertise.

References

Singh, I., & Kaur, N. (2017). Wealth management through robo advisory. *International Journal of Research-Granthaalayah*, *5*(6), 33-43.

Nguyen, T. P. L., Chew, L. W., Muthaiyah, S., Teh, B. H., & Ong, T. S. (2023). Factors influencing acceptance of Robo-Advisors for wealth management in Malaysia. *Cogent Engineering*, *10*(1), 2188992.

Kishore Kumar Das, S. A. (2020). The role of digital technologies on growth of mutual funds industry: An impact study. *International Journal Of Research In Business And Social Science*, *9*(2), 171-176.

Ajay Agrawal, Joshua Gans, and Avi Goldfarb (Eds.). 2019. *The Economics of Artificial Intelligence: An Agenda*. The University of Chicago Press.

Longbing Cao. 2017. Data Science: A Comprehensive Overview. *ACM Comput. Surv.* 50, 3 (2017), 1–42. Longbing Cao. 2018. *Data Science Thinking: The Next Scientific, Technological and Economic Revolution*. Springer.

Yves Hilpisch. 2020. *Artificial Intelligence in Finance*. OReilly

Lukas Ryll, Mary Emma Barton, and et al. 2020. Transforming Paradigms: A Global AI in Financial Services Survey. arXiv:http://dx.doi.org/10.2139/ssrn.3532038

Liu, Fajiang, and Jun Wang. 2012. Fluctuation prediction of stock market index by Legendre neural network with random time strength function. *Neurocomputing* 83: 12–21.

Patalay, S., and M. R. Bandlamudi. 2020. Stock price prediction and portfolio selection using artificial intelligence. *Asia Pacific Journal of Information Systems* 30: 31–52

Tsai, C.-F. and Wang, S.-P. (2009). Stock price forecasting by hybrid machine learning techniques. Proceedings of the International MultiConference of Engineers and Computer Scientists, 1.

Hund, A., Wagner, H. T., Beimborn, D., & Weitzel, T. (2021). Digital innovation: Review and novel perspective. *The Journal of Strategic Information Systems*, *30*(4), 101695.

Khatri, M. A. MUTUAL FUNDS: A HISTORICAL REVIEW OF THE GIANT MARKET INSTRUMENT.

Dr.Anju Gupta
Associate Professor,
DAV Centenary College, Faridabad
Ms. Sonia Gupta
Assistant Professor,
DAV Centenary College, Faridabad

38

SIGNIFICANCE OF THE KNOWLEDGE OF INDIVIDUAL DIFFERENCES

Prof. Raj Kumari Singh

Abstract:

Individual Differences happen to be the characteristics and boon of Nature. Generally, all the person's look the same apparently, but it is observed after careful scrutiny that invariably these exists some difference among them. Nobody is found look alike the other in physique, mental ability and virtues. Someone is mathematically strong while another is perfect in drawing and Arts. Nature and environment play significant role in this type of differences. Heredity and environment are foundation stones for individual differences obtained by qualities inherited from biological parents. It is godly gift that everybody has privilege of his unique characteristics which rank him as a different identity.The man has layed his hands upon the.The scientific study of individual difference and went deeper to locate the cause behind individual differences and psychologists tried find the root cause of the problem. In the beginning, the person of the stature of Sir Francis Galton took interest while dwelling into the study of Heredity in 19th Century. Time passed by and in the beginning of 20th Century, noted Scientists namely Pearson Catell and Termen etc along with other scientists worked on the problem systematically. Consequently, taking into cognizance of the study educationist developed the strategy for education. These psychologists encouraged the child centered education by which the proper education might be arranged for the children after studying their age intelligence, interest and the ability, physical mental and moral and social progress of each child can be done as per the individual differences. Noted-educationist B.F Skinner said "There is special period for the development of each possibility of a child. This period is different for the different people,if it is not tried to develop this with in proper time it is destroyed" So it is imperative for the development of personality that-education should be arranged according individual differences.

Key words: Individual differences, Characteristics, Nature, Apparently, Physique.

Introduction

Individual differences are the charactersties and boons of Mother Nature. Generally, all the persons look the same apparently, but it is observed after careful scrutiny that invariably there exists some individual differences among them it is observed after difference among them. Nobody is found look alike the other in physique. mental ability and virtues. Someone is mathematically Strong while another is perfect in drawing and arts. Nature and environment play significant role in this type of differences. Heredity and environment are the foundation stones for individual differences obtained by qualities inherited from biological parents. It is a Godly gift that everybody has privilege of his unique characteristics, which rank him as a different identity. The man has layed his hands upon the scientific Study of individual difference and went deeper to locate the cause behind individual differences and psychologists tried to find the root cause of the problem. In the beginning the person of the stature of Sir Frances Galton took interest while dwelling into The study of Heredity in19" Century. Time passed by and in the beginning of 20 "Century noted scientists namely Pearson, Catell and Termen etc. along with other scientist namely Termen worked on the problem systematically. Consequently, taking into the cognizance of the study, educationists developed the Strategy for education These psychologists encouraged the child centred education by which the proper education might be arranged for the children after studying their age intelligence, interest and ability Physical, mental and morale and social progress of each child can be done as per the individual differences Noted educationist B.F. Skinner said, There is special period for the development of each possibility of a child This period is different for different people if it is not tried to develop this within proper time it is destroyed So it is imperative for The development of personality that education should be arranged according to individual differences.

Nature of Individual Differences: - IIndividual differences are the differences of one man from the other in colour,

physique ,special ability, interest, nature, achievement and other traits of man. There is no person in this cosmos which is completely like the other. Even the similarity is not visible between two sons of one parent. In The field of Education even from the times immemorial, individual differences are marked on the basis of mental ability. by which they have more or less difference. As per the study of Skinner, Today, we think that in the individual difference only such aspects of whole personality should be included which can be measured. It is identified from the definition of Skinner that all the aspects of personality come under the individual differences which can be measured. Whichever aspects of men are included under the individual differences after identifying them the nature of individual differences is identified. Measurable differences have been shown to exist in physical size and shape, physiological functions, motor capabilities, intelligence achievement and knowledge interests, attitude and personality traits are categorised under immeasurable functions.

Educational psychology is pertaining to students. It is imperative to study it from the educational point of view. Children of distinctive capabilities and prudence are found in the class. Differences are found in their personalities, which affect their education, and personal differences are found among them as well, today attention is not only paid on the differences related to acquiring knowledge or subject ability, but these whole personalities are studied after considering their individual differences of their physical, moral, emotional and social characteristics. It is identified from the above option that from the educational point of view, individual difference is related to all those capabilities and traits by which personality is developed and constructed.

The basis of Individual Differences: TThe significant basis of individual differences are scheduled as under.

1 Heredity

2 Environment.

Heredity: Heredity is a trait that comes to children by their parents and other ancestors which includes physical, mental and Practical virtues. Affinity and dissimilarities are visualised upon the tarmac of it, Heredity is the significant basis of individual differences. Due to Heredity, physical and mental differences are found.

Causes of individual Differences.

1. Heredity: The important basis of individual differences is Heredity. Psychologists like Galton, Pearson Turman, Mangual Binet etc. have confirmed it. Heredity is the important of the Cause physical, mental and conducts characteristics of man.
2. Environment. Environment is the second cause of individual of difference. Under the environment, man is affected by the to environment family, social, geographical and cultural environment According is that he has physique, mental development, living behaviours conduct and thinking.
3. Age and intelligence: The physical mental and emotional development of child is done according to his age. So the difference is seen in the child of different age. Intelligence is accepted as the innate capability.
4. Health: Individual differences is found due to physical Health. Some are healthy and powerful. Some people are weak and ill. Thus, difference is found in physical health and working capability of them.
5. Caste, Race and Nation
6. Education and Economical Condition
7. Sex difference
8. Maturity
9. Motor ability
10. Background
11. Effect over mental development
12. Emotional effect
13. Special abilities: Everyone has special abilities besides common abilities These mental abilities are pertaing to mental artistic, personality related and motor abilities. Everyone cannot do same work.
14. Acquiring power it is observed that acquiring power is found more in some or less in some.
15. Personality: Personality is the sum of all Traits of the man. Everyone has physical mental and emotional and talented traits different from others. From The physical point of view: beautiful,ugly, fatty-Thin, soft spoken, humble, peace lower, fighting over.

Individual Difference:-

upon the basis of weight, physical health, wealth height dwarf, Longman, some are fair some are ugly.

Importance of the knowledge of Individual Difference: Modern psychologists give importance to individual differences. Often there are intelligent and dull minded students except common minded students in every class, Class education is good for the children of common intelligence. Dull minded and intelligent students don't take advantage of it .Because everyone is educated by the same method generally. There is no advantage of giving education to all Students by one method.

Keeping in View the importance of individual differences, following

suggestions are made:-

A. Limited size of class: The number of students should not be more in a class. Ideal size is up to 25 students in a class.

B. Division of students: Students should be divided in homogeneous groups on the basis of their individual differences in each class.

C. Syllabus construction: Keeping in mind interest, intellectual level, aptitude, tendency and need of students and according to individual differences, syllabus should be flexible

D. Selection of teaching method: Teaching methods should be used on the basis of individual differences. It is unpsychological to teach all students by one method.

E. Arrangement of Individual Education: In the modern educational world Various types of educational method are invented for giving personal-education like

1. Dalton plan
2. Project plan
3. Montessori Method
4. Kinder garten
5. Winnetia Plan.

F. Educational Direction: A teacher can give direction to students after getting the information of individual differences. Teacher can tell them that which subjects they can choose in special abilities, in which the work of craft, wood and leather and the education of other techniques should be arranged.

References:

1. Chauhan, Rita, Educational Psychology and Statistics, Agrawal Publications, Agra.
2. Kulshrestha, S.P. Educational Psychology, R. Lall Book Depot, Meerut – 250001
3. Manav, R.N. Advanced Educational Psychology, R. Lall Book Depot, Meerut 250001-
4. Pachori, G. Psychological Foundations of Education R. Lall Book Depot, Meerut, 250001
5. Pandey, R.S. Educational Psychology, R. Lall Book Depot 5 Near Govt. Inter college Meerut -250001
6. Panda, P.K. Perspectives of Educational Psychology, Agrawal Publications, Agra.
7. Saraswat, Malti. Educational Psychology, Alok Publication, Lucknow.
8. Singh, A.K. Educational Psychology, Bharti Bhavan Publishers, New Delhi'
9. Soti, S.C, Educational Psychology, Evaluation and Statistics, R. Lall, Book Depot, Meerut-250001

Internet Sources:

https://www.tnteu.ac.in

https://mkuniversely, ac. In

https://www.research gate net

https://dokumen.pub

https://books.google.com

Prof. Raj Kumari Singh

Department of Education

IFTM University, Moradabad

Email Id :- drrksingh@iftmuniversity.ac.in

Digital Storytelling in Tourism: Engaging Travelers with AI and Social Media

39

Dr. Sarika Saini, Dr. Lalita Dhingra

Abstract:

In the digital age, storytelling has become a powerful tool for tourism promotion, with artificial intelligence (AI) and social media playing a pivotal role in engaging travelers. Digital storytelling combines immersive visuals, interactive content, and AI-driven personalization to create compelling narratives that inspire and influence travel decisions. AI-powered tools, such as chatbots, recommendation algorithms, and sentiment analysis, enabletourism brands to tailor content based on user preferences, enhancing engagement and customer experience. Meanwhile, social media platforms amplify storytelling by leveraging user-generated content, influencer marketing, and real-time interactions. This paper explores how AI and social media are reshaping tourism promotion through digital storytelling, examining their impact on consumer behavior, brand visibility, and destination marketing strategies. By integrating AI-driven insights with creative storytelling techniques, the tourism industry can foster deeper emotional connections with travelers, ultimately driving tourism growth and innovation. Digital storytelling has emerged as a transformative tool in tourism promotion, combining artificial intelligence (AI) and social media to create immersive, engaging, and personalized travel experiences. AI-driven content generation, sentiment analysis, and recommendation algorithms enable brands to craft compelling narratives tailored to individual travelers. Meanwhile, social media platforms amplify these stories through user-generated content, influencer marketing, and interactive campaigns, shaping traveler perceptions and decision-making. This paper explores how AI and social media revolutionize digital storytelling in tourism, enhancing customer engagement, destination branding, and the overall travel experience. Additionally, it examines the challenges and future opportunities of integrating AI-driven storytelling techniques with evolving digital media trends.

Keywords:AI-powered tools, Digital storytelling, Brand visibility, Destination marketing, Tourism growth, Social media

Introduction

Artificial Intelligence (AI) has revolutionized various industries, including tourism, by enhancing customer engagement, optimizing services, and personalizing experiences. This paper explores the role of AI in tourism engagement, focusing on chatbots, recommendation systems, sentiment analysis, augmented reality (AR), and predictive analytics. It examines how AI-driven tools improve customer interaction, boost operational efficiency, and enhance traveler satisfaction. The rapid advancement of technology has significantly influenced the tourism sector, with AI and social media emerging as game-changers in destination marketing and traveler engagement. As travelers increasingly rely on digital platforms for travel inspiration, planning, and booking, AI-driven tools and social media campaigns have become essential in shaping their decisions. This paper examines how these technologies enhance tourism promotion, improve customer experiences, and influence traveler behavior.

In the digital era, artificial intelligence (AI) and social media have revolutionized the tourismindustry by transforming how destinations engage with travelers. AI-driven technologies, such as personalized recommendations, chatbots, and predictive analytics, enhance customerexperience by offering tailored travel suggestions and real-time assistance. Meanwhile, social media platforms serve as powerful marketing tools, leveraging influencer collaborations, user-generated content, and targeted advertising to inspire and inform potential tourists. This paper explores the impact of AI and social media in tourism promotion, discussing their benefits, challenges, and future potential in fostering deeper traveler engagement and driving the global tourism industry forward. The rapid advancement of technology has significantly influenced the tourism sector, with AI and social media emerging as game-changers in destination marketing and traveler engagement. As travelers

increasingly rely on digital platforms for travel inspiration, planning, and booking, AI-driven tools and social mediacampaigns have become essential in shaping their decisions. This paper examines how these technologies enhance tourism promotion, improve customer experiences, and influence traveler behavior.

The Role of AI in Tourism Engagement

AI has transformed the tourism industry by offering data-driven insights and automation to enhance user experience. The following AI applications play a crucial role in engaging travelers:

• Personalized Recommendations: AI analyzes traveler preferences, search history, and behavior to suggest destinations, accommodations, and activities tailored to individual needs.

• Chatbots and Virtual Assistants: AI-powered chatbots provide instant responses to traveler inquiries, helping with bookings, itinerary planning, and real-time customer support.

• Predictive Analytics: AI forecasts travel trends, weather conditions, and tourist influx to help businesses and travelers make informed decisions.

• Automated Content Creation: AI generates personalized travel content, including itineraries, blogs, and social media posts, enhancing marketing strategies.

• Facial Recognition Technology: AI-driven facial recognition simplifies check-ins, enhances security, and improves customer experience at hotels and airports.

• Sentiment Analysis: AI evaluates social media discussions and traveler feedback to help tourism businesses refine their offerings.

The Influence of Social Media on Traveler Engagement Social media platforms like Instagram, Facebook, YouTube, and TikTok play a significant role in inspiring and engaging travelers. Their impact on tourism promotion includes:

• Influencer Marketing: Travel influencers and bloggers create engaging content that shapes traveler perceptions and encourages bookings.

• User-Generated Content (UGC): Tourists share their experiences through reviews, photos, and videos, providing authentic insights that influence potential travelers.

• Targeted Advertising: Social media platforms use AI-driven algorithms to display personalized travel ads, reaching specific audiences based on their interests and behaviors.

• Interactive Campaigns: Destination marketing organizations (DMOs) engage travelers through contests, live Q&A sessions, and virtual tours to enhance user participation.

• Social Listening: AI-powered analytics track traveler sentiment and trends, enabling brands to tailor marketing strategies in real-time.

• Live Streaming and Real-Time Engagement: Travel companies utilize live video features to showcase destinations, host virtual tours, and interact with audiences instantly.

Challenges and Limitations

Despite its benefits, the integration of AI and social media in tourism comes with challenges:

• Privacy Concerns: AI-driven personalization requires data collection, raising concerns about data security and user privacy.

• Misinformation and Fake Reviews: Social media can spread misleading information, affecting traveler trust and decision-making.

• Over-Reliance on Automation: While AI improves efficiency, excessive automation may lead to reduced human interaction and a loss of personalized service.

• Algorithm Bias: AI algorithms may unintentionally favor certain destinations or demographics, limiting diverse travel experiences.

• Digital Fatigue: Constant exposure to social media promotions may overwhelm travelers, leading to disengagement.

• Dependence on Internet Connectivity: AI-driven services and social media engagement require stable internet access, which may not be available in remote travel destinations.

Future Prospects

The future of AI and social media in tourism looks promising, with continuous advancements in technology set to enhance traveler engagement. Potential developments include:

• AI-Powered Virtual Reality (VR) and Augmented Reality (AR): Offering immersive travel previews to help travelers make informed choices.

• Voice Search and AI Assistants: Enhancing travel planning through smart voice commands and AI-driven itinerary suggestions.

• Blockchain for Secure Transactions: Ensuring transparency and security in travel bookings and transactions.

• Enhanced Personalization: AI refining algorithms to deliver hyper-personalized travel experiences based on real-time data.

• AI-Integrated Smart Travel Assistants: Wearable AI devices providing real-timetravel updates, language translation, and safety alerts.

• Automated Influencer Collaborations: AI-driven influencer matching systemsconnecting travel brands with the most suitable content creators.

Conclusion

AI and social media have revolutionized tourism promotion by providing personalized, engaging, and data-driven experiences for travelers. While these technologies offer numerous advantages, challenges such as privacy concerns and misinformation must be addressed to ensure ethical and effective implementation. As innovations continue, the tourism industry must adapt to emerging trends, leveraging AI and social media to create more immersive, efficient, and engaging travel experiences. The integration of AI-driven insights, automated marketing strategies, and social media interactions will define the future of tourism promotion, making travel experiences more dynamic, accessible, and memorable.

References

• Buhalis, D., & Foerste, M. (2015). SoCoMo marketing for travel and tourism: Empowering co-creation of value. Journal of Destination Marketing & Management, 4(3), 151-161. https://doi.org/10.1016/j.jdmm.2015.04.003

• Gretzel, U., Sigala, M., Xiang, Z., & Koo, C. (2015). Smart tourism: Foundations and developments. Electronic Markets, 25(3), 179-188. https://doi.org/10.1007/s12525- 015-0196-8

• Kaplan, A. M., & Haenlein, M. (2010). Users of the world, unite! The challenges and opportunities of social media. Business Horizons, 53(1), 59-68. https://doi.org/10.1016/j.bushor.2009.09.003

• Leung, D., Law, R., Van Hoof, H., & Buhalis, D. (2013). Social media in tourism and hospitality: A literature review. Journal of Travel & Tourism Marketing, 30(1-2), 3-22. https://doi.org/10.1080/10548408.2013.750919

• Li, J., Xu, L., Tang, L., Wang, S., & Li, L. (2018). Big data in tourism research: A literature review. Tourism Management, 68, 301-323. https://doi.org/10.1016/j.tourman.2018.03.009

• Murphy, H. C., Centeno Gil, E., & Holyoak, N. (2017). Artificial intelligence in tourism and hospitality consumer behavior research: Emerging trends and future directions. Journal of Hospitality and Tourism Technology, 8(3), 405-420. https://doi.org/10.1108/JHTT-12-2016-0080

• Xiang, Z., Magnini, V. P., & Fesenmaier, D. R. (2015). Information technology and consumer behavior in travel and tourism: Insights from travel planning using the internet. Journal of Retailing and Consumer Services, 22, 244-249. https://doi.org/10.1016/j.jretconser.2014.08.005

• World Travel & Tourism Council. (2021). Travel & tourism economic impact 2021. Retrieved from https://wttc.org

• Statista. (2023). Impact of social media on travel decisions worldwide. Retrieved from https://www.statista.com

• Sigala, M. (2018). New technologies in tourism: From multi-disciplinary research to the research agenda. Tourism Management Perspectives, 25, 166 181.https:// doi.org/ 10.1016/ j.tmp. 2017.11.003

Dr. Sarika Saini
Assistant Prof.
DAV Centenary College
Faridabad
sarika_khushi@yahoo.co.in

Dr. Lalita Dhingra
Assistant Prof.
DAV Centenary College
Faridabad
lalitadhingra16@gmail.com

Social Exclusion and Schooling in India

40

Dr. ShwetaTripathi

Abstract:

Education is a social process in a democratic society which help people to live a happy and comfortable life as an individual and as well as a society. Education can also be used as a platform and potential instrument and a process as well by which cultural heritage, ethos and ethics is transmitted from one generation to other. Education is a significant means for effecting social, economic and political inclusion and also integration of those people who are amongst the 'excluded lot' and do not form part of the main stream of society According to Dr.Ambedkar's philosophy the concept of respect, fundamental rights, justice, social progress, better living,freedom, social security, human equality, gender respect and tolerance, dignity of individuals, democracy and welfare of the poor are important and pressing.

Most of the discriminatory social practices are deeply embedded with economic status. He always advocated and stressed that students from excluded class should be taught science and technology, as other streams are not so important. Further, it is almost impossible to disentangle children's non-attendance at school from issues of child labour and poverty. Still there are many issues which have to be taken care of.

Need is to rethink and redesign the methods and methodologies. Drastic changes are needed to mix and match the social fabric. The challenge is larger than that of the education system. However, the structural obstacles are likely to become less formidable as the country makes progress to become a modern and progressive nation, over coming poverty and gross inequities and playing its role as a leader among nations, both regionally and globally.

Education is a social process in a democratic society which help people to live a happy and comfortable life as an individual and as well as a society. Education can also be used as a platform and potential instrument and a process as well by which cultural heritage, ethos and ethics is trans mitted from one generation to other. Education is a significant means for effecting social, economic and political inclusion and also integration of those people who area mongst the' excluded lot' and do not form part of the main stream of society. An increase in educational facilities resulting in an increased levelof education forms a precondition for sustained economic development in both developed as well as developing economies.

Dr. Bhim Rao Ambedkar,"Champion of Social Justice" was one of the pioneers of social justice in India. Indeed he was a man of vision and provided the new concept of dimension for justice. He always advocated for brotherhood and fraternity. He was a victim of social injustice, faced many difficulties. He took it as a challenge and continuously fought and raised his voice against it and gave opinion and views openly.

Education is something, which ought to be brought within the reach of every one. He strongly felt that education has a great role to play as an instrument for socio-economicem powerment.Undeniableroleof'Education'inthebuildingofhuma ncharacterandconsciousness, Ambedkar always stressed on it and even used"Educate" as the first word of his famous slogan. Only an educated person can understand his class interests and bring about class unity. Education propels a person on the path of struggle. Dr Ambedkar said, "Education is what makes a person fearless, teaches him the lesson of unity, makes him aware of his rights and inspires him to struggle for his rights." He believed that education is a movement. If it does not fulfill its objectives, itis useless. Dr Ambedkar unambiguously stated that an education that does not make a person capable,that does not teach him equality and morality, is not true education. True education cradles humanity,generates sources of livelihood, imparts wisdom and imbibe us with egalitarianism. True educationmakes society alive. For most of us who are born and live in India, social inequality and exclusion are facts of life. We see beggars in the streets and on railway platforms. We see young children labour as domestic workers, construction helpers, cleaners and helpers in streetside restaurants (dhabas) andtea-shops.We are not surprised at the sight of small

children, who work as domestic workers in middle class urban homes, carrying the school bags of older children to school. It does not immediately strike USA sun just that some children are denied schooling. Some of us read about caste discrimination against children in schools; some of us face it. Likewise, news reports about violence against women and pre judice aga in st minority groups and the differently able are part of our every day live. This every day ness of social in equality and exclusion of ten make them appear in evitable, almost natural. If we do some times recognise that inequality and exclusion are not inevitable, we often think of them as being' deserved' or 'justified 'in some sense. Perhaps the poor and marginalise dare where they are because they are lacking inability, or haven't tried hard enough to improve their situation? We thus tend to blame them for their own plight – if only they worked harder or were more intelligent, they would n'tbe where they are.

The National Policy on Education (NPE-1986) envisaged a National System of Education with emphasison universalisationofeducation.TheconceptofNationalSystemofE ducation implies that all the students irrespective of their caste, creed, economic status, location or sex have access to education of comparable quality.

Objectives of Education in Ambedkar'sView:

Ambedkar's socio-philosophical views rested on the bedrock of egalitarianism. Education is the only tool through which one can fight for equality, fraternity, freedom, establish justice and fear lessness in society. Human dignity and self respect were central to his social philosophy. He was deeply influenced by Buddhist philosophy and ad vocated development of morality in all people He wanted to use education to He wanted to replace the birth-based society with a value-based one. It goes without saying that these moral values can be promoted only through education.

According to him only such objectives of education are meaningful that aid in making humans happy and prosperous and helping society progress. He was also in favour of making education relevant to employment. Education can help make society stable. Good behaviour and good conduct arise from logical reasoning and that can be acquired only through education, experience and dialogue. Ambedkar's objectives of education were the same as his social, economic and political objectives. He was a strong proponent of logical and scientific education**.**

ReligiousInstruction:

Most of the educationists have not clarified their views on religious education forthe fear of offending the religious feelings of the masses. They fear the apprehension that he may be accepted or rejected by the people. But Dr. Ambedkar was not a timid man. He took a clear-cut stand on the issue. He had alreadyemerged as the most controversial Hindu of his time. He had to face brickbats all his life but that didnotaffecthimabit.Hekeptoncallingaspade,as pade.Hesaid,"Mysocialphilosophyisamission.I havetoworkfor religious c on versions."Dr.Ambedkarhad no faith in god. He wanted to reorganize Indian society, not on the basis of religious but on the basis of liberty, equality and fraternity. Hen ever refrained from borrowing good things from different religions but he was inclined to Buddhism. He admitted that his philosophy was rooted in the teachings of Buddha. Liberty and equality were the corner stones of his philosophy but he also knew that unlimited freedom destroys equality, and perfect equality undermines freedom. Law could protect freedom and equality to an extent, but he believed it was fraternity that was the real protector of freedom and equality. For him, there was nothing better than religion to teach fraternity and the inclusion of the value off fraternity in education was imperative.

Concept of Social Exclusion:

Social exclusion refers to ways in which individuals may become cut off from full involvement in the wider society. It focus use attention on a broad range off actors that prevent individuals or groups from having opportunities open to the majority of the population. In order to live a full and active life, individuals must not only be able to feed, clothe and house themselves, but should also have access to essential goods and services such as education, health, transportation, insurance, social security, banking and even access to the police or judiciary. Social exclusion is not accidental but systematic – it is the result of structural features of society. Sen (1992) stresses lack of"capabilities" as the key component of the exclusion process. The life course processes through which they are acquired, or fail to be acquired, are not fixed in time; nor can their acquisition be judged against a fixed set of performance standards. Socially excluded individuals have been denied access to the resources (material, cultural, emotional) that

enable them to acquire capabilities. Most obviously such capabilities relate to cognitive development and educational success, but also extend to the broader spheres of health and social participation.

The degree and nature of exclusion depends largely on how social institutions like schools function and on the existing social relations among different groups. Violation from the rights and facilities is directly related to Social Inclusion. Some children are denied by the institution, society, peer group or community or sometimes even by families as the case with girls. Educational exclusion is closely associated with social exclusion, which has been explored by many other researchers (Sayeed and Soudien, 2003; Sen, 1999; Subrah manian, 2003). Most notably, social exclusion is linked with the denial of equal opportunities to different groups with different social backgrounds (De Haan, 1999; Thorat, 2003). Since education is essential if people are to access resource sand use them effectively, denial of educational opportunities definitely causes social exclusion. Asopayet.al.,(2006) write,"exclusionary processes impact in different ways to differing degrees on different groups and/or societies at particular times." Social exclusion is seen as"lackofaccessstoresources and cons equent in ability to utilize them. It is further accentuated by denial of opportunities which enhance access store sources and their utilization" (ZiyauddinandKasi,2009).

Exclusion from educational services is multidimensional; it results from a combination offactors. For example, when any individual or group is excluded, the main cause may appear to bepoverty, but other kinds of disadvantages such as social norms, cultural biases and social relations areoften strong contributory factors. Ambedkar wanted his education to reach the weakest of the weakand wanted to build a system based on liberty, equality and fraternity. His concept of Dhamma, basedon the philosophy of Buddhism, stressed moral development. He was not against British education butwanted to give it a humanistic face. He was in favour of an educational system that would producemen of reason and logic and so as a society. He wanted education to not only make a personegalitarianbuttoliberatehismindandmakehimcapable ofobjective,logicalandcritic a analysis.He believed that a common education system was essential for building a democratic and socialiststate.

He said that the curricula should be modern, based on scientific reasoning and shouldcover the modern means of production. He favoured nationalization of all means of production. Hesaid that the students should be introduced to the means of production and a socialist way of life. It isclear that Dr. Ambedkar was not in favour of an external agency imposing curricula on an educationalinstitution rather teachers concerned should design it themselves. He had a very practical approach forcurricula and said “Nothing isimmortal,everything is based on cause-effect relationship, nothing iseverlasting, everything is changeable.Things are happening continuously.” He believed in flexibleand democratic curricula, which should be put together by teachers concerned, in keeping with thedemands of the subject and the students which in turn would help students get employment andwould make them capable. Dr. Ambedkar emphasized complete and compulsory education. For him, technical education was a priority, as were scholarships for the weaker sections and higher education in general.

Constitutional Provisions for Equal Opportunity:

The Constitution of India accords, a place of high priority to education. Article 45 declares, “The State shall endeavour to provide, within a period of 10 years from the commencement of the Constitution, for free and compulsory education of all children until they complete the age of 14years”. The Constitution (Article 41) also gives guarantee for the education rights of minorities and takes care of the educational progress of the weaker sections of society. In order that nationally accepted goals of education are achieved without hurdles, by the 42nd Amendment of the Constitution the subject of education has been brought to the Concurrent List of the Constitution. Through the73rdand 74th Constitutional Amendments, Panchayati Raj Institutions (PRIs)were empowered to take required measures for the progress of elementary education.

In 1993, the Supreme Court, in a historic judgment in the case Unnikrishnan J. P. Vs Andhra Pradesh ruled that, “The citizens of the country have a fundamental right to education. The said right flows from Article 21 of the

Constitution. Thisright is, however, not an absolute right. Its contents and parameters have to be determined in the light of Articles 45 and 41. In other words, every child/ citizen of this country has a right to free education until he completes the age of 14 years. Thereafter his right to education is subject to the limits of economic capacity and development of the state. Following the above mentioned judgment of the Supreme Court both houses of the Parliament passed the Constitutional (93rd Amendment)Bill that received the President' sassenton December12,2002.

Asan affirmation of this Constitutional Amendment and addition of Article 21 A in the Constitution, as 'Right of Children to Free and Compulsory Education Bill' (RTE) on August 03, 2009 and Article 21A has been added in the Constitution making free and compulsory education a fundamental right for all the children in the age group 6-14 years . This is a great leap forward towards securing the objective of education for all(EFA).

Issues of Social Exclusion and Primary Education:

Ambed karwas concerned about those sections that had beend eprived of education for centuries. He wanted that the government to provide free and compulsory primary education to all. Ambedkar believed that literacy should be the prime objective of primary education. Ambedkar also laid stress on cleanliness, physical education and cultural development. He believed that primary education should inculcate such cultural and social values in children that would help them become part of a civilized society. Although there has been significant improvement in various aspects of primary/ elementary education in India over the years yet there are still a number of problems that need immediate attention.

School Participation of Excluded Categories Regarding Enrolment:

The backlog of those children who are unenrolled still persists. Although as a result of a sequence of nationallevelelementary education programmes like District Primary Education Programme (DPEP), Education For All (EFA), Sarva Shiksha Abhiyan (SSA).The Gross Enrolment Ratio(GER) for classes I-V (6-11years) had improved to 111.4 in 2006-07. However, here it has to be kept in mind that some children below 6years of age and above 11years of age are also enrolled in classes I-V.Simultaneously,some childrena real soen rolled in more than one school. There fore it is generally agreed that all the children of a particular age group can be truly regarded as being enrolled in a school only if gross enrolment for their stage is above 150%. Furthermore, the enrolment of children in primary schools also shows wide spread regional imbalances. Among the major States, the Gross Enrolment Ratio is the lowest for Punjab(81.3%)and Haryana (88.2%)and highest for Madhya Pradesh (150.4%).In view of the Right to Education (RTE) Act and goal of the Universalisation of Elementary Education (UEE), this backlog and disparity will have to be totally removed. Most of the discriminatory social practice sare deeply embedded with economic status. Further, it is almost impossible to disentangle children's non-attendance at school from issues of child labour and poverty. Special effort sare need edtoenroll the' hard tor each cases'.

School Participation of Excluded Categories Regarding Dropout:

Apart from universal enrolment there is a bigger problem of **high dropout rate.** A good number of students from amongst those enrolled drop out in between classes I-V before completing their primary education. In this regard, there are wide inter-state disparities. The problem of drop-outand access to schooling is more conspicuous in the educationally backward states such as Andhra Pradesh, Arunachal Pradesh, Assam, Bihar, Madhya Pradesh, Orissa, Rajasthan, U. P. and West Bengal

It is being increasingly realised that retaining the disadvantaged children enrolled in schoolsis a far more challenging task than enrolling them in schools. Around 22% children drop outinclasses Iand II.Ithas also been found thatwide spread disparities existamong dropoutrate ofschool children up to primary level and the dropout rates of SCsand STs are higher than the overalldropout rates up to primary classes at National level.

Regional Disparitiesand Equity:

There is also the problem of regional disparities and equity in the school education in India. Some states like Kerala, Maharashtra, Gujarat and Tamil Nadu have a good track record of school education

both quantitatively as well as qualitatively. At the same time there are states like Uttar Pradesh, Bihar, Madhya Pradesh, Rajasthan and Orissa where a lot of effort is needed for improvement in school education. There are also a few in which action is called for considerations of equity such as low enrolment of girls, educational progress of special need groups i.e.SCs/STs, OBCs, minorities, physically & mentally challenged children, working children, children from migratory families, children from inhospitable locations like sea coasts, deep forests, hills and desserts. Strategies are still to be framed to mainstream them in school education and tackle the problem s of Dropout /Enrollment. Many programmes have been in operation to bridge the gap andbring the children of SCs and STs to a level of educational progress on par with the rest of the society. Several special targeted incentive schemes have been initiated to benefit the children from these communities.

Reasons for Low Enrolment and Dropouts:

The school specific dropout rate includes the percentage of students leaving their primary education altogether as well as the percentage of students shifting from the particular school which is being studied, to some other school. Whilet he absolute dropout rate necessarily impl is the wastage of primary education and tends to undermine the benefits of increased enrolment, the school specific dropout rate only signifies the phenomen on of students leaving the particular school due to any reason. The school specific dropout rate is higher for boys than for girls. This situation is possibly explained by the penmen on of gender in equality prevailing in primary education in rural house holds due to longstanding social and psychological reasons and fixated mindset.Parents generally accord preference to education of boys over the education of girls and are ready to spendhigheramountofmoneyontheformer.Asaresult,theparentsareshiftingtheirsonsfromgovernment primary schools to non-government, private schools offering better quality education and better teaching-learning environment.

On other hand parents generally tend to retain their daughters in government primary schools. Since education of girls finds lower priority among the parents, who are not ready to spend much on the education of a girl child. Girls in India are in a more disadvantaged position than boys and that girls from poor, SC, ST and Muslim communities are doubly disadvantaged in every sphere of lifeincluding education.Manyhaveconcludedthatmosteducationallybackwardaregirlswhosuffereda lot and get a low quality education. (Bhatty, 1998; RamaChandran 2001, 2004).Velaskar (2005)examined the implications of the interaction between caste, class, and patriarchy for the educational access of dal it (SC)girls in Maharashtra because poor and Sc and ST children, particularly girls, often have very few options beyond getting a low-quality education in a single-room, single-teacherschool.

Even if they are mainstreamed in a school with better physical and academic facilities, they face multiple discrimination as children belonging to SC and ST families and invariably achieve less than children from other households (Duraisamy, 2004).Venkatanarayana's (2004) study in Andhra Pradesh points out that girls belonging to SC and ST groups in rural areas are the most di sad vantage din terms of education. The study also describes a more complex interaction between location, gender and caste that crucially in fluences school participation.

The same premise has been upheld by Dreze, Jean and Haris Gazdar (1996) in their study on UttarPradesh. They have concluded thata common response of parentsto thepoorfunctioning ornon- functioning of a government-run village school is to send their sons to study in other villages orinprivateschools.Butthesameresponseislesscommoninthe caseofgirls,becauseparentsareoften reluctant to allow their daughters to wander outside the village, or to pay the fees that would be necessary to secure their admission in private school.

The overall analysis of school specific dropout rate presents us with the scenario where in parents generally appear to regard government primary schools simply as providers of low quality education with poor academic achievement of students and tend to shift their children to private schools,when ever their purchasing power allows.

Gender Disparityatits High:

Usually it has been observed that girls education is never be in high demand rather its a optional one. If the case of girl in general and SC/ST/OBC girl in particular than definitely it is a double disadvantage. Gender gap can be

reduced only through active participation in school activities. Many researchers have concluded the identical. Ray (2000) also found that the chance of a child, particularly a girl, being in school or in the labor market depends on the awareness and educational level of adults in the household, along with the household size and composition and intra-house hold resource allocation. In urban areas, how ever, an overall increase in a family's economic well being can bridge the gender gap in enrolment, at least partially. It can be mini mised through educating parents, particularly mothers.

Incentives for Excluded Class: in order to address the issues mentioned above, Government has launched many schemes like a policy of Univer salisation of Elementary Education (UEE) which stressed upon in the Tenth Five Year Plan (2002-2007) with five guidelines: (i) Universal Access, (ii)Universal Enrolment, (iii) Universal Retention, (iv) Universal Achievements and (v) Equity. For theimplementation of these guidelines, the main schemes adhered to in the Tenth Five Year Plan for promoting elementary education were; Sarva Shiksha Abhiyan (SSA), District Primary Education Programme (DPEP). National Programme of Nutritional Support to Primary Education popularly known as Mid-day Meal Scheme or MDMS (which was already in operation), Teacher Education Scheme and Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya Scheme (KGBVS) which has been later merged withSarva Shiksa Abhiyan (SSA) and Shiksha Karmi Project (SKP). Many problems can be addressed if mother sare oriented to wards the education in general and of girl's education in particular.

Duraisamy's study (2004) in Tamil Nadu has shown that improving parental education, particularly that of mothers, can substantially reduce the gender gap in child schooling. Education, wealth, labor are all necessary for every individual if he is to reach free and full manhood. As a visionary, Ambedkar always stressed the need of education in general and primary education for all in particular. He was always in favor of infrastructure instead of scholarship for backward classes. Ambedkar's vision of a new social order can be summed up in the way in which hes ooften did, with the greats loganof the Frenchr evolution,“liberty, equality, fraternity.”

Conclusion:

According to Dr. Ambedkar 's philosophy the concept of respect, fundamental rights, justice, social progress, better living, freedom, social security, human equality, gender respect and tolerance, dignity of individuals, democracy and welfare of the poor are important and pressing. Caste devitalizes man. It is a process of sterilization. If we reallywant to mainstreamthe excluded class, education can act as a catalyst. A closer view suggests that there is positive correlation betweenfamily's financial and social condition and the act of school going children The first-generation learners undoubtedly need special care and sensitive handling, which is critical to break the vicious inter-generational cycle of illiteracy and poverty. In spite of various policy and programme initiatives, girls remain more likely to be excluded than their male counterparts, whatever their social origin or economic status be .

The trajectory of progress in the schooling of girls from the traditionally is advantaged social groups—theScheduled Castes and Scheduled Tribes—brings this problem in to sharp focus.

Gender discrimination invariably combines with social and economic backwardness to place girls in multiply disadvantaged situations with respect to attending school. Most of the discriminatory social practices are deeply embedded with economic status. He always advocated and stressed that students from excluded class should be taught science and technology, as other streams are not so important. Further, it is almost impossible to disentangle children's non-attendance at school from issues of child labour and poverty. Still there are many issues which have to be taken care of. It is equally important to sensitise the delivery side of education system as what is tooffer in the name of schooling, what choices are available, and how does the delivery framework function?How can it be more interesting experience for all the students?

Need is to rethink and redesign the methods and methodologies. Drastic changes are needed to mix and match the social fabric. The challenge is larger than that of the education system. However, the structural obstacles are likely to become less formidable as the country makes progress to become a modern and progressive nation, over coming poverty and gross in equities and play in gits role asa leadera

mong nations, both regionally and globally.

References:

- Bajpai, A. (2006).Right against economic exploitation: Child labour, NewDelhi:Oxford University Press.
- Bhatty, K. (1998). Educational deprivation in India: A survey of field investigations. Economic and Political Weekly, July .

Dr.ShwetaTripathi

Assistant Professor,

Deptt. Of Education

Aryavart Institute of Higher

Education,Lucknow

shwetagold@gmail.com

41

Factors Determining CO2 Emission in BRICS Economies: Panel GLS Regression Analysis

Mukesh Bala[1] and Shalini Malik[2]

Abstract

In the BRICS Association, China gobble up a great share of energy among all due to rapid industrialization and urbanization and India comes second in terms of usage of energy but its factors are different like growing population needs and making the country independent along with development, currently, relying on coal as a major source of energy despite of renewable sources, coming to Russia, enjoys large bowl of natural resources and oil and do export to others. The major question is that all we want to satisfy our energy consumers is by hook or by crook but is it morally right to let them use infinitely without knowing the consequences in the near future? Global warming, a very serious problem, we are facing and large economies in the world should think about it, if they can get benefit from energy consumption then they could also get consequences of over usage and large usage of nonrenewable energy. In this paper, BRICS nations were to know the impact of employment, gross fixed capital, gross national income, population density, agriculture, forestry, fishery (annual growth), renewable energy consumption on the dependent variable in long run, for the analysis of current work pooled OLS, fixed effect, random effect and feasible generalized least square model has been executed. Results of GLS regression illustrates that there is a positive proposition between gross domestic income and Carbon emissions, same as with agriculture, forestry and fishing and also favorable relationship with employment and gross fixed capital at 1% level of significance. Population density (MT) has effective relationship with CO2 But the variable renewable energy consumption has hostile relationship with CO2

Keywords: CO2 emission, Urbanization, renewable, global warming, employment and fishery

[1]Introduction

BRICS is an intergovernmental organization with 4 founding members, India, Brazil, China and Russia. However, it was open to other members as South Africa joined it in 2010. And from January 2024 it has included 5 new member countries, these are Egypt, Ethiopia, Iran, Saudi Arabia and UAE. The BRICS has gained much significance among other multilateral organizations like NATO, ASEAN, etc. However, the real need to make it more relevant was felt when the world's financial institutions like World Bank, International Monetary Fund were headed and ruled on the verge of some handful developed nations of western world. Its real mandate was widened by introducing a new financial function and institution i.e. New Development Bank (NDB). It has increased the opportunities for developing countries to take credit loan with low interest rates and also decreased the monopoly of some international banks to grant credit facilities. It has started its own payment settlement system to decrease the dollar- dependency. On the similar lines, it has its own basket reserve currency like that in IMF.

The bloc is continuously demanding to uphold the proposition of "common but differentiated responsibilities" to have an equitable say in climate-justice. At the same time, major and large countries like Brazil and India are contributing continuously to make efforts to bring down their carbon-emissions intensity down to certain levels. India leading the platform of International Solar Alliance (ISA) to increase the adoption rate of solar and renewable sources of energy.

An important aspect of BRICS bloc is that it has rising population with the only natural resources dependency to utilize it for their development. For example- India still plans to continue with the coal-based thermal power plant as it has millions of tons of reserve lying underground. Similarly,

Russia is one of the biggest exporters of non-renewable energy sources like natural gas and oil. Therefore, the need is to bring down the economic cost of resources with technological development and multilateral cooperation in fields like generating employment and raising standards of living and going green in other c-intensive sectors. The interconnection between economic growth and energy consumption is positive which leads to rise in carbon footprints. This approach can be smartly taken as shifting from a "traditional economy" to "circular economy". Some literature review is given in continuance The focus of this paper is on how economic factors, including inflation, population growth, and FDI, affect China's sustainable energy consumption. It draws on secondary sources and employs PP and enhanced dickey fuller stationary tests, as well as time series data from 1981 to 2019. To forecast their impact on REC consumption, four main basic components are considered: population, inflation, foreign direct investment, and economic growth. The findings indicate that SEC is positively correlated with EC, FDI, INF, and PG, and that a 1% change in EG will alter SEC by 18.9%. Additionally, the SEC will rise by 0.211 units for every unit increase in FDI, and vice versa. (Muhammad Sadiq et al. 2022). This study analyzed the role of sharing economy in promoting sustainable development. Panel data is being used from 2001 to 2020 of 20 developing countries, shows that income inequality have enough impact on the economies. It also talked about the sharing of resources & assets makes a better sustainable resource of development of any economy, this study mostly emphasis on the importance of sharing economy (Hafezali Iqbal Hussain et al. 2023). Using the instrumental variables GMM and fixed effects regression with Driscoll-Kraay standard errors, they examined the effects of electricity consumption, innovation and renewable power generation, and ICT on economic growth and, consequently, the analysis of income levels of economies. They discovered that, in addition to increasing economic growth monotonically, ICT also increases the effectiveness of financial development on growth. For an investigation of income levels, both unconditional and conditional panel quartile estimators have been employed. There is need to increase internet connectivity that led to large number of economic activities (Anaseya Haldar et al. 2023). This study looks at the association between financial development, economic expansion, and energy usage. An application of the auto-regressive distributed lag technique to co-integration findings, using yearly data from 1971 to 2009, suggests that energy consumption in India is positively influenced by the fraction of the whole population living in urban areas, while it is negatively impacted by financial development. (Mantu Kumar Mahalik & Harushikesh Mallik 2014). Using publicly available data, it demonstrated the causal link between Kenya's economic development and energy usage. It makes use of the ganger causality error correction model, and the findings imply that Kenya's energy consumption increases as the country's economy grows. Energy conservation is crucial and shouldn't have a detrimental effect on the environment or economic progress (Suasan 2012). This study discusses the effects of industrialization on the environment and offers some sustainable solutions. It focuses primarily on Puducherry industrial and environmental fixation and presents empirical research demonstrating the primary factors contributing to environmental degradation, such as the shift from rural to urban areas and rapid industrialization. It also recommends that all industrialists adopt the eco-industrial model (Rasmi Patnaik 2017). The effects of energy consumption and CO2 emissions on GDP growth and financial development in 30 sub-Saharan African nations between 1980 and 2008 are examined in this study using a panel model. The results demonstrate that energy use considerably contributes to GDP growth and financial progress in these economies, but at the expense of excessive pollution. As a result, it is advised that everyone try to increase their investment in energy-saving projects as well as in the same (Usama Al-Mulali et al. 2012). This article examines and compares the potential effects of energy conservation measures on the economies of Australia

and various Asian countries with those of New Zealand. The association between GDP and several energy disaggregate statistics (coal, natural gas, electricity, and oil) as well as the causal relationship between energy use and GDP in New Zealand are both examined. The energy–GDP link was examined using the TY technique, the ARDL approach, and typical Granger causality tests. Issues in the literature were also reviewed. We discovered evidence in our study of a unidirectional relationship between real GDP and total final energy consumption as well as a unidirectional relationship between real GDP and industrial. (k.fatai et al.2004). In 30 significant nuclear energy-consuming nations, this study examines the impact of nuclear energy use on GDP growth and CO2 emissions. Panel mode operation was conducted between 1990 and 2010. The study's findings demonstrated that while using nuclear energy has a positive long-term influence on GDP growth, it has no long-term effect on CO2 emissions. The Granger discoveries, Additionally, a causality test revealed that while nuclear energy use has a short-term negative causal relationship with CO2 emissions, it has a short-term positive causal relationship with GDP growth. The usage of nuclear energy boosts GDP development in the countries under study but has minimal effect on CO2 emissions, according to the study's conclusions (Usama al-Mulali 2014).

Data and methodology

The study is based on authentic secondary data source from World Bank data indicators of BRICS nations & climate watch for BRICS nations (Brazil, China, India, Russia, South Africa) from 1990 to 2020. Data was collected regarding carbon dioxide (MT) variable as dependent variable, gross national income per capita (annual%), agriculture, forestry and fishing, value added (annual % growth), Employment in industry (% of total employment) (modeled ILO estimate), Gross fixed capital formation (% of GDP), Renewable energy consumption (% of total final energy consumption), population density (people per sq.km of land area)

Model Specification

Present work,

Co2= f (gni, aff, emp, gfc, rec, popdnst)

Co2= carbon dioxide (million tonn), Gni= gross national income per capita (annual %), aff= agriculture, forestry and fishing, value added (annual % growth), emp= Employment in industry (% of total employment) (modeled ILO estimate), gfc= Gross fixed capital formation (% of GDP), rec= Renewable energy consumption (% of total final energy consumption), popdnst= population density (people per sq.km of land area)

Results and Discussion

Attempts have been made to know the impacts of several important variables which are using very commonly to know the growth and run any economy on the carbon emission of nations in BRICS association. Data was checked for heteroskedasticity by using Breusch-Pagan/Cook-Weisberg test. P-Value for the test was less than 0.05, rejecting null hypothesis, hence data contains heteroskedasticity. Wooldridge test for autocorrelation was executed, exhibiting that the data suffers from autocorrelation. Mean VIF for the data was less than 5 revealing no potential effect of multicollinearity. Table 1 lay out the summary statistics of the data. Mean value of CO2 is 1836.188 highest among all and renewable energy consumption mean value is 2.972847 is lowest.

Table 1 Summary Table

Number of groups	5			
Years	1990 -2020			
Variable	Mean	Standard deviation	Min	Max
CO2	1836.188	2391.965	182.27	10026.85
EMP	24.26013	4.206297	14.91631	33.56206
GFC	24.39019	8.55878	13.76179	44.51877
REC	2.972847	4.723258	3.75	52.95
AFF	2.69857	6.612514	-15.33812	14.09043
POPDNST	120.843	144.1377	8.716096	24.0073

As the data suffers from heteroskedasticity and autocorrelation, and the estimates are expected to be affected by them. An appropriate model is required to obtain appropriate results, hence GLS model was selected. Results of GLS regression illustrates that there is a positive association between gross

domestic income and Carbon emissions and same as with agriculture, forestry and fishing and also favorable relationship with employment and gross fixed capital at 1% level of significance. Population density (MT) has effective relationship with CO2 But the variable renewable energy consumption has hostile relationship with CO2 (See Table 2). These results were compared with the Pooled OLS, Fixed Effect and Random Effect model as shown in Table 2. OLS estimates suggest that there is effective relationship between employment and CO2 at 1% significant level. There is a positive proposition between gross national income (GNI), agriculture, forestry & fishing (AFF), population density (POPDNST) and gross fixed capital (GFC) with carbon dioxide (CO2). In case of renewable energy consumption (REC), there is adverse relationship with CO2. While in case of fixed effect test, shows a negative relation of gross national income at 10% significance level, and renewable energy consumption at 1% level of significance with carbon dioxide. AFF, EMP, GFC, (POPDNST) Population density has a positive relation with carbon dioxide. In the random effect test, it exhibits efficacious association of (GNI), (AFF), (EMP), (GFC), (POPDNST) with CO2 and opposite link with (REC) renewable energy consumption. There was a study that investigated the effects of electricity consumption & renewable power generation and ICT on economic growth, depicting similar results that renewable energy is positive towards GDP growth or economic growth and negative towards carbon emission (Anaseya Haldar et al. 2023). Some agricultural activities are also resulting in the carbon emissions shown in the results, having a positive link between them so we can't say that the whole agricultural sector has a positive relationship with economic growth. Employment Variable depicts a positive link with carbon emission because as the number of employed public covers the major large proportion of the population of any nation or economy, then it will lead to a large number of human activities that contribute to carbon emission. How do job losses in key industries impact the economy and greenhouse gas emissions? How does the accumulation of unproductive population, primarily in urban areas, impact attitudes, perceptions, and behavior? This piece provides an opinion on the lack of job prospects (unemployment) as a significant problem and the difficulty that both wealthy and emerging nations must overcome (Ashford et al., 2012) this study talk about the consequences of unemployment and have similar perspective to have strong relation with employment, the primary effects are seen, predictably, in sectors of the economy that depend on the climate (such as forestry, insurance, health care, agriculture, fishing, and tourism). Global employment and economic instability are impacted by climate change, and these effects go well beyond the Industries most vulnerable to it (Field, 2014).

TABLE 2: Regression Results

Lnco	OLS (Std.err.)	FE	RE	GLS
Lngni	.377609 (.1539002)	-.0667725*** (.0414597)	.0377609 (.1539002)	.0625087 (.0733566)
Lnaff	.1630899 (.1221373)	.0068302 (.0318876)	.1630899 (.1221373)	.0198006 (.0303308)
Lnemp	.8109227* (.2919564)	.760751* (.0787141)	.8109227* (.2919564)	.9741013* (.3119566)
Lngfc	2.85528 (.1684854)	.0225315 (.1058655)	2.85528* (.1684854)	1.397169* (.1821573)
Lnpopdnst	.0435885 (.0509288)	1.96356* (.1319816)	.0435885 (.0509288)	.3959402* (.0671481)
Inrec	-.4059709* (.0564808)	-.4579543* (.0671686)	-.4059709* (.0564808)	-.5985565* (.0852887)
_cons	-4.319282* (1.11184)	-1.89643 (.853986)	-4.319282* (1.11184)	-.6825799 (1.14834)

Note: * indicates significance level at 1%, ** indicates significance level at 5% and *** indicates significance level at 10%.

Figure 1 Trend of CO2 Emission in BRICS from 1990 to 2020

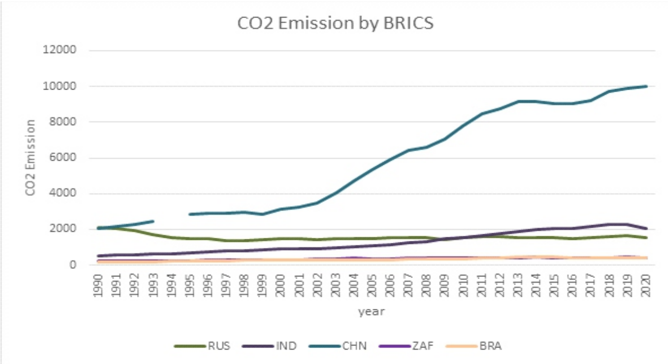

Conclusion

BRICS has a comprehensive contingent reserve arrangement which is to provide protection against global recession especially to emerging markets. This has further strengthened the Global South-South cooperation and make the world Multi-polar instead of Uni-polar.

The BRICS+ with 10 developing nations have a multi-purpose cooperation between each other. In line with this, net-zero emissions by 2050 to make sustainable and climate-friendly economic ecosystem in 26th conference of parties (COP). These contributions are important because all these nations are developing in nature and contributing to the carbon emissions consistently. The step like sharing new and critical technologies to reduce the carbon footprints at low cost is a step in right direction. It is interesting to note that all the 10 countries have coastal boundaries and facing disaster management issues like rising floods and droughts due to changing climate scenarios and for it they are helping each other by giving man and material support. The main point is to know to potential consequences of large number of carbon emission of the major countries and BRICS going to become larger organization after inclusion of other countries. To give stress to major variables which are effectively contributing in the economic growth and carbon emission as well to major BRICS nations and depicting their impacts either positive or not. By employing GLS model, the links of various variables or factors easily be seen with the carbon emission, there is effective relation with employment and unemployment, both will lead to carbon emission, here concept of sustainability plays vital role to balance both with minimal consequences of carbon emission. On the other hand, it is discovered that CO2 emissions rise with per capita income. Overall estimates clearly show that renewable energy is still a cost-effective replacement for traditional fossil fuel-fueled energy, even though it has a negative short-term impact on CO2 emissions (Zakaria Zoundi, 2017). GLS Model also showed opposite association between CO2 emission and renewable energy consumption. Regarding population density, research also shows that increased density corresponds with increased energy usage, which will further hike the CO2 emission overall.

Reference

Adom, P. K., Agradi, M., & Vezzulli, A. (2021). Energy efficiency-economic growth nexus: what is the role of income inequality? *Journal of Cleaner Production*, *310*, 127382.

Ahmed, K., Apergis, N., Bhattacharya, M., & Paramati, S. R. (2021). Electricity consumption in Australia: the role of clean energy in reducing CO2 emissions. *Applied Economics*, *53*(48), 5535-5548.

Alam, M. J., Begum, I. A., Buysse, J., Rahman, S., & Van Huylenbroeck, G. (2011). Dynamic modeling of a causal relationship between energy consumption, CO2 emissions, and economic growth in India. *Renewable and Sustainable Energy Reviews*, *15*(6), 3243-3251.

Al-Mulali, U. (2014). Investigating the impact of nuclear energy consumption on GDP growth and CO2 emission: A panel data analysis. *Progress in Nuclear Energy*, *73*, 172-178.

Audi, M., & Ali, A. (2016). Environmental Degradation, Energy consumption, Population Density and Economic Development in Lebanon: A time series Analysis (1971-2014).

Baloch, M. A., & Wang, B. (2019). Analyzing the role of governance in CO2 emissions mitigation: the BRICS experience. *Structural Change and Economic Dynamics*, *51*, 119-125.

Balsamo, M., Montagnaro, F., & Anthony, E. J. (2023). Socio-economic parameters affect CO2 emissions and energy consumption–An analysis over the United Nations Countries. *Current Opinion in Green and Sustainable Chemistry*, *40*, 100740.

Dong, K., Sun, R., & Hochman, G. (2017). Do natural gas and renewable energy consumption lead to less CO2 emission? Empirical evidence from a panel of BRICS countries. *Energy*, *141*, 1466-1478.

Fatai, K., Oxley, L., & Scrimgeour, F. G. (2004). Modelling the causal relationship between energy consumption and GDP in New Zealand, Australia, India, Indonesia, The Philippines, and Thailand. *Mathematics and Computers in Simulation*, *64*(3-4), 431-445.

Fu, Q., Álvarez-Otero, S., Sial, M. S., Comite, U., Zheng, P., Samad, S., & Oláh, J. (2021). Impact of renewable energy on economic growth and CO2 emissions—evidence from BRICS countries. *Processes*, *9*(8), 1281.

Gardiner, R., & Hajek, P. (2020). Interactions among energy consumption, CO2, and economic development in European Union countries. *Sustainable Development*, *28*(4), 723-740.*ution Research*, *30*(6), 16140-16155.

Haldar, A., Sucharita, S., Dash, D. P., Sethi, N., & Padhan, P. C. (2023). The effects of ICT, electricity consumption, innovation and renewable power generation on economic growth: An income level analysis for the emerging economies. *Journal of Cleaner Production*, *384*, 135607.

Mahalik, M. K., & Mallick, H. (2014). Energy consumption, economic growth, and financial development: exploring the empirical linkages for India. *The Journal of Developing Areas*, 139-159.

Mahmood, H., Alkhateeb, T. T. Y., Al-Qahtani, M. M. Z., Allam, Z., Ahmad, N., & Furqan, M. (2019). Agriculture development and CO2 emissions nexus in Saudi Arabia. *PloS one*, *14*(12), e0225865.

Mitić, P., Fedajev, A., Radulescu, M., & Rehman, A. (2023). The relationship between CO2 emissions, economic growth, available energy, and employment in SEE countries. *Environmental Science and Pollution*

Naqvi, S. K. H., Zahra, H. S., & Khan, G. (2023). How does Energy Consumption Affect Sectorial Value Addition? An Empirical Evidence from SAARC Economies. *Pakistan Journal of Humanities and Social Sciences*, *11*(2), 2167-2177.

Ohlan, R. (2015). The impact of population density, energy consumption, economic growth and trade openness on CO 2 emissions in India. *Natural Hazards*, *79*, 1409-1428.

Onuonga, S. M. (2012). The relationship between commercial energy consumption and gross domestic income in Kenya. *The Journal of Developing Areas*, *46*(1), 305-314.

Pao, H. T., & Tsai, C. M. (2010). CO2 emissions, energy consumption and economic growth in BRIC countries. *Energy policy*, *38*(12), 7850-7860.

Paul, S., & Bhattacharya, R. N. (2004). Causality between energy consumption and economic growth in India: a note on conflicting results. *Energy economics*, *26*(6), 977-983.

Rahman, M. M. (2020). Exploring the effects of economic growth, population density and international trade on energy consumption and environmental quality in India. *International Journal of Energy Sector Management*, *14*(6), 1177-1203.

Sadiq, M., Ou, J. P., Duong, K. D., Van, L., & Xuan Bui, T. (2023). The influence of economic factors on sustainable energy consumption: evidence from China. *Economic research-Ekonomska istraživanja*, *36*(1), 1751-1773.

Santillán Salgado, R. J., Valencia-Herrera, H., & Venegas-Martínez, F. (2020). On the relations among CO2 emissions, gross domestic product, energy

consumption, electricity use, urbanization, and income inequality for a sample of 134 countries. *International Journal of Energy Economics and Policy*, *10*(6), 195-207.

Su, C. W., Xie, Y., Shahab, S., Faisal, C. M. N., Hafeez, M., & Qamri, G. M. (2021). Towards achieving sustainable development: role of technology innovation, technology adoption and CO2 emission for BRICS. *International journal of environmental research and public health*, *18*(1), 277.

Sun, J., Guo, X., Wang, Y., Shi, J., Zhou, Y., & Shen, B. (2022). Nexus among energy consumption structure, energy intensity, population density, urbanization, and carbon intensity: a heterogeneous panel evidence considering differences in electrification rates. *Environmental Science and Pollution Research*, 1-20.

Vardopoulos, I., & Konstantinou, Z. (2017). Study of the possible links between CO2 emissions and employment status. *Sustain. Dev. Cult. Tradit. J*, *1*, 100-112.

Wei, N., Li, C., Peng, X., Zeng, F., & Lu, X. (2019). Conventional models and artificial intelligence-based models for energy consumption forecasting: A review. *Journal of Petroleum Science and Engineering*, *181*, 106187.

Zakarya, G. Y., Mostefa, B. E. L. M. O. K. A. D. D. E. M., Abbes, S. M., & Seghir, G. M. (2015). Factors affecting CO2 emissions in the BRICS countries: a panel data analysis. *Procedia Economics and Finance*, *26*, 114-125.

Zarco-Perinan, P. J., Zarco-Soto, I. M., & Zarco-Soto, F. J. (2021). Influence of population density on CO2 emissions eliminating the influence of climate. *Atmosphere*, *12*(9), 1193.

Zoundi, Z. (2017). CO2 emissions, renewable energy and the Environmental Kuznets Curve, a panel cointegration approach. *Renewable and Sustainable Energy Reviews*, *72*, 1067-1075.

Mukesh Bala
Associate Professor of Economics, Hindu Girls College, Sonipat, Haryana, IN
GMail:mukeshkataria2011@gmail.com, 8307935310.

Shalini Malik
[2]Research Scholar,
Department of Economics, Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana, IN.
GMail:malikshalini222@gmail.com, 7082139703.

42

The Role of Social Media in Shaping Millennials' Online FMCG Buying Decisions: A Qualitative Study

Pooja

Abstract

Social media has rapidly transformed into a powerful marketing tool, especially for fast-moving consumer goods (FMCG). Millennials, as digital natives, are heavily influenced by social media content when making online purchase decisions. This qualitative study explores how platforms like Instagram, Facebook, and YouTube shape millennials' perceptions, attitudes, and buying behaviors regarding FMCG products. Semi-structured interviews were conducted with 30 millennials aged between 25 and 40 in New Delhi, India. Findings reveal that social media influencers, user-generated content, and targeted advertisements significantly affect purchase intentions. The study concludes with practical implications for marketers aiming to connect with this demographic effectively.

Keywords

social media, FMCG, millennials, consumer behavior, qualitative research

1. Introduction

The rise of digital technology and widespread use of smartphones have contributed to the emergence of social media as an integral part of daily life, particularly for millennials. This cohort, born between 1981 and 1996, represents a tech-savvy generation that prefers digital interaction over traditional forms of communication and shopping. Their online presence has shifted consumer-brand interactions from conventional media to dynamic platforms like Instagram, Facebook, and YouTube.

Fast-Moving Consumer Goods (FMCG), characterized by low cost and high consumption frequency, are a prominent category in online shopping. Social media platforms influence this sector by providing visual engagement, peer reviews, and real-time feedback. In India, millennials make up over 34% of the population, making them a key target market for FMCG brands.

This research aims to explore how social media content influences millennials' online FMCG purchase intentions using qualitative data from semi-structured interviews. By understanding their motivations and perceptions, businesses can tailor strategies to align with consumer expectations.2. **Literature Review**

2.1 Social Media and Consumer Behavior

Social media serves not just as a communication tool but as a marketplace where consumers discover and evaluate products. Online platforms facilitate active consumer engagement, enabling informed decision-making. The ease of access to reviews, influencer endorsements, and promotional content alters the traditional purchase funnel.

2.2 Millennials as Digital Consumers

Millennials possess unique digital habits that distinguish them from other generations. They are more likely to follow brands on social media, trust peer opinions, and prefer influencer suggestions over celebrity endorsements. Their reliance on mobile devices and e-commerce channels makes them susceptible to online persuasion.

2.3 FMCG and Online Shopping

The FMCG sector, previously reliant on in-store purchases, has witnessed growth in online platforms due to convenience and targeted promotions. Brands like Nestle and Hindustan Unilever have strengthened their digital marketing strategies to align with millennial preferences.

2.4 Influencer Marketing and UGCInfluencer marketing is increasingly seen as authentic, especially when influencers share personal experiences. Similarly, User-Generated Content (UGC) such as reviews, testimonials, and social media posts provide social proof that strengthens trust.

3. Research Objectives

1. To understand how millennials perceive social media content related to FMCG products.
2. To identify key social media elements influencing their purchaseintentions.
3. To explore the role of influencers and peer-generated content in their decision-making process.
4. To provide strategic recommendations for FMCG marketers targeting millennials.

4. Methodology

4.1ResearchDesign

A qualitative research approach was chosen to explore complex social media interactions. The study employed semi-structured interviews to gain in-depth insights into millennial behaviors and attitudes.

4.2 Participants

30 participants (15 male, 15 female) aged 25–40 residing in New Delhi, India were selected using purposive sampling. All participants had made at least one online FMCG purchase in

the last three months and were active on at least one social media platform.

4.3 Data Collection

Interviews were conducted via Zoom and lasted between 30 and 45 minutes. A set of open-ended questions explored participants' experiences with social media marketing, influencer content, and product reviews.

4.4 Data Analysis

Thematic analysis was employed using Braun and Clarke's six-step model. Transcripts were coded and categorized into themes representing recurring ideas and patterns.5. Findings

5.1 Trust in Influencer Content

Most participants expressed trust in influencers who provided honest reviews. Micro-influencers were considered more relatable and authentic compared to celebrities.

5.2 Impact of Visual and Interactive Content

Visual platforms like Instagram and YouTube were preferred for their product demonstrations. Interactive content such as reels, stories, and polls engaged participants and enhanced recall.

5.3 Role of Peer Reviews and UGC

Participants frequently checked user reviews before purchasing. UGC created a sense of reliability and social proof that encouraged purchase decisions.

5.4 Brand Engagement and Loyalty

Brands that interacted with followers, responded to comments, or reposted UGC earned more loyalty. Emotional branding through storytelling also strengthened consumer-brand relationships.

6. Discussion

Findings align with existing literature on the persuasive power of social media among millennials. The preference for micro-influencers and UGC over traditional marketing confirms the shift in trust paradigms. Visual and interactive content not only enhances brand recall but also fosters emotional engagement. Social media allows FMCG brands to personalize interactions, making consumers feel valued and understood.

Marketers must prioritize authenticity, transparency, and engagement in their strategies. Campaigns that reflect millennial values—sustainability, transparency, and inclusivity—are more likely to succeed.7. Conclusion

Social media has revolutionized how millennials discover, evaluate, and purchase FMCG products online. Influencers, UGC, and interactive content shape their buying journey. This qualitative study highlights the importance of authenticity, peer influence, and brand interaction. FMCG marketers must harness these insights to design campaigns that resonate with millennial consumers.

References

Alalwan, A. A. (2018). Investigating the impact of social media advertising features on customer purchase intention. International Journal of Information Management, 42, 65–77. https://doi.org/10.1016/j.ijinfomgt.2018.01.006

Ansari, S., Ansari, G., Ghori, M. U., & Kazi, A. G. (2019). The impact of brand awareness and social media content marketing on consumer purchase decision. Journal of Public Value and Administrative Insight, 2(3), 5–10.

Arora, T., Kumar, A., & Agarwal, B. (2020). Impact of social media advertising on millennials' buying behaviour. International Journal of Intelligent Enterprise, 7(4), 481–500. https://doi.org/10.1504/IJIE.2020.110795

Braun, V., & Clarke, V. (2006). Using thematic analysis in psychology. Qualitative Research in Psychology, 3(2), 77–101. https://doi.org/10.1191/1478088706qp063oa

Chen, Y. (2018). The impact of user-generated content on consumer purchase intention. Journal of Marketing Development and Competitiveness, 12(1), 10–16.

De Veirman, M., Cauberghe, V., & Hudders, L. (2017). Marketing through Instagram influencers: The impact of number of followers and product divergence on brand attitude. International Journal of Advertising, 36(5), 798–828. https://doi.org/10.1080/02650487.2017.1348035

Dwivedi, Y. K., Ismagilova, E., Hughes, D. L., Carlson, J., Filieri, R., Jacobson, J., & Wang, Y. (2021). Setting the future of digital and social media marketing research. International Journal of Information Management, 59, 102168. https://doi.org/10.1016/j.ijinfomgt.2020.102168

Fenny, F., & Suryati, L. (2024). The influence of social media marketing, product quality, and influencers on purchase decisions. Dinasti International Journal of Management Science, 5(6), 1310–1319. https://doi.org/10.38035/dijms.v5i6.2964

Hasan, M., & Sohail, M. S. (2021). The influence of social media marketing on consumers' purchase decisions. Journal of International Consumer Marketing, 33(3), 350–367. https://doi.org/10.1080/08961530.2020.1795043

Jan, A., & Bhat, S. A. (2023). Role of influencers in online purchase behavior of millennials. Journal of Digital Marketing Research, 5(2), 33–48.

Jan, N., & Bhat, M. A. (2023). Influence of social media usage on purchase intention of Generation Y: An empirical investigation. International Journal of Advanced Research in Engineering and Science Management, 11(12). https://doi.org/10.56025/IJARESM.2023.1112231717

Kapoor, K., Tamilmani, K., Rana, N. P., Patil, P., Dwivedi, Y. K., & Nerur, S. (2020). Advances in social media marketing: A review and future research agenda. International Journal of

Information Management, 50, 157–175. https://doi.org/10.1016/j.ijinfomgt.2019.05.009
Kapoor, K., Dwivedi, Y. K., Piercy, N. F., & Reynolds, N. (2020). Influencing consumer behavior in the social media era. European Journal of Marketing, 54(6), 1501–1521. https://doi.org/10.1108/EJM-07-2018-0463
Kumar, V., & Kumar, A. (2021). FMCG digital transformation: An Indian perspective. Indian Journal of Marketing, 51(7), 15–27.
Mathur, P., Mishra, S., & Agrawal, R. (2025). The influence of social media advertising on consumer purchase decisions. South Eastern European Journal of Public Health, 3799–3810. https://doi.org/10.70135/seejph.vi.3595
Mehta, Y., & Funde, Y. C. (2014). Effect of social media on purchase decision. International Journal of Advance Research in Computer Science and Management Studies, 2(5), 1–8.
Motta, A. R., & Divya, R. (2023). Influence of social media on purchase behavior of millennials: An empirical study in Bangalore city. BOHR International Journal of Social Science and Humanities Research, 2(1), 192–199. https://doi.org/10.54646/bijsshr.2023.48
Murthy, Y. S., Srinivas, D., Chandra, R. B. S., & Kumar, G. V. (2023). Impulse buying in the digital age: The role of mobile apps and social media. Journal of Advanced Zoology, 44(S3), 824–829. https://doi.org/10.53555/jaz.v44iS3.824
Nash, J. (2021). Millennial engagement with social media and online purchases. Journal of Consumer Behaviour, 20(3), 543–559. https://doi.org/10.1002/cb.1887
Pate, S. S., & Adams, M. (2013). The influence of social networking sites on buying behaviors of millennials. Journal of Business & Economics Research, 11(2), 105–110. https://doi.org/10.19030/jber.v11i2.7623
Shawky, S., Kubacki, K., Dietrich, T., & Weaven, S. (2019). Using social media to create engagement: A social marketing review. Journal of Social Marketing, 9(2), 204–224. https://doi.org/10.1108/JSOCM-12-2017-0078
Smith, A., & Anderson, M. (2020). Millennials and social media: The digital consumer. Pew Research Center Reports. Retrieved from https://www.pewresearch.org
Sudha, M., & Sheena, K. (2020). Impact of influencers in marketing. International Journal of Business & Management, 5(1), 29–38.
Sunny, K., & Kuldeep. (2022). An exploratory study of millennial consumer behavior antecedents using influencer marketing. Academy of Marketing Studies Journal, 26(5), 1–16.
Voramontri, D., & Klieb, L. (2019). Impact of social media on consumer behaviour. International Journal of Information and Decision Sciences, 11(3), 209–233. https:// doi.org/10.1504/ IJIDS. 2019. 10019848 Is these references are suitable for above research paper

Name -Pooja
Research scholar in K.R Mangalam University Gurugram
Mobile -9999538259
Address - H -581 Palam Vihar Gurgaon
Pin - 122017
Email -poojas5450@gmail.com

43

Emoji as a New Mode of Communication: Evolution or Degradation of Language?

Dr. Sunita Yadav

Abstract

This study investigates the growing presence of emojis in digital communication and critically examines whether their usage represents a progressive development in language or a deterioration of linguistic expression. Emojis, once used merely as decorative symbols in text messages, have evolved into essential tools for conveying tone, emotion, and even complex ideas in online interactions. As visual elements integrated into written discourse, emojis increasingly shape how people communicate in informal digital settings, raising questions about their influence on language structure, clarity, and depth.

Adopting a multidisciplinary approach that draws from sociolinguistics, semiotics, and communication studies, this research analyses the communicative functions of emojis within digital conversations. The paper reviews patterns of emoji use across various age groups, cultural backgrounds, and communication platforms, using real-world text samples, user surveys, and discourse analysis to evaluate the extent to which emojis affect meaning-making and comprehension. It further explores whether emojis complement written language or contribute to a simplification of expression.

By comparing the rise of emojis to historical shifts in language—such as the use of pictographs in early writing systems—the study argues that emojis represent a natural phase in language evolution driven by technological innovation. Rather than replacing traditional linguistic elements, emojis frequently work alongside them, providing additional layers of emotional or contextual nuance that text alone may not fully capture.

The findings suggest that emojis should not be viewed as a threat to linguistic integrity, but as a creative and adaptive response to the challenges of digital communication. They offer users a flexible, expressive, and often efficient way to enhance written interaction. Consequently, this paper concludes that emojis exemplify how language evolves in response to social and technological change, expanding rather than diminishing its communicative potential.

Introduction

Language has always evolved in response to social, cultural, and technological changes. In recent years, emojis have emerged as a prominent feature in digital discourse, prompting ongoing debate about their effect on language. Are emojis undermining formal linguistic structures, or are they adapting language to suit the visual and fast-paced nature of digital communication? This paper investigates these questions through a multidisciplinary lens, combining linguistic theory, media analysis, and educational perspectives.

Historical Background

Emojis originated in Japan in 1999, developed by Shigetaka Kurita to convey emotions and ideas in limited text formats. From this modest beginning, they have become embedded in the global digital lexicon, aided by standardization through Unicode. Their pictographic nature recalls ancient writing systems, such as Egyptian hieroglyphs and Sumerian cuneiform, suggesting a return to visual language in a modern context.

Linguistic Functions of Emojis

Emojis serve several functions in digital language:

Paralinguistic Substitution: Emojis act as substitutes for vocal tone and facial expressions, bringing emotional clarity to text.

Semantic Modification: They can modify the meaning of a sentence, either softening or reinforcing the intended tone.

Discourse Structuring: Emojis may serve as bullet points, markers of agreement, or indicators of a conversational shift.

Identity and Group Signalling: Users often adopt emoji patterns that reflect identity, community membership, or cultural affiliation.

Extended Criticism and Counterarguments

Despite their popularity, emojis face substantial criticism:

Loss of Grammatical Complexity

Critics argue that emojis simplify communication and discourage the use of complex grammatical constructions. However, linguistic simplicity does not imply inferiority. All languages, including those with fewer structural rules (e.g., pidgins), are fully functional.

Ambiguity and Misinterpretation

The polysemy of emojis—where one symbol can have multiple meanings—can lead to confusion. For example, the "folded hands" emoji is interpreted variously as a prayer, a high-five, or a thank-you gesture depending on cultural context.

Standardization Challenges

Platform-specific designs mean that the same emoji may appear differently on different devices, affecting interpretation. Unicode aims for consistency, but visual disparities persist.

Concerns over Literacy

Some educators worry that emoji reliance could erode traditional writing skills. However, there is limited empirical evidence to suggest that emoji use directly impairs literacy development. Instead, emojis are more often used alongside language rather than as replacements.

Case Studies: Emoji in Real-World Communication

Political Messaging

In 2019, the Labour Party in the UK integrated emojis into social media campaigns targeting younger voters. Posts using emojis had higher engagement rates, suggesting that visual symbols helped convey urgency, emotion, and solidarity more effectively than text alone.

Brand Communication

Companies like Domino's Pizza have used emoji-based campaigns to great success. In the "Tweet-a-Pizza" campaign, users could order a pizza by tweeting a pizza emoji. This playful, minimalist approach showcased how emojis can facilitate practical, commercial communication.

Interpersonal Relationships

A 2016 study by Miller et al. found that frequent emoji use in text messages correlated with increased romantic interest and relationship satisfaction, indicating that emojis support emotional expression in intimate contexts.

Educational Implications

Emojis also present new opportunities and challenges in education:

Language Learning and Emotional Literacy

Emojis help language learners grasp the emotional undertones of conversation. Educators use emoji-based activities to teach tone, irony, and emotional cues, particularly with English learners or in special education contexts.

Digital Literacy and Multimodal Composition

Modern classrooms increasingly emphasize multimodal texts—combinations of words, images, and symbols. Emojis serve as an accessible entry point into digital literacy, encouraging students to consider how meaning is constructed through multiple modes.

Critical Media Literacy

Teaching students to interpret and critique emoji use in media can build critical thinking skills. Understanding how emojis are used in advertising, politics, and social media helps students navigate persuasive messaging.

The Future of Emoji Language

Unicode continues to expand the emoji lexicon, responding to calls for greater representation and inclusivity. Future trends may include:

Customization and Animation: Users will likely see more personalized emojis that reflect nuanced identity factors (e.g., culture, disability, gender).

AI Integration: Predictive emoji use, powered by artificial intelligence, could automate emotional expression in real time.

Emoji Grammar Systems: Some linguists predict that emojis may evolve their own syntactic rules, potentially forming a rudimentary visual language.

While emojis may never replace written language, their role is likely to become more structured and linguistically relevant.

Conclusion

Emojis are not a degradation of language but a reflection of how communication adapts to new contexts. Their integration into digital discourse demonstrates a shift toward more visual, emotionally expressive, and efficient communication. While criticisms regarding clarity, professionalism, and standardization are valid, emojis ultimately enrich rather than replace linguistic practices. Like other major language shifts in history, the rise of emojis represents evolution—not erosion.

References

Evans, V. (2017). The Emoji Code: The Linguistics Behind Smiley Faces and Scaredy Cats. Picador.

Danesi, M. (2016). The Semiotics of Emoji: The Rise of Visual Language in the Age of the Internet. Bloomsbury Publishing.

Miller, H., Thebault-Spieker, J., Chang, S., Johnson, I., Terveen, L., & Hecht, B. (2016). "Blissfully happy" or "ready to fight": Varying interpretations of emoji. ICWSM, 10, 259-268.

Cramer, H., de Juan, P., & Tetreault, J. (2016). Sender-intended functions of emojis in US messaging. MobileHCI, 504-509.

Kelly, R., & Watts, L. (2015). Characterising the inventive appropriation of emoji in close personal relationships. Experiences of Technology Appropriation, 1-10.

McCulloch, G. (2019). Because Internet: Understanding the New Rules of Language. Riverhead Books.

Tagg, C. (2015). Exploring digital communication: Language in action. Routledge.

Dr. Sunita Yadav
Associate Professor of English
R.D.S Public Girls College, Rewari
9416407646

44

VOICES OF RESISTANCE IN ANITA NAIR'S *MISTRESS*

Jyoti Jaiswal, Dr. Sunita Rai

Abstract-

The paper explores the emotional crises experienced by both women and men as a result of betrayal, disappointment, shame, and guilt, in *Mistress*, by Anita Nair, offering a powerful narrative that delves into the complexities of resistance within a patriarchal society. In the novel Nair reveals how women, particularly, are bound by the moral and social codes dictated by male authority figures—be it their fathers or husbands. These codes control their lives, dictating every decision, movement, and even desire. When women dare to defy these societal rules, the consequences are often tragic, exposing the harsh realities of challenging ingrained patriarchal norms. The paper demonstrates the ways, women flout, and level the patriarchal rule; and how overhaul their own distinctiveness through casing a certain resistance. There shall be a frame to analyse critically the gist of the theme Nair tends to project- the Indian women deconstructing patriarchy by their agency of self-determination, actions, and interpersonal ties and resolutions confronting the social and traditional cramps. The feminist lens through which we examine the characters of *Mistress* allows us to view their resistance not only as a personal struggle but also as a collective commentary on women's place in a male-dominated world.

Keywords- Resistance, patriarchy, defiance, feminism, marriage, oppression

Patriarchy, as a dominant social system, seeks to control not only the political and economic realms but also the private, emotional, and sexual lives of women. By using feminist literary criticism as a framework, we can better understand how the text challenges traditional narratives of female subordination and reimagines women as agents of change. Feminist theory emphasizes the importance of women's voices in literature and the resistance to traditional gender roles that confine them. In *"Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity,"* Judith Butler posits that "gender proves to be performance—that is, constituting the identity it is purported to be" (Butler, 25). This perspective suggests that by challenging and redefining these performances, individuals can subvert traditional gender norms.

In *Mistress*, Anita Nair presents a powerful narrative of female resistance, encapsulated in the stories of Saadiya, Radha, and Maya. These women's journeys represent their struggles against the oppressive structures of patriarchy, religious norms, and traditional gender roles. The narrative unfolds in a modern yet still deeply conservative India, where traditional roles for women are heavily influenced by both colonial history and post-colonial struggles for identity, portrays these women as they actively confront and challenge the patriarchal systems that define their lives, offering a feminist critique of the society they inhabit. Rajeswari Sunder Rajan's *The Scandal of the State: Women, Law and Citizenship in Postcolonial India* (2003) discusses similar themes. Rajan examines how women's bodies in postcolonial India become battlegrounds where cultural, religious, and patriarchal forces converge, shaping their legal and social status. For instance, she notes that "the regulation of women's bodies is central to the state's project of nation-building" (Rajan, 3). The theme of resistance is a powerful thread that runs throughout the narrative, with each character challenging the societal constructs that seek to define them. Whether it is Saadiya's defiance against religious expectations, Radha's rejection of the 'pativrata' ideal, or Maya's break from the traditional confines of marriage, these women actively confront the limitations imposed by patriarchal systems.

In *Mistress*, Nair paints a picture of Saadiya as a young girl caught in the turmoil of love and religious duty. At just sixteen, she finds herself in a love that is impossible, forbidden, and deeply internalized, leading to a painful struggle within her. This conflict becomes even more complex because her Muslim faith stands in stark contrast to her love for a Hindu boy. The narrative begins with a depiction of the ghettoed lives of Muslim women in Arabipattanam, a community where women's freedoms are severely restricted by both religious and

patriarchal expectations. "All the men in Arabipatnam went to the beach every day...we knew the sea existed only when the breeze set in at early noon..." (*Mistress,* 138), Sadiya thinks. For Saadiya, the sound of the waves represents the world beyond—a world she is not allowed to access but dreams of. This longing becomes the foundation for her resistance. The women of Arabipattanam are confined to the back doors of their homes, their movements strictly limited to the domestic sphere. They are not allowed to interact with strangers and are prevented from venturing beyond the narrow streets that separate their lives from the outside world.

Sadiya, the good girl of her vaapa, urges, "...there is so much to see, so much to do, so much to know. It isn't fair that you men get to go wherever you want, see and do whatever you like, and I am expected to be content with this patch of blue and this maze of alleys" (*Mistress*, 99). Saadiya's desire for freedom and self-realization is not just a longing for physical space but a deeper, more existential yearning for personal autonomy. Women in her community are not permitted to attend school, and their economic dependency on male family members leaves them without any true agency. Even the limited education women receive, such as learning to read, is a form of control, preventing them from accessing knowledge that might offer a broader understanding of the world. Saadiya, however, is different. As the youngest in her family, she harbours a curiosity and a longing for freedom that her society condemns. Saadiya's longing for freedom led her first act of defiance when she dares to cross the boundary set by her family and society. Stepping outside the narrow alley and removing her veil marks the moment she asserts her individuality. This act of disobedience is Saadiya's first confrontation with her father's (Haji's) authority, a patriarchal figure that embodies the religious and social rules Saadiya must follow. Saadiya's act of resistance is met with punishment, her father branding her with a hot iron rod. He warns her, "This is a lesson for you as much as it is for me, that it is unwise to give girls even a little rope. That it isn't in women to understand the nuances of freedom. Henceforth, these welts on your calf will help you remember your place" (*Mistress,* 130). This physical punishment is a clear manifestation of how patriarchal and religious systems react to women who defy the rules that have kept them in line.

Saadiya's first sight sans veil on Sethu let her fall in love with, who filled the vacant form of her hero. Saadiya's love for a Hindu boy, Sethu, is presented as a forbidden and radical act as it is illicit because it contradicts the societal and religious mandates that prohibit interfaith relationships. Saadiya refuses to do nikah from Akbar's son. As Nair writes, the Haji says, "My daughter wants to break every single law of our community. She wants to be a kafir's wife" *(Mistress, 28).* Haji's brother-in-law Mohammad asks her the name of her lover. Some of them said "Brand her and starve her that will cure her" (*Mistress*, 147) Haji, declares that "I will disown her tomorrow morning she will be left outside the gates and thereafter, neither I nor anyone else in my family will have anything to do with her. We will wipe her from our lives and memories. As penance foe dishonouring our ancestry…" (*Mistress*, 147). Theselines encapsulate the deep divide between Saadiya's personal identity and the identity her society expects her to uphold. She is forced to navigate the painful consequences of stepping outside the boundaries of her religion and community, facing ostracism and condemnation.

Saadiya's family's rejection and the community's condemnation become forces that shape the rest of her life. Saadiya regrets, "What had she done? She had let love invade her heart, and in doing so, she had lost everything." She feels "the fear of another hunger. To be with her sisters and Ummama, and Zuleika. To be with Vaapa... She began to fear that she would have to pay a price for abandoning them. This was to her punishment, she thought: to be lonely" *(Mistress,* 193*).* The religious oppression Saadiya faces is indicative of the intersectionality of gender, religion, and culture. According to Kimberle Crenshaw (1989), women are often oppressed not just by gender but by multiple systems of inequality that intersect and compound one another. Saadiya's resistance against religious oppression, while deeply empowering, also leads to a personal tragedy. The confrontation of religions leads her again to defiance. She doesn't want to let her child born, "If this baby is born, it has to be brought up as a true Muslim" (*Mistress*, 197). The sense of belonging and cut-off grows in her resistance of life, "I have no place. No home...no one", and she wants to embrace the sea, "To not feel so torn between my ancestry and my life as it is now" (*Mistress*, 228). Saadiya's resistance becomes a powerful feminist statement because it reflects her right to choose her own path, irrespective of the

patriarchal expectations that seek to control her identity.

In Indian culture, the ideal of 'pativrata' represents the notion of a wife who is wholly devoted to her husband, both emotionally and spiritually. The 'pativrata' ideal dictates the roles women are expected to fulfill, influencing their perceptions of self-worth and autonomy. As a result, women are confined to roles where their identity and worth are almost entirely determined by their duties as wives, often limiting their emotional, intellectual, and social freedom. Radha is one of the central female characters in *Mistress*, and her role in the narrative revolves around her internal struggle with societal expectations and the limitations placed upon her as a wife. Radha, a woman of intelligence and independence, finds herself trapped in a traditional, patriarchal marriage that demands conformity to the rigid ideals of submissive wifehood. She says "I think that for Shyam, I am a possession… That is my role in his life. He does not want an equal; what he wants is a mistress. Someone to indulge and someone to indulge him with feminine wiles" *(Mistress*, 53). Underscoring her sense of entrapment, Radha compares herself to a butterfly pinned to a board—an image that vividly conveys her emotional and psychological suffocation: "I think of the butterfly I caught and pinned to a board when it was still alive…oblivious that somewhere within, a little heartbeat, yearning to fly. I am that butterfly now." *(Mistress*, 53-54). This metaphor encapsulates Radha's sense of being trapped in a life of societal expectations, unable to break free, yet yearning for more than just passive existence.

Radha's desire for independence and intellectual fulfilment is constantly at odds with the expectations imposed upon her. "You seem to want to rule me. You won't let me breathe. It isn't right" *(Mistress,* 203*)*. Radha wants to do something but her husband Shyam does not allow her. Shyam thinks that it will reduce his fame in the society; she feels objectified, reduced to a mere sexual object to satisfy her husband's needs, "Don't I have a right to an opinion? I am your wife, Your wife, do you hear me? But you treat me as if I am a kept woman. A bloody mistress to fulfill your sexual needs and with no rights" *(Mistress,* 73). Her statement represents a moment of defiance against the 'pativrata' ideal, as she insists that her identity cannot be reduced to a mere sexual object or an accessory to her husband's life. Radha feels possessed by Shyam's controlling nature. Her sense of autonomy is being stripped away by Shyam's attempts to micromanage her life. Shyam reduces her to roles where her identity is defined solely by her relationship to him, "You are my wife and you have a place in society. When I ask you to show some interest in what I do, I mean just that" (*Mistress, 72).* Here, he demands her unquestioning loyalty and support in his public and private life, without regard for her own interests. As Radha's internal conflict intensifies, she begins to assert herself more forceful. In the quote, "You are a snob, a bloody fucking snob!" (*Mistress*, 72), Radha expresses her anger and frustration with the oppressive constraints of her role as a wife: "This is not how I expected to live my life. This is not what I want from life, don't you see?" (Mistress,73). The use of profanity here is significant—it signifies Radha's growing anger and defiance against a system that has long confined her to a life of servitude and submission. Nair illustrates Radha's internal shift and her growing desire for independence: "I will no longer be a woman defined by the walls of a house, a woman whose life is dictated by the demands of others." (*Mistress*, 102*)*.

Radha's resistance also plays out in her sexual autonomy, which she attempts to reclaim through her affair with Chris. Her relationship with Chris is a manifestation of her rebellion against the suffocating patriarchy embodied by Shyam and her quest for emotional connection and intellectual engagement, things that are sorely lacking in her marriage. Her affair with Chris, while an act of rebellion, also brings feelings of disgust and self-loathing as she is forced to confront the ethical implications of her actions: "It kills me, this guilt over what I am doing to Shyam" *(Mistress*, 252). The moral conflict she experiences highlights the emotional price of resisting the 'pativrata' ideal. Her uncle also says even though he knows that she is in relationship with Chris Stewart, "...I couldn't rob an experience from her even if it was a mistake... I hadn't seen her look as animated as this in along time..." *(Mistress*, 78). Virginia Woolf in *A Room of One's Own* writes, "A woman must have money and a room of her own if she is to write fiction" (*A Room of One's Own*, 9). What Woolf is really saying here is that women need the freedom to exist independently, away from the roles they're traditionally confined to. In Radha's case, the affair with Chris becomes her metaphorical room of her own. By challenging these expectations, Radha becomes a voice for women everywhere who long to break free from the constraints

of societal norms and live lives that are fully their own.

Maya, is one of the central characters in Anita Nair's *Mistress* . She is a woman who feels deeply conflicted within herself, a reflection of the complexity and depth of human emotions. On the surface, she appears to have everything: a successful career as a writer, a marriage, and an identity built on the expectations of those around her. But beneath all of that, she feels a constant pull between who she is and what she is supposed to be. Despite her independence as a writer, Maya's internal conflicts—the yearning for emotional intimacy, the need for freedom, and the desire to break free from societal pressures—make her both tragic and incredibly relatable. Unlike Saadiya and Radha, whose rebellions are rooted in religious and gender norms, Maya's resistance revolves around her rejection of the traditional institution of marriage and the limitations it imposes on her emotional and intellectual freedom. Maya's journey towards independence is encapsulated in her assertion: "I was not meant to belong to anyone. I am my own" *(Mistress*, 202). Maya finds herself more comfortable and confident with Koman, the leading character of the novel. Koman met Maya at Delhi returning home from Europe. He was "introduced to Maya at an art show opening" *(Mistress*, 419). "Maya was a voluptuous woman then. Her mind, I discovered, was just as fecund as her body. She was also lonely. Her husband and her family kept her busy but despite them she was starved for companionship" (*Mistress,* 420). A month later they "inevitably, became lovers…sought a partner who was my equal and she revelled in the love affair" (*Mistress*, 421). Koman was comfortable with Maya and she with Koman. Koman is emotionally attached to her and conversation between them is so natural as if they were living together in the same room. They started to live together like husband and wife without any religious or social ceremony. Early in her relationship, Maya enters into marriage with the belief that it will offer emotional fulfillment, companionship, and a sense of purpose. However, as time passes, Maya becomes acutely aware of the limitations her marriage imposes on her personal desires, emotional well-being, and sense of identity. John Stuart Mill, in *The Subjugation of Women* (1869), critiques marriage as a tool of oppression.

The complex highlights the psychological toll that marriage has taken on Maya. Feminist theorists such as Simone de Beauvoir (1949) have long criticized the institution of marriage as a mechanism for women's subjugation. De Beauvoir argues that marriage has historically been a means by which women are "rendered invisible" and denied their full humanity. In her seminal work *The Second Sex*, she writes: "The relationship of reciprocity which is the basis of marriage is not established between men and women, but between men by means of women, who are merely the occasion of this relationship," said Lévi-Strauss *(The Second Sex*, 105-106). Maya is married, but she does not feel guilty of her relationship with Koman. Koman takes her to the marriage pandals at the temple of Guruvayur, where couples get married with "no pomp, no ceremony"(*Mistress*, 256) On an impulse, Koman asks "Maya, do you want to get married" (*Mistress*, 256). They "exchange garlands and wed…a god to witness their marriage" (*Mistress*, 256). Koman is drawn towards Maya as he fears being lonely. Maya does not wrestle with questions of right or wrong when it comes to her bond with Koman. She meets him "without any moral qualms" and shares a space with him that resembles a conjugal life. What they share is a companionship layered with emotional depth—a "platonic relationship" that goes beyond physical definitions. Maya gives him solace, and he offers her emotional freedom. Koman gently suggests they could reshape their future together, but Maya opts for continuity over change, choosing to continue the way they were, to keep their relationship from being dull. Their symbolic marriage—unrecorded, unlegalized—takes place not for societal recognition but to soothe Koman's feeling of loneliness. And because the marriage was not going to be registered, Maya's existing life remains undisturbed, untouched by legal or social repercussions. Their union is quiet, unorthodox, and deeply human—a testament to emotional companionship that resists the rigidity of societal norms. Maya's decision to break away from the traditional marital bond is the pivotal moment in her character's arc. This decision does not come lightly; it is the culmination of years of emotional and intellectual struggle. Maya's dissatisfaction with her marriage grows over time, and she begins to understand that the institution of marriage—at least as it is defined by societal and patriarchal norms—is incompatible with her sense of personal freedom and identity.

As feminist scholars like Bell Hooks (2000) argue, in

Feminism is for Everybody: "Marriage has been used to control women's sexuality and confine them to roles that serve patriarchal interests" *(Feminism is for Everybody*, 85).

Saadiya, Radha, and Maya each redefine the institution of marriage in their own way. For Saadiya, marriage is a boundary that she refuses to acknowledge. For Radha, marriage is a restrictive institution that limits her intellectual and emotional freedom. For Maya, marriage is an institution that confines her to a secondary role, leading her to break free from it entirely. The comparative analysis of Saadiya, Radha, and Maya demonstrates how their acts of resistance challenge patriarchal societal structures and redefine womanhood through feminist lenses. Through love, marriage, and religious defiance, each character reclaims control over her identity and reshapes her future in defiance of the restrictive norms imposed by patriarchal society. Saadiya's rebellion against religious oppression, Radha's rejection of marital submission, and Maya's break from the institution of marriage reveal that women's struggles are often deeply intertwined with cultural and societal forces that seek to control their lives. These female protagonists show that resistance is not only a personal act but a social and political one, as it critiques the structures that maintain gender inequality. The importance of giving voice to female resistance in literature and society cannot be overstated. Literature serves as a powerful tool for reflecting and shaping societal norms, and works like *Mistress* allow readers to engage with the complex realities of women's lives. By exploring these characters' struggles, Nair not only provides a critique of patriarchal oppression but also gives a platform for women's voices that have been historically silenced.

Works Cited

Beauvoir, Simone de. *The Second Sex*. Vintage Books, 1989.

Butler, Judith. *Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity*. Routledge, 1990.

Butler, Judith. "Performative Acts and Gender Constitution: An Essay in Phenomenology and Feminist Theory." *Theatre Journal*, vol. 40, no. 4, 1988.

Hooks, Bell. *Feminism is for Everybody*. South End Press, 2000.

Mill, John Stuart. *The Subjugation of Women*. Longmans, Green, Reader, and Dyer, 1869.

Nair, Anita. *Mistress*. Penguin Books India, 2005.

Rajan, Rajeswari Sunder. *The Scandal of the State: Women, Law and Citizenship in Postcolonial India*. Duke University Press, 2003.

Woolf, Virginia. *A Room of One's Own*. Harcourt Brace, 1929.

References

Atwood, Margaret. *The Handmaid's Tale*. McClelland and Stewart, 1985.

Crenshaw, Kimberlé. "Demarginalizing the Intersection of Race and Sex: A Black Feminist Critique of Anti-Discrimination Doctrine, Feminist Theory, and Antiracist Politics." *University of Chicago Legal Forum*, vol. 1989, no. 1.Tandon, Neeru. *Feminism: A Paradigm Shift*. New Delhi: Atlantic Pblisher, 2008. Print.

Walker, Alice. *The Colour Purple*. Harcourt Brace Jovanovich, 1982.

Author-

Jyoti Jaiswal

PhD Research Scholar

Department of English, KNIPSS, Sultanpur.

Co-Author- Dr. Sunita Rai,

Head of Department, (English) KNIPSS, Sultanpur.

Dr.R.M.L. Awadh University, Ayodhya.

PIN: 224001

Mobile 8299856823,8299858593

Email: jyoti29jaiswal@gmail.com

45

Navigating Youth Identity and Socio-Political Challenges in Chetan Bhagat's *The Three Mistakes of My Life*

Dr. Poonam Rani

Abstract

This study examines Chetan Bhagat's *The Three Mistakes of My Life*, focusing on its portrayal of youth identity and socio-political challenges in contemporary India. The novel serves as a microcosm of middle-class aspirations, reflecting the ambitions, friendships, and struggles of young Indians navigating the pressures of tradition and modernity. Through the lens of its protagonists' dreams and dilemmas, the study explores themes of entrepreneurship, communal harmony, and resilience in the face of adversity. Bhagat's narrative, set in the culturally rich yet conflict-ridden backdrop of Gujarat, provides a nuanced critique of societal constraints, including religious tensions and economic instability. The analysis highlights how the protagonist Govind Patel's entrepreneurial spirit symbolizes the aspirations of India's youth while addressing the collective challenges faced by his friends Ishaan and Omi. Themes of friendship, love, and betrayal are intricately tied to broader social issues, with cricket serving as both a literal and symbolic unifier. The novel's depiction of the Gujarat riots underscores the devastating impact of communal violence on personal relationships and individual goals. The study integrates insights from critical literature to assess the balance Bhagat strikes between entertainment and socio-political commentary. By situating the narrative within a rapidly modernizing socio-economic landscape, this study underscores the novel's relevance in understanding the dynamics of youth culture in India. Bhagat's storytelling bridges the personal and political, offering valuable perspectives on ambition, resilience, and identity in a multicultural society.

Keywords: Youth Identity, Entrepreneurship, Communal Harmony, Friendship, Indian Literature

Introduction

Chetan Bhagat is one of India's most celebrated contemporary English-language novelists, recognized for his vivid portrayal of modern Indian youth and their struggles. Born on April 22, 1974, in New Delhi, Bhagat graduated from the Indian Institute of Technology (IIT) Delhi and pursued an MBA at the Indian Institute of Management (IIM) Ahmedabad. His works have significantly shaped popular Indian literature by combining relatable themes with simple, accessible language. Bhagat's novels, including *Five Point Someone*, *Two States*, and *The Three Mistakes of My Life*, have often been adapted into successful Bollywood films, further cementing his influence on Indian culture. Critics have described Bhagat as a chronicler of India's rising middle class and their aspirations (Sundaram 2012).

Bhagat's *The Three Mistakes of My Life*, published in 2008, is a poignant reflection of the dreams, dilemmas, and identity crises faced by Indian youth against the socio-political backdrop of Gujarat in the early 2000s. Through this novel, Bhagat examines the intersection of personal ambitions with broader societal issues, such as communal violence and economic disparity.

The Three Mistakes of My Life is a coming-of-age novel that intricately weaves the struggles of three friends—Govind, Ishaan, and Omi—in their quest for success and meaning. Set in Ahmedabad, Gujarat, the novel captures the aspirations of modern Indian youth while addressing critical themes such as identity, ambition, love, and societal conflicts. The narrative revolves around Govind Patel, who recounts his "three mistakes" that lead to both personal and collective tragedies. Bhagat masterfully juxtaposes individual dilemmas with broader issues such as communalism, economic hardships, and the socio-political climate of Gujarat during the early 21st century.

The theme of youth and identity occupies a central place in the novel. Bhagat delves into the aspirations, insecurities, and moral dilemmas of the younger generation, highlighting their struggle to navigate the pressures of tradition, modernity, and personal ambition. As Kumar (2015) notes, "Bhagat's portrayal of youthful angst is both realistic and reflective of India's rapidly changing socio-cultural milieu."

Chetan Bhagat's works have been the subject of extensive analysis, particularly for their engagement with contemporary youth issues and their accessibility. Critics have noted Bhagat's contribution to popularizing English-language fiction in India. Sundaram (2012) argues that Bhagat's novels reflect the aspirations and anxieties of middle-class India, making his stories resonate with a broad readership. The accessible language and relatable characters are key features that have democratized English fiction in India (Singh, 2014).

Kapoor (2013) examines Bhagat's portrayal of communalism in *The Three Mistakes of My Life*, highlighting his nuanced approach to depicting the Gujarat riots. According to Kapoor, the novel addresses the human cost of communal violence while maintaining its focus on the personal dilemmas of its protagonists. Similarly, Kumar (2015) identifies the theme of ambition and its interplay with societal pressures as a recurring motif in Bhagat's works, including this novel.

Pande (2020) explores the significance of cricket in Bhagat's fiction, positioning it as a unifying cultural element that transcends class and caste divisions. The sport serves as both a literal and metaphorical platform for the characters' ambitions and relationships. Sharma (2017) expands on this by emphasizing cricket's role as a symbol of hope and resilience in a society rife with challenges.

Chakrabarti (2019) analyzes the integration of pop culture in Bhagat's narratives, particularly its role in connecting with younger audiences. According to Chakrabarti, Bhagat's use of contemporary references and settings allows his novels to serve as social commentaries that resonate with readers across generational divides. Nair (2018) focuses on Bhagat's influence on India's literary landscape, crediting him with bridging the gap between serious literature and commercial fiction.

Mehta (2016) critiques Bhagat's work for occasionally oversimplifying complex societal issues, but acknowledges the impact of his storytelling on raising awareness about youth concerns. The balance of entertainment and critical commentary in his novels, including *The Three Mistakes of My Life*, has made them both popular and thought-provoking.

Significance of the Study

This study is significant as it provides an in-depth analysis of how *The Three Mistakes of My Life* portrays the intersection of youth identity and socio-political challenges. By focusing on themes of ambition, friendship, and communal harmony, the novel serves as a microcosm of contemporary Indian society. Bhagat's narrative bridges the personal and the political, offering a unique lens through which readers can explore the aspirations and struggles of young Indians.

The novel addresses universal questions of ambition, loyalty, and love while situating them in the distinctly Indian context of societal expectations, religious tensions, and the rapid pace of modernization. This dual focus allows readers to understand how personal identities are shaped and reshaped by larger societal forces. According to Nair (2018), Bhagat's works reflect the "complex interplay between tradition and modernity," making them particularly relevant in a globalized world.

Furthermore, the novel's depiction of communalism and its human costs provides critical insights into the dangers of identity politics. By illustrating how communal violence affects relationships and ambitions, Bhagat highlights the need for harmony and understanding in a diverse society. As Kapoor (2013) notes, "The Three Mistakes of My Life captures the fragility of personal dreams in the face of socio-political upheaval, making it a vital text for understanding contemporary India."

This study is essential for exploring how young Indians navigate the challenges of personal ambition and societal expectations in a rapidly evolving socio-economic landscape. It sheds light on the values, aspirations, and conflicts that define youth culture, offering a comprehensive view of a generation striving to balance individuality with collective responsibility. The present research paper is an attempt to study the youth and identity in Chetan Bhagat's novel *The Three Mistakes of My Life* under following objctives:

Objectives

2. To examine how Bhagat addresses socio-political issues such as communalism and economic disparity through the lens of youthful aspirations.
3. To explore the role of cricket, love, and friendship in shaping the characters' identities.
4. To evaluate the novel's impact on Indian literature and its representation of contemporary Indian youth.

Methodology

This study adopts a qualitative approach, focusing on textual analysis of *The Three Mistakes of My Life*. Key themes and motifs are examined through close reading, with references to secondary sources, including journal articles, critical essays, and interviews with the author. The research also incorporates comparative analysis with other works of Bhagat and contemporary Indian novelists. Quotations from the text are used to substantiate arguments, and critical perspectives are integrated to provide a comprehensive analysis.

Analysis and Discussion

- **Youth and Identity**

Bhagat's novel captures the essence of youthful aspirations and identity struggles in a rapidly changing India. The protagonist, Govind Patel, epitomizes the entrepreneurial spirit of young Indians who aspire to rise above their socio-economic constraints. His dream of starting a cricket shop reflects not only his passion but also his desire for financial independence. As Govind narrates, "I wanted to make a mark. I wanted my business to be the best in Ahmedabad" (Bhagat 45). This ambition, however, is fraught with challenges, including financial instability and the devastating earthquake that destroys their shop. This reflects a significant theme in contemporary Indian literature: the tension between ambition and adversity. According to Sharma (2017), Bhagat portrays the entrepreneurial zeal of Indian youth as a counterpoint to systemic obstacles, making Govind's character a relatable figure for modern readers.

Govind's struggles also symbolize the broader identity crisis faced by young Indians who are caught between traditional expectations and modern aspirations. Bhagat's choice of Ahmedabad as the novel's setting—a city known for its entrepreneurial culture—adds depth to this theme. As Kumar (2015) observes, "Bhagat's urban protagonists often grapple with the dual pressures of familial obligations and individual desires, creating a nuanced portrait of Indian youth." Furthermore, Govind's calculated yet hopeful outlook mirrors a generation's struggle to balance risk-taking with responsibility, a dynamic encapsulated in his remark: "A shop of my own was not just about money; it was about proving I could be someone" (Bhagat 51).

- **Friendship and Loyalty**

The bond between Govind, Ishaan, and Omi forms the emotional core of the novel. Their friendship symbolizes the collective struggles and dreams of Indian youth. Ishaan's dedication to nurturing Ali's cricketing talent, despite his personal failures, underscores the theme of selflessness and passion. As Ishaan says, "Ali is special. He's the one who can make our dreams come true" (Bhagat 78). This statement reflects the intertwined nature of personal ambitions and collective hopes. Kapoor (2013) highlights this dynamic, noting, "Bhagat's portrayal of friendship goes beyond mere camaraderie to explore how shared goals can both unite and strain relationships."

The trio's friendship is tested by external circumstances, such as communal tensions and financial pressures, and internal conflicts, like Govind's secret relationship with Vidya. Omi's eventual involvement in his family's religious politics further complicates their bond. This complexity mirrors the multifaceted nature of modern relationships, where personal loyalties often collide with societal expectations. Singh (2014) observes, "The tension between individual and collective identities in Bhagat's characters reveals the fragility of modern friendships, making their dilemmas deeply resonant with readers."

Govind's betrayal of Ishaan's trust—by pursuing a relationship with Vidya despite their pact—adds another layer of conflict. Bhagat writes, "I knew I was crossing a line, but

sometimes the heart makes decisions the head can't understand" (Bhagat 102). This internal struggle underscores the moral complexity of loyalty within close-knit relationships.

- **Love and Personal Identity**

Govind's relationship with Vidya, Ishaan's sister, adds a layer of complexity to his character. Their romance, described as forbidden and secretive, highlights the conflict between traditional societal norms and individual desires. Vidya's rebellion against her conservative upbringing and pursuit of education symbolizes the broader struggle for female empowerment in India. Bhagat writes, "Vidya was different. She wanted more from life, and so did I" (Bhagat 112), illustrating their shared yearning for freedom and self-expression.

Critics have praised Bhagat's depiction of Vidya as a strong and independent character. Mehta (2016) argues, "Vidya's character represents the voice of a new generation of Indian women who challenge patriarchal norms while seeking their own identity." Her conversations with Govind, where she questions societal expectations, further highlight the novel's feminist undertones. Vidya's declaration—"Why should my life be decided by someone else's rules?" (Bhagat 118)—captures her defiance against traditional constraints.

However, Govind's internal conflict—balancing his love for Vidya with his loyalty to Ishaan—illustrates the challenges of navigating personal desires in a conservative social framework. This tension highlights the evolving dynamics of gender and relationships in modern India. Sundaram (2012) notes that Bhagat's depiction of youthful romance is marked by a realism that acknowledges both its liberating and disruptive potential.

- **Communalism and Socio-Political Challenges**

The depiction of the Gujarat riots serves as a grim reminder of the destructive power of communal hatred. Omi's involvement in the political and religious machinations of his family contrasts sharply with his loyalty to his friends. The climactic scene, where communal violence threatens Ali's life, underscores the devastating impact of identity politics. Bhagat's portrayal of these events has been praised for its sensitivity and realism (Kapoor 2013).

The novel's treatment of communalism is particularly significant in the context of Indian society, where religious tensions continue to influence political and social dynamics. Bhagat's nuanced approach avoids overt polemics, focusing instead on the human cost of such conflicts. As Sundaram (2012) notes, "Bhagat's ability to weave socio-political commentary into a personal narrative enhances the emotional impact of his stories." Bhagat's subtle critique of political exploitation is encapsulated in Omi's tragic realization: "I didn't know that loyalty to my family's cause would cost me my friends" (Bhagat 203).

- **Cricket as a Metaphor**

Cricket serves as a unifying motif in the novel, symbolizing hope and ambition. It represents the characters' shared dreams and the possibility of transcending societal barriers. Ali's exceptional talent becomes a beacon of hope for the trio, illustrating the potential for individual success to inspire collective progress.

The sport's significance extends beyond the personal aspirations of the characters. In India, cricket is often seen as a unifying force that transcends class, caste, and religion. Bhagat leverages this cultural resonance to underscore the themes of unity and ambition. Sharma (2017) notes, "Cricket in Bhagat's novel is more than a game; it is a metaphor for the dreams and struggles of a generation."

Ali's talent also serves as a reminder of the untapped potential within Indian society. His struggles, both personal and societal, reflect the barriers that prevent many young Indians from achieving their dreams. Bhagat's portrayal of Ali highlights the importance of mentorship and support in realizing one's potential, a theme that resonates with readers across cultural contexts. "Ali's journey from obscurity to recognition parallels the aspirations of countless Indian youths seeking their own stage to shine" (Kapoor 2013).

Conclusion

In *The Three Mistakes of My Life*, Chetan Bhagat crafts a vivid narrative that explores the multifaceted

challenges and aspirations of Indian youth. By addressing themes such as ambition, friendship, love, communalism, and cricket, Bhagat creates a tapestry that reflects the complexities of modern Indian society. The characters' struggles resonate with readers not only because they are relatable but also because they mirror larger societal conflicts.

Govind's entrepreneurial drive, Ishaan's passion for cricket, and Omi's loyalty to his roots exemplify the diverse aspirations of Indian youth. At the same time, their conflicts and failures underscore the fragility of these dreams in the face of societal and personal pressures. Critics have lauded Bhagat's ability to balance entertainment with meaningful commentary, making his work both accessible and thought-provoking.

Ultimately, the novel's enduring appeal lies in its ability to capture the zeitgeist of a generation navigating the tumultuous waters of identity, ambition, and social change. As Sundaram (2012) aptly observes, "Bhagat's stories are a mirror to the hopes and anxieties of a young nation, making them both timely and timeless." The novel challenges readers to reflect on their own choices, aspirations, and the societal structures that shape them, ensuring its relevance for years to come.

BIBLIOGRAPHY

Bhagat, Chetan. *The Three Mistakes of My Life*. Rupa Publications, 2008.

Chakrabarti, Arpita. "Youth and Pop Culture in Bhagat's Narratives." *International Review of Literary Studies*, vol. 11, no. 3, 2019, pp. 67-78.

Kapoor, Kanika. "Communalism and Youth in Chetan Bhagat's *The Three Mistakes of My Life*." *Indian Journal of English Studies*, vol. 51, no. 2, 2013, pp. 123-135.

Kumar, Amit. "Ambition and Identity in Bhagat's Novels." *Journal of Contemporary Indian Literature*, vol. 8, no. 1, 2015, pp. 45-59.

Mehta, Ramesh. "The Popular Appeal of Chetan Bhagat." *South Asian Literary Review*, vol. 4, no. 3, 2016, pp. 12-25.

Nair, Vasanthi. "Chetan Bhagat and the Rise of Pop Fiction in India." *The English Literature Journal*, vol. 3, no. 2, 2018, pp. 99-110.

Pande, Rohit. "The Role of Cricket in Indian Fiction: A Study of Bhagat's Works." *Cricket and Culture Studies*, vol. 2, no. 4, 2020, pp. 45-58.

Sharma, Priya. "Cricket and Entrepreneurship in *The Three Mistakes of My Life*." *Literature and Society Quarterly*, vol. 12, no. 4, 2017, pp. 89-104.

Singh, Anupama. "Democratizing English Literature: The Works of Chetan Bhagat." *Asian Journal of English Studies*, vol. 6, no. 1, 2014, pp. 33-47.

Sundaram, Ravi. "Chronicling Middle-Class India: A Study of Chetan Bhagat." *Indian Literary Critique*, vol. 10, no. 2, 2012, pp. 56-71.

Dr. Poonam Rani
Associate Professor(Department of English)
Hindu Girls College, Sonipat

Correspondence Address:-
C/o Sanjay Phogat
H.No. 768/21, Kailash Colony, Showroom Wali Gali
Near New Bus Stand, Rohtak, 124001
Mob. – 9466662007, 9416823263

46

ASSESSING PROFILE, PROBLEMS AND KNOWLEDGE OF NUTRITION AMONG RURAL AND URBAN ANGANWADI WORKERS

Ajit Vishwakarma

ABSTRACT

India is home to the largest number of children in the world, significantly larger than the number in China. The country has 20 per cent of the 0-4 years' child population of the world. The number of live births in the country is estimated to be 27 million, which again constitutes 20 per cent of the total number of live births in the world. Although the number of births is expected to gradually go down in the coming years, the relative load of India in the world in terms of child population is not going to lessen significantly for a long time to come. Therefore, the progress that India makes towards achieving the Millennium Development Goals (MDGs) and targets related to children will continue to determine the progress that the world will make towards achieving the MDGs.

Keywords: Knowledge, Skill, Nutrition, AWW,

INTRODUCTION

ICDS scheme was implemented on 15 November 2005 in Jharkhand state. The programmers play an important role in the child development. Anganwadi play an important role in the protection of child from abuse and negligence and ensuring access to nutrition and education. Anganwadi also play an important role in the awareness of people about sending child to school, and the importance of agro-biodiversity because it performs ecosystem services such as soil fertility, conservation and maintenance of soil fertility, pollination, all of which are essential to human survival. In addition, it also helps in preventing diseases, pests and parasites.

Given such a daunting challenge, ICDS was first launched in 1975 in accordance to the National Policy for Children in India. Over the years it has grown into one of the largest integrated family and community welfare schemes in the world. Given its effectiveness over the last few decades, Government of India has committed towards ensuring universal availability of the programme. Integrated Child Development Services (ICDS) in India is the world's largest integrated early childhood programme, with over 40,000 centers nationwide. The programme today covers over 4.8 million expectant and nursing mothers and over 23 million children under the age of six. Of these children, more than half participate in early learning activities.

The development and expansion of infrastructure is an essential prerequisite for the prosperity of any programme. It is a continuous process and progress in development has to be accompanied and followed by development in infrastructure (National Institute of Public Cooperation and Child Development, 2006). A good building, outdoor and indoor space, adequate equipment, drinking water facilities and toilet facilities constitute the basic infrastructure of an Anganwadi center (AWC) required for the effective delivery of services.

The anganwadi center is the best place for their children to get good nutrition, health and education, free of cost. They consider Anganwadi as the best place for children as their children get better nutrition and education for their overall development. The administrative unit of an ICDS project is the "community development block" in rural areas, the "tribal development block" in tribal areas and a group of slums in urban areas. In selection of project areas preferences was given to areas predominantly inhabited by backward tribes, backward areas, draught prone areas and areas where nutritional deficiencies are common. The rural and urban project has a population of 1, 00,000 and a tribal project has about 35,000 population. Anganwadi is run by the Anganwadi workers who are the women selected from within the local community. The selection is made by a committee at the project level. She is a voluntary worker and will receive a monthly honorarium. AWWs provides direct link to mother and children, Assist CDPO in survey of communities, organize non - formal education sessions, provides health and nutritional education to women and adolescents, assist PHC staff in providing health services, maintains records

of immunization, liaises with block administration, schools, PHC staff and communities. ICDS scheme was implemented in Jharkhand State on 15th November 2005. The programme play an important role in preventing child labour, protects them from abuse and negligence and ensure their education and nutrition.

AIMS AND OBJECTIVE:

This study has been done with the following aims and objectives.

1. To compare the socio-economic background of rural and urban AWWS.
2. To compare the current level of knowledge about grass root level health services between rural and urban AWWS
3. To compare the level of knowledge about maternal care and child care between rural and urban AWWs.
4. To compare the problem faced by rural and urban Anganwadi workers in implementing ICDS programme.

HYPOTHESES:

Considering above aims, following hypothesis were formulated.

H-1 The socio-economic background of rural Anganwadi workers will different from Urban AWWs.

H- 2 The knowledge of urban AWWs will better than Rural AWWS.

H- 3 The maternal care service of urban AWW will better than rural AWW.

H- 4 Child care service of urban and rural Anganwadi will differ significantly.

H -5 The problems faced by rural and urban AWWs in implementing ICDS programme will Differ significantly.

METHODOLOGY:

SAMPLE:

300 samples were selected for this research work.

SAMPLE AREA:

The sample area was rural and urban anganwadi centers of Ratu Block and Ranchi district of Jharkhand state.

SAMPLING TECHNIQUE:

Stratified random sampling technique was adopted.

TOOLS USED: Following tools were used:

I. Schedule:

This was used to acquire some information's related to personal and socio- economic information's, information's regarding workplace atmosphere and knowledge of AWWs about nutrition and health.

a) Personal and socio- economic information- These includes questions regarding name, age, educational qualification, monthly income, educational qualifications, work experience, no. of earning members in the family, type of houses, family and vehicle etc.

b) Workplace atmosphere information- These includes questions related to types of AW building, facilities provided, salary structure, grievances from superiors, work overload, social problem etc.

c) Knowledge about nutrition and health- These includes questions related to the knowledge of AWWs about nutrition and various health services provided by anganwadi.

STATISTICAL ANALYSIS

Following statistical method was used.

1. Percentage was calculated.
2. Graphical representation was done for the clarity of the finding. All calculations were shown by bar chart.

MAIN FINDINGS:

WWs have to do lot of paper work.

- Both rural and urban workers are facing job security problems.

SUGGESTIONS:

- It is important to provide more facilities to AWWs in both rural and urban areas.
- Job security and promotion opportunities are important to boost up the morel of AWWs.
- In order to improve the knowledge of nutrition the AWWs should be provided with more and more training programme.
- The ICDS programme should be made popular through training programme.
- The behaviour of superiors should be soft towards AWWs.
- At the time of recruitment, it is important to give priority to the educational qualification and knowledge.

SIGNIFICANCE OF THE STUDY:

India is suffering from poverty, overpopulation, unemployment, malnutrition and many more. Out of these serious problems the study will at-least provide correct information about the anganwadi workers. Given the urgency of health care issues, child mortality, malnutrition and so on, our

country needs high number of medical and health care professionals to care the population i.e. now running into billions. Due to shortage of skilled professionals, the government's Integrated Child Development Services (ICDS) scheme is using the local population to help meet its grand goal. So, the study was conducted to know the efficiency of the AWWs, to study their knowledge regarding nutrition and assessing profile and problems of rural and urban workers for the betterment of the ICDS programme.

BIBLIOGRAPHY

1. Acharya, N.G. (1989). A study on role performance and job satisfaction of anganwadi workers of the ICDS scheme in Andhra Pradesh. http://Krishikosh.egranth.ac.in/handle/ 1/ 172204.
2. Aggarwal, A. (April 8, 2017). Malnourished systems: Why India's child development programme is getting stunted. http://www.hufflingtonpost.in/abhishri-aggarwal-malnourished-system-why-india-s-child-development programme-is/?utmhp_ref=in-homepage.
3. Amalappa, Kamala. Kawake. Laxman. (2015). Socio economic condition of Anganwadi workers- A case study of Raichur District in M.P.
4. Annie, Liu., Sarah, Sullivah., Singh, Prabhjot. (May 2011). Community Health Workers in global health scale and Scalability, Mount Sanai Journal ofMedicine: *vol- 78, issue-3.*
5. Annual report. (2017-18). Ministry of women and child development govt. of India. http://wed.nic.in/sites/ default/files/ annual-report-2017-18.pdf. Accessed on April 8, 2018.
6. Anonymous. (30 September and 1st October 2004). Statement of the Inter agency support group on Indigenous issues regarding people and the millennium development goals, online URL: http://www.un.org/esa/socdev/ unpfii/iasg.html,2004.
7. Baliga, S. S. et. al. (2017 sept). A Study on Knowledge of Anganwadi Workers about ICDS at three Urban Health Centers. International Journal of Community Medicine and Public Health. *4 (9): 3283-3287.* http://www.ijcmph.com
8. Barman, N R. (2001). Functioning of Anganwadi Centre under ICDS scheme: An Evaluative study. Jorhat, Assam. DCWC Research Bulletin, *XII (4):87.*
9. Bhasin, S. K., Bhatia, V., Kumar, P., Agarwal, O. P. (2001). Long term nutritional effect of ICDS. Indian Journal of Paediatrics, *68 (3), 211-216.*
10. Bhargav, Pramo. (sat 6/9/18). Jaiv Vividhata hai Bharat Ki Dharohar, India Hindi Portal.
11. Borohain, Himanta., Saika,Prasad. Jyoti. (2017). Problems of Anganwadi workers: a study in Shivsagar district of Assam. *vol. 8, Issue 3, 145-154.*

AUTHOR

Ajit Vishwakarma

E-MAIL ID- Ajitvishwak92@gmail.com

MOB. NO. 9431143568

University Department of Anthropology

Ranchi University Ranchi

47

Globalization of Retail Industry through AI: A Case Study of Amazon Go Stores

Dr. Bindu Roy, Ms. Shikha Raghav

Abstract

Artificial Intelligence (AI) has emerged as a key driver of innovation, fundamentally altering retail operations by optimizing business strategies, enhancing customer satisfaction, and refining supply chain efficiency. Retailers are leveraging AI to gain deeper insights into consumer behavior, streamline operations, and deliver highly personalized and immersive shopping experiences. This paper explores the strategic impact of AI in retail culture, with a specific focus on its role in fostering innovation and competitive advantage through a case study of Amazon Go stores. It examines the concept and operational framework of Amazon Go, assessing the broader implications of AI and automation in the retail sector. The findings reveal AI's capacity to bridge cultural gaps, tailor customer interactions, and improve operational efficiency, thereby contributing to the global success of retail brands. However, the study also addresses ethical and regulatory concerns, including data privacy issues and the potential risks of cultural homogenization**.**

Keywords: Artificial Intelligence (AI), Global retail landscape, Transformative revolution, Engaging shopping experience, Automation in retail sector

Introduction

The global retail industry is undergoing a transformative shift driven by emerging technologies such as artificial intelligence (AI), virtual reality (VR), augmented reality (AR), and block chain. These advancements prioritize convenience, personalization, and emotional engagement, prompting companies to adapt to evolving consumer behaviors. Strategies such as online shopping, mobile commerce, data analytics, technology integration, user-generated reviews, and contactless payments are reshaping the retail experience. With increasing growth of AI in retail industry, AI is revolutionizing retail by enhancing operational efficiency, customizing customer services & experiences, customer assistance through AI powered chatbots, demand forecasting etc. (Ramazanov, Panasenko, Cheglov, Krasil'nikova, & Nikishin, 2021)

AI and the Retail Industry

Artificial intelligence has transformed retail operations by boosting efficiency, personalizing consumer experiences, and improving inventory management (Archith, Shivkumar, & Mehta, 2018). One of the most notable AI technologies in the retail sector is **Computer Vision** which enables cashier-less shopping by tracking consumer movements and purchases. This allows shoppers to grab items and leave the store while their accounts are automatically billed, eliminating the need for traditional checkout lines and providing a smoother, faster shopping experience (Guha, et al., 2021); (Godley, 2012). Another significant AI tool is **Sensor Fusion** which integrates data from multiple sensors such as RFID, cameras and motion detectors to streamline inventory control and stock management. By providing real-time tracking of inventory, this technology minimizes issues like stockouts or excess stock, ensuring products are always available when customers want them (Miriam, 2023).

AI also helps retailers understand consumer behavior through **Sentiments Analysis & Machine Learning Algorithms** (Dimova, 2021). Sentiment analysis collects consumer opinions from sources like social media and reviews, helping businesses better understand customer moods and preferences. This data allows retailers to optimize store layouts, adjust product offerings and fine-tune marketing strategies. **Machine Learning Algorithms** go a step further by predicting customer behaviors and personalizing the shopping journey, offering tailored recommendations and promotions (Thoti, Uthamaputhran, Zaato, & & Salman, 2023). **Chatbots & Virtual Assistance** are becoming **essential in retail, providing** 24*7 customer support. These AI-driven tools can respond to customer inquiries, assist with purchasing decision and resolve issues without the need for human intervention, leading to improved customer satisfaction and more efficient operations (Har, Rashid, Te Chuan, Sen, & Xia, 2022)The evolution of AI has significantly reshaped the retail industry,

introduced novel shopping experiences and altered consumer interactions with businesses (Cao, 2021). Amazon Go, an innovative AI-driven retail model, serves as a prime example of this shift (Wingfield, 2018).

Research Objectives

This paper explores how AI has contributed to the expansion of global retail culture by examining Amazon Go's technological infrastructure and its implications for international markets. Furthermore, the study discusses ethical and regulatory considerations, such as data privacy issues and the risks of cultural homogenization, alongside possible solutions.

Research Methodology

This qualitative research is an in-depth investigation of retail sector and AI fusion through a case study of Amazon Go stores. The researchers analyzed practices of Amazon Go stores that promotes fusion of AI in global retail formats. For every information, researchers have analyzed the official company website and YouTube page of Amazon Go. Researchers ensured that they have covered majority of web-based communication platform. Through this it was found out that Amazon Go stores has AI deeply rooted in its operations which contribute to unique and innovative shopping experience powered by advanced technology.

About Amazon Go

Amazon Go is a new kind of corner store where you stop by to grab a freshly-brewed coffee, pick up breakfast or lunch, browse a selection of snacks, alcohol, and local baked goods, or return an Amazon package (Wingfield, 2018). Plus, with Just Walk Out shopping you can get in and out quickly without scanning any items or waiting in a checkout line (Cui, van Esch, & Jain, 2022). There are no cashiers or registers anywhere. Shoppers leave the store through those same gates, without pausing to pull out a credit card. Their Amazon account automatically gets charged for what they take out the door. Every time customers grab an item off a shelf, Amazon says the product is automatically put into the shopping cart of their online account. If customers put the item back on the shelf, Amazon removes it from their virtual basket (Archith, Shivkumar, & Mehta, 2018). As of March 15, 2025, there are 19 Amazon Go stores operating in the United States. These cashier less convenience stores are located in four states-**Washington**: 10 stores, **Illinois**: 5 stores, **California**: 2 stores, **New York**: 2 stores.

Amazon Go's Technological Framework and Functioning

Amazon Go utilizes **Just Walk Out** technology, an advanced AI-based system that allows customers to shop without standing in checkout lines (Cui, van Esch, & Jain, 2022). Amazon Go is a blend of digital convenience with in-store shopping (Varma, Varde, & Ray, 2024). The core elements of this technology include:

- **Entry Process**: Customers scan their Amazon Go app at the entrance, linking their visit to their Amazon account.
- **Product Selection**: AI-powered cameras and weight sensors detect items picked up or returned to shelves.
- **AI-Driven Tracking**: Deep learning algorithms monitor consumer interactions with products and update their virtual shopping cart accordingly.
- **Automatic Checkout**: Once a customer exits the store, AI finalizes the transaction, charging their linked Amazon account automatically.
- **Inventory Management**: AI continuously tracks stock levels, ensuring efficient restocking and inventory control.
- **Smart Shelves:** Equipped with weight sensors and computer vision, these shelves detect product movement and update the inventory in real-time.

Impact on Consumer Behavior

AI-driven retail innovations significantly impact consumer behavior by enhancing convenience with frictionless shopping experiences by reducing wait times and improving overall customer satisfaction. By Leveraging data analytics for tailored shopping experiences and facilitating cultural adaptation by adjusting retail strategies based on local consumer preferences, Al has impacted consumer behavior.

Challenges and Potential Expansion in India

India's retail sector is a large and rapidly growing market, projected to reach $2 trillion by 2032 as per the reports off IBEF (IBEF, 2025). Retail industry consists of all companies that sell goods and services to final consumers. There are many different retail stores worldwide, including grocery stores, supermarkets, online retail stores like Myntra, Flipkart etc. (Godley, 2012); (Leknes & Carr, 2004). India's rapidly

expanding retail market presents a lucrative opportunity for Amazon Go's expansion (Amazon). However, several challenges must be considered with proposed solutions.

- **Cultural Shopping Preferences**: A strong consumer preference for human interaction in shopping environments. India's shopping preferences can be evaluated by deep cultural preferences, where human interactions play a vital role. For Indian consumers shopping is a social activity where personalized service, bargaining, and advice from shop assistants hold significant value.

  Hybrid Model: To Address this challenge, Amazon could consider introducing hybrid model that combines cashier-less technology with traditional checkout options. For instance, in-store digital assistants could offer guidance while maintaining the technology-driven advantages of Amazon Go.

- **Payment Ecosystem**: While digital payment adoption in India is rapidly growing, the retail sector still remains heavily reliant on cash transactions. Amazon Go's Model is designed to function on seamless, card-based or mobile wallet payments, requiring customers to link their credit or debit card to their amazon accounts. This could limit the system's effectiveness if a significant portion of the population does not have access to digital payment methods.

  Integration of Alternative payment options: Amazon could address this problem by integrating alternative payment options, such as UPI, which is widely used in India or mobile wallet systems like Paytm, Google Pay. Moreover, Amazon could introduce incentives for cashless transactions to encourage users to switch to digital payments.

- **Connectivity Issues:** One of the most crucial elements for the success of Amazon Go is its reliance on robust internet connectivity to power its sensor-based, AI- driven systems. While major cities like Mumbai, Delhi and Bangalore are well equipped with high-speed internet, many parts of the country still struggle with inconsistent network infrastructure so in some regions, inconsistent network infrastructure may pose operational challenges.

  Collaborative networks: To mitigate this issue, Amazon Go could focus initially on metropolitan areas where internet infrastructure is more stable and reliable. Furthermore, Amazon could work on local network improvements by collaborating with Indian telecom providers to enhance connectivity. In the long run, expanding 5G networks could offer a viable solution to the connectivity problem, supporting Amazon Go's sensor technology.

- **Power Supply Stability**

  India's power infrastructure, though improving, is still prone to frequent outages, especially in smaller towns and rural areas. Power disruptions could severely disrupt the technology-heavy model of Amazon Go, where the sensors, cameras, and other tech systems depend on a stable and continuous power supply to function correctly. Even in urban areas, short-term outages can lead to operational inefficiencies, such as transaction failures or store closures.

  Backup power solutions: To minimize the impact of power instability, Amazon Go could implement backup power solutions such as generators or large battery systems to ensure that the technology remains functional during power outages. Additionally, Amazon could consider using energy-efficient systems to reduce the power load and improve the overall sustainability of the operation.

- **Workforce Dynamics:** India's retail sector is known for its large, labor-intensive workforce, with millions of individuals employed in various capacities across the retail value chain. While automation and AI-driven technology have the potential to streamline operations and reduce labor costs, there may be significant resistance from workers and unions. In densely populated urban areas, where unemployment is a concern, reducing the need for human staff could lead to social pushback.

  Reskilling the workforce: Amazon Go could implement a phased approach to workforce transformation, where automation is introduced gradually while retraining workers for new roles in technology maintenance, customer service, or other

value-added services. Additionally, Amazon could partner with local government and industry stakeholders to create programs aimed at reskilling the workforce to adapt to new retail models.

- **Regulatory Hurdles:** India's Foreign Direct Investment (FDI) policies are stringent, particularly in multi-brand retail, where foreign investment is often subject to complex regulations. These policies require compliance with local sourcing norms, which could limit Amazon's ability to fully implement its global operational model. There may also be regulatory challenges related to data privacy and consumer protection laws, which would require Amazon to adapt its business practices to align with Indian legal requirements.

  Work with government bodies: Amazon would need to work closely with the Indian government to ensure compliance with FDI regulations, possibly through joint ventures or strategic partnerships with local players to circumvent barriers related to direct foreign ownership. Additionally, Amazon could invest in lobbying efforts to influence policy changes that better align with global best practices in technology-driven retail.

- **AI and Localization:** Amazon Go's AI-driven technology, which tracks what customers pick up and charges them automatically, is a key feature of its success in other markets. However, in India, shopping behaviors are different from those in Western countries, and the AI system may need to b customized to accommodate local preferences. For example, consumers in India often shop in smaller, more frequent trips, and may place higher value on items like fresh produce, spices, and regional food items.

  Analyze and adapt local shopping culture: Amazon Go could use AI to analyze and adapt to local shopping habits, tailoring the product selection and digital interfaces to suit the preferences of Indian customers. This could include offering a wider range of regional products, incorporating local language options in the app, and making the technology more intuitive for first-time users.

Conclusion:

Amazon Go exemplifies a groundbreaking shift in global retail culture, driven by AI-powered automation. While the model has been successful in the United States, its expansion into new international markets necessitates careful consideration of economic, cultural, and regulatory factors. AI will continue to drive retail innovation, offering new opportunities and challenges for businesses looking to scale globally. By proactively addressing data privacy concerns and the risks of cultural homogenization, Amazon Go can strategically navigate the complexities of global retail expansiohttps://www.ibef.org/industry/retail-indian.

References:

Archith, M., Shivkumar, V., & Mehta, R. (2018). Amazon go: The future of retail. *International Journal of Academic Research and Development*, 3 (1), 646-647.

Cao, L. (2021). Artificial intelligence in retail: applications and value creation logics. . *International Journal of Retail & Distribution Management,* , 49(7), 958-976.

Cui, Y., van Esch, P., & Jain, S. P. (2022). Just walk out: the effect of AI-enabled checkouts. . *European Journal of Marketing,* , 56(6), 1650-1683.

Dimova, N. (2021). Influence of Digitalisation on Consumer Behaviour in Retail. *Management & Economics. London, IIn 5th international conference on Business,*, pp (pp. 39-49).

Godley, A. &. (2012). Globalisation and the evolution of international retailing: a comment on Alexander's 'British overseas retailing, 1900–1960'. . *Business History,* , 54(4), 529-541.

Guha, A., Grewal, D., Kopalle, P. K., Haenlein, M., Schneider, M. J., Jung, H., & Hawkins, G. (2021). How artificial intelligence will affect the future of retailing. . *Journal of Retailing,* , 97(1), 28-41.

Har, L. L., Rashid, U. K., Te Chuan, L., Sen, S. C., & Xia, L. Y. (2022). Revolution of retail industry: from perspective of retail 1.0 to 4.0. *Procedia Computer Science,* , 200, 1615-1625.

IBEF. (2025, Feb). *Retail Industry Report.* Retrieved from www.ibef.org: https://www.ibef.org/industry/retail-india

Leknes, H. M., & Carr, C. (2004). Globalisation, international configurations and strategic implications: The case of retailing. *Long Range Planning,* , 37(1), 29-49.

Miriam, T. I. (2023). FORESIGHT IN THE GLOBALIZATION ERA ON RETAIL. *Journal of Public Administration, Finance & Law.*

Ramazanov, I. A., Panasenko, S. V., Cheglov, V. P., Krasil'nikova, E. A., & Nikishin, A. F. (2021). Retail transformation under the influence of digitalisation and technology development in the context of globalisation. *Journal of Open Innovation: Technology, Market and Complexity*, 7(1), 49.

Retrieved from Amazon: https://www.amazon.com/b?ie=UTF8&node=16008589011

Thoti, K. K., Uthamaputhran, S., Zaato, S. G., & & Salman, A. (2023). EFFECT OF TECHNOLOGICAL ADVANCEMENT ON GLOBAL RETAIL INDUSTRY DEVELOPMENT TRENDS. *Journal of Namibian Studies*, 33.

Varma, A., Varde, Y., & Ray, S. (2024). Reinventing the retail experience: The case of amazon GO. . *World Journal of Advanced Research and Reviews,* , 21(3), 1123-1133.

Wingfield, N. (2018, Jan. 21). *Inside Amazon Go, a Store of the Future.* Retrieved from Nytimes.com: https://www.nytimes.com/2018/01/21/technology/inside-amazon-go-a-store-of-the-future.html

Dr. Bindu Roy
Assistant Professor, DAV Centenary College,
NH-3, Faridabad, Haryana, Pin code-121001
Mob. No. 9953150048,
Email- bindu.roy23@gmail.com

Ms. Shikha Raghav
Assistant Professor, DAV Centenary College,
NH-3, Faridabad, Haryana, Pin code-121001.
Shikharaghav.ysr@gmail.com

LOVE WAVES IN A n-LAYERED SELF-REINFORCED TRANSVERSELY ISOTROPIC MEDIUM

Dr. Anita Sehrawat

1. ABSTRACT

This article investigates the propagation of Love-type waves model of n-layered in transversely isotropic medium with self-reinforcement. Using Haskell matrix method, the dispersion relations are derived when the upper layer has a rigid boundary. The expressions for non-dimensional velocity and stress are obtained by applying appropriate boundary conditions.

Keywords: - Love waves, multi-layered, Thomson- Haskell method, transversely isotropic.

2. INTRODUCTION

Thomson (1950) evolved a matrix method for studying the transmission of waves through a stratified solid medium. Haskell (1962) further developed it and applied it to study the waves in a multi-layered elastic medium. This method is known as "Thomson-Haskell's matrix method." Various authors Anderson (1962), Hannon (1964a,b), Singh et al. (1976), have used this method to solve the problems of wave propagation in a multi-layered elastic structure. Love waves in a transversely isotropic, laterally and vertically inhomogeneous, layered medium have been discussed by Umesh (1977), in which she used the generalized form of Thomson-Haskell matrix method to obtain the dispersion equation in a multilayered transversely isotropic and inhomogeneous halfspace. (Swarn 1995) used the method of Thomson and Haskell for studying propagation of waves in a spherically stratified model. Pradhan et. al (2003) studied the dispersion of Love waves in a self-reinforced layer lying over an elastic non-homogeneous half space. Chattopadhyay et. al (2010) examined the propagation of shear waves in a magnetoelastic self-reinforced medium using finite difference technique. Dispersion equation has been deduced for the case when $(n-1)$ layers lie over a half space. Alam et. al (2019) analyzed the dispersion and attenuation characteristics of Love-type wave propagation in a fiber-reinforced layer laid on an inhomogeneous viscoelastic half-space.Lakshman et. al (2022) studied the propagation of Love-type wave in an initially stressed functionally graded piezoelectric material layer overlying an orthotropic fluid-saturated porous half-space. He also analyzed the impacts of wave number, gradient parameter, tensile initial stress on the dispersion curve of Love-type wave.Kaur et. al (2023) discussed the dispersion of Love-type surface waves in a multilayered isotropic linear elastic solid containing uniformly distributed voids.Nath and Dhua (2025) analyzed the propagation behavior of SH-wave in a functionally graded magneto-visco-elastic orthotropic multi-layered composite structure. Haskell's matrix technique has been used to derive the closed-form dispersion relation for the assumed model. We consider in this chapter, the problem of propagation of Love waves in n-layered self-reinforced transversely isotropic homogeneous elastic medium with (n-1) layers over a halfspace. The Thomson-Haskell's matrix method is used to derive the frequency equations in the layered medium when the upper layer has a rigid boundary.

3. GEOMETRY OF THE PROBLEM

We consider a homogeneous transversely isotropic self-reinforced elastic halfspace, under a layered medium consisting of (n-1) parallel self-reinforced transversely isotropic and homogeneous layers. The layers and the halfspace are assumed.

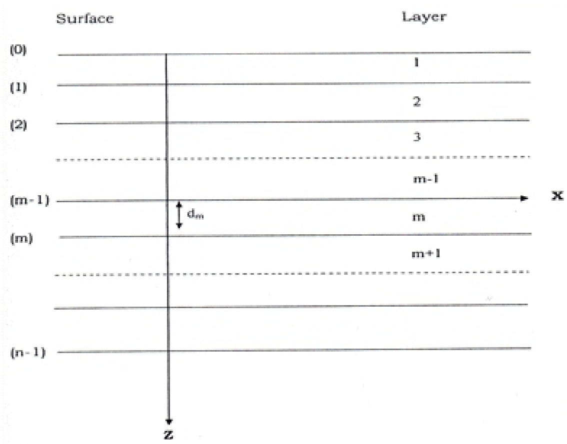

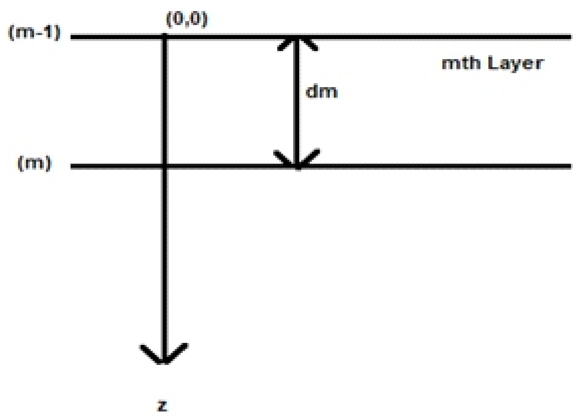

Fig 1.1

in welded contact along the interfaces, The mth layer (m = 1,…… n-1) is of finite thickness d_m. The problem is considered as a plane in the xz-plane with the z-axis vertically downwards. For studying Love type surface waves in the medium, we take the case when the upper surface has a rigid boundary such that at the upper surface of the elastic layer, displacement is zero but the stresses are non-zero.

The geometry of the problem is depicted in Fig. 1.1.

1. EQUATION OF MOTION AND ITS SOLUTION

In self-reinforced elastic solids, the constitutive equations are [Belfield et al. (1983)]:

$$\tau_{ij} = \lambda e_{kk}\delta_{ij} + 2\mu_T e_{ij} + \alpha'(a_k a_r e_{kr}\delta_{ij} + e_{kk}a_i a_j) + 2(\mu_L - \mu_T)(a_i a_k e_{kj} + a_j a_k e_{ki}) + \beta' a_k a_r e_{kr} a_i a_j \quad (4.1)$$

and the equations of motion in absence of body forces are

$$\tau_{ij,j} = \rho\frac{\partial^2 u_i}{\partial t^2} \quad (4.2)$$

In (4.1) and (4.2), we have the strain tensor.

$$e_{ij} = \frac{1}{2}(u_{i,j} + u_{j,i})$$

the direction cosines of the direction of reinforcement are a_i, s,u_t, u_j which are all elastic constants, and the displacement vector is $u = (u_1,u_2,u_3)$. Indices take the value 1,2,3 and repeated suffix indicates the summation convention.

If $(u_m,v_m,w,)$ are taken as the components of the displacement in the mth layer along x, y, z-axes respectively, then for Love waves we consider:

$u_m = 0, v_m = v_{m(x,z,t)}, w_m = 0$

and

$a_m = (a_{im}, 0, a_{3m})$ such that $a^2_{1m} + a^2_{3m} = 1$ (4.3)

Equations (4.1), (4.2), and (4.3) together give the only non-zero equation of motion as:

$$L_m\frac{\partial^2 v_m}{\partial z^2} + M_m\frac{\partial^2 v_m}{\partial x^2} + N_m\frac{\partial^2 v_m}{\partial x\partial z} = \rho_m\frac{\partial^2 v_m}{\partial t^2}, \quad (4.4)$$

Where:

$$L_m = \mu_{Tm} + (\mu_{Tm} + \mu_{Lm} - \mu_{Tm})a^2_{3m}, \quad (4.5)$$

$$M_m = \mu_{Tm} + (\mu_{Tm} + \mu_{Lm} - \mu_{Tm})a^2_{1m}, \quad (4.6)$$

$$N_m = 2a_{1m}a_{3m} + (\mu_{Lm} + \mu_{Lm}). \quad (4.7)$$

And

μ_{Tm}, μ_{Lm}- μ_{Tm} are the elastic constants , ρ_m is the density.

The solution of (4.4) which gives time harmonic waves propagating in positive x-direction, given by:

$$V_m(x,z,t) = [A_m e^{ik(\eta_m - \frac{1}{2}\acute{a}_m)z} + B_m e^{-ik(\eta_m + \frac{1}{2}\acute{a}_m)z}]e^{ik(x - ct)} \quad (4.8)$$

Where:

$$\alpha_m = \frac{N_m}{L_m}, \quad \eta_m = \left[\frac{N_m^2}{4L_m^2} + \frac{1}{L_m}(\rho_m C^2 - M_m)\right]^{1/2} \quad (4.9)$$

k is the wave number, c is the phase velocity, and A_m, B_m are arbitrary constants in the mth layer is

From equation (4.1), the transverse shear stress in the mth layer is:

$$(\tau_{23})_m = L_m\frac{\partial v_m}{\partial z} + \frac{1}{2}N_m\frac{\partial v_m}{\partial x}, \quad (4.10)$$

Which with the help of (4.8) becomes

$$(\tau_{23})_m = \left\{L_m\left[ik\left(\eta_m - \frac{1}{2}\alpha_m\right)A_m e^{ik\left(\eta_m - \frac{1}{2}\alpha_m\right)z} - ik\left(\eta_m + \frac{1}{2}\alpha_m\right)B_m e^{-ik\left(\eta_m - \frac{1}{2}\alpha_m\right)z}\right] + \frac{1}{2}N_m\left[ikA_m e^{ik\left(\eta_m - \frac{1}{2}\alpha_m\right)z} + ikB_m e^{-ik\left(\eta_m + \frac{1}{2}\alpha_m\right)z}\right]\right\}e^{ik(x - ct)} \quad (4.11)$$

After collecting the terms of A_m, B_m and substituting the value of α_m from (4.9) on simplification $(\tau_{23})_m$ becomes

$$(T_{23})_m = \Big[ikL_m \eta_m e^{ik\left(\eta_m - \frac{1}{2}\alpha_m\right)z} A_m$$

$$-ikL_m \eta_m e^{-ik\left(\eta_m - \frac{1}{2}\alpha_m\right)z} B_m \Big] e^{ik(x - ct)} \quad (4.12)$$

5. BOUNDARY CONDITIONS

The layers are assumed to be in welded contact so the boundary conditions which are to be satisfied are the continuity of displacement and stresses at each interface.

We have considered the continuity of stress Vm/cacross the interface where Vm/ that is, velocity. This can be done and cannot affect the usual boundary conditions because c is a constant (the same for all layers), and the time derivative does not change the continuity conditions, since kis also the same for all layers.

6. THOMSON-HASKELL'S MATRIX METHOD:

Before applying the boundary conditions at each interface, we write, after excluding the common factor $e^{i\kappa(\chi-ct)}$ the expressions for the non-dimensional velocity $\frac{V_m}{c}$ and stress in the mth layer. From equations (4.8) and (4.12), After excluding a common factor $e^{i\kappa(\chi-ct)}$ and using Euler's formuls for $\pm e^{i\kappa\eta_m z}$ in trigonometric form, expressions for Vm/ cand for mth layer in matrix form can be expressed as$(\tau_{23})_m$

$$\begin{bmatrix} \frac{V_m}{c} \\ (t_{23})_m \end{bmatrix} = e^{-\frac{i}{2}k\alpha_m z} \begin{bmatrix} -ik\cos(k_m\eta z) & k\sin(k\eta_m z) \\ -kL_m\eta_m\sin(k\eta_m z) & ikL_m\eta_m\cos(k\eta_m z) \end{bmatrix} \begin{bmatrix} A_m + B_m \\ A_m - B_m \end{bmatrix} \quad (6.1)$$

Each layer is homogeneous, that is, elastic parameters are independent of space coordinates. Therefore, the origin may be shifted at any interface. For simplicity in the expressions, the origin z = 0 is taken in the (m-1)th interface, which is the upper boundary of the mth layer. So, at the (m-1)th interface, we have z = 0. Hence:

$$\left(\frac{V_m}{c}\right)_{(m-1)} = \frac{V_m}{c}\Big|_{at z=0} \quad (6.2)$$

$$(\tau_{23})_{(m-1)} = (\tau_{23_m})\Big|_{at z=0} \quad (6.3)$$

Here $\left(\frac{V_m}{c}\right)_{(m-1)}$ and $(\tau_{23})_{(m-1)}$ denote the values at the (m-1)th interface, calculated from the values of the mth layer. In the subsequent expressions, we will write $\left(\frac{V_m}{c}\right)_{(m-1)}$ and $(\tau_{23})_{(m-1)}$ instead of $\left(\frac{V_m}{c}\right)_{(m-1)}$ and $(\tau_{23}^m)_{(m-1)}$ Writing above equations in matrix form, we get:

$$\begin{vmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (T_{23}) \end{vmatrix}_{(m-1)} = \begin{vmatrix} -ik & 0 \\ 0 & ikL_m\eta_m \end{vmatrix} \begin{vmatrix} A_m + B_m \\ A_m - B_m \end{vmatrix} \quad (6.4)$$

At the mth interface, the expressions for $(v/c)_{(m)}$ and $(\tau_{23}^m)_{(m)}$ obtained by putting $z=d_m$ in(6.1) are:

$$\begin{bmatrix} \frac{V_m}{c} \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_m = e^{\frac{i}{2}k\alpha_m d_m} \begin{bmatrix} -ik\cos(k\eta_m d_m) & k\sin(k\eta_m d_m) \\ -kL_m\eta_m\sin(k\eta_m d_m) & ikL_m\eta_m\cos(k\eta_m d_m) \end{bmatrix} \times \begin{bmatrix} A_m + B_m \\ A_m - B_m \end{bmatrix} \quad (6.5)$$

Eliminating $(A_m + B_m)$ and $(A_m - B_m)$ between (6.4) and (6.5), we have

$$\begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_{(m)} = e^{\frac{i}{2}k\alpha_m d_m} \begin{bmatrix} -ik\cos(k\eta_m d_m) & k\sin(k\eta_m d_m) \\ -kL_m\eta_m\sin(k\eta_m d_m) & ikL_m\eta_m\cos(k\eta_m d_m) \end{bmatrix} \times$$

$$\begin{bmatrix} \frac{i}{k} & 0 \\ 0 & -\frac{i}{kL_m\eta_m} \end{bmatrix} \begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_{(m-1)} \quad (6.6)$$

On simplification (6.6) gives

$$\begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_{(m)} = e^{\frac{i}{2}k\alpha_m d_m} \begin{bmatrix} \cos(k\eta_m d_m) & -\frac{i}{L_m\eta_m}\sin(k\eta_m d_m) \\ -iL_m\eta_m\sin(k\eta_m d_m) & \cos(k\eta_m d_m) \end{bmatrix} \times \begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (T_{23}) \end{bmatrix}_{(m-1)} \quad (6.7)$$

Equation (6.7) relates the values $\frac{v}{c}$ and τ_{23} at (m – 1)th interface to those at (m)th interface. Equation (6.7)

$$\begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_{(m)} = a_m \begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_{(m-1)} \qquad (6.8)$$

Where

$$a_m = e^{\frac{i}{2}k\alpha_m d_m} \begin{bmatrix} \cos(k\eta_m d_m) & -\frac{i}{L_m\eta_m}\sin(k\eta_m d_m) \\ -iL_m\eta_m\sin(k\eta_m d_m) & \cos(k\eta_m d_m) \end{bmatrix} \qquad (6.9)$$

Similarly for (m-1)th layer we may write

$$\begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_{(m-1)} = a_{m-1} \begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_{(m-2)} \qquad (6.10)$$

Now using the boundary conditions that is continuity of (v/c) and (τ_{23}) at (m-1)th interface from 6.9 and 6.10 we have and

$$\begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_{(m)} = a_m a_{m-1} \begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_{(m-2)} \qquad (6.11)$$

Repeated application of this iterative procedure to equation 6.11 gives

$$\begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_{(n-1)} = a_{n-1}a_{n-1}.......a_1 \begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_{(0)} \qquad (6.12)$$

Defining the matrix product $A = \left[A_{pq}\right]_{2\times 2} = a_{n-1}\, a_{n-2} \ldots a_1$

We have:

$$\begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_{(n-1)} = A \begin{bmatrix} \left(\frac{v}{c}\right) \\ (\tau_{23}) \end{bmatrix}_{(0)} \qquad (6.13)$$

The equation (6.13) is the matrix form of the following two equations:

$$\left(\frac{v}{c}\right)_{(n-1)} = A_{11}\left(\frac{v}{c}\right)_{(0)} + A_{12}\left(\tau_{23}\right)_{(0)} \qquad (6.14)$$

and

$$\left(\tau_{23}\right)_{(n-1)} = A_{21}\left(\frac{v}{c}\right)_{(0)} + A_{22}\left(\tau_{23}\right)_{(0)} \qquad (6.15)$$

Replacing m by n, in 6.4 the values $\left(\frac{v}{c}\right)_{(n-1)}$ and $\left(\tau_{23}\right)_{(n-1)}$ are given by

$$\left(\frac{v}{c}\right)_{(n-1)} = -ik(A_n + B_n), \qquad (6.16)$$

and

$$\left(\tau_{23}\right)_{(n-1)} = -ikL_n\eta_n(A_n - B_n) \qquad (6.17)$$

Using continuity of stresses and (v/c) at (n-1)th interface, from (6.14) to (6.17), we get

$$(A_n + B_n) = -\frac{1}{k}\left(\frac{v}{c}\right)_{(0)} A_{11} - \frac{1}{ik}\left(\tau_{23}\right)_{(0)} A_{12} \qquad (6.18)$$

$$(A_n - B_n) = \frac{1}{ikL_n\eta_n}\left(\frac{v}{c}\right)_{(0)} A_{21} + \frac{1}{ikL_n\eta_n}\left(\tau_{23}\right)_{(0)} A_{22} \qquad (6.19)$$

In the halfspace z=8 , we have for the existence of surface waves A_n=0and η_n should be negative and imaginary. When the upper layers has a rigid this case, we will have $(v/c)_{(0)}0$ and $A_n = 0$. With the help of boundary. In these conditions, (6.18) and (6.19) becomes:

$$B_n = -\frac{1}{iK}\left(\tau_{23}\right)_{(0)} A_{12} \qquad (6.20)$$

$$B_n = -\frac{1}{i\kappa L_n\eta_n}\left(\tau_{23}\right)_{(0)} A_{12} \qquad (6.21)$$

Dividing equations (6.20) and (6.21), we have:

$$\frac{A_{12}}{A_{22}} - \frac{1}{L_n\eta_n} = 0 \qquad (6.22)$$

This is the frequency equation for Love type waves in the n-layered structure when the upper layer has a rigid boundary.

1. CONCLUSION

The Thomson-Haskell matrix method is used to obtain the frequency equation in a multilayered self-reinforced transversely isotropic homogeneous elastic medium, having (n-1) layers over a half-space. When the upper layer has a rigid

boundary with no displacement and non-zero stresses.

REFERENCES

- Anderson, D.L. (1962). Love wave dispersion in heterogeneous anisotropic media. Geophysics, 27, No. 4, 445-454.
- Alam, P., Kundu, S., Badruddin, I. A., & Khan, T. M. Y. (2019). Dispersion and attenuation characteristics of Love-type waves in a fiber-reinforced composite over a viscoelastic substrate. *Physics of Wave Phenomena*, *27*, 281-289.
- Chattopadhyay, A., Gupta, S., & Singh, A. K. (2010). The dispersion of shear wave in multilayered magneto elastic self-reinforced media. *International Journal of Solids and Structures*, *47*(9), 1317-1324.
- Hannon, W.J. (1964a). Tech. Report A.F. Cambridge Res. Lab. Bedford, Mass. Rept. No. AFCRL, 1564-1614.
- Hannon, W.J. (1964b). Bull. Seism. Soc. Am., 54, 2067-2079. An application of the Haskell-Thomson matrix method to the synthesis of the surface motion due to dilalational waves.
- Haskell, N.A. (1962). J. Geophys. Res., 67, 4751-4769. Crystal reflection of plane P and SV waves.
- Kaur, S., Khurana, A., & Tomar, S. K. (2023). Love-type waves in multilayered elastic media containing voids: Haskell matrix method. *Journal of Elasticity*, *153*(1), 29-52.
- Lakshman, A. (2022). Propagation characteristic of Love-type wave in different types of functionally graded piezoelectric layered structure. *Waves in Random and Complex Media*, *32*(3), 1424-1446.
- Nath, A., & Dhua, S. (2025). Influence of initial stress on shear wave scattering in a functionally graded magneto-visco-elastic orthotropic multi-layered structure. *Waves in Random and Complex Media*, *35*(1), 1498-1522.
- Pradhan, A., Samal, S. K., & Mahanti, N. C. (2003). Influence of anisotropy on the love waves in a self-reinforced medium. *Journal of Applied Science and Engineering*, *6*(3), 173-178.
- Singh, B.M., Singh, S.J., Chopra, S.D. and Gogna, M.L. (1976), Geophys. J.R. Astr. Soc., 45, 357-370. On Love Waves is laterally and Vertically heterogeneous layered media.
- Swarn Lata (1995), Ph.D. Thesis, Kurukshetra University, Kuruksherta. Rayleigh waves in transversely isotropic layered spherical earth model.
- Thomson, W.T. (1950). J. Appl. Phys., 21, 89-93. Transmission of elastic waves through a stratified solid medium.
- Umesh Kumari (1977), Geophysical Research Bull., Vol.15, No.3.Love waves in laterally and vertically heterogeneous transversely isotropic layered media.

Dr. Anita Sehrawat

F.C. College for Women,

Near Devi Bhawan Mandir,

Mohana Mandi, Hisar, Haryana-125001

Mob:- +91-82959-39628

49

Mental Health Implications of Internship Programs Under NEP 2020 Among Physical Education Trainees

Dr Rambir Singh

Abstract

The National Education Policy (NEP) 2020 introduced significant reforms in teacher education, including extended internships emphasizing experiential learning. This study examines the mental health implications of these internships among physical education (PE) trainees, focusing on indicators such as stress, anxiety, burnout, motivation, and resilience. It also explores the role of support systems, coping strategies influenced by physical training, gender differences in perceived pressure, and impacts on career outlook and teaching confidence.

Introduction

The NEP 2020 aims to revamp India's education system, emphasizing holistic development and experiential learning. A key reform is the restructuring of teacher education programs, particularly the introduction of extended internships to provide hands-on experience in real classroom settings. For physical education trainees, these changes present unique challenges and opportunities, especially concerning mental health and professional development.

Internship Structure Under NEP 2020 and Comparison with Older Formats

Under NEP 2020, the teacher education curriculum mandates a 4-year integrated B.Ed. program, incorporating extensive internships that span at least 20 weeks. These internships involve active classroom engagement, lesson planning, student assessment, and community involvement. In contrast, previous models featured shorter internships with limited practical exposure. The NEP's approach aims to produce well-rounded educators proficient in both theory and practice [1, 2, 6].

Mental Healh Indicators Among PE Trainees Stress and Anxiety

Extended internships increase responsibilities, leading to heightened stress and anxiety among PE trainees. Balancing academic coursework with teaching duties, managing diverse student needs, and adapting to school environments contribute to psychological strain. Studies indicate that prolonged exposure to such stressors without adequate support can adversely affect mental health [5].

Burnout

The demanding nature of extended internships can result in burnout, characterized by emotional exhaustion and reduced personal accomplishment. PE trainees, in particular, face physical fatigue from active participation in sports and activities, coupled with the emotional demands of teaching, increasing the risk of burnout.

Motivation and Resilience Despite challenges, many PE trainees report increased motivation and resilience. Engagement in physical activities and sports fosters discipline, teamwork, and perseverance, which are transferable to teaching roles. These attributes help trainees navigate the complexities of internships and build confidence in their teaching abilities [3].

Support Systems: Mentorship, Institutional Guidance, Peer Support

Effective support systems are crucial in mitigating mental health challenges during internships.

- **Mentorship**: NEP 2020 emphasizes the establishment of mentoring programs to provide guidance and professional support to trainee teachers. Mentors play a pivotal role in helping trainees adapt to teaching environments, offering feedback, and fostering professional growth [1].
- **Institutional Guidance**: Educational institutions are encouraged to design mentoring programs at the institute level, ensuring that trainees receive consistent support aligned with institutional goals and NEP provisions [1].
- **Peer Support**: Collaborative learning and peer mentoring are integral to the NEP's vision, promoting a culture of shared learning and emotional support among trainees.

Coping Strategies and the Role of Physical Training

Physical education trainees often possess inherent coping

mechanisms derived from their training in sports and physical activities. Regular physical activity is linked to reduced stress and improved mental health, serving as a natural stress reliever. Furthermore, the discipline and resilience developed through sports can enhance trainees' ability to cope with the demands of internships.

Gender Differences in Perceived Pressure and Emotional Outcomes

Gender plays a significant role in how trainees experience and cope with internship pressures. Research indicates that while both male and female students benefit from physical education in terms of mental health, the effects can vary. For instance, physical education classes have been shown to reduce feelings of loneliness among students, with some studies suggesting that these effects are more pronounced in boys. Understanding these differences is essential for developing targeted support strategies [4].

Impacts on Career Outlook and Confidence in Teaching Abilities

Extended internships under NEP 2020 provide PE trainees with practical experience, enhancing their confidence and readiness for teaching careers. Engaging directly with students and participating in school activities allow trainees to apply theoretical knowledge, refine teaching skills, and develop a professional identity. However, without adequate support, the increased demands can lead to self-doubt and negatively impact career outlook. Therefore, structured support systems are vital to ensure positive outcomes.

Conclusion

The NEP 2020's restructured internship programs offer physical education trainees valuable opportunities for professional growth. While these internships can pose mental health challenges, the integration of robust support systems, emphasis on mentorship, and the inherentbenefits of physical training can mitigate adverse effects. Addressing gender-specific needs and ensuring institutional support are crucial for maximizing the benefits of these programs and fostering a resilient, confident teaching workforce.

References

1. Gupta, P. B., & Gupta, B. L. (2021). National Education Policy 2020 - Mentoring of Faculty Members towards Excellence in Higher Education Institutions. *Issues and Ideas in Education*, 9(2), 85–95.
2. Sharma, K., & Yadav, S. (2025). Impact of National Education Policy 2020 on Physical Education and Sports: A Comprehensive Review. *Research Trends in Sports*, 2(1), 14– 18.
3. Kayarkar, B. B. (2023). Role of Physical Education and Teachers in NEP 2020. *International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology*, 3(4), 16-17.
4. Triaca, L. M., Frio, G. S., & França, M. T. A. (2019). A gender analysis of the impact of physical education on the mental health of Brazilian school children. *SSM-Population Health*, *8*, 100419.

https://www.theguardian.com/society/2024/nov/24/ resilience-interventions-do-work-

5. why-coping-strategies-should-be-a-staple-of-education

https://www.education.gov.in/sites/upload_files /mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

Dr. Rambir Singh
Assistant Professor,
KLP College,
Rewari, Haryana

50

शब्दशक्ति

डॉ0 सुमन कुमारी, डॉ0 रामजी मेहता आदर्श

शोध आलेख का उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध–सन्धान का अभिलक्ष्य है, साहित्यशास्त्र के पटल पर सुशोभित 'शब्दशक्ति' विषयक काव्यशास्त्र मर्मज्ञ आचार्य मनीषियों की मान्यताओं को उपस्थापित करना तथा काव्य–भवन के निर्माण में इनकी उपयोगिता एवं लोकप्रियता की असाधारण महत्ता को प्रकाशित करना।

शोध सारांश (Abstract) –

सारांशतः गवेषणात्मक शोध आलेख के द्वारा काव्यशास्त्र में वर्णित 'तिस्रः शब्दस्य शक्तयः ' की अतुलनीय महनीयता को 'तितीषुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मिसागरम्' सदृश उद्घाटित करने का यत्न है।

वस्तुतः काव्यशास्त्र में शब्दशक्तियों की व्यापक प्रतिष्ठा है। यही कारण है कि प्रायः सम्पूर्ण शास्त्रों के रचनाकार साहित्यिक मानदण्डों के धरातल पर इसकी विवेचना की है। समयानुसार इन चिंतकों का विभिन्न दृष्टिकोण प्रेरणाप्रद है, जिसके आधार पर वर्त्तमान अध्येता अपने शोध–अन्वेषण की नींव मजबूत कर 'शब्दशक्ति' के परिपेक्ष्य में एक नईदिशा प्रदान कर सकते है।

अतः साररुप में 'शब्दशक्ति' प्रकरण के अन्तर्गत शक्ति के स्वरुप, भेद, प्रभेद, शब्द और अर्थ का घनिष्ट सम्बन्ध आदि अभीष्ट सभी बिन्दुओं को रेखांकित कर पूर्णरुपेण अनुसन्धान किया गया है।

शब्द–संकेत (Keyword) –

अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना, शब्दार्थ, वाचक, लक्षक, व्यञ्जक, वाच्य, लक्ष्य, व्यंग्य, तात्पयार्थ, अलङ्कृत आदि।

शोध–प्रविधिः –

सम्प्रति शोध यात्रा में गवेषणात्मक विपुल साहित्य–सुधा परक ऐतिहासिक एवं सूक्ष्म समस्त सामाग्रियों को शोध–प्रविधि के रुप में उपयोग किया है, जो 'शब्दशक्ति' को फलीभूत कराने का कार्य करता है।

प्रस्तावना (Preamble) –

'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्'1 प्रस्तावना रुप मे प्रस्तुत अलङ्कार–शास्त्र के प्रतिष्ठापक आचार्य भामह का उक्त काव्य–लक्षण 'शब्दशक्ति' की उपादेयता को सिद्ध करता है। शब्दार्थ के शाश्वत सम्बन्ध का निरुपण 'शब्दशक्ति' का प्रतिपाद्य विषय है। क्योंकि इसका साक्षात् सम्बन्ध काव्य रचना कौशल से होता है। 'शब्दशक्ति' के लिए काव्यशास्त्र में वृत्ति, व्यापार आदि पर्याय वाचक शब्द भी प्रयुक्त हैं।

शब्द की शक्ति असीम है। गूढ़ शब्दार्थ योजना का काव्यानुभूति ब्रह्मानन्द सदृश हमारे मन, कल्पना पर प्रभाव पड़ता है। शब्द और अर्थ का समन्वय कराने वाली शक्ति ही 'शब्दशक्ति' कहलाती है। यथोक्तम –'शब्दार्थो काव्यवाचको वाच्यश्चेति द्वौसम्मिलितौ काव्यम्।' अर्थात् साहित्यशास्त्र में 'शब्दशक्ति' वह विद्या (तत्त्व) है, जो अपनी व्यापारों द्वारा सहृदयी में आह्वादपूर्ण रसाभिव्यंजन कराती है।

प्रस्तावना स्वरुप 'शब्दशक्ति' की महत्ता को देखते हुए ही इस विषय पर अपनी क्षमता, योग्यता, के अनुरुप नवीन–शोध कार्य करने का निश्चय किया है, जिससे अनुसन्धेय पत्र का ध्येय लक्षित होता है।

पृष्ठभूमि–

वाच्यौयौभिधया बोध्योलक्ष्योलक्षणयामतः।2
व्यङ्गयो व्यञ्जनया ताः स्युस्तिस्रः शब्दस्यशक्तयः।।

अद्यतन विवेच्य शोध अभिलेख के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में साहित्य शास्त्र रुपी मणिमाला का सुमेरु 'तिस्रः शब्दस्य शक्तयः' है।

काव्यशास्त्र के अनुशीलन–परीक्षण के ज्ञात होता है कि प्राचीन–साहित्य–शास्त्रकारों ने अपनी–अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार "प्राधान्येन व्यपदेशा भवन्ति" न्याय के आधार पर 'शब्दशक्तियों' का सांगोपाग अनुसन्धान किया हैं। उन्होंने इस सम्वन्ध में जो मौलिक लक्षण तथा उद्भावनाएं व्यक्त की है, उनका काव्यशास्त्रीय चिन्तन में ऐतिहासिक महत्त्व है।

अतः प्रस्तुत नवीन शोध–सन्धान में 'तिस्रः शब्दशक्तयः' को गौरवान्वित करनेवाले सम्पूर्ण शास्त्रीयपक्षो का पूर्णमनोयोग से प्रमाणिक अवलोकन किया गया है।

'तिस्रः शब्दशक्तयः' के प्रसंग में कवि कुलगुरु कालिदास की तूलिका से निःसृत यह अनुपम श्लोक द्रष्ट्व्य है।

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।3
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।

अभिप्राय है कि काव्यशास्त्र में 'तिस्रः शब्दशक्तियों' का विधान अखण्ड संसार के माता–पिता पार्वती और शिव सदृश शब्द तथा अर्थ का मञ्जुल समन्वय है।

उक्त (विवेच्य) शोध–सन्धान में 'शब्दशक्तयः' के समुचित परिज्ञान के लिए सर्वप्रथम मैं भी उन गौरी और महेश्वर की वन्दना–अर्चना करती हूँ।

चिर प्रसिद्ध शब्द की अभिधा–लक्षणा और व्यञ्जना इन तीन शक्तियों के विषय में पर्याप्त अध्ययन–चिन्तन–मनन किया गया है और यही इसकी महत्ता का द्योतक है। काव्यशास्त्रीय दृष्टि से शब्द एवं अर्थ के स्वरुप पर विचार करने वाले तत्त्व को 'शब्दशक्तियां' कहते हैं। 'शक्ति' की निष्पत्ति शक्यते साक्षादभिधयतैन ययेति–शक्तिः करणेक्तिन्। अर्थात् शक् धातु से क्तिन् प्रत्यय के योग से "शक्ति" शब्द निष्पन्न होता है, जिसका प्रमुख अर्थ होता है सामर्थ्य।

जहां तक 'शब्द शक्ति' का प्रश्न है तो विवेच्य प्रसंगानुसार कह सकते है कि– 'शब्दार्थसम्बन्ध शक्ति'। अर्थात् शब्द एवं अर्थ के

सहभाव को ही शब्द शक्ति कहते है। यही कारण है कि 'शक्ति' अर्थबोधक व्यापार का मूल कारण भी कहलाती है। ध्यातव्य है कि शब्द एवं अर्थ से ही घटित, सुसज्जित, अनलङ्कृत–अलङ्कृत, समस्त काव्य के शिल्पकारों ने शब्द में शक्तियों को न केवल स्वीकार किया अपितु इन शब्द शक्तियों के लक्षण एवं भेदो की सांगोपाग विवेचना भी की है।

पदशास्त्री 'वैयाकरणे', वाक्यशास्त्री 'मीमांसक' तथा प्रमाणशास्त्री 'नैयायिक'–समष्टिभूत सबों ने 'तिस्रः–शब्दशक्ति' को मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया है। अतएव अन्वेषणार्थ शोध पत्र में क्रमशः इन अपूर्व 'शब्दशक्तियों' का आलाङ्कारिकों के परिपेक्ष्य में आधान करने का लघु सूक्ष्म प्रयास है। काव्यशास्त्रियों ने सर्वप्रथम शब्द के त्रिविध भेद किये है– (1) वाचकः (2) लाक्षणिकः (3) व्यञ्जकः4। उसी तरह अर्थ के भी तीन प्रकार है– वाच्य, लक्ष्य, एवं व्यङ्गय है।5

आचार्य मम्मट का मत है कि इनका बोध क्रमशः अभिधा, लक्षणा, तथा व्यंञ्जना इन शक्तियों से होता है। 'स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दौत्र व्यञ्जकस्त्रिधा।

वाच्यादयस्तदर्थाः स्युः'। वही, आचार्य मम्मट के काव्यप्रकाश से ज्ञातव्य है कि तीन प्रकार के शब्द और तीन प्रकार के अर्थ के अनुरुप ही उक्त अभिघा, लक्षणा और व्यंजना जो तीन शक्तियां है उनका काव्यशास्त्रियों के अनुसार इनका स्वरुप इस प्रकार है दृ

(1) अभिधाशक्ति–

स मुख्यौर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारौस्याभिधोच्यते6। तात्पर्य है कि साक्षात् संकेतिक अर्थ को व्यक्त करानेवाली शब्द की पहली शक्ति को अभिधा कहते है। ध्यातव्य है कि संकेतिक अर्थ ही मुख्यार्थ कहलाता है। जब कोई शब्द अपनी अभिधा शक्ति से किसी अर्थ को अभिव्यक्त करता है, तब वह शब्द 'वाचक' तथा वह अर्थ वाच्य कहलाता है। 'अभिधाशक्ति' के अन्य नामकाव्यशास्त्रियों ने रखा है। यथा – अग्रिमा, मुख्या, और प्रथमा।

आचार्यविश्वनाथ ने अभिधाशक्ति का निरुपण करते हुए कहा है– 'तत्र संकेतितार्थस्य –बोधनादग्रिमौमिधा' ।7 यहां कविराज विश्वनाथ ने 'अभिधाशक्ति' को 'वाच्यअर्थ की बोधिका' को अग्रिमा शक्ति कहा है। यथा– वाच्यौर्थौभिधया बोध्यः, अग्रिमौभिधा।8 इन्होंने 'तिस्रः शब्द शक्तियों' को उसकी तीन उपाधिया कहा है तथा इन्हें ही अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना तीन शक्तियों के रुप में माना –

अभिधादित्रयोपाधिवैशिष्टयात् त्रिविधो मतः ।9
शब्दौपि वाचकस्तद्वल्लक्षको व्यञ्जकस्तथा।।

यहां संकेतग्रह विचारणीय है। कविराज विश्वनाथ की पैनी दृष्टि 'शक्तिग्रह' के उपाय–प्रतिपादक इस श्लोक में लक्षित होती है–

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोषाप्त वाक्याद् व्यवहारतश्च। 10
वाक्यस्य शेषाद् विवृतेर्वदन्ति सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः।।

आचार्य मम्मट ने उपाधि–शक्तिवाद के साथ–साथ जाति शक्तिवाद, अतिविशिष्ट–व्यक्तिशाक्तिवाद और अपोहशक्तिवाद का उल्लेख कर शब्द के अर्थ के सम्बन्ध में, विभिन्न दार्शनिक सिद्धान्तवादी विचारको के मन को समझने की बातें कहा है।

नैय्यायिकों ने "व्यक्त्याकृतिजातयस्तुपदार्थः" इस नियमानुसार "तद्वान" अर्थात् जाति विशिष्ट व्यक्ति में संकेत ग्रह मानते है, वही बौद्धो ने 'अपोह' को ही संकेत ग्रह का विषयीभूत कहते है।

तात्पर्यावृत्ति के प्रतिपादक मीमांसक केवल जाति में ही संकेतग्रह स्वीकार करते है परन्तु मम्मटाचार्य ने 'संकेतितश्चतुर्भेदो जात्यादिजातिरेववा'11। अर्थात् जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य चारों में संकेत ग्रह मानते हुए कहते है कि लोक व्यवहार में "यथा गाम आनय" 'अश्वं नय' आदि प्रयोग को देखकर तथा इस कथन से अवगत होकर पशु विशेष को लाना और उसे ले जाना जैसे प्रौढ़ व्यक्ति के व्यवहार से अवबोध वच्च 'गो' से गाय तथा 'अश्व' से घोड़े आदि सास्नादिमान पशु आदि अर्थ को समझ लेता है। यह शब्द में शक्ति का सृजन संकेतग्रह से होता है। यहां ज्ञातव्य है कि यह संकेतग्रह लोकव्यवहार के साथ–साथ व्याकरण, कोष, आप्तवाक्य आदि में भी हुआ करते है।

अतः उक्त उदाहरण में 'गो' शब्द वाचक है, साक्षात् संकेतित पशुविशेष रुपी अर्थ 'वाच्य' है और वाक्यार्थ की यह शक्ति ही 'अभिधा' कहलाती है। मम्मट का मानना है कि शब्द अभिधा–व्यापार के द्वारा मुख्यार्थ का बोध कराता है। 'समुख्यौर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारौस्याभिधोच्यते ।12 यह अर्थ बोधगम्य जो शब्द का बोधक व्यापार है यही 'अभिधाशक्ति' है।

पण्डितराज जगन्नाथ ने शब्द तथा अर्थ के परस्पर सम्बन्ध को 'अभिधाशक्ति' कहा है।13

भटलोल्लट 'अभिधा शक्ति' को महत्त्वपूर्ण मानते हुए लिखते है कि, "सौयाभिषोरिव–दीर्घ दीर्घतरौभिधा व्यापारः।"14 अर्थात् वह ही शब्द का व्यापारवाण सदृश दीर्घ–दीर्घतर होता है, जो अभिधा शक्ति की व्यापकता को प्रमाणित करते है। मुकुलभदृ ने अपनी 'अभिधावृत्ति मातृका में इसे प्रथमा शक्ति कहा है।15

लक्षणाशक्ति–

लक्षणिक अर्थ को प्रकट करने वाली शब्द की दूसरी महत्वपूर्ण शक्ति लक्षणा है। यह अभिधा पर आश्रित व्यापार है, जिस शक्ति के द्वारा बोध–लक्ष्य अर्थ, भाक्त, औपचारिक तथा लाक्षणिक (लक्ष्यार्थ) नाम से प्रसिद्ध है। लक्षणा की उपादेयता काव्यशास्त्र के अन्तर्गत सर्वमान्य है। परन्तु उस 'लक्षणाशक्ति' के पृष्ठभूमि में अभिधाशक्ति का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इसे यो कहे कि – 'लक्षणाशक्ति' की उपयोगिता काव्य में असन्दिग्ध है।

काव्यशास्त्रीय आचार्यो का चिन्तन 'लक्षणा' वृत्ति के सन्दर्भ में इस प्रकार है–

अतः काव्य प्रकाशकार आचार्य मम्मट ने लक्षणाशक्ति को परिभाषित करते हुए लिखा है–

मुख्यार्थबाधे तद्योगे रुढ़ितौथ प्रयोजनात्। 16
अन्यौर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।

यहां इस कारिका से स्पष्ट है कि मुख्यार्थ में अवरोध (अन्वय की अनुपत्ति) होने पर, अभिधेयार्थ से सम्बद्ध रुढ़ि या प्रयोजन विशेष से जिस शब्दशक्ति के द्वारा अन्य अर्थ का बोध होता है, वह शब्द का आरोपित व्यापार लक्षणा शक्ति कहलाती है।

उक्त दृष्टि से लक्षणा व्यापार के लिए तीन तत्त्वों का समावेश अनिवार्य है।

(1) प्रथम मुख्यार्थ का बाध होना।

(2) द्वितीय मुख्यार्थ–लक्ष्यार्थ दोनों का सम्बन्ध।

(3) तृतीय रुढ़ी अथवा प्रयोजन में से किसी एक की उपस्थिति नितान्त आवश्यक है।

कविराज विश्वनाथ के शब्दों में लक्षणा–

मुख्यार्थबाधेद्युक्तो ययौन्योडर्थः प्रतीयते ।17

रुढ़ प्रयोजनाद्वौसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता ।।

'लक्षणाशक्ति' के परिपेक्ष्य में विश्वनाथ का कथन है कि लक्षणा वह शब्दशक्ति है जो मुख्यार्थ के अनुपपत्ति होने पर किसी न किसी रुप में अभिधेयार्थ से सम्बन्ध होने से रुढ़ी या प्रयोजन के फलस्वरुप मुख्यार्थजन्य प्रकृतिप्रदत स्वभाव से पृथक किसी अन्य लक्षति अर्थ की प्रतीतिमे जिस शब्दशक्ति की उत्पत्ति हो जाती है, वह 'लक्षणाशक्ति' है।

विश्वनाथ ने मुख्यार्थ बाध को लक्षणा का मूल माना है। उदाहरणार्थ– तात्स्थयसम्बन्ध 'कलिङ्गः साहसिकः' ताद्धम्यसम्बन्ध से लक्षणा 'गौर्वाहीकः, तत्सामीप्य सम्बन्ध से लक्षणा 'गङ्गायां घोषः' साहचर्य सम्बन्ध से 'कुन्ताः प्रविशन्ति', तादर्थ्यसम्बन्ध से लक्षणा इन्द्रार्थासुस्थूणासु 'अमीइन्द्राः' इत्यादिः।

मम्मट अन्य अर्थ को 'लक्ष्य' तथा इसकी बोधिका शक्ति को लक्षणा कहते है। यथा– 'गंङ्गायां घोषः' में गङ्गा शब्द से उसके वाच्यार्थ 'जलप्रवाह' की बाधा होने पर 'गङ्गातट' इस लक्ष्यार्थ का बोध होता है यह लक्षणा शक्ति से गम्य है। इसी तरह कुशलः (कुशंयालाति) दक्ष रुढ़ी से ज्ञात होता है। इसी तरह इसके अन्य उदाहरणों को समझना चाहिए।

लक्षणाशक्ति के भेद–

काव्यशास्त्र में लक्षणाशक्ति अनेकानेक भेद प्रभेदों की विवेचना की गई है। कविराज विश्वनाथ ने (प्रथमतया) इसके अस्सी भेद तक बताये है। वही आचार्य मम्मट ने 'लक्षणा तेनषड् विधा' कहकर लक्षणा शक्ति के छः भेद मानते है। इसके विभाग को एक रेखाचित्र से समझा जा सकता है–

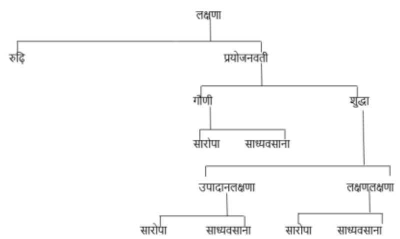

नैय्यायिक शक्य18 के सम्बन्ध को लक्षणा कहते है।

सिद्धान्त मुक्तावली में देखा जा सकता है–

"लक्षणा शक्य सम्बन्धस्तात्पर्यानुपपत्तितः" ।।

मीमांसक के मत मे 19 शक्यार्थ सम्बन्ध से ज्ञान प्रतिपादित होने से जो अशक्य अर्थ की प्रतीति है वही लक्षणा शक्ति होती है।

वैय्याकरणों के अनुसार शक्यतावच्छेदक का आरोप ही 'लक्षणा शक्ति' कहलाती है।20 वामनचार्य अलङ्कार वादी "सादृयाल्लक्षणा वक्रोक्तिः" अर्थात् लक्षणा को वक्रोक्ति अलंङ्कार में अन्तर्हित मानते है।

व्यञ्जनाशक्तिः

शक्तिं भजन्ति सरलाः लक्षणां चतुरा नराः ।21

व्यञ्जनां नर्ममर्मज्ञाः कवयः कमनाः जनाः ।।

साहित्यशास्त्र में शब्द की तृतीय शक्ति को 'व्यञ्जना शक्ति' कहते है। व्यंजना शब्द की निष्पत्ति वि उपसर्ग पूर्वक अंज धातु से हुई है जिसका अर्थ है–

विशिष्ट प्रकार का अंजन। यह शक्ति काव्य के परोक्षीभूत गूढ़ लावण्य को प्रकट करती है।

साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने व्यञ्जना–शक्ति को परिभाषित करते हुए कहा गया है–

विरतास्वभिधाद्यासु ययौर्थो वोध्यते परः ।22

सा वृत्तिर्व्यञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च ।।

'शब्दबुद्धिकर्मणां विरम्य व्यापाराभावः' इस नियमानुसार जब अभिधाशक्ति और लक्षणा शक्ति अपना–अपना व्यापार कर शान्त हो जाते है तब व्यञ्जना शक्ति एक ऐसे अर्थ की प्रतीति कराती है, जो सर्वथा विलक्षणा हुआ करती है। ज्ञातव्य है कि उक्त कारिका से व्यंग्यार्थ का बोध होता है जिसे ध्वनिवादी प्रतीयमान अर्थ कहते है। पण्डितराज जगन्नाथ इसे ही रमणीयार्थ कहते है। ध्वनि सिद्धान्त की सौन्दर्य भावना व्यंग्यार्थ ही है, जिसका सह्र्दयशलाध्य अनिवर्चनीय होता है। इस प्रतीयमान अर्थ की प्रतीति न तो लक्षणा शक्ति से सम्भव है नही अभिधाशक्ति से, अतएव काव्यशास्त्रियों ने विशिष्ट व्यंग्य अर्थ का बोध कराने के लिए व्यंजना शक्ति की स्थापना की। यह शब्द और अर्थ दोनों की शक्ति है। ध्वनिवादी मनीषियों का मानना है कि साहित्यशास्त्र की आधारशिला व्यंजना शक्ति ही है। क्योंकि रसाभिवयक्ति के लिए व्यंजना वृत्ति की सत्ता अनिवार्य है।

आचार्य मम्मट ने व्यञ्जना के स्पष्टीकरण के लिए इस कारिका को काव्य प्रकाश में उद्धृत किया है–

यस्य प्रतीतिमाधातुं लक्षणं समुपास्यते ।23

फले शब्दैकगम्यैत्र व्यंजनान्नापरा क्रिया ।।

व्यञ्जना के स्वरुप के विषय मे कहा गया है कि– प्रयोजनमूला लक्षणा में जिस प्रयोजन की प्रतिति कराने के लिए शब्द की प्रधानशक्ति 'अभिधा' से पृथक लक्षणा शक्ति को स्वीकारा गया है, उस प्रयोजन को व्यक्त करने के लिए शब्द की अति महत्वपूर्ण तृतीय शक्ति 'व्यञ्जना' को ही माना गया है। उदाहरणार्थ 'गङ्गायां घोषः' में गङ्गा की अभिधा शक्ति से आगत जल प्रवाह अर्थ बाधित होने के फलस्वरुप शैत्य–पावनव–नत्व की प्रचुरता जैसे प्रयोजन विशेष के कारण गङ्गाशब्द से गङ्गातट रुपी लक्ष्यार्थ का बोध होता है। अव उसी 'गङ्गा' शब्द से 'शैत्य' पावनत्व का आतिशय्य इस अर्थ के बोधनार्थ उस शब्द से 'व्यञ्जनाशक्ति' मान्य है। अर्थात् व्यंजना के अतिरिक्त अन्य कोई व्यापार व्यंग्यार्थ बोध के लिए नही हैं।

व्यंजना शक्ति के दो भेद है– (1) शाब्दी व्यंजना एवं (2) आर्थी व्यञ्जना।

1. शाब्दी व्यञ्जना मे शब्दों का महत्व होता है। शब्द के बदलाव के साथ ही अर्थ परिवर्तित हो जाता है। अर्थात् जब अभिधा शक्ति द्वारा संयोगादि अनेकार्थक शब्दों के एकार्थक अर्थ का निर्णय होने पर जिसके माध्यम से अन्य अर्थ का बोध होता है उसे ही (i) अभिधा मूला व्यंजना कहते है।

उदाहरणार्थ–

अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते ।24

संयोगाद्यैर वाच्यार्थघीकृद्व व्याप्तिरञ्जनम्।।

(II) तथा दूसरा– लक्षणा मूला व्यञ्जना। विशेषाः स्युस्तु लक्षिते। अर्थात् लक्षणा मूला व्यञ्जना से तयदि रुप लक्ष्य अर्थ में शैत्य पावन आदि प्रयोजन की प्रतीति होती है।6

2. आर्थी वयञ्जना के व्यंग्य रुप अन्य अर्थ का बोध किसी विशेष शब्द के द्वारा होता है। इसमें वक्ता, श्रोता, काकु, वाच्य, प्रस्ताव, देश, काल चेष्टादि के वैशिष्ट्य के कारण व्यंग्यार्थ की प्रतीति होती है।

इस प्रकार व्यञ्जना नामक शब्द शक्ति (इसे ही आर्थी व्यञ्जा कहते है।) से काव्य में जो चमत्कार की उत्पत्ति सरसतापूर्ण होती है वह अभिधा एवं लक्षणा शक्ति से अधिक श्रेष्ठतम् है।

यह तीनों शब्द शक्तियों में प्रधान शक्ति कहलाती है।

उपसंहार– उपसंहारतः काव्यशास्त्रीय दृष्टि से साहित्यशास्त्र के विद्या में इन तीनों शब्दशक्तियों की महत्वपूर्ण प्रतिष्ठा है। मेरी दृष्टि मे अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना तीनों शक्तियां एक दूसरे के पूरक है। किसी भी महत्ता एक–दूसरे से न्यून नहीं है। वस्तुतः तीनों के समन्वय में ही साहित्य की पूर्णता है। निष्कर्षतः तिस्रशब्दस्यशक्तयः का अस्तित्व भिन्न न होकर अभिन्न है।

संदर्भ सुचीः

1. आचार्य मामह, काव्यालङ्कार 1/26
2. कविराजविश्वनाथ, साहित्यदर्पण, 2/3
3. महाकवि कालिदास, रघुवंशमहाकाव्य 1/1
4. स्याद्वाचको लाक्षणिकः शब्दौत्र व्यञ्जकरित्रधा। आचार्य मम्मट, 2/5 काव्यप्रकाश द्वितीय उल्लास सूत्र संख्या–5
5. वाच्यादयस्तदर्थाः स्युः। आचार्य मम्मट, काव्यप्रकाश वही सूत्र सं 6
6. वही, सूत्र संख्या 9 कारिका 7
7. आचार्य विश्वनाथ, साहित्यदपर्ण, द्वितीय, परिच्छदे
8. आचार्य विश्वनाथ, साहित्य दर्पण द्वितीय परिच्छेद।
9. वही, साहित्यदर्पण 2/19
10. साहित्यदर्पण द्वितीयपरिच्छेदः।
11. आचार्य मम्मट, काव्यप्रकाश, 2/10
12. पण्डितराज जगन्नाथः, रसगंगाधरः।
13. भट्टलोल्लटः
14. मुकुलभट्टः
15. आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश, सूत्रसंख्या 12 ––– कारिका 9
16. आचार्यविश्वनाथ, साहित्य दर्पण, 2/5
17. नैय्यायिक, सिद्धान्तमुक्तावली
18. मीमांसक
19. वैय्याकरणी
20. आशाधर भट्ट
21. साहित्यदर्पण 2/12
22. आचार्य मम्मट, काव्यप्रकाश, सूत्र सं. दृ 23 कारिका दृ 14
23. आचार्य मम्मट, काव्यप्रकाश, 2/19

डॉ0 सुमन कुमारी

एसोसिएट प्रोफेसर

साहित्य (संस्कृत विभाग)

डॉ0 रामजी मेहता आदर्श

संस्कृत महाविद्यालय,

मालीघाट, मुजफ्फरपुर बिहार

(सम्बद्धः केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

विकसित भारत में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) की भूमिका

51

डॉ0 हिमांशु कुमार

सारांशः

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) भारत सरकार द्वारा संचालित एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य युवाओं को सामाजिक सेवा गतिविधियों में संलग्न करके उनके व्यक्तित्व, नेतृत्व क्षमता और राष्ट्रभक्ति की भावना को विकसित करना है। NSS की स्थापना 24 सितम्बर 1969 को महात्मा गांधी के जन्म शताब्दी वर्ष में की गई थी। इसका आदर्श वाक्य "Not Me, But You" है, जो समाज सेवा के प्रति समर्पण और दूसरों के प्रति संवेदनशीलता को प्रोत्साहित करता है। NSS मुख्य रूप से कॉलेज और विश्वविद्यालय के छात्रों को सामाजिक सेवा, सामुदायिक विकास और राष्ट्र निर्माण से जोड़ता है।

भारत के विकसित राष्ट्र बनने की परिकल्पना में NSS की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। NSS न केवल युवाओं को सामाजिक सेवा के लिए प्रेरित करता है, बल्कि उन्हें समाज के विभिन्न स्तरों पर न्रेतृत्व और जागरूकता फैलाने का अवसर भी देता है। NSS के माध्यम से युवा विभिन्न सरकारी योजनाओं और अभियानों को सफल बनाने में योगदान देते हैं, जिससे दे्श की सामाजिक और आर्थिक प्रगति को गति मिलती है।

NSS की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विकास

NSS की शुरूआत का मुख्य उद्देश्य युवाओं को सामाजिक कार्यों में शामिल करना और उन्हें समुदाय के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करना था। प्रारम्भ में यह कार्यक्रम चुनिंदा विश्वविद्यालयों में शुरू किया गया था, लेकिन इसकी सफलता को देखते हुए इसे पूरे देश में लागू किया गया। आज NSS लाखों छात्रों को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी का अवसर प्रदान करता है।

पिछले कुछ दशकों में NSS ने अपने कार्यक्षेत्र को कई महत्वपूर्ण सामाजिक और विकासात्मक पहलुओं तक विस्तारित किया है। ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, शिक्षा, आपदा प्रबंधन, पर्यावरण संरक्ष, महिला सशक्तिकरण, डिजिटल साक्षरता और सामुदायिक सेवा जैसे क्षेत्रों में NSS स्वयंसेवकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

विकसित भारत की परिकल्पना और NSS की भूमिका

भारत के 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने की परिकल्पना को साकार करने के लिए NSS एक प्रभावशाली मंच प्रदान कर सकता है। NSS के माध्यम से भारत के युवाओं को सामाजिक और राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों से जोड़ा जा सकता है, जिससे वे समाज के विभिन्न मुद्दों को समझें और उनके समाधान में योगदान दें।

1– शिक्षा और साक्षरता में NSS की भूमिका

शिक्षा किसी भी देश के विकास की आधारशिला होती है। NSS स्वयंसेवक ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा का प्रचार–प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वे गरीब और वंचित बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करते हैं, व्यस्क साक्षरता अभियान चलाते हैं और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने में योगदान देते हैं।

विशेष रूप से डिजिटल इंडिया अभियान के तहत NSS स्वयंसेवक ग्रामीण समुदायों को डिजिटल उपकरणों और तकनीक के उपयोग की जानकारी देकर उन्हें सशक्त बना रहे हैं। वे स्कूली बच्चों को कम्प्यूटर और इंटरनेट का सही उपयोग सिखाने में भी मदद कर रहे हैं।

2– स्वास्थ्य और स्वच्छता अभियान में NSS की भूमिका

स्वास्थ्य और स्व्च्छता किसी भी देश के विकास के महत्वपूर्ण कारक है। NSS ने स्वास्थ्य जागरूकता अभियान, रक्तदान शिविर, टीकाकरण अभियान, नशा मुक्ति अभियान और स्वच्छता अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। NSS स्वयंसेवक स्वच्छ भारत अभियान में सक्रिय भागीदारी करते हुए सार्वजनिक स्थानों की सफाई, कचरा प्रबंधन और प्लास्टिक मुक्त भारत जैसे अभियानों को सफल बना रहे हैं।

कोविड–19 महामारी के दौरान NSS स्वयंसेवकों ने मास्क और सैनिटाइजर का वितरण, वैक्सीनेशन जागरूकता अभियान और जरूरतमंद लोगों को सहायता पहुँचाने जैसे कार्यो में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3– महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सुधार

विकसित भारत की परिकल्पना तब तक अधूरी है, जब तक महिलाओं को समान अवसर और अधिकार नहीं मिलते। NSS स्वयंसेवक महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभा रहे है। वे महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन और आत्मरक्षा के प्रति जागरूक कर रहे है।

NSS द्वारा ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते हैं, जिनमें महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई, कम्प्यूटर शिक्षा और अन्य व्यवसायिक कौशल सिखाए जाते हैं। ये कार्यक्रम महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने और आर्थिक रूप से सशक्त

होने में मदद कर रहे हैं।

4– पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास में NSS की भूमिका

पर्यावरण संतुलन बनाए रखना किसी भी विकसित राष्ट्र के लिए आवश्यक है। NSS ने वृक्षारोपण, जल संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण और प्लास्टिक उन्मूलन जैसे अभियानों में बढ़–चढ़कर भाग लिया है। NSS स्वयंसेवक स्थानीय समुदायों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक कर रहे हैं और उन्हे हरित प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

जल संरक्षण के क्षेत्र में NSS ने जल संचयन और भूजल पुनर्भरण के अभियानों को बढ़ावा दिया है। NSS स्वयंसेवकों ने देशभर में लाखों पौधे लगाए हैं और प्राकृतिक संसाधनों के सतत् उपयोग को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

5– आपदा प्रबंधन और राहत कार्यों में NSS का योगदान

आपदा प्रबंधन में NSS का योगदान उल्लेखनीय रहा है। NSS स्वयंसेवकों ने भूकंप, बाढ़, चक्रवात और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत कार्यों में सक्रिय भागीदारी की है। वे आपदा प्रभावित क्षेत्रों में बचाव कार्य, राहत सामग्री वितरण और पुनर्वास कार्यों में सरकार और अन्य संगठनों की सहायता करते हैं।

NSS ने आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए हैं, जिनमें युवाओं को आपदा के समय त्वरित प्रतिक्रिया देने और लोगों की सहायता करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

6– ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भर भारत अभियान में NSS की भूमिका

भारत की अधिकांश जनसंख्या अभी भी ग्रामीण क्षेत्रामें में निवास करती है। NSS स्वयंसेवक ग्रामीण विकास योजनाओं में सहयोग कर रहे हैं, जिनमें स्वच्छता, जल संरक्षण, कुपोषण, उन्मूलन और ग्रामीण आजीविका सुधार शामिल है। NSS का लक्ष्य ग्राम स्वराज और आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को साकार करना है।

NSS स्वयंसेवक स्थानीय किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों से परिचित कराने, जैविक खेती को प्रोत्साहित करने और ग्रामीण हस्तशिल्प को बढ़ावा देने में मदद कर रहे हैं। वें ग्रामीण उद्यमितता को बढ़ावा देने के लिए भी कार्य कर रहे हैं, जिससे गाँवों में रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं।

NSS को और प्रभावी बनाने के लिए सुझाव

सरकार को NSS के बजट में वृद्धि करनी चाहिए ताकि अधिक संसाधन उपलब्ध कराए जा सकें और अधिक युवाओं को इसमें शामिल किया जा सके।

1. डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग बढ़ाना चाहिए ताकि NSS स्वयंसेवक अपनी गतिविधियों को अधिक प्रभावी ढ़ंग से पूरा कर सकें।
2. उद्योगों और निजी संगठनों के साथ साझेदारी करके NSS के दायरे को बढ़ाया जा सकता है।
3. युवाओं को NSS से जोड़ने के लिए प्रेरक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे वे अधिक उत्साह से इसमें भाग लें।

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) न केवल युवाओं के व्यक्तित्व विकास में सहायक है, बल्कि यह भारत के सामाजिक और आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। NSS के माध्यम से युवा समाज सेवा, नेतृत्व और राष्ट्र निर्माण में अपनी सक्रिय भागीदारी निभा सकते हैं।

विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए NSS को और अधिक प्रभावी तरीके से लागू करने की आवश्यकता है। यदि NSS को डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और स्मार्ट सिटीज जैसे अभियानों के साथ जोड़ा जाए, तो यह देश को सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय रूप से और अधिक विकसित बना सकता है। NSS का विस्तार और प्रभावी कार्यान्वयन भारत को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

विकसित भारत की संकल्पना केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य, तकनीकी और सांस्कृतिक प्रगति का भी द्योतक है। एक समावेशी और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और इसी संदर्भ में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) एक प्रभावी मंच प्रदान करता है। NSS भारत सरकार के युवा कार्यक्रमों में से एक है, जिसका उद्देश्य छात्रों को सामुदायिक सेवा और सामाजिक सुधार के प्रति प्रेरित करना है। NSS के माध्यम से युवा समाज में व्याप्त समस्याओं के समाधान हेतु सक्रिय भागीदारी कर सकते हैं और राष्ट्र के समय विकास में योगदान दे सकते हैं। विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने में NSS का महत्व कई स्तरों पर परिलक्षित होता है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, आपदा प्रबंधन और डिजिटल साक्षरता जैसे विषय शामिल हैं।

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार होती है और NSS इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देता है। NSS स्वयंसेवक ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में जाकर शिक्षा के प्रचार–प्रसार में मदद करते हैं। वे साक्षरता अभियानों में भाग लेते हैं और वंचित समुदायों के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने में सहायता करते हैं। इसके अलावा, NSS डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने में भी सक्रिय भूमिका निभाता है। भारत तेजी से डिजिटल युग में प्रवेश कर रहा है और NSS स्वयंसेवक ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, जिससे नागरिकों को डिजिटल

सुविधाओं का अधिकतम लाभ मिल सके। डिजिटल इंडिया पहल के तहत NSS स्वयंसेवक लोगों को ऑनलाइन सेवाओं, बैंकिंग प्रणाली और साइबर सुरक्षा के बारे में शिक्षित कर रहे हैं, जिससे डिजिटल विभाजन को कम किया जा सके।

स्वास्थ्य और स्वच्छता विकसित भारत के महत्वपूर्ण घटक हैं। NSS द्वारा स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता अभियान चलाए जाते हैं, जिनमें रक्तदान शिविर, टीकाकरण अभियान और प्राथमिक चिकित्सा सेवाएं शामिल होती हैं। NSS स्वयंसेवक ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रति लोगों को जागरूक करते हैं और उन्हें स्वच्छता तथा पोषण के महत्व को समझाने का कार्य करते हैं। स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत NSS ने व्यापक स्तर पर सफाई अभियान चलाए हैं, जिससे सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता में सुधार हुआ है। NSS स्वयंसेवक न केवल सफाई कार्यक्रमों में भाग लेते हैं, बल्कि लोगों को स्वच्छता बनाए रखने के लिए प्रेरित भी करते हैं। ये कार्यक्रम समुदाय में एक स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं और लोगों की जीवनशैली में सकारात्मक परिवर्तन लाते हैं।

पर्यावरण संरक्षण विकसित भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहलू है। NSS स्वयंसेवक वृक्षारोपण अभियान चलाते हैं, जल संरक्षण तकनीकों को बढ़ावा देते हैं और प्लास्टिक मुक्त भारत अभियान में भाग लेते हैं। जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय क्षति को रोकने के लिए NSS युवाओं को जागरूक करता है और उन्हें सतत् विकास की ओर अग्रसर करता है। NSS स्वयंसेवक ऊर्जा संरक्षण, जैव विविधता की सुरक्षा और अपशिष्ट प्रबंधन में भी योगदान देते हैं। पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं के समाधान के लिए NSS द्वारा संगोष्ठियों, कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिससे लोगों में पर्यावरण संरक्षण की भावना विकसित हो सके।

महिला सशक्तिकरण किसी भी विकसित समाज की पहचान है। NSS महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करता है। स्वयंसेवक महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्हें कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, जिससे वे स्वरोजगार की दिशा में कदम बढ़ा सकें। NSS लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान भी चलाता है, जिससे समाज में महिलाओं को समान अवसर प्राप्त हो सकें। NSS द्वारा चलाए गए महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ाने और उन्हें समाज की मुख्य धारा में शामिल करने में कदद करते हैं।

आपदा प्रबंधक में भी NSS की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक आपदाओं जैसे भूकम्प, बाढ़, सूखा और चक्रवात के समय NSS स्वयंसेवक राहत और बचाव कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वे आपदा प्रभावित क्षेत्रों में जाकर राहत सामग्री वितरित करते हैं, पुनर्वास कार्यों में सहायता करते हैं और लोगों को आपदा से बचाव के उपायों के प्रति जागरूक करते हैं। NSS द्वारा आयोजित आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण शिविर युवाओं को आपातकालीन स्थितियों में त्वरित प्रतिक्रिया देने के लिए तैयार करते हैं। इस प्रकार, NSS आपदा प्रबंधन में न केवल तत्काल सहायता प्रदान करता है, बल्कि भविष्य में आपदाओं के प्रभाव को कम करने के लिए भी कार्य करता है।

राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने में NSS की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। NSS विभिन्न जाति, धर्म और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के युवाओं को एक साथ लाता है और उन्हें सामूहिक रूप से कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। NSS द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एकता शिविर युवाओं में सांप्रदायिक सौहार्द, भाईचारे और देशभक्ति की भावना को विकसित करते हैं। NSS स्वयंसेवक समाज में व्याप्त असमानताओं को कम करने और एक समावेशी समाज के निर्माण में योगदान देते हैं।

डिजिटल इंडिया अभियान के तहत NSS स्वयंसेवक डिजिटल जागरूकता फैलाने का कार्य कर रहे हैं। वे ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर लोगों को डिजिटल उपकरणों का उपयोग करने, ऑनलाइन सेवाओं का लाभ उठाने और साइबर सुरक्षा के प्रति सचेत रहने की जानकारी देते हैं। डिजिटल लेन–देन को बढ़ावा देने के लिए NSS स्वयंसेवक लोगों को ऑनलाइन बैंकिंग, डिजिटल भुगतान और सरकारी पोर्टलों का उपयोग करने का प्रशिक्षण देते हैं। इससे न केवल लोगों की डिजिटल साक्षरता बढ़ती है, बल्कि भ्रष्टाचार पर भी अंकुश लगाया जा सकता है।

स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के अन्तर्गत NSS स्वयंसेवक एड्स, मलेरिया, डेंगू और अन्य संक्रामक रोगों के प्रति लोगों को जागरूक करने का कार्य करते हैं। वे लोगों को स्वच्छता बनाए रखने, नियमित स्वास्थ्य जांच कराने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। NSS द्वारा रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जाता है, जिससे जरूरतमंद मरीजों को समय पर रक्त मिल सके। NSS स्वयंसेवक मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता को भी बढ़ावा देते हैं और लोगों को तनाव प्रबंधन तथा सकारात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

विकसित भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए NSS युवाओं को नेतृत्व और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है। NSS स्वयंसेवक नेतृत्व कौशल विकसित करते हैं और सामुदायिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। NSS के माध्यम से युवा न केवल सामाजिक सेवा करते हैं, बल्कि वे सामाजिक समस्याओं का समाधान खोजने और नीतिगत निर्णयों में भाग लेने के लिए भी सक्षम बनते हैं। NSS द्वारा आयोजित नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम युवाओं को समाज में एक सशक्त भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करते हैं।

इस प्रकार, राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) विकसित भारत के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह न केवल युवाओं को सामाजिक सेवा और सामुदायिक विकास में संलग्न करता है, बल्कि उन्हें राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय और सतत् विकास की दिशा में कार्य करने के लिए भी प्रेरित करता है। NSS के माध्यम से युवा समाज की समस्याओं को समझते हैं।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) भारत में युवाओं को समाज सेवा और सामुदायिक विकास से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम हे। NSS के माध्यम से विद्यार्थी समाज के वास्तविक मुद्दों से अवगत होते हैं और उनके समाधान में योगदान देते हैं। विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए NSS एक प्रभावी मंच के रूप में कार्य कर सकता है, क्योंकि यह न केविल युवाओं को समाज के प्रति उत्तरदायी बनाती है, बल्कि उन्हें नेतृत्व कौशल, संवेदनशीतला और सामाजिक समस्याओं को हल करने की क्षमता भी प्रदान करता है।

भारत को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में NSS की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होगी। NSS के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, आपदा प्रबंधन, डिजिटल साक्षरता और ग्रामीण विकास जैसे क्षेत्रों में युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जा सकती है। NSS ने पहले ही विभिन्न अभियानों जैसे स्वच्छ भारत मिशन, बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं, डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और जल संरक्षण अभियानों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हालांकि, NSS को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए कुछ आवश्यक सुधार किए जाने चाहिए। सबसे पहले सरकार को NSS कार्यक्रम का विस्तार करने और इसके लिए अधिक वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। अधिक से अधिक युवाओं को इसमें सम्मिलित करने के लिए NSS की गतिविधियों को डिजिटल माध्यमों से भी जोड़ा जाना चाहिए। NSS को कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) और अन्य निजी संगठनों के साथ साझेदारी में भी शामिल किया जा सकता है, जिससे संसाधनों की कोई कमी न हो।

NSS को शिक्षा प्रणाली का एक अनिवार्य हिस्सा बनाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को कम उम्र में ही समाज सेवा और सामुदायिक विकास का महत्व समझने का अवसर मिले। साथ ही NSS स्वयंसेवकों के योगदान को उचित मान्यता दी जानी चाहिए, जिससे अधिक से अधिक युवा इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रेरित हों।

विकसित भारत की परिकल्पना तभी साकार होगी, जब देश का हर नागरिक राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाएगा। NSS इस दिशा में एक मजबूत नींव प्रदान करता है, जो समाज को संगठित, जागरूक और उत्तरदायी नागरिकता प्रदान करता है। NSS की प्रभावशीलता को बढ़ाकर, सरकार और समाज मिलकर भारत को न केवल आर्थिक रूप से बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से भी एक विकसित राष्ट्र बना सकते हैं। NSS का आदर्श वाक्य "Not me, by you" इस बात का प्रतीक है कि व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर यदि युवा समाज सेवा को प्राथमिकता देंगे, तो भारत निश्चित रूप से एक सशक्त और विकसित राष्ट्र बनेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत सरकार, युवा मामले और खेल मंत्रालय (Ministry of Youth Affairs & Sports, Government of India) – राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) की आधिकारिक वेबसाइट और वार्षिक रिपोर्ट।
2. ''राष्ट्रीय सेवा योजना : एक परिचय'' – डॉ0 रामचंद्र मिश्रा, 2018.
3. ''Youth and Nation-Building through NSS'' – प्रो0 अरूण कुमार, 2020.
4. ''भारत में सामाजिक सेवा और युवा सहभागिता'' – डॉ0 सुनीता शर्मा, 2019.

5- WHO रिपोर्ट 2022 – भारत में स्वास्थ्य और स्वच्छता में NSS की भूमिका पर विशेष रिपोर्ट।

6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) – NSS और युवा नेतृत्व के संदर्भ में उल्लिखित विचार।
7. ''NSS और ग्रामीण विकास'' – महात्मा गांधी ग्रामीण विकास संस्थान, 2021.

डॉ0 हिमांशु कुमार

ए–10एफ, ओर्चिड ग्रीन, ओम विहार,

दिल्ली रोड, रूड़की, हरिद्वार–247667

मो0– 9720372818